CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY, KANPUR

प्रश्नBANK
Bridge of Academic Novelties in Knowledge

KANPUR UNIVERSITY'S

QUESTION BANK

Based On NEP 2020

B.A. IV SEM

PSYCHOLOGICAL PERSPECTIVES OF EDUCATION

- Brief and Intensive Notes
- Multiple Choice Questions

DR. RAMA SHANKER

CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

प्रश्नBANK

BA IV SEMESTER

शिक्षा का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

PSYCHOLOGICAL PERSPECTIVES OF EDUCATION

(CourseCode-E010401T)

BA IV SEMESTER SUBJECT– EDUCATION

SUBMITTED BY

DR RAMA SHANKER

Assistant Professor Department of Education

Bhartiya Mahavidyalaya Farrukhabad UP– 209625

Mo-8979656829 E–Mail– ramakaushambi@gmail&com

विषय सूची

शिक्षा का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यः

Psychological Perspectives of Education

Unit I

Education And Psychology इकाई 1– शिक्षा, व मनोविज्ञान

(1) मनोविज्ञान–अवधारणा व क्षेत्र। Psychology: Concepts and Scopes-

(2) शिक्षा, व मनोविज्ञान का सम्बन्ध। Relations of Education and Psychology-

(3) शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व। Importance of Educational Psychology.

(4) शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ। Methods of Studying Educational Psychology

Unit–II

Process of Development इकाई 2–विकास की प्रक्रिया

(1) विकास–अर्थ व प्रकार। Development: Meaning and Forms.

(2) वृद्धि एवं विकास। Growth and Development-

(3) विकास की अवस्थाएँ। Stages of Development-

(4) विकास के प्रकार–श'ारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, मनाविश्लेषणात्मक विकास,भा"षा विकास।

Forms of Development,Physical, Mental, Emotional, Social, Motor Development, Language Development

Unit III:

Understanding the Learniner इकाई 3 – अधिगम की समझ

(1) अधिगम अर्थ प्रकृति ,व शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक। Meaning, Nature and Factors Influencing the Education-

(2) अधिगम की विधियाँ। Learning Styles

(3) अधिगम का स्थानांतरण ,व इसके निहितार्थ। Transfer of Learning and its classroom implications

(4) अधिगम के सिद्धांत – पैवलॉव का अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत; स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धांत, थार्नडाइक का प्रयत्न ,वं भूल का सिद्धांत गेस्टाल्टवाद का सिद्धांत ,व उनके शैक्षणिक निहितार्थ।

Learning Theories, Pavlovs Classical Conditioning Theory, Skinners Operant Conditioning Theory, Thorndike Trial and Error Theory, Gestalt Theory and their Educational Implications-

Unit IV:

Foundations of Behaviour इकाई 4– व्यवहार के आधार

1 मूल प्रवृत्ति, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण व अवधारणा, अभिप्रेरणा, स्मृति, ध्यान ,व रुचि, चिंतन, तर्क ,व कल्पना, आदत, थकान।

Instincts, Sensation, Perception and Concept, Motivation, Memory, Attention and Interest,Thinking, Reasoning and Imagination, Habit, Fatigue-

Unit V

Individual Differences इकाई 5– वैयक्तिक भिन्नता

(1) वैयक्तिक भिन्नताओं का अर्थ प्रकार, व कारण। Meaning Types and Causes of Individual Differences

(2) व्यक्तिगत भिन्नता, व शिक्षा। Individual Differences and Education-

Unit VI:

Special Need Learners इकाई 6 –विशेष आवश्यकता वाले अधिगमकर्ता

(1) मंद–बुद्धि बालक। Mentally Retarred

(2) प्रतिभाशाली बालक। Gifted Children-

(3) दिव्यांग (विकलांग) A Divyang (Handicapped).

Unit VII:

Mental Health and Adjustment इकाई 7–मानसिक स्वास्थ्य,व समायोजन ।

(1) मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन की अवधारणा,व आवश्यकता। Concept and need of studying mental health-

(2) मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक। Affecting Factors of Mental Health-

(3) मानसिक स्वास्थ्य,व शिक्षा। Mental Health and Education

(4) समायोजन–अर्थ ,व प्रक्रिया। Adjustment: Meaning and Process-

Unit VIII:

Teaching and Learning Process इकाई 8– शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाः

(1) शिक्षण की अवधारणा। Concept of Teaching.

(2) शिक्षण,व अधिगम में सम्बन्ध। Relation between Learning and Teaching.

(3) शिक्षण बनाम अनुबन्धन। Conditioning vs Teaching.

(4) अधिगम शिक्षण का उद्देश्य है। The Objectives of Teaching is Learning.

(5) शिक्षण–अधिगम में शिक्षक की भूमिका। Role of Teacher in Teaching & Learning

SUBJECT– EDUCATION; BA IV SEMESTER

शिक्षा का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यः

PSYCHOLOGICAL PERSPECTIVES OF EDUCATION

CourseCode-E010401T

Unit I:

Education and Psychology इकाई 1– शिक्षा, व मनोविज्ञान

(1) मनोविज्ञान–अवधारणा व क्षेत्र। Psychology: Concepts and Scopes-

(2) शिक्षा, व मनोविज्ञान का सम्बन्ध। Relations of Education and Psychology-

(3) शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व। Importance of Educational Psychology.

(4) शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ। Methods of Studying Educational Psychology-

शिक्षा मनोविज्ञान से आप क्या समझते हैं? उसकी प्रकृति के संबंध में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ :

स्किनर के शब्दों में– 'शिक्षा मनोविज्ञान उन खोजों को शैक्षिक परिस्थितियों में प्रयोग करता है जो कि विशेषतया मानव प्राणियों के अनुभव तथा व्यवहार से संबंधित है।

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग है।शिक्षा–मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है–'शिक्षा' तथा मनोविज्ञान'। अतः इसका शाब्दिक अर्थ है शिक्षा संबंधी मनोविज्ञान'। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है तथा शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है । अतः हम स्किनर के शब्दों में कह सकते हैं–"शिक्षा मनोविज्ञान अपना अर्थ शिक्षा से, जो सामाजिक प्रक्रिया है तथा मनोविज्ञान से, जो व्यवहार–संबंधी विज्ञान है, ग्रहण करता है।"

शिक्षा मनोविज्ञान के अर्थ का विश्लेषण करने हेतु स्किनर ने निम्न तथ्यों की तरफ संकेत किया है–

1. शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्र, मानव–व्यवहार है ।

2. शिक्षा मनोविज्ञान, खोज तथा निरीक्षण से प्राप्त किये गये तथ्यों का संग्रह है।

3. शिक्षा मनोविज्ञान में संग्रहीत ज्ञान को सिद्धांतों का रूप प्रदान किया जा सकता है।

4. शिक्षा मनोविज्ञान ने शिक्षा की समस्याओं का समाधान करने हेतु अपनी स्वयं की पद्धतियों का प्रतिपादन किया है।

5. शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांत तथा पद्धतियाँ शैक्षिक सिद्धांतों एवं प्रयोगों को आधार प्रदान करती हैं।

शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाएं :

शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांतों का शिक्षा में प्रयोग ही नहीं करता वरन् शिक्षा की समस्याओं को हल करने में योग देता है। इसलिए शिक्षाविदों ने शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन, विश्लेषण, विवेचन एवं समाधान हेतु इसकी परिभाषाएं इस तरह दी हैं–

स्किनर– "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार तथा व्यक्तित्व आ जाता है।

क्रो एवं क्रो– "शिक्षा मनोविज्ञान, व्यक्ति के जन्म से वृद्धावस्था तक सीखने के अनुभवों का वर्णन तथा व्याख्या करता है।"

नॉल तथा अन्य– "शिक्षा मनोविज्ञान प्रमुख रूप से शिक्षा की सामाजिक प्रक्रिया से परिवर्तित अथवा निर्देशित होने वाले मानव–व्यवहार के अध्ययन से संबंधित है।"

एलिस क्रो– "शिक्षा मनोविज्ञान, वैज्ञानिक विधि से प्राप्त किये जाने वाले मानव–प्रतिक्रियाओं के उन सिद्धांतों के प्रयोग को पेश करता है, जो शिक्षण तथा अधिगम को प्रभावित करते हैं।"

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति :

सभी शिक्षा–मर्मज्ञों ने शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति को वैज्ञानिक माना है कथन है कि यह विज्ञान अपनी विभिन्न खोजों हेतु वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करता है। तदुपरांत, यह उनसे प्राप्त होने वाले निष्कर्षों के आधार पर शिक्षा की समस्याओं का समाधान करता है तथा छात्रों की उपलब्धियों के संबंध में भविष्यवाणी करता है। जिस तरह वैज्ञानिक विभिन्न तथ्यों का निरीक्षण तथा परीक्षण करके उनके संबंध में अपने निष्कर्ष निकालकर, किसी सामान्य नियम का प्रतिपादन करता है, उसी तरह शिक्षक, कक्षा की किसी विशेष अथवा तात्कालिक समस्या का अध्ययन तथा विश्लेषण करके उसका समाधान करने का उपाय निर्धारित करता है। इस तरह, अपनी खोजों में वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग करने से शिक्षा मनोविज्ञान को विज्ञानों की श्रेणी में रखा गया है। हम अपने कथन के समर्थन में दो विद्वानों के विचारों को लेखबद्ध कर रहे हैं, यथा।

सॉर तथा टेलफोर्ड– "शिक्षा मनोविज्ञान, अपनी खोज के मुख्य उपकरणों के रूप में विज्ञान की विधियों का प्रयोग करता है।"

क्रो तथा क्रो– "शिक्षा मनोविज्ञान को व्यावहारिक विज्ञान माना जा सकता है, क्योंकि यह मानव–व्यवहार के संबंध में वैज्ञानिक विधि से निश्चित किये गये सिद्धांतों तथा तथ्यों के अनुसार सीखने की व्याख्या करने का प्रयत्न करता है।"

शिक्षा मनोविज्ञान एक तरफ कार्य एवं कारण के संबंधों पर बल देता है, अतएव यह निष्कर्षों के प्रयोग को व्यावहारिक रूप प्रदान कर मानव जीवन को सुखी बनाने हेतु प्रयत्न करने के कारण कला की श्रेणी में आता है।

शिक्षा–मनोविज्ञान का क्षेत्र :

वर्तमान शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जन्म लेने से शिक्षा–मनोविज्ञान अपनी शैशवावस्था में है। यही कारण है कि उसके क्षेत्र की सीमाएं अभी तक निर्धारित नहीं हो पायी हैं। परिणामतः शिक्षा–मनोविज्ञान की पुस्तकों की सामग्री में एकरूपता के दर्शन दुर्लभ हैं। आर्चर का यह कथन अक्षरशः सत्य है–"यह बात उल्लेखनीय है कि जब हम शिक्षा–मनोविज्ञान की नवीन पाठ्य–पुस्तक खोलते हैं, तब हम यह नहीं जानते हैं कि उसकी विषय–सामग्री संभवतः क्या होगी?

शिक्षा–मनोविज्ञान की विषय–सामग्री को इस अनिश्चित परिस्थिति से निश्चित परिस्थिति में लाने का कई शिक्षा–शास्त्रियों द्वारा प्रयास किया गया है। उनमें से कुछ के विचार निम्न तरह हैं–

1. डगलस तथा हॉलैंड के अनुसार– "शिक्षा–मनोविज्ञान की विषय–सामग्री शिक्षा की प्रक्रियाओं में भाग लेने वाले व्यक्ति की प्रकृति, मानसिक जीवन तथा व्यवहार है।

2. क्रो तथा को के अनुसार– "शिक्षा–मनोविज्ञान की विषय–सामग्री का संबंध सीखने को प्रभावित करने वाली दशाओं से है।"

3. गैरिसन तथा अन्य के अनुसार– "शिक्षा–मनोविज्ञान की विषय–सामग्री का नियोजन दो दृष्टिकोणों से किया जाता है–

(1) छात्रों के जीवन को समृद्ध तथा विकसित करना

(2) शिक्षकों को अपने शिक्षण में गुणात्मक उन्नति करने में सहायता देने हेतु ज्ञान प्रदान करना।"

उपरिलिखित दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर शिक्षा–मनोविज्ञान में निम्न बातों अध्ययन किया जाता है–

(1) बालक की विशेष योग्यताओं का अध्ययन ।

(2) बालक की रुचियों तथा अरुचियों का अध्ययन ।

(3) बालक के वंशानुक्रम तथा वातावरण का अध्ययन ।

(4) बालक की प्रेरणाओं तथा मूल–प्रवृत्तियों का अध्ययन ।

(5) बालक के विकास की अवस्थाओं का अध्ययन ।

(6) बालक की शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक क्रियाओं का अध्ययन ।

(7) बालक के शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा सौंदर्यात्मक विकास का अध्ययन।

(8) बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन ।

(9) अपराधी, असाधारण तथा मानसिक रोगों से ग्रस्त बालकों का अध्ययन ।

(10) शिक्षण विधियों की उपयोगिता तथा अनुपयोगिता का अध्ययन ।

(11) सीखने की क्रियाओं का अध्ययन ।

(12) शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन ।

(13) शिक्षा के उद्देश्यों तथा उनको प्राप्त करने की विधियों का अध्ययन ।

(14) अनुशासन–संबंधी समस्याओं का अध्ययन ।

(15) पाठ्यक्रम–निर्माण से संबंधित अध्ययन ।

"शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र के विषय में हैरिस डब्ल्यू. चेस्टर ने कहा है–" शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध सीखने के मानवीय तत्व से है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें, प्रयोग–सिद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का विनियोग शिक्षा के क्षेत्र में किया जाता है। पर यह ऐसा क्षेत्र भी है जिसमें ऐसे प्रत्ययों की शिक्षा में व्यवहार की परीक्षा एवं शिक्षकों की रुचि के निर्धारण हेतु प्रयोगात्मक कार्य किये जाते हैं । सीखने तथा सिखाने की प्रक्रिया एवं सीखने वाले को अधिकतम सुरक्षा और संतोष के साथ समाज से तादात्म्य स्थापित करने में मदद देने के लिए निर्देशित कार्यों का अध्ययन करना है।"

शिक्षा मनोविज्ञान के कार्य

शिक्षा मनोविज्ञान के शिक्षण संबंधी कार्य :

1. **विद्यार्थी को जानना–** अध्यापक को बच्चे की शक्तियों तथा योग्यताओं का पता होना अति आवश्यक है। इसके बिना वह अपने कार्य में बिल्कुल आगे नहीं बढ़ सकता। शिक्षा मनोविज्ञान बच्चे के बारे में कुछ निम्न बातें जानने में मदद करता है–

(1) बच्चे के दृष्टिकोण, रुचियों, अभिरुचियों एवं अन्य अर्जित तथा जन्मजात योग्यताओं तथा शक्तियों का ज्ञान।

(2) उसकी सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक, शारीरिक एवं सौन्दर्यात्मक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उसके विकास के विभिन्न आयाम ।

(3) उसकी प्रगति करने की लालसा का स्तर।

(4) उसका चेतन, अर्धचेतन तथा अचेतन व्यवहार ।

(5) उसका अभिप्रेरित व्यवहार।

(6) समूह के अंतर्गत उसके द्वारा किया जाने वाला व्यवहार ।

(7) इसका अपने परिवेश में समायोजन तथा उसके मानसिक स्वास्थ्य का स्तर।

2. विषय–वस्तु या सीखने संबंधी अनुभवों का चयन एवं आयोजन– बच्चे को जानने के बाद जब उसे शिक्षा देने हेतु रंगमंच कुछ तैयार हो जाता है तो कुछ निम्न तरह की समस्यायें सामने आती हैं–

(क) किस स्तर पर किस तरह के सीखने संबंधी अनुभव या सामग्री विद्यार्थियों को दी जानी चाहिए।

(ख) अनुभवों तथा सामग्री चयन करने के बाद उसका क्रमबद्ध आयोजन किस तरह किया जाना चाहिए? इस तरह की पाठ्यक्रम निर्माण संबंधी समस्याओं के समाधान के लिए बच्चे के विकास की अवस्थाओं से संबंधित प्रमुख विशेषताओं से परिचित होना जरूरी है, वरन् सीखने के नियमों, सिद्धांतों तथा सभी अनुकूल तथा प्रतिकूल परिस्थितियों का ज्ञान भी जरूरी है। इन सभी बातों को जानने में केवल शिक्षा मनोविज्ञान ही अध्यापक की मदद कर सकता है।

3. अध्यापक तथा सीखने की कला एवं तकनीक सुझाना– बच्चे को जानने एवं उसे क्या सिखाया जाना है, यह तय करने के बाद सिखाया किस तरह जाये अथवा सीखा कैसे जाये, यह प्रश्न सामने आता है। इसका समाधान भी शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा मिलता है। शिक्षा मनोविज्ञान सीखने की प्रक्रिया का विवेचन करते हुए आवश्यक नियमों तथा सिद्धांतों को सामने लाता है एवं किस तरह से अच्छी तरह सिखाया जाये अथवा सीखा जाये, इससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को ही अवगत कराता है। सीखने की प्रक्रिया से विद्यार्थी की रुचि कैसे जागृत की जा सकती है एवं उसके ध्यान को कैसे केन्द्रित किया जा सकता है आदि महत्वपूर्ण बातें शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा ही शिक्षक को मालूम पड़ती हैं। इस तरह से शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को यह बतलाने की चेष्टा करता है कि विद्यार्थी को किस तरह कुछ सिखाया जाये, दूसरे शब्दों में शिक्षा मनोविज्ञान उचित शिक्षण विधियों को जन्म देता है । इसके द्वारा ही यह सुझाव मिलता है कि कोई एक विधि या तकनीक सभी परिस्थितियों में सभी तरह के विद्यार्थियों के लिए उचित नहीं ठहराई जा सकती। परिस्थितियों को देखते हुए अध्यापक को अपनी विषय सामग्री एवं अपने विद्यार्थियों के अनुकूल उपयश्ंिक्त विधि का चुनाव करने का प्रयत्न करना चाहिए।

4. सीखने के लिए उचित परिस्थितियों तथा वातावरण का आयोजन– अध्यापन के समय उपलब्ध वातावरण तथा परिस्थितियों का भी शिक्षा प्रक्रिया में अपना एक विशेष महत्व है। शिक्षा मनोविज्ञान हमें यह बताता है कि किस तरह के अध्यापन एवं अध्ययन के लिए किस तरह की परिस्थितियों एवं वातावरण की आवश्यकता है। किस समय व्यक्तिगत शिक्षण की आवश्यकता है तो किस समय सामूहिक की? सहायक सामग्रियों का प्रयोग कब तथा कैसे उचित वातावरण तैयार करने में मददगार सिद्ध हो सकता है ? किस प्रकार की परिस्थितियाँ विद्यार्थियों को सीखने तथा कार्य करने को अधिक से अधिक प्रेरित कर सकती हैं ? इस तरह से शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही उपलब्ध परिस्थितियों एवं वातावरण को नियंत्रित कर उसे अपने अध्ययन तथा अध्यापन के अनुकूल ढालने का प्रयत्न करते हैं।

5. उचित अनुशासन स्थापित करने में मदद करना– शिक्षा मनोविज्ञान अध्यापक को रचनात्मक अनुशासन स्थापित करने में बहुत सहायता करता है। अनुशासन संबंधी समस्यायें मूल रूप में व्यवहार संबंधी समस्यायें ही होती हैं जो कि अध्यापक तथा विद्यार्थियों के असंतुलित व्यवहार और टूटते संबंधों के कारण पैदा होती

हैं। शिक्षा मनोविज्ञान विद्यार्थियों के व्यवहार के अध्ययन से अपना संबंध रखता है। अतः हमें विद्यार्थियों को निकट से जानने में बहुत मदद कर सकता है। उनकी आवश्यकताओं, व्यवहार तथा क्षमताओं से यह हमें परिचित कराता है। आपसी व्यवहार को ठीक रूप देने में इससे बहुत सहायता मिलती है जिससे शिष्य एवं गुरु के बीच संबंधों में पर्याप्त मधुरता लाई जा सकती है तथा रचनात्मक अनुशासन बनाये रखा जा सकता है।

6. मापन तथा मूल्यांकन में सहायता– शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत मापन तथा मूल्यांकन की महत्वपूर्ण विधियों और उपकरणों का ज्ञान भी सम्मिलित होता है। अतः इसके अध्ययन से शिक्षक को विद्यार्थियों की योग्यता और क्षमताओं के उचित मूल्यांकन में भी मदद मिलती है।

7. मार्ग निर्देशन में मदद– अध्यापक मापन तथा मूल्यांकन की विधियों से जितना अच्छी तरह परिचित हो सकता है, उतना शायद उसके माता–पिता भी नहीं हो सकते। विद्यार्थियों को ठीक तरह जानने के अतिरिक्त शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान अध्यापक को निर्देशन तथा परामर्श संबंधी सभी आवश्यक तथ्यों का अध्ययन करने का अवसर भी देता है। इस तरह शिक्षा मनोविज्ञान विद्यार्थियों के उचित मार्ग निर्देशन में अध्यापक की बहुत सहायता कर सकता है।

8. समस्यात्मक बालकों की सहायता करना– कुछ बच्चे अतिसाधारण होते हैं। वे या तो पढ़ाई में पिछड़े हुये होते हैं या अपनी अधिक मेधावी शक्ति के कारण उन्हें कक्षा में अन्य बच्चों के साथ तथा कभी–कभी अध्यापकों के साथ अपनी पटरी बिठाने में कठिनाई होती है कुछ के अंदर अपराधी प्रवृत्ति पायी जाती है। ऐसे सभी बच्चों के उचित समायोजन में तथा उनसे यथानश्ंिकूल व्यवहार कर उन्हें ठीक रास्ते पर लाने के कार्य में शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक की काश्ंिी मदद करता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के अधिगम संबंधी कार्य :

शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा विद्यार्थियों को अधिगम की प्रक्रिया तथा उसके परिणामों की प्राप्ति के संदर्भ में विभिन्न तरह के कार्यों के संपादन द्वारा निम्न लाभों की प्राप्ति करता है–

’ उन्हें अपनी योग्यताओं तथा क्षमताओं को जानने और समझने में मदद मिल सकती है। इससे वे अपने आप से भली–भाँति परिचित हो सकते हैं। अपनी महत्वाकांक्षा के स्तर को अपनी योग्यता तथा क्षमता के स्तर के अनुकूल समायोजित कर सकते हैं।

’ अभिप्रेरणा एवं अधिगम के सिद्धांतों एवं विधियों की जानकारी उन्हें सीखने हेतु अभिप्रेरित करने तथा सीखने में भली–भाँति मदद करने में मददगार बन सकती है।

’ अवधान की प्रक्रिया एवं सहायक तत्वों का ज्ञान तथा व्यवधान संबंधी बातों की जानकारी उन्हें सीखने की प्रक्रिया में ध्यानरत रहने में भली–भाँति मदद कर सकती है।

’ अधिगम और प्रशिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में अपने–आप से एवं अपने वातावरण से समायोजन करने में कितना लाभ है, यह जानकारी उन्हें जीवन में सफल रहने की ओर अग्रसर कर सकती है।

’ समूह गतिशास्त्र एवं समूह व्यवहार आदि से संबंधित बातों की जानकारी उन्हें अपने व्यवहार को कक्षा अथवा समूह व्यवहार एवं शिक्षण अधिगम परिस्थितियों के अनुकूल ढालने में मदद कर सकती है।

’ मनोविज्ञान व्यवहार विज्ञान के रूप में विद्यार्थियों को दूसरों के व्यवहार को समझने, समायोजित होने एवं परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की क्षमता रखता है। शैक्षिक परिस्थितियों में विद्यार्थियों द्वारा इस दिशा में क्या किया जाना चाहिए, शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान और कौशल उनकी इस दिशा में मदद कर सकता है तथा परिणामस्वरूप उन्हें अधिगम में सजग रहकर ठीक तरह के परिणामों की प्राप्ति में अनुकूल सहायता मिल सकती है।

इस प्रकार विद्यार्थियों की अधिगम प्रक्रिया को उचित दिशा प्रदान कर वांछित उद्देश्यों की पूर्ति कराने में शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। एक तरह से चाहे शिक्षकों द्वारा शिक्षण क्रियायें संपन्न होती हों या विद्यार्थियों द्वारा अधिगम में रत होकर अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति करनी हो, ऐसे सभी प्रयत्नों में शिक्षा मनोविज्ञान (मनोविज्ञान का शिक्षा में व्यावहारिक अनुप्रयोग) का ज्ञान तथा कौशल बहुत मूल्यवान सिद्ध हो सकता है। यही कारण है कि मनोविज्ञान एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक विशेष तरह का उपभोग सामग्री तथा उपभोक्ता जैसा गहरा संबंध पाया जाता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से जुड़ी हुई सभी बातों, परिस्थितियों तथा व्यक्तियों को उनके अपने–अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कराने में मनोविज्ञान की शैक्षणिक संदर्भ युक्त व्यावहारिक जानकारी अनेक तरह से बहुमूल्य सहयोग प्रदान करने में सदैव जश्ंन्टी रहती है तथा इसी में सभी का वैयक्तिक और सामूहिक हित भी छुपा हुआ है।

’ वंशानुकूल तथा वातावरण के संप्रत्यय, प्रक्रिया और अधिगम पर पड़ने वाले प्रभावों की सही जानकारी उन्हें व्यर्थ के दुष्प्रचार से बचा सकती है। विशेषकर वे बालक जो निम्न जाति, वंश, पिछड़े वर्ग, प्रदेश, अल्प बुद्धि तथा अपंग माँ–बाप की संतान हैं, सही जानकारी प्राप्त कर हीनता एवं निराशा के भावों को तिलांजलि देने में कामयाब हो सकते हैं और अपने परिश्रम से वातावरण को अपने अनुकूल ढालने का प्रयत्न कर सकते हैं ।

’ अधिगम प्रक्रिया पर संसाधनों तथा सीखने संबंधी परिस्थितियों के प्रभाव की जानकारी उन्हें ऐसी परिस्थितियों में अधिगम ग्रहण करने को अग्रसर कर सकती हैं जिनसे अधिगम के अच्छे से अच्छे परिणामों की प्राप्ति हो सके।

’ स्मृति संबंधी प्रक्रिया की जानकारी उन्हें ठीक तरह स्मरण करने, धारणा शक्ति को बढ़ाने वाली उपयुक्त रूप से भण्डारण कर सकने एवं आवश्यकतानुसार स्मृति में संजोयी बातों का उपयोग कर सकने में मदद कर सकती है तथा इस तरह की क्षमता उनके अधिगम में काफी मददगार सिद्ध हो सकती है ।

’ सीखने एवं प्रशिक्षण का एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानांतरण उन्हें अधिगम प्रक्रिया में काफी सहयोगी सिद्ध हो सकता हैं ।

’ अच्छी आदतें कैसे सीखी जाती हैं एवं बुरी आदतों से किस तरह छुटकारा पाया जा सकता है, इस तरह का व्यवहार परिमार्जन तकनीकें उन्हें अधिगम द्वारा अच्छे परिणामों की प्राप्ति की दिशा में अग्रसर कर सकती है

’ उचित व्यक्तित्व विकास हेतु सभी पक्षों का संतुलित तथा समन्वित विकास होना आवश्यक है। यह जानकारी उन्हें सभी आयामों–शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक, नैतिक, सौंदर्यात्मक आदि के संतुलित विकास की ओर ध्यान दिलाकर अध्यापक और विद्यालय द्वारा इस ओर किये गये प्रयत्नों में सफलता हासिल करने में सहायक हो सकती है।

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य :

शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख उद्देश्यों का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है–

1. बालकों के प्रति निष्पक्ष तथा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण का विकास करने में सहायक होना।

2. वांछित शिक्षण विधियों एवं शिक्षण सामग्री के चयन के लिए शिक्षक को सहायता प्रदान करना।

3. शिक्षक को छात्रों के व्यवहार से संबंधित विभिन्न पक्षों के बारे में अवगत कराना।

4. शिक्षण प्रक्रिया की सफलता एवं असफलता के संबंध में वांछित जानकारी प्रदान करना।

5. शिक्षण तथा अधिगम से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए उपयुक्त विधियों और युक्तियों की जानकारी प्रदान करना ।

6. सामाजिक संबंधों के स्वरूप एवं समायोजन की प्रक्रिया का बोध करना।

7. वैयक्तिक भिन्नता के आधार पर विभिन्न तरह के बालकों के विकास में सहायक होना।

8. शिक्षण के उद्देश्यों, युक्तियों, विधियों, प्रविधियों, व्यूह रचनाओं आदि के निर्धारण में सहायता प्रदान करना।

9. वांछित अधिगम की दिशा में बालकों को अभिप्रेरित करने से संबंधित विधियों तथा युक्तियों की जानकारी प्रदान करना।

10. बालकों की वृद्धि, विकास एवं उनके स्वभाव के बारे में ज्ञान प्रदान करना।

11. अवांछित व्यवहारों का नियंत्रण एवं वांछित व्यवहारों का सही दिशा में मार्गान्तीकरण करने से संबंधित युक्तियों का बोध कराना।

12. छात्रों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप शैक्षिक व्यवस्था के संगठन तथा प्रशासन में सहायता प्रदान करना।

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व :

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा प्रक्रिया में दो तरह से अपना योगदान देता है–प्रथम, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा के सिद्धांत के क्षेत्र में योगदान करता है एवं द्वितीय, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा के अभ्यास के क्षेत्र में

अपना योगदान करता है। शिक्षा के इन दोनों क्षेत्रों में किया जाने वाला योगदान निम्न बिन्दुओं के अवलोकन से स्पष्ट हो सकेगा—

(1) विकासात्मक विशेषताओं को समझने में;

(2) अधिगम की प्रकृति को समझने में;

(3) व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने में;

(4) प्रभावशाली शिक्षण विधियों को समझने में;

(5) बालकों की समस्याओं को समझने में;

(6) मानसिक स्वास्थ्य का ज्ञान;

(7) पाठ्यक्रम निर्माण;

(8) अधिगम परिणामों का मापन;

(9) विशिष्ट बालकों की शिक्षा;

(10) समूह गत्यात्मकता की समझ;

(11) शिक्षण सामग्री का प्रयोग;

(12) शैक्षिक प्रशासन;

(13) समय—सारणी;

(14) पाठ्य—सहगामी क्रियायें;

(15) पाठ्य—पुस्तकें;

(16) अनुशासन।

मनोविज्ञान से सम्बन्धित तथ्य

- साइकोलॉजी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग— रुडोल्फ गोयकल
- मनोविज्ञान का जनक— अरस्तु
- आधुनिक मनोविज्ञान का जनक— विलियम जेम्स
- प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का जनक— विलियम वुन्ट

- पशु मनोविज्ञान का जनक– थार्नडाईक
- सरंचनात्मक संप्रदाय के प्रवर्तक– विलियम वुन्ट, टिचनर
- मनोविश्लेषणवाद के जनक– सिगमंड फ्रायड
- गैस्टाल्टवाद सम्प्रदाय के जनक– वर्दीमर, कोहलर, कोफ्का
- व्यवहारवाद का जनक– वाट्सन
- प्रयास एवं त्रुटि सिद्धांत के प्रतिपादक– थार्नडाईक
- अनुबंधन सिद्धांत के जनक– पावलाव
- प्रयास त्रुटि सिद्धांत के प्रतिपादक– थार्नडाईक
- अनुबंधन सिद्धांत के जनक– पावलोव
- क्रिया प्रसूत सिद्धांत के जनक– सी एल हल
- मानवतावादी दृष्टिकोण के प्रतिपादक– मास्लो
- प्रेरक संप्रदाय के प्रतिपादक– विलियम मैक्डूगल
- प्रकार्यवाद संप्रदाय के प्रतिपादक– विलियम जेम्स, जॉन डीवी
- क्षेत्रवाद सिद्धांत के जनक– कुर्त लेविन
- अंतदर्शन विधि के प्रवर्तक– विलियम वुंट एवं टिचनर
- बहिरदर्शन विधि के प्रवर्तक– जे बी वाट्सन
- प्रश्नोत्तर व प्रश्नावली विधि के प्रवर्तक– सुकरात व वुडवर्थ
- समाजमिति विधि के प्रवर्तक– जे एल मोरेनो
- व्यक्ति इतिहास विधि के प्रवर्तक– टाइडमैंन
- प्रयोगात्मक विधि के प्रवर्तक– विलियम वुंट

- बीजकोषों की निरन्तरता का नियम– वीजमैंन
- अर्जित गुणों का स्थानांतरण नियम– लैमार्क
- मैडल का स्थानान्तरण का नियम– जॉन ग्रेगर मेडल
- मनोलैंगिक विकास का सिद्धांत– सिगमंड फ्रायड
- संज्ञात्मक विकास का सिद्धांत– जीन पियाजे
- मनो सामाजिक विकास सिद्धांत– इरिक्सन
- भाषा विकास का सिद्धांत– चोमस्की
- नैतिक विकास सिद्धांत– कोहलबर्ग

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

Unit–II

Process of Development इकाई 2–विकास की प्रक्रिया

(1) विकास–अर्थ व प्रकार। **Development: Meaning and Forms.**

(2) वृद्धि एवं विकास **Growth and Development-**

(3) विकास की अवस्थाएँ,। **Stages of Development-**

(4) विकास के प्रकार–श'ारीरिक मानसिक भावनात्मक सामाजिक मनाविश्लेषणात्मक विकास भा"षा विकास।

Forms of Development ,Physical, Mental, Emotional, Social, Motor Development, Language Development

Stages of Growth and Development (वृद्धि एवं विकास की अवस्थाएं)

मानव विकास एवं अभिवृद्धि से आप क्या समझते हैं? इसके प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन कीजिए।

मानव विकास का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है। एक शिक्षक को बालक की अभिवृद्धि के साथ–साथ उसमें होने वाले विभिन्न तरह के विकास एवं उसकी विशेषताओं का ज्ञान होना आवश्यक है। तभी वह शिक्षा की योजना का क्रियान्वयन विकास एवं अभिवृद्धि के संदर्भ में कर सकता है।

फंक ने अभिवृद्धि को कोशीय वृद्धि के रूप में प्रयुक्त करते हुए कहा हे, शरीर तथा व्यवहार के किसी पहलू में होने वाले परिवर्तन अभिवृद्धि कहलाते हैं। समय की दृष्टि से व्यक्ति में जो परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं, वे विकास कहलाते हैं। मेरिडिथ के शब्दों में–"कुछ लेखक अभिवृद्धि का प्रयोग सिर्फ आकार की वृद्धि के अर्थ में करते हैं तथा विकास का प्रयोग विभेद अथवा विशिष्टीकरण के रूप में करते हैं।"

'अभिवृद्धि' तथा 'विकास' का अर्थ समझने हेतु हमें उनके अंतर को समझना आवश्यक है। सोरेन्सन के अनुसार–सामान्य रूप से 'अभिवृद्धि' शब्द का प्रयोग शरीर तथा उसके अंगों के भार एवं आकार में वृद्धि हेतु किया जाता है। इस वृद्धि को नापा तथा तोला जा सकता है । 'विकास' का संबंध 'अभिवृद्धि' से जरूर होता है, लेकिन यह शरीर के अंगों में होने वाले परिवर्तनों को विशेष रूप में व्यक्त करता है, उदाहरणार्थ हड्डियों के आकार में वृद्धि होती है, लेकिन कड़ी हो जाने से उनके स्वरूप में परिवर्तन भी हो जाता । इस तरह 'विकास' में 'अभिवृद्धि' का भाव हमेशा निहित रहता है। फिर भी, लेखकों द्वारा दोनों शब्दों का प्रयोग साधारणतः एक ही अर्थ में किया जाता है।

'अभिवृद्धि' तथा 'विकास' की प्रक्रियाएं उसी समय से शुरू हो जाती हैं, जिस समय से बालक का गर्भाधान होता है। ये प्रक्रियाएं, उनके जन्म के पश्चात् भी चलती रहती हैं। फलस्वरूप,वह विकास की विभिन्न अवस्थाओं में से गुजरता है, जिनमें उसका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि विकास होता है। अतः हम हरलॉक के शब्दों में कह सकते हैं– "विकास, अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है। इसके बजाय,इसमें

प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की तरफ परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है। विकास के कारण व्यक्ति में नवीन विशेषताएं तथा नवीन योग्यताएं प्रकट होती हैं।"

विकास तथा अभिवृद्धि में अंतर :

प्रायः विकास एवं वृद्धि में कोई अंतर नहीं समझा जाता, जबकि इन क्षेत्रों में पर्याप्त अंतर निम्न तरह है–

अभिवृद्धि :–

1. विशेष आयु तक चलने वाली प्रक्रिया।

2. परिमाणात्मक परिवर्तन की अभिव्यक्ति।

3. वृद्धि, विकास का एक चरण है

4. परिवर्तनों को देखा तथा नापा जा सकता है।

5. केवल शारीरिक परिवर्तन को प्रकट करता है

विकास :–

1. जन्म से मृत्यु तक चलने वाली प्रक्रिया।

2. गुणात्मक तथा परिमाणात्मक पक्षों की अभिव्यक्ति।

3. विकास में वृद्धि भी सम्मिलित है।

4. परिवर्तनों को अनुभव किया जा सकता है, नापा नहीं जा सकता।

5. संपूर्ण पक्षों के परिवर्तनों को संयुक्त रूप से परिवर्तित करता है।

अभिवृद्धि तथा विकास के सिद्धांत :

अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तन निश्चित सिद्धांतों के अनुसार होते हैं। इन्हीं को विकास के सिद्धांत कहा जाता है जो निम्न हैं–

1. निरंतर विकास का सिद्धांत– इस सिद्धांत के अनुसार, विकास की प्रक्रिया अविराम गति से लगातार चलती रहती है लेकिन गति कभी तीव्र तथा कभी मंद होती है, उदाहरणार्थ, प्रथम तीन वर्षों में बालक के विकास की प्रक्रिया बहुत तीव्र रहती है तथा उसके पश्चात् मंद पड़ जाती है। इसी तरह शरीर के कुछ भागों का विकास तीव्र गति से तथा कुछ का मंद गति से होता है। लेकिन विकास की प्रक्रिया

चलती अवश्य रहती है, जिसके कारण व्यक्ति में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है। स्किनर के शब्दों में–"विकास प्रक्रियाओं की निरंतरता का सिद्धांत सिर्फ इस तथ्य पर बल देता है कि व्यक्ति में कोई आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता है।'

2. **विकास की विभिन्न गति का सिद्धांत**– डगलस तथा हालैंड ने इस सिद्धांत का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है–विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है तथा यह विभिन्नता विकास के संपूर्ण काल में यथावत् बनी रहती है, उदाहरणार्थ, जो व्यक्ति जन्म के समय लंबा होता है,वह साधारणतः बड़ा होने पर भी लंबा रहता है तथा जो छोटा है,वह साधारणतः छोटा रहता है।'

3. **विकास क्रम का सिद्धांत**– इस सिद्धांत के अनुसार बालक का गामक तथा भाषा–संबंधी विकास एक निश्चित क्रम में होता है। शर्ले, गेसेल, पियाजे, एमिस आदि की परीक्षाओं ने यह बात सिद्ध कर दी है, उदाहरणार्थ–32 से 36 माह का बालक वृत्त को उल्टा, 60 माह का बालक सीधा तथा 72 माह का फिर उल्टा बनाता है। इसी तरह जन्म के समय वह सिर्फ रोना जानता है। 3 माह में वह गले से एक विशेष तरह की आवाज निकालने लगता है। 6 माह में वह आनंद की ध्वनि करने लगता है। 7 माह में वह अपने माता–पिता के लिए 'पा'बा', दा' आदि शब्दों का उच्चारण का प्रयोग करने लगता है।

4. **विकास–दिशा का सिद्धांत**– इस सिद्धांत के अनुसार, बालक का विकास सिर से पैर की दिशा में होता है, उदाहरणार्थ, अपने जीवन के प्रथम सप्ताह में बालक सिर्फ अपने सिर को उठा पाता है। पहले 3 माह में वह अपने नेत्रों की गति पर नियंत्रण करना सीख जाता है 6 माह में वह अपने हाथों की गतियों पर अधिकार कर लेता है। 9 माह में वह सहारा लेकर बैठने लगता है। 12 माह में वह स्वयं बैठने तथा घिसट कर चलने लगता है । एक वर्ष का हो जाने पर उसे अपने पैरों पर नियंत्रण हो जाता है तथा वह खड़ा होने लगता है। इस तरह, जो शिशु अपने जन्म के प्रथम सप्ताह में सिर्फ अपने सिर को उठा पाता था, वह एक वर्ष बाद खड़ा होने तथा 18 माह के पश्चात् चलने लगता है।

5. **एकीकरण का सिद्धांत**– इस सिद्धांत के अनुसार बालक पहले संपूर्ण अंग को तथा फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। उसके पश्चात् वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है, उदाहरणार्थ, वह पहले पूरे हाथ को, फिर उंगलियों को तथा फिर हाथ और उंगलियों को एक साथ चलाना सीखता है।

6. **परस्पर संबंध का सिद्धांत**– इस सिद्धांत के अनुसार बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि पहलुओं के विकास में परस्पर संबंध होता है, उदाहरणार्थ, जब बालक का शारीरिक विकास के साथ ही साथ उसकी रुचियों,ध्यान के केन्द्रीयकरण तथा व्यवहार में परिवर्तन होते हैं। साथ ही साथ उसमें गामक तथा भाषा–संबंधी विकास भी होता है।

7. **वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धांत**– इस सिद्धांत के अनुसार हर बालक तथा बालिका के विकास का अपना स्वयं का स्वरूप होता है। इस स्वरूप में वैयक्तिक विभिन्नताएं पायी जाती हैं। एक ही आयु के दो बालकों, दो बालिकाओं अथवा एक बालक तथा एक बालिका के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि विकास में वैयक्तिक विभिन्नताओं की उपस्थिति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

8. **समान प्रतिमान का सिद्धांत**– इस सिद्धांत का अर्थ स्पष्ट करते हुए हरलॉक ने लिखा है–"हर जाति, चाहे वह पशु जाति हो अथवा मानव जाति, अपनी जाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान का अनुसरण

करती है ।" उदाहरणार्थ, संसार के हर भाग में मानव–जाति के शिशुओं के विकास का प्रतिमान एक ही है तथा उसमें किसी तरह का अंतर होना संभव नहीं है।

9. सामान्य तथा विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धांत– इस सिद्धांत के अनुसार बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं की तरफ होता है, उदाहरणार्थ, नवजात शिशु अपने शरीर के किसी एक अंग का संचालन करने से पहले अपने शरीर का संचालन करता है तथा किसी विशेष वस्तु की तरफ इशारा करने से पहले अपने हाथों को सामान्य रूप से चलाता है।

10. वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःक्रिया का सिद्धांत– इस सिद्धांत के अनुसार, बालक का विकास न सिर्फ वंशानुक्रम तथा वातावरण के कारण, बल्कि दोनों की अंतः क्रिया के कारण होता है । इसकी पुष्टि स्किनर के द्वारा इन शब्दों में की गयी है– "यह सिद्ध किया जा चुका है कि वंशानुक्रम उन सीमाओं को निश्चित करता है, जिनके आगे बालक का विकास नहीं किया जा सकता है। इसी तरह, यह भी प्रमाणित किया जा चुका है कि जीवन के प्रारंभिक वर्षों में दूषित वातावरण, कुपोषण अथवा गंभीर रोग जन्मजात योग्यताओं को कुंठित अथवा निर्बल बना सकते हैं।"

विकास की अवस्थाएं :

विकास की प्रक्रिया में बालक कुछ सोपानों अथवा अवस्थाओं में से गुजरता है । इनके है संबंध में मनोवैज्ञानिकों में मतभेद है। सामान्य रूप से इनका वर्गीकरण चार भागों में किया जाता है, यथा–

1. शैशवावस्था – जन्म से 5 अथवा 6 वर्ष तक।
2. बाल्यावस्था – 5 अथवा 6 वर्ष से 12 वर्ष तक ।
3. किशोरावस्था – 12 वर्ष से 18 वर्ष तक
4. प्रौढावस्था – 18 वर्ष के पश्चात् ।

कोल ने विकास की अवस्थाओं का वर्गीकरण निम्न तरह से किया है–

1. शैशवावस्था – जन्म से 2 वर्ष तक
2. प्रारंभिक बाल्यावस्था – 2 से 5 वर्ष तक
3. मध्य–बाल्यावस्था – बालक 6 से 12 6

   – बालिका 6 से 10
4. पूर्व–किशोरावस्था – बालक 13 से 14

   अथवा उत्तर–बाल्यावस्था – बालिका 11 से 12
5. प्रारंभिक किशोरावस्था – बालक 15 से 14 बालिका 12 से 14

6. मध्य–किशोरावस्था – बालक 17 से 18 बालिका 15 से 17

7. उत्तर–किशोरावस्था – बालक 19 से 20 बालिका 18 से 20

8. प्रारंभिक प्रौढ़ावस्था – 21 से 34

9. मध्य–प्रौढ़ावस्था – 35 से 49

10. उत्तर–प्रौढ़ावस्था – 50 से 64

11. प्रारंभिक वृद्धावस्था – 65 से 74

12. वृद्धावस्था – 75 से आगे।

विकास के प्रमुख पहलू :

विकास की हर अवस्था में बालक में कई तरह के परिवर्तन होते हैं। इस दृष्टि से हर अवस्था को निम्न मुख्य पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है–

1. शारीरिक विकास

2. मानसिक विकास

3. सामाजिक विकास

4. संवेगात्मक विकास

5. चारित्रिक विकास

बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषताओं एवं इसके लिए शिक्षा के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषताएं :

1. जिज्ञासा की प्रबलता– बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। वह जिन वस्तुओं के संपर्क में आता है, उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर प्रकार की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। उसके ये प्रश्न शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। अब वह शिशु के समान यह नहीं पूछता है–'वह क्या है?' इसके विपरीत, वह पूछता है–'यह ऐसे क्यों हैं?', यह ऐसे कैसे हुआ है?

2. वास्तविक जगत से संबंध– इस अवस्था में बालक शैशवावस्था के काल्पनिक जगत का परित्याग करके वास्तविक जगत में प्रवेश करता है । वह उसकी हर वस्तु से आकर्षित होकर उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है ।

स्टैंग के शब्दों में– "बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है तथा उसके बारे में जल्दी–से–जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।"

3. **रचनात्मक कार्यों में आनंद–** बालक को रचनात्मक कार्यों में विशेष आनंद आता है। वह साधारणतः घर से बाहर किसी तरह का कार्य करना चाहता है, जैसे–बगीचे में काम करना अथवा औजारों से लकड़ी की वस्तुएं बनाना। उसके विपरीत, बालिका घर में ही कोई न कोई कार्य करना चाहती है, जैसे–सीना, पिरोना अथवा कढ़ाई करना।

4. **सामाजिक गुणों का विकास–** बालक, विद्यालय के छात्रों तथा अपने समूह के सदस्यों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करता है। अतः उसमें कई सामाजिक गुणों का विकास होता है, जैसे–सहयोग, सद्भावना, सहनशीलता, आज्ञाकारिता आदि।

5. **नैतिक गुणों का विकास–** इस अवस्था के शुरू में ही बालक में नैतिक गुणों का विकास होने लगता है। स्टैंग के मतानुसार– "छः सात तथा आठ वर्ष के बालकों में अच्छे–बुरे के ज्ञान का और न्यायपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी तथा सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।"

6. **बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास–** शैशवावस्था में बालक का व्यक्तित्व अंतर्मुखी होता है, क्योंकि वह एकांतप्रिय तथा सिर्फ अपने में रुचि लेने वाला होता है। इसके विपरीत, बाल्यावस्था में उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी हो जाता है, क्योंकि बाह्य जगत में उसकी रुचि पैदा हो जाती है। अतः वह अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं तथा कार्यों का अधिक से अधिक परिचय प्राप्त करना चाहता है।

7. **संवेगों का दमन तथा प्रदर्शन–** बालक अपने संवेगों पर अधिकार रखना तथा अच्छी एवं बुरी भावनाओं में अंतर करना जान जाता है। वह इन भावनाओं का दमन करता है, जिनको उसके माता–पिता तथा बड़े लोग पसंद नहीं करते हैं, जैसे–काम–संबंधी भावनाएं ।

8. **संग्रह करने की प्रवृत्ति–** बाल्यावस्था में बालकों तथा बालिकाओं में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत अधिक पाई जाती है। बालक विशेष रूप से काँच की गोलियों, टिकटों, मशीनों के भागों तथा पत्थर के टुकड़ों का संचय करते हैं। बालिकाओं में चित्रों, खिलौनों, गुड़ियों तथा कपड़ों के टुकड़ों का संग्रह करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

9. **निरुद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति–** बालक में बगैर किसी उद्देश्य के इधर–उधर घूमने की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा होती है। मनोवैज्ञानिक बर्ट ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि करीब 9 वर्ष के बालकों में आवारा घूमने, बगैर छुट्टी लिये विद्यालय से भागने तथा आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने की आदतें सामान्य रूप से पाई जाती हैं।

10. **काम–प्रवृत्ति की न्यूनता–** बालक में काम–प्रवृत्ति की न्यूनता होती है । वह अपना अधिकांश समय मिलने–जुलने, खेलने–कूदने तथा पढ़ने–लिखने में व्यतीत करता है । अतः वह बहुत ही कम अवसरों पर अपनी काम–प्रवृत्ति का प्रदर्शन कर पाता है ।

11. **सामूहिक प्रवृत्ति की प्रबलता–** बालक में सामूहिक प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है वह अपना अधिक से अधिक समय दूसरे बालकों के साथ व्यतीत करने का प्रयत्न करता है रॉस के अनुसार–"बालक प्रायः

अनिवार्य रूप से किसी न किसी समूह का सदस्य हो जाता है जो अच्छे खेल खेलने तथा ऐसे कार्य करने हेतु नियमित रूप से एकत्र होता है, जिनके बारे में बड़ी आयु के लोगों को कुछ भी नहीं बताया जाता है।"

12. सामूहिक खेलों में रुचि– बालक को सामूहिक खेलों में अत्यधिक रुचि होती है। वह 6 अथवा 7 वर्ष की आयु में छोटे समूहों में तथा बहुत काफी समय तक खेलता है । खेल के समय बालिकाओं की बजाय बालकों में झगड़े ज्यादा होते हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालक दलीय खेलों में भाग लेने लगता है। स्टैंग का विचार है– "ऐसा शायद ही कोई खेल हो, जिसे दस वर्ष के बालक न खेलते हों।"

13. रुचियों में परिवर्तन– बालक की रुचियों में लगातार परिवर्तन होता रहता है। वे स्थायी रूप धारण न करके वातावरण में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। कोल तथा ब्रूस ने लिखा है– "6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्व विशेषता है– मानसिक रुचियों में स्पष्ट परिवर्तन ।"

बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

बालक की औपचारिक शिक्षा का श्रीगणेश बाल्यावस्था के प्रारंभ के साथ होता है। यह अवस्था किशोरावस्था के लिए आधार तैयार करती है। अतएव बाल्यावस्था की शिक्षा पर अध्यापकों को विशेष ध्यान देना चाहिए । यहाँ कुछ बिन्दुओं पर चर्चा की जा रही है जो शिक्षा का स्वरूप निश्चित करने में मददगार हो सकते हैं–

1. जिज्ञासा की संतुष्टि– बालकों में जिज्ञासा की प्रवृत्ति प्रबल होती है। इस प्रवृत्ति का लाभ उठाकर अध्यापक को उनका ध्यान अध्यापन तथा पाठ की तरफ केन्द्रित करने का प्रयास करना चाहिए । पाठन–सामग्री तथा क्रियाओं का चयन बालकों की जिज्ञासाओं को संतुष्ट करने की दृष्टि से करना चाहिए।

2. रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था– बालकों में विधायकता की प्रवृत्ति ज्यादा तीव्र होती है। अतएव विद्यालय में रचनात्मक कार्य करने की व्यवस्था पर अध्यापकों को ध्यान देना चाहिए। रचनात्मक कार्य द्वारा बालकों में हस्तकौशल के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है एवं इस तरह है कुशलता का विकास किया जा सकता है।

3. पर्यटन की व्यवस्था– इस आयु के बालकों में घूमने की प्रवृत्ति ज्यादा पाई जाती है। बालक निरुद्देश्य घूमते–फिरते हैं। इसका लाभ शिक्षकों को उठाना चाहिए। विद्यालय में समय–समय पर भ्रमण का आयोजन निकटवर्ती क्षेत्र में करना चाहिए। भ्रमण का आयोजन ऐतिहासिक स्थलों या प्राकृतिक स्थानों का निरीक्षण करने के लिए होना चाहिए । भ्रमण के समय बालकों की निरीक्षण–शक्ति के विकास पर अध्यापक को ध्यान देना चाहिए।

4. सामूहिक क्रियाओं का आयोजन– बाल्यावस्था में बालक समूह में रहना ज्यादा पसंद करता है । अतएव विद्यालय में सामूहिक क्रियाओं तथा सामूहिक खेलों का आयोजन करना चाहिए । इन सामूहिक कार्यों में भाग लेते समय बालक में उदारता, सहकारिता, नेतृत्व आदि गुणों के विकास पर अध्यापक को ध्यान देना चाहिए ।

5. संग्रह प्रवृत्ति को प्रोत्साहन– बालकों में संग्रह प्रवृत्ति का अवदमन न करके उसको प्रोत्साहित करना चाहिए। बालकों को शिक्षाप्रद वस्तुओं के संग्रह हेतु मार्ग–निर्देशन देना चाहिए। डाक–टिकट, सिक्के, चित्र आदि का संग्रह करने हेतु बालकों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

6. सामाजिक गुणों का विकास– विद्यालय में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम शिक्षण–विधियों के द्वारा बालकों में सामाजिक गुणों के विकास के लिए प्रयास करना चाहिए । बालकों को एक–दूसरे का सम्मान करने का पाठ सिखाना चाहिए । सामाजिक गुणों के विकास में अध्यापक के व्यवहार का ज्यादा प्रभाव पड़ता है।

7. अध्यापकों का स्नेहयुक्त व्यवहार– बालक अनुकरण द्वारा बहुत सीखता है। इस अवस्था में दमनात्मक अनुशासन उसकी स्वच्छन्दता में बाधा पैदा करता है। वह शारीरिक दण्ड को पसंद नहीं करता है। अतएव अध्यापक को प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करके छात्रों को विद्यालय के कार्य पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए ।

8. नैतिकता विकास– बालक के शिष्ट आचरण की प्रशंसा करनी चाहिए। उसके द्वारा संपन्न बुरे कामों की निंदा करके ऐसे कार्यों की पुनरावृत्ति को निरुत्साहित करना चाहिए। इस स्तर पर कहानी–विधि द्वारा बालकों में नैतिक गुण विकसित किये जा सकते हैं। उनके पाठ्यक्रमों में धार्मिक एवं राष्ट्रीय नेताओं की जीवनी भी शामिल करनी चाहिए।

9. शारीरिक विकास– शारीरिक विकास पर भी विद्यालय में ध्यान देना चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि विद्यालय में शारीरिक व्यायाम की व्यवस्था हो। समय–समय पर विद्यालय में योग्य चिकित्सक द्वारा बालकों के स्वास्थ्य–परीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

10. 'करके सीखने' की विधि पर बल– बाल्यावस्था में बालक ज्यादा क्रियाशील रहता है। अध्यापक को शिक्षण में 'करके सीखने की विधि को प्रयोग में लाना चाहिए।

किशोरावस्था की विशेषताओं एवं इसके लिए शिक्षा के स्वरूप की व्याख्या कीजिए।

मानव विकास की सबसे विचित्र तथा जटिल अवस्था किशोरावस्था है। इसका काल 12 वर्ष से 18 वर्ष तक रहता है। इसमें होने वाले परिवर्तन बालक के व्यक्तित्व के गठन में महत्वपूर्ण योग प्रदान करते हैं। अतः शिक्षा के क्षेत्र में इस अवस्था का विशेष महत्व है। ई.ए. किलपैट्रिक ने लिखा है–"इस बात पर कोई मतभेद नहीं हो सकता है कि किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।" स्टेनले हाल के अनुसार–"किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था है।"

किशोरावस्था का अर्थ

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी के 'एडोलसेंस' का हिन्दी रूपांतर है। 'एडोलसेंस' शब्द लैटिन भाषा के 'एडोलसियर' से बना है, जिसका अर्थ है परिपक्वता की तरफ बढ़ना। अतः शाब्दिक अर्थ के रूप में हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था वह काल है, जो परिपक्वता की तरफ संक्रमण करता है ।

ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन के अनुसार– "किशोरावस्था हर व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में शुरू होता है तथा प्रौढ़ावस्था के आरंभ में खत्म होता है।

हैडो कमेटी रिपोर्ट इंग्लैंड के अनुसार– "ग्यारह अथवा बारह वर्ष की आयु में बालकों की नसों में ज्वार उठना शुरू होता है, इसे किशोरावस्था के नाम से जाना जाता है। अगर इस ज्वार का चढ़ाव के समय ही उपयोग कर लिया जाये तथा इसकी शक्ति एवं धारा के साथ–साथ नई यात्रा शुरू कर दी जाये, तो सफलता प्राप्त की जा सकती है।"

किशोरावस्था की मुख्य विशेषताएं

किशोरावस्था का काल संसार के सभी देशों में एक–सा नहीं माना जाता है। श्री हैरीमैन ने लिखा है–"यूरोपीय देशों में किशोरावस्था का समय लड़कियों में करीब 13 वर्ष से लेकर 21 वर्ष तथा लड़कों में 15 वर्ष से 21 वर्ष तक माना जाता है। भारत देश में लड़कियों की 11–17 वर्ष तथा लड़कों की 13–19 वर्ष तक किशोरावस्था की सीमा मानी जाती है।"

अतः हम यहाँ पर किशोरावस्था की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए विशेषताओं का वर्णन करेंगे–

1. **विकासात्मक विशेषताएं**– किशोरावस्था में बालक का सर्वांगीण विकास होता है, वह शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक आदि क्षेत्रों में विकास के चर्मोत्कर्ष पर होता है। इसी समय पुरुषत्व तथा नारीत्व संबंधी विशेषताएं भी प्रकट होने लगती है। अतएव वे स्वयं अपने–अपने समूहों में नियंत्रित होते चले जाते हैं; जैसा कॉलसनिक ने लिखा है–"किशोरों तथा किशोरियों को अपने शरीर और स्वास्थ्य की विशेष चिंता रहती है। किशोरों के लिए बलशाली, स्वस्थ तथा उत्साही बनना और किशोरियों के लिए अपनी आकृति को स्त्रीत्व आकर्षण प्रदान करना महत्वपूर्ण होता है।"

इसी तरह से किशोरों तथा किशोरियों में मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास हो जाता है। बुद्धि की स्थिरता, कल्पना शक्ति का बाहुल्य, तर्क शक्ति की प्रचुरता, विचार में परिपक्वता तथा विरोधी मानसिक दशाएं आदि मानसिक विशेषताओं का विकास हो जाता है। शारीरिक तथा मानसिक विकास से उनके संवेगात्मक विकास पर भी प्रभाव पड़ता है। इस आयु के किशोर तथा किशोरियाँ भावात्मक और रोगात्मक जीवन व्यतीत करते हैं। वे अपने निश्चय के सामने सामाजिक मान्यताओं की भी परवाह नहीं करते हैं। क्योंकि उनका मन तथा तन उद्वेगात्मक शक्ति से परिपूर्ण रहता है।

2. **आत्म–सम्मान की भावना**– किशोरावस्था में आत्म सम्मान के भाव की स्वतः ही वृद्धि हो जाती है। वे समाज में वही स्थान प्राप्त करना चाहते हैं, जो बड़ों को प्राप्त है। अतएव आत्मनिर्भर बनना, नायकत्व करना, हर कार्य करने को तैयार रहना तथा महान् पुरुषों की नकल करना आदि आयामों को किशोर प्रगट करते रहते हैं। वे स्वयं को पूर्ण समझते हैं। सभी कार्यों को करने की क्षमता रखते हैं। उनमें माता–पिता अथवा अन्य किसी व्यक्ति के संरक्षण में रहना संभव नहीं होता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि इस आयु में किशोर तथा किशोरियों का जीवन अपूर्वता के साथ विकसित होता है, जिसमें उनकी स्वयं की विशेषताएं होती हैं, जैसा कि ब्लेयर, जॉन्स तथा सिम्पसन ने माना है–"किशोर का महत्वपूर्ण बनना, अपने समूह में स्थिति (स्टेट्स) प्राप्त करना तथा श्रेष्ठ व्यक्ति के रूप में अपने को स्वीकार किया जाना चाहता है।"

3. अस्थिरता– अस्थिरता शब्द का विकास के रूप में अर्थ होता है–'निर्णय में चंचलता।' किशोरावस्था में लिये गये निर्णय अस्थिरता से भरे होते हैं। वह शारीरिक शक्ति के वशीभूत होकर निर्णय ले लेता है जो उसके लिए लाभदायक कम तथा हानिकारक ज्यादा होते हैं। वे अपने कार्यों में रुचियों में, आदतों में, संवेगों में तथा सीखने आदि में 'लापरवाह' की तरह से संलग्न होते हैं। वे जल्दबाजी में अपनी विशिष्टता को भी खो बैठते हैं । उनको यथार्थ बनावटी लगता है। अतः वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अस्थिरता को प्रकट करते रहते हैं। इसी बात की पुष्टि ईबे. स्ट्रांग के अध्ययनों से भी होती है।

4. किशोरापराध की प्रवृत्ति का विकास– जब एक निश्चित आयु के बीच के लड़के तथा लड़कियाँ समाज के नियमों का कानूनों का विरोध करने लगते हैं, तो उन्हें किशोरापराध की संज्ञा दी जाती है। इस उम्र की सबसे बड़ी विशेषता होती है–अनुशासनहीनता तथा नियमों को तोड़कर व्यवहार करना। इस अवस्था में जीवन–दर्शन का निर्माण मूल्यों का बनना, आशाओं का पूरा न होना, असफलता प्रेम की तीव्र लालसा तथा अदम्य साहस आदि विशेषताओं के वशीभूत होकर किशोर स्वयं को अपराधी मनोवृत्ति का बना लेता है तथा उसी के द्वारा अपने अहं की तुष्टि करता है।

5. काम भावना की परिपक्वता– इस अवस्था में कामेन्द्रियों का पूर्ण विकास हो जाता है तथा काम भावना अपनी पराकाष्ठा पर होती है। शैशवकाल तथा बाल्यावस्था की काम भावना इस समय अपने पूर्ण यौवन पर होती है। मनोवैज्ञानिकों के अध्ययनों से पता चलता है कि किशोरों में बेचैनी, नाखून चबाना, पेंसिल मुँह में देना, लड़कियों में बार–बार आंचल लपेटना, स्वप्नातीत विचरण आदि विशेषताएं स्पष्ट देखने को मिलती हैं। काम भावना की परिपक्वता का विकास तीन क्रमों में होता है–

(1) आत्म प्रेम– किशोरावस्था में लड़के तथा लड़कियाँ स्वयं को आकर्षक बनाने में लगे रहते हैं ताकि वे दूसरों को प्रभावित कर सकें। यह भाव आत्म प्रेम, आत्म सम्मान से प्रेरित रहता है। वह हर समय अपने में मस्त रहता है तथा वही करता है जो उसको अच्छा लगता है। इसी भावना को डॉ. फ्रायड ने 'नारसिसिज्म' कहकर पुकारा था।

(2) समलिंगीय काम भावना– आत्म प्रेम की भावना के बाद इस अवस्था में सामूहिक भाव पैदा होते हैं। लड़के, लड़कों के समूह में रहना पसंद करते हैं तथा लड़कियाँ, लड़कियों के समूह में, ये दोनों ही अपना–अपना राजदार बनाने हेतु मित्रता के नये आयामों की खोज करते हैं। ये लोग साथ–साथ कक्षा में बैठते हैं, पिकनिक पर जाते हैं, पार्क में बैठकर बातचीत करते हैं तथा साथ–साथ घूमते–फिरते हैं। इस तरह इस आयु में काम भावना का विकास समलिंगीय समूहों में भी विकसित होता है।

(3) विषम लिंगीय काम भावना– किशोरावस्था के अंतिम चरण में किशोर तथा किशोरियाँ एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं। इनके भीतर संसार के प्रति यथार्थ दृष्टिकोण विकसित होने लगता है। ये लोग अपने जीवन साथी की कल्पना में मानसिक रूप से संतृप्त रहते हैं। अतएव इनमें विषम लिंगीय प्रेम प्रस्फुटित होता है। लड़का लड़की के प्रति ज्यादा आकर्षित होता है।

6. समाज सेवा– किशोरावस्था में समाज सेवा की भावना बहुत होती है। लड़के ऐसा कार्य करना चाहते हैं कि वे अपने पिता के समान सम्मान प्राप्त कर सकें तथा लड़कियाँ अपनी माँ के समान आदर प्राप्त करना चाहती हैं। वे स्वयं को सामाजिक उत्सवों, कार्यों तथा सेवाओं से ओतप्रोत कर लेते हैं एवं

उसको ही प्रमश्ङ्खिता देने लगते हैं। इसी का परिणाम है कि जब भी कोई आयोजन होता है किशोर तथा किशोरियों को याद किया जाता है।

7. कल्पना का बाहुल्य– इस अवस्था की मुख्य विशेषता है कल्पना का दैनिक जीवन में प्रयोग होना। मन की चंचलता, ध्यान परिवर्तन तथा मूल्यों की अस्थिरता के कारण वह यथार्थता से हट जाता है एवं कल्पना जगत में डूबा रहता है। इसी अवस्था को मनोवैज्ञानिकों ने 'दिवा–स्वप्न' नाम दिया है।

8. अपराध वृत्ति– किशोरावस्था में अस्थिरता से मानसिक झुकाव नाजुक स्थिति से होकर गुजरता है । इस अवस्था के लड़के तथा लड़कियों को भौतिक जगत का बनावटी आकर्षण दिखाकर चतुर अपराधी अपराध वृत्ति की तरफ आकर्षित कर लेते हैं। बाद में धीरे–धीरे इनका जीवन अपराध करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं रह पाता है तथा समाज और राष्ट्र में अपमान सहते रहते हैं। ये कभी भी अच्छे नागरिक नहीं बन पाते हैं। मनोवैज्ञानिकों के मनोविश्लेषण से स्पष्ट हो गया है कि ये सामाजिक बनने के लिए छटपटाते रहते हैं, पर प्रत्यक्ष रूप से कुछ भी करने में असफल रहते हैं।

9. धार्मिक भावों का उदय– शैशवावस्था की स्वार्थ–भावना, किशोरावस्था में सामाजिक भावना यानि दूसरों की मदद करने में सुख महसूस करने में परिवर्तित हो जाती है। इसी समय किशोर तथा किशोरियाँ धार्मिक भावना और अलौकिकता में विश्वास करने को उत्सुक रहते हैं वे अपने को मानव समाज हेतु अर्पण करने के लिए तैयार होते हैं। उनको एक नयी ज्योति दिखलायी देती है, जो भविष्य का मार्गदर्शन देती है। धीरे–धीरे वे उसको आत्मसात् करते हैं तथा स्वयं को ईश्वरीय शक्ति के प्रति आस्थावान बनाना शुरू कर देते हैं। इसी के कारण आत्मचेतन, संयम, नियंत्रण, कर्तव्य पालन तथा समाज सेवा के भाव आदि महान् व्यावहारिक क्रियाएं शुरू होती हैं। अतः इसी अवस्था में धार्मिक भावनाएं प्रकट होकर अपना प्रभाव स्थायी बनाती हैं।

10. स्वाभाविकता का विकास– जब कोई व्यक्ति अपने कार्यों तथा व्यवहारों में नवीनता प्रकट करना शुरू कर देता है, जो दूसरे के कार्यों तथा व्यवहारों से भिन्न होती है एवं अपूर्वता की परिचायक होती है, इसे व्यक्ति की स्वाभाविकता कहते हैं। 'स्टेनले हाल' के शब्दों में– "किशोरावस्था एक नया जन्म है, इसी अवस्था में उच्चतर तथा श्रेष्ठतर मानवीय गुण प्रकट होते हैं।"

किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत :

किशोरावस्था में परिवर्तन से संबंधित दो सिद्धांत प्रचलित हैं–

1. आकस्मिक विकास का सिद्धांत– इस सिद्धांत के प्रतिपादक स्टेनले हाल हैं। उनके अनुसार–"किशोरावस्था के परिवर्तन का संबंध न तो शैशवावस्था से होता है तथा न बाल्यावस्था से। इस तरह किशोरावस्था एक नया जन्म कहा जा सकता है। इस अवस्था में बालक में जो परिवर्तन आते हैं, वे परिवर्तन आकस्मिक होते हैं।"

2. क्रमशः विकास का सिद्धांत– इस सिद्धांत के अनुसार–किशोरावस्था के परिवर्तन अचानक न होकर क्रमशः होते हैं। किंग का कथन है, "जिस तरह एक ऋतु का आगमन दूसरी ऋतु के बाद होता है,

लेकिन पहली ऋतु में दूसरी ऋतु के आने के लक्षण प्रतीत होने लगते हैं, उसी तरह बालक की अवस्थाएं भी एक–दूसरे से संबंधित होती हैं।"

किशोरों की आवश्यकतायें तथा आकांक्षायें

आवश्यकता वह शक्ति है जो व्यक्ति को किसी विशेष तरह का व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है। किशोरावस्था में किशोर तथा किशोरियाँ विभिन्न आवश्यकताओं से अपने व्यवहार का संचालन करती हैं। उनकी आवश्यकताओं को प्रमुख रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) शारीरिक आवश्यकतायें

(2) मनोवैज्ञानिक आवश्यकतायें

(3) सामाजिक आवश्यकतायें

किशोरों की शारीरिक आवश्यकताओं के अंतर्गत भोजन, वस्त्र, निद्रा, विश्राम, क्रिया तथा यौन संबंधी आवश्यकतायें आती हैं। जीवित रहने के लिए भोजन,शारीरिक सुरक्षा के लिए वस्त्र, जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए क्रिया, थकान दूर करने के लिए विश्राम व निद्रा तथा काम–वासना की पूर्ति के लिए यौन संबंधी आवश्यकतायें होती हैं। मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अंतर्गत किशोरों को प्रेम,स्वतंत्रता, सामाजिक मान्यता तथा सामाजिक प्रतिष्ठा की आवश्यकता होती है। वे चाहते हैं कि माता–पिता, भाई–बहिन, मित्र–पड़ौसी, अध्यापक सभी से उनको प्रेम प्राप्त हो। अपने कार्यों में उनको स्वतंत्रता प्राप्त हो । समाज में उनको सम्मान तथा प्रतिष्ठा मिले तथा समाज में उनकी मान्यता हो । समाज में स्वयं को समायोजित करने एवं व्यवस्थित करने के लिए किशोरों की सामाजिक आवश्यकताएं होती हैं। सामाजिकता की दृष्टि से किशोर–किशोरियाँ एक समूह में रहना पसंद करते हैं तथा विशेषकर उस समूह में जो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति में सहयोग प्रदान कर सकें।

किशोरों की आवश्यकतायें उनकी आकांक्षाओं की देन हैं। आकांक्षाओं का स्तर जितना उच्च होगा, जितना श्रेष्ठ होगा, आवश्यकतायें उन्हीं के अनुरूप बनती चली जायेंगी। अगर आकांक्षाओं के अनुरूप आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती तो किशोरों में निराशा, हताशा, असंतोष, कुण्ठा, चिन्ता एवं तनाव पैदा हो जाते हैं। जो किशोर और किशोरियाँ अपने उद्देश्य अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, सीमाओं से ऊंचे बना लेते हैं, उनकी अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा वे असफलता की स्थिति में हताश एवं निराश हो जाते हैं। यदि कोई किशोर या किशोरी परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने की आकांक्षा लेकर प्रयत्न करता है और उसमें कोई सफलता नहीं मिलती तो वह निराश हो जाता है तथा अध्ययन में उसकी अरुचि हो जाती है।

किशोरों की समस्यायें

किशोरावस्था को तनाव तथा तूफान की अवस्था कहा गया है । इस अवस्था को जीवन की सबसे कठिन अवस्था कहा गया है। यही वह अवस्था है जब किशोर न तो बालक रहता है एवं न पूर्ण प्रौढ़ बन

पाता है। इसे परिवर्तन की अवस्था भी कहा गया है क्योंकि इस अवस्था में परिवर्तनों का अंबार लग जाता है। किशोर बालक–बालिकाओं में अनेक शारीरिक तथा मानसिक परिवर्तन होते हैं। उनके संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक जीवन का स्वरूप बदल जाता है। बाल्यावस्था की विशेषताओं का लोप होने लगता है एवं नये–नये लक्षण जन्म लेने लगते हैं। यही वह अवस्था है जिसमें उनमें अदम्य उत्साह तथा अपूर्व शक्ति होती है, जिनमें वे अपना अधिकतम विकास भी कर सकते हैं एवं अपना सर्वस्व गवां भी सकते हैं । किशोरावस्था को समस्याओं की आयु अथवा समस्याओं की अवस्था भी कहा गया है क्योंकि इस अवस्था में जहाँ स्वयं किशोर बालक–बालिकायें अपने परिवार, विद्यालय, स्वास्थ्य, व्यवसाय, मनोरंजन, भविष्य, यौन आदि से संबंधित समस्याओं से जूझते हैं, वहीं उनके माता–पिता, संरक्षक, अध्यापक, समाज और राष्ट्र के लिए वे भी एक समस्या होते हैं। इस अवस्था में किशोर तथा किशोरियों को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें प्रमुख समस्यायें निम्न तरह हैं–

1. **स्वतंत्रता की समस्या–** किशोरावस्था में आत्मप्रकाशन की भावना बड़ी प्रबल होती है। वे समाज की रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों का घोर विरोध करते हैं। वे माता–पिता के बंधन में बँधकर रहना नहीं चाहते । यदि उन पर नियंत्रण लगाया जाता है तो वे विद्रोह करने के लिए तैयार रहते हैं। किशोरों को घूमना–फिरना बहुत अच्छा लगता है। वे नये–नये स्थानों पर जाना पसंद करते हैं। उन्हें एक स्थान पर बंधकर रहना अच्छा नहीं लगता। जो माता–पिता किशोरों की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति को अनुचित रूप से दबाते हैं, उनके बालकों में बेचैनी तथा निराशा उत्पन्न हो जाती है और वे उच्छृखल एवं आवारा हो जाते हैं।

2. **स्थिरता एवं समंजन की समस्या–** जिस प्रकार शिशु की मनःस्थिति स्थिर नहीं होती, उसी तरह किशोर बालक–बालिकाओं में भी अस्थायित्व होता है। उनका व्यवहार बहुत ही परिवर्तनशील होता है। रॉस ने किशोरावस्था को शैशवावस्था का पुनरावर्तन कहा है। शिशुओं की तरह किशोर चंचल होता है। उसे यह भ्रांति होती है कि वह दूसरे व्यक्तियों के आकर्षण का केन्द्र है पर ऐसा हमेशा नहीं होता। शिशु की भाँति उसे अपने चारों तरफ के वातावरण से समंजन करना पड़ता है । वातावरण से समंजन में कठिनाई उसके शारीरिक तथा मानसिक विकास के कारण भी होती है। समंजन की समस्या कभी–कभी उसके लिए दुखदायी हो जाती है जो उसको चिंतित कर देती है। समंजन की समस्या के कारण कभी–कभी उनका व्यवहार अवांछनीय एवं अशोभनीय हो जाता है ।

3. **विरोधी मनोभावों की समस्या–** किशोरावस्था में किशोर बालक–बालिकाओं में विरोधी मनोभाव चरमसीमा पर होते हैं। किसी क्षण वे बहुत ही सक्रिय दिखायी देते हैं एवं किसी क्षण अत्यधिक आलसी तथा निष्क्रिय। कभी वे अत्यधिक उत्साह से परिपूर्ण आत्म विरोध के द्योतक होते हैं तथा इसका कारण संवेगात्मक ज्ञान योग का अभाव होता है।

4. **प्रबल जिज्ञासा की समस्या–** किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में जिज्ञासा की प्रबलता हो जाती है। अब किशोर बालक–बालिकायें प्रौढ़ जीवन विषयक ज्ञान की खोज में लग जाते हैं इस अवस्था में होने वाले नये–नये परिवर्तन उनकी जिज्ञासा को उद्दीप्त करने का कार्य करते हैं । विपरीत लिंग के लोगों के संबंध में उनकी जिज्ञासा बढ़ती जाती है क्योंकि उनके विषय में प्राप्त होने वाले अनुभव रुचिपूर्ण और आनंददायक होते हैं। किशोरों की जिज्ञासा का उचित समाधान अति आवश्यक है ।

5. आत्म गौरव की समस्या– किशोरावस्था में आत्म गौरव की भावना का विकास होता। इनका प्रमुख कारण उनके अंदर नवीन दृष्टिकोणों का विकसित होना है। वे जहाँ भी होते हैं, अपना सम्मान चाहते हैं। परिवार में, विद्यालय, समूह में वे अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं। कक्षा में मानीटर,खेलों में कप्तान, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक परिषदों और कार्यक्रमों में वे कोई न कोई पद् प्राप्त करना चाहते हैं, जिससे उनकी आत्म गौरव की भावना की संतुष्टि हो। ऐसा न होने पर वे संघर्ष एवं विद्रोह पर उतारू हो जाते हैं। इस समस्या को दूर करने हेतु किशोरों को उनका उचित साथ दिये जाने की आवश्यकता है।

6. आत्म निर्भरता की समस्या– इस अवस्था में किशोर आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी बनना चाहते हैं क्योंकि एक तो उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु धन की आवश्यकता होती है दूसरे वे यह मानने लगते हैं कि वे अब बड़े हो गये हैं एवं उन्हें माता–पिता पर बोझ वे नहीं बनना चाहिए। अनेक किशोर धन प्राप्ति के लिए अनैतिक तथा आपराधिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं। इस समस्या को दूर करने हेतु उनको समश्िंचित निर्देशन दिया जाना चाहिए।

7. कल्पनाशील क्रियाओं की समस्या– किशोरावस्था में किशोर बालक–बालिकायें कल्पना जगत में विचरण करते रहते हैं। वास्तविक संसार से उनका कोई सरोकार नहीं रहता। वे अपना अलग ही कल्पना का संसार संजोये रहते हैं तथा दिवास्वप्नों में खोये रहते हैं । कल्पना के द्वारा वे अपनी अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। जिन वस्तुओं को उनको अभाव होता है, उनको वे कल्पना के द्वारा पूरा कर लेते हैं। माता–पिता तथा शिक्षकों को चाहिए कि उनको कल्पना को सृजनात्मक कार्य में लगायें।

8. व्यवसाय चयन की समस्या– किशोरों की एक प्रमुख समस्या व्यवसाय का चुनाव करने की होती है। इस अवस्था में वे अपने लिए उपयश्िक्त व्यवसाय को चुनने, उसके लिए तैयारी करने, उसमें प्रवेश करने तथा उसमें उन्नति करने के लिए अत्यधिक चिंतित रहते हैं। पर व्यवसाय के संबंध में उनका चिंतन बड़ा अवास्तविक होता है। वे साधारण व्यवसायों को पसंद नहीं करते वरन् ऐसे व्यवसायों को चुनना चाहते हैं जो उनकी योग्यता से बहुत ऊंचे होते हैं।

9. नैतिक और सामाजिक मूल्यों की समस्या– किशोर बालक–बालिकाओं के सामने नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों की समस्या भी अत्यंत कठिन होती है। वे इन मूल्यों में बंधन महसूस करते हैं एवं इनको अपनी स्वतंत्रता में बाधक मानते हैं। माता–पिता, अध्यापक तथा समाज किशोरों से इन मूल्यों का पालन करने की अपेक्षा रखते हैं और किशोर अपनी एवं अपने साथियों की इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति करना चाहते हैं जिससे इन दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई आती है तथा वे दुविधा में फँस जाते हैं। माता–पिता और शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे किशोरों के आत्म सम्मान को बनाये रखकर और उनकी उचित इच्छाओं एवं आकांक्षाओं के अनश्िंरूप उनकी सहायता करें।

10. यौन समस्यायें– इस अवस्था में किशोर बाल–बालिकाओं में काम प्रवृत्ति की प्रबलता उनके लिए एक बड़ी समस्या है। कोई भी किशोर लड़का–लड़की इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

रॉस कहते हैं कि, ″यौन, यदि समस्त जीवन का नहीं तो किशोरावस्था का अवश्य ही मूल तत्व है। एक विशाल नदी के अतिप्रभाव के समान यह जीवन की भूमि के बड़े भार्गों को सींचता है और उपजाऊ बनाता है।″

किशोरावस्था में काम शक्ति के विकास की तीन प्रमुख अवस्थायें हैं–

(i) स्वप्रेम– इस अवस्था में किशोर लड़के–लड़कियाँ दोनों ही अपने शरीर, आकार–प्रकार तथा लम्बाई–चौड़ाई में बहुत अधिक रुचि लेते हैं। लड़कों को अपने शरीर को हष्ट–पुष्ट बनाने, पेशियाँ उभारने एवं व्यायाम आदि का शौक पैदा होने लगता है और लड़कियाँ अपने शरीर की सुंदरता, चेहरे–मोहरे की बनावट, रंग आदि में ज्यादा रुचि लेने लगती हैं। लड़के–लड़कियाँ दोनों ही अपने बालों को संवारने, बार–बार बदलने तथा अपनी सुंदरता में वृद्धि करने के प्रयास करते हैं। इसके अलावा वे कृत्रिम तरीकों से अपनी काम प्रवृत्ति की संतुष्टि शरीर के विभिन्न अंगों को स्पर्श करके या घर्षण से स्वतः ही कर लेते हैं। ऐसा करने से उनमें हस्त मैथुन जैसी गंदी आदत का विकास हो जाता है।

(ii) समलिंग कामुकता– इस अवस्था में किशोर लड़के–लड़कियाँ अपने ही लिंग के दूसरे साथियों–सहेलियों के साथ प्रेम करने में रुचि लेते हैं। वे अपने साथियों–सहेलियों के साथ अधिक से अधिक रहना, घूमना, खाना तथा बातचीत करना पसंद करते हैं। वे आपस में आलिंगन एवं चुंबन करते हुए देखे जा सकते हैं। इस तरह समलिंग कामुकता में लड़के–लड़कों के साथ और लड़कियाँ–लड़कियों के साथ अपनी काम–वासना की संतुष्टि करते हैं ।

(iii) विषमलिंग कामुकता– इस अवस्था में किशोर लड़के–लड़कियाँ अपनी काम–वासना की तृप्ति अपने से विपरीत लिंग वालों के साथ करते हैं । किशोर लड़के–लड़कियाँ एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, परस्पर प्रेम करते हैं, पत्र व्यवहार करते हैं, घंटों बातें करते हैं, साथ–साथ घूमते हैं और ज्यादा घनिष्ठता हो जाने पर आलिंगन, चुंबन एवं संभोग का आनंद प्राप्त करते हैं। वे एक–दूसरे के लिए संसार के बंधनों को तोड़ने के लिए तैयार रहते हैं। यह अवस्था किशोर लड़के–लड़कियों के लिए बड़ी नाजुक और गंभीर अवस्था है क्योंकि भारत के अंदर पारिवारिक तथा सामाजिक बंधन बहुत कठोर हैं।

इस तरह किशोरावस्था में किशोर लड़के–लड़कियों के समक्ष कई समस्यायें होती हैं, इसलिए इस अवस्था को 'समस्याओं की आयु ' कहा गया है। हरलॉक ने निष्कर्ष निकाला है कि किशोरावस्था की अधिकांश समस्यायें मुख्यतः शारीरिक दिखावट और स्वास्थ्य, परिवार एवं परिवार से बाहर लोगों के साथ के संबंधों, विषमलिंग वालों से संबंधों, स्कूल–कालेज के कार्य, भविष्य की योजनाओं जैसे शिक्षा, व्यवसाय चयन, जीवन–साथी का चुनाव तथा यौन, नैतिक व्यवहार, धर्म और अर्थ से संबंधित होती हैं। इन समस्याओं के कारण किशोर लड़के–लड़कियों में जिज्ञासा, उत्सुकता, चिंता, अनिश्चितता, भय, भ्रांति, विषाद आदि के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, जो किसी न किसी रूप समस्या ही हैं। असफलता तथा निराशा मिलने पर वे अत्यधिक भावुक और संवेदनशील हो जाते हैं। किशोर लड़के–लड़कियों की समस्याओं में पर्याप्त वैयक्तिक विभिन्नतायें पायी जाती हैं। गैरीसन ने अपने अध्ययन में यह देखा कि जिन परिवारों में प्रजातांत्रिक वातावरण रहता है, उन परिवारों में पले बालकों की समस्यायें कम जटिल होती हैं एवं जिन परिवारों में वातावरण प्रभावशाली होता है, उन परिवारों में पले बालकों की समस्यायें अपेक्षाकृत अधिक जटिल हुआ करती हैं। कुछ अध्ययनों से यह निष्कर्ष भी निकाला गया है कि जिन किशोरों का बुद्धि लब्धि अधिक होता है, वे अपेक्षाकृत कम समस्याओं से ग्रस्त होते हैं और जिन किशोरों का बुद्धि लब्धि कम होता है, वे अपेक्षाकृत अधिक समस्याओं से ग्रस्त होते हैं। यह भी देखा गया है कि आयु बढ़ने के साथ–साथ किशोर

लड़के–लड़कियाँ अपनी समस्याओं का समाधान करना स्वयं लिखते जाते हैं तथा अपने परिवार, विद्यालय एवं समाज के साथ समायोजन करने में सफ़ल होते हैं।

किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप

किशोरावस्था में शिक्षा के संबंध में हैडो रिपोर्ट में लिखा गया है–"ग्यारह अथवा बारह वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना प्रारंभ हो जाता है। इसको किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। अगर इस ज्वार का बाढ़ के समय ही उपयोग कर लिया जाये तथा इसकी शक्ति एवं धारा के साथ–साथ नयी यात्रा शुरू कर दी जाये, तो सफ़लता प्राप्त की जा सकती है।"

उपरिलिखित शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि किशोरावस्था शुरू होने के समय से ही शिक्षा को एक निश्चित स्वरूप प्रदान किया जाना अनिवार्य है। इस शिक्षा का स्वरूप क्या होना चाहिए, निम्न तरह समझा जा सकता है–

1. **शारीरिक विकास हेतु शिक्षा**– किशोरावस्था में शरीर में कई क्रांतिकारी परिवर्तन होते हैं, जिनको उचित शिक्षा प्रदान करके शरीर को सबल तथा सुडौल बनाने का उत्तरदायित्व विद्यालय पर है। अतः उसे निम्न का आयोजन करना चाहिए।

(1) शारीरिक तथा स्वास्थ्य–शिक्षा, (2) विभिन्न तरह के शारीरिक व्यायाम, (3) सभी तरह के खेलकूद आदि।

2. **मानसिक विकास हेतु शिक्षा**– किशोर की मानसिक शक्तियों का सर्वोत्तम तथा अधिकतम विकास करने हेतु शिक्षा का स्वरूप उसकी रुचियों, रुझानों, .ष्टिकोणों तथा योग्यताओं के अनुरूप होना चाहिए। अतः उसकी शिक्षा में निम्न को स्थान दिया जाना चाहिए–

(1) कला, विज्ञान, साहित्य, भूगोल, इतिहास आदि सामान्य विद्यालय–विषय, (2) किशोर की जिज्ञासा को संतुष्ट करने तथा उसकी निरीक्षण–शक्ति को प्रशिक्षित करने हेतु प्राकृतिक, ऐतिहासिक, आदि स्थानों का भ्रमण, (3) उसकी रुचियों, कल्पनाओं तथा दिवास्वप्नों को साकार बनाने हेतु पयर्टन, वाद–विवाद, कविता–लेखन, साहित्यिक गोष्ठी आदि पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाएं ।

3. **संवेगात्मक विकास हेतु शिक्षा**– किशोर कई तरह के संवेगों में संघर्ष करता है इन संवेगों में से कुछ उत्तम तथा कुछ निकृष्ट होते हैं। अतः शिक्षा में इस तरह के विषयों तथा से पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं को स्थान दिया जाना चाहिए, जो निकृष्ट संवेगों का दमन या मार्गान्तरीकरण तथा उत्तम संवेगों का विकास करें। इस उद्देश्य से कला, विज्ञान, साहित्य, संगीत, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

4. **सामाजिक संबंधों की शिक्षा**– किशोर अपने समूह को बहुत महत्व देता है तथा उसमें आचार–व्यवहार की कई बातें सीखता है। अतः विद्यालय में ऐसे समूहों का संगठन किया जाना चाहिए, जिनकी सदस्यता ग्रहण करके किशोर उत्तम सामाजिक व्यवहार तथा संबंधों के पाठ सीख सके । इस दिशा में सामूहिक क्रियाएं, सामूहिक खेल तथा स्काउटिंग बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

5. व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार शिक्षा– किशोर में व्यक्तिगत विभिन्नताओं तथा आवश्यकताओं को सभी शिक्षाविद् स्वीकार करते हैं। अतः विद्यालयों में विभिन्न पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए। जिससे किशोरों की व्यक्तिगत माँगों को पूर्ण किया जा सके।

6. पूर्व–व्यावसायिक शिक्षा– किशोर अपने भावी जीवन में किसी न किसी व्यवसाय में प्रवेश करने की योजना बनाता है। लेकिन वह यह नहीं जानता है कि कौनसा व्यवसाय उसके लिए सबसे ज्यादा उपयश्न्क्ति होगा। उसे इस बात का ज्ञान प्रदान करने हेतु विद्यालय में कुछ व्यवसायों की प्रारंभिक शिक्षा दी जानी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखकर हमारे देश के बहुद्देश्यीय विद्यालयों में व्यावसायिक विषयों की शिक्षा की व्यवस्था की गयी है–

7. जीवन–दर्शन की शिक्षा– किशोर अपने जीवन–दर्शन का निर्माण करना चाहता है लेकिन उचित पथ–प्रदर्शन के अभाव में वह ऐसा करने में असमर्थ रहता है। इस कार्य का उत्तरदायित्व विद्यालय पर है। इसका समर्थन करते हुए ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन ने लिखा है– "किशोर को हमारे जनतंत्रीय दर्शन के अनुरूप जीवन के प्रति दृष्टिकोणों का विकास करने में मदद देने का महान् उत्तरदायित्व विद्यालय पर है।"

8. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा– किशोर के मस्तिष्क में विरोधी विचारों में लगातार द्वंद्व होता रहता है। फलस्वरूप, वह उचित व्यवहार के संबंध में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुँच पाता है। अतः उसे उदार, धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वह उचित तथा अनुचित में अंतर करके अपने व्यवहार को समाज के नैतिक मूल्यों के अनुकूल बना सके।

9. यौन शिक्षा– किशोर बालकों तथा बालिकाओं की अधिकांश समस्याओं का संबंध उनकी काम–प्रवृत्ति से होता है। अतः विद्यालय में यौन–शिक्षा की व्यवस्था होना अति आवश्यक है।

10. बालकों तथा बालिकाओं के पाठ्यक्रम में विभिन्नता– बालकों तथा बालिकाओं के पाठ्यक्रमों में विभिन्नता होना अति आवश्यक है। इसका कारण बताते हुए बी.एन. झा ने लिखा है–"लिंग–भेद के कारण तथा इस विचार से कि बालकों एवं बालिकाओं को भावी जीवन में समाज में विभिन्न कार्य करने हैं, दोनों के पाठ्यक्रमों में विभिन्नता होनी चाहिए।"

11. उपर्युक्त शिक्षण–विधियों का प्रयोग– किशोर में स्वयं परीक्षण, निरीक्षण, विचार तथा तर्क करने की प्रवृत्ति होती है। अतः उसे शिक्षा देने हेतु परंपरागत विधियों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। उसके लिए किस तरह की शिक्षण–विधियाँ उपयश्न्क्ति हो सकती हैं, इस संबंध में रॉस का मत है–"विषयों का शिक्षण व्यावहारिक ढंग से किया जाना चाहिए तथा उनका दैनिक जीवन की बातों से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित किया जाना चाहिए।"

12. किशोर के प्रति वयस्क जैसा व्यवहार– किशोर को न तो बालक समझना चाहिए तथा न उसके प्रति बालक जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए। इसके विपरीत, उसके प्रति वयस्क जैसा व्यवहार किया जाना चाहिए।

13. किशोर के महत्व को मान्यता– किशोर में उचित महत्व तथा उचित स्थिति प्राप्त करने की प्रबल इच्छा होती है। उसकी इस इच्छा को पूर्ण करने हेतु उस उत्तरदायित्व के कार्य दिये जाने चाहिए। इस उद्देश्य से सामाजिक क्रियाओं, छात्र–स्वशासन तथा युवक गोष्ठियों का संगठन किया जाना चाहिए।

14. अपराध–प्रवृत्ति पर अंकुश– किशोर में अपराध करने की प्रवृत्ति का प्रमुख कारण है निराशा। इस कारण को दूर करके उसकी अपराध प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जा सकता है । विद्यालय, उसको अपनी उपयोगिता का अनुभव कराके उसकी निराशा को कम कर सकता है तथा इस तरह उसकी अपराध–प्रवृत्ति को कम कर सकता है।

15. किशोर–निर्देशन– स्किनर के शब्दों में– "किशोर को निर्णय करने का कोई अनुभव नहीं होता है।" अतः वह स्वयं किसी बात का निर्णय नहीं कर पाता है तथा चाहता है कि कोई उसे इस कार्य में निर्देशन एवं परामर्श दे। यह उत्तरदायितव उसके अध्यापकों तथा अभिभावकों को लेना चाहिए।

विभिन्न अवस्थाओं में शारीरिक

मानव जीवन का प्रारम्भ अथवा आरम्भ उसके पृथ्वी पर जन्म लेने से पहले ही प्रस्फुटित होने लगता है। वर्तमान समय में गर्भधारण की स्थिति से ही मानवीय जीवन का प्रारम्भ माना है जाता है । माँ के गर्भ में बच्चा 280 दिन अथवा 10 चन्द्रमास तक विकसित होकर परिपक्वावस्था प्राप्त करता है। इसलिए शारीरिक दशा का विकास गर्भकाल में निश्चित किया जा सकता है।

1. भ्रूणावस्था में शारीरिक विकास :

शुक्राणु एवं डिम्ब के संयोग से गर्भ स्थापित होता है। इस अवस्था को वैज्ञानिकों ने भ्रूणावस्था कहा है। इस अवस्था में बालक का शारीरिक विकास तीन अवस्थाओं में विकसित होकर पूर्ण होता है–

1. डिम्बावस्था– इस अवस्था में पहले डिम्ब उत्पादन होता है। इस समय अण्डे के आकार का विकास होता है। इस समय उत्पादन कोष में परिवर्तन होने लगते हैं। इस अवस्था है में कई रासायनिक क्रियाएँ पैदा होती हैं जिससे कोषों में विभाजन होना शुरू हो जाता है।

2. भ्रूणीय अवस्था– इस अवस्था में डिम्ब का विकास प्राणी के रूप में होने लगता है। इस समय डिम्ब की थैली में पानी हो जाता है तथा उसे पानी की थैली की संज्ञा दी जाती है । यह झिल्ली प्राणी के गर्भावस्था में, विकसित होने में सहायता देती है। जब दो माह व्यतीत हो जाते हैं तो प्रथम सिर का निर्माण, सिर नाक, मुँह आदि का बनना प्रारम्भ होने लगता है। इसके बाद शरीर का मध्य भाग तथा टाँगें एवं घुटने विकसित होने लगते हैं।

3. भ्रूणावस्था– गर्भावस्था में द्वितीय माह से लेकर जन्म लेने की अवस्था को भ्रूणावस्था कहते हैं। तृतीय चन्द्र माह के अन्त तक भ्रूण 3 1/2 इंच लम्बा, 3/4 ओंस भार का होता है। दो माह के पश्चात् 10 इंच लम्बा, भार 7 से 10 ओंस हो जाता है। आठवें माह तक लम्बाई 16 से 18 इंच, भार 4 से 5 पौण्ड हो जाता है। जन्म के समय इसकी लम्बाई 20 इंच के लगभग एवं भार 7 या 7 1/2 पौण्ड हो जाता है। विकास की इसी अवस्था में त्वचा, अंग आदि बन जाते हैं तथा बच्चे की धड़कन सरलता से सुनी जा सकती है।

2. शैशवावस्था में शारीरिक विकास :

बालक का शैशवकाल जन्म से 6 वर्ष तक का माना जाता है। इस समय वह अपने माता–पिता तथा संबंधियों पर पूर्ण रूप से निर्भर होता है। उसका सम्पूर्ण व्यवहार मूल प्रवृत्यात्मक होता है, उसके शारीरिक विकास का निर्धारण वंशानुक्रमीय तथा पर्यावरणीय तत्वों पर निर्भर है । अतः शैशवावस्था में शारीरिक विकास निम्न तरह से होता है–

1. **भार तथा लम्बाई–** विभिन्न तथ्यों से स्पष्ट हो चुका है कि जन्म के समय लड़की का भार लड़कों से ज्यादा तथा लम्बाई में लड़के अपेक्षाकृत लड़कियों से ज्यादा लम्बे होते हैं। जन्म के समय शिशु का भार 5 से 8 पौंड तक होता है। 4 माह में 14 पौंड,8 माह में 18 पौंड, 12 माह में 21 पौंड एवं शैशवावस्था की समाप्ति पर 40 पौंड भार विकसित हो जाता है। जन्म के समय शिशु की लम्बाई लगभग 20 इंच होती है। एक वर्ष में 27 से 28 इंच तक, दो वर्ष में 31 इंच तथा शैशवावस्था की समाप्ति तक 40 से 42 इंच तक लम्बाई विकसित होती है

2. **हड्डियाँ–** जन्म के समय शिशु की हड्डियाँ मुलायम तथा लचीली होती हैं। इन छोटी–छोटी हड्डियों की कुल संख्या 270 होती है। जब शिशु को कैल्सियम तथा खनिज पदार्थों से युक्त भोजन दिया जाता है तब ये हड्डियाँ मजबूत और कड़ी होती जाती हैं एवं शिशु का धीरे–धीरे अंगों पर नियंत्रण बढ़ता जाता है । बालिकाओं की बजाय बालकों की हड्डियों में तीव्र विकास होता है।

3. **सिर तथा मस्तिष्क–** नवजात शिशु के सिर का अनुपात शरीर की लम्बाई की बजाय चौथाई होता है। जन्म के समय मस्तिष्क का भार 350 ग्राम होता है। यह भार दो वर्ष में दुगुना तथा 6 वर्ष में 1260 ग्राम हो जाता है।

4. **अन्य अंग–** शिशु के जन्म से 5 या 6 वें माह में नीचे की तरफ अस्थायी दाँत निकलते हैं। एक वर्ष में लगभग आठ दाँत तथा 4 वर्ष तक अस्थायी सभी दाँत निकल आते हैं। शिशु की माँसपेशियों का भार शरीर के भार का 23% होता है। शिशु की हृदय की धड़कन एक मिनट में 140 बार होती है। शैशवावस्था के अंत तक हृदय की धड़कन की संख्या 100 रह जाती है। शिशु की टाँगों तथा भुजाओं का विकास बहुत ही तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में यौनांगों का विकास बहुत ही मन्द गति से होता है ।

3. बाल्यावस्था में शारीरिक विकास :

बाल्यावस्था का काल 6 से 12 वर्ष तक माना जाता है। कोल तथा मोरगेन ने लिखा है–"विकास ही परिवर्तनों का आधार है। अगर बालक का शारीरिक विकास नहीं होता, तो वह कभी प्रौढ़ नहीं हो सकता। अतः हम यहाँ पर क्रो तथा क्रो के अनुसार बाल्यावस्था में होने वाले शारीरिक विकास का निम्न तरह से वर्णन करेंगे–

1. भार तथा लम्बाई– इस अवस्था में बालिकाओं तथा बालकों के भार में उतार–चढाव रहता है । 9 अथवा 10 वर्ष की आयु तक बालक भार में ज्यादा रहते हैं, जबकि इसके बाद बालिकाएँ शारीरिक भार में ज्यादा होती जाती हैं। बाल्यावस्था के अन्त तक इनका भार 80 से 95 पौंड तक होता है । इस अवस्था में लम्बाई 2 से लेकर 3 इंच तक ही बढ़ती है।

2. हड्डियाँ तथा दाँत– इस अवस्था में हड्डियों में मजबूती तथा दृढ़ता आती है। इनकी संख्या 350 तक बढ़ जाती है। दाँतों में स्थायित्व आना शुरू हो जाता है । दाँतों की संख्या 32 होती है। बालकों की बजाय बालिकाओं के दाँतों का स्थायीकरण शीघ्र होता है ।

3. सिर तथा मस्तिष्क– बाल्यावस्था में सिर तथा मस्तिष्क में परिवर्तन होता रहता है। 5 वर्ष की आयु में 95% होता है। इसी तरह से 9 वर्ष की आयु में बालक के मस्तिष्क का भार शरीर के भार का 90% होता है ।

4. अन्य अंग– बालक की माँसपेशियों का विकास बहुत ही धीरे–धीरे होता है । हृदय की धड़कन में कमी होती है। चिकित्सकों ने एक मिनट में 85 बार धड़कन को माना है । बालक तथा बालिकाओं की शारीरिक बनावट में अन्तर स्पष्ट होना शुरू हो जाता है। आयु के 11 तथा 12वें वर्ष में यौनांगों का तीव्रता के साथ विकास होता है।

4. किशोरावस्था में शारीरिक विकास :

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों तथा शरीरशास्त्रियों ने किशोरावस्था को सबसे जटिल अवस्था माना है। अतः हालिंगवर्थ ने लिखा है– "व्यापक दन्त कथा यह है कि हर बालक बदल रहा है। जैसे ही परिपक्वता आती है, लोक वार्ताओं में वर्णित व्यक्तित्व उभरता है।"

अतः हम यहाँ पर किशोरावस्था में शारीरिक विकास का वर्णन निम्न तरह से करेंगे–

1. भार तथा लम्बाई– किशोरावस्था में बालक तथा बालिकाओं के भार और लम्बाई में तीव्रता के साथ वृद्धि होती है। 18 वर्ष के अन्त तक लड़कों का भार लड़कियों के भार से लगभग 25 पौण्ड ज्यादा हो जाता है। शरीरशास्त्रियों के अवलोकनों से स्पष्ट हो चुका है कि लड़कियों की लम्बाई 16 वर्ष तक परिपक्व हो जाती है, जबकि लड़कों की 18 वर्ष तक परिपक्व हो जाती है।

2. हड्डियाँ तथा दाँत– सम्पूर्ण शरीर में हड्डियों का ढाँचा पूर्ण हो जाता है। हड्डियों में मजबूती आ जाती है तथा छोटी–छोटी हड्डियाँ भी एक–दूसरे से जुड़ जाती हैं। इस अवस्था में दाँतों का स्थायीकरण हो जाता है। लड़के तथा लड़कियों में अक्ल के दाँत निकलने शुरू हो जाते हैं। ये दाँत अवस्था के अन्तिम दिनों में निकलते हैं।

3. सिर तथा मस्तिष्क– किशोरावस्था में सिर तथा मस्तिष्क का विकास लगातार जारी रहता है। सिर का पूर्ण विकास मध्य किशोरावस्था में ही हो जाता है। विद्वानों ने इसकी आयु लगभग 15 से 17 वर्ष के बीच मानी है। इस समय मस्तिष्क का भार 1200 से लेकर 1400 ग्राम के बीच में होता है।

4. अन्य भाग— इस अवस्था में माँसपेशियों में सुडौलता तथा मजबूती आनी शुरू हो जाती है। 12 वर्ष की आयु में माँसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का लगभग 33% तथा 16 वर्ष की आयु में लगभग 44% होता है। इस अवस्था में हृदय की धड़कन में पूर्ण कमी आनी शुरू हो जाती है एवं यह एक मिनट में 72 बार होती है। लड़कों तथा लड़कियों में पुरुषत्व और स्त्रीत्व की पूर्ण विशेषताएँ प्रकट होने लगती हैं।

विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक या ज्ञानात्मक विकास।

ज्ञानात्मक विकास एवं उसकी अवस्थायें :

1. **ज्ञानात्मक विकास का स्वरूप एवं विशेषताएं**— बहुतों में यह भ्रम् व्याप्त रहता है कि ज्ञानात्मक विकास एवं बौद्धिक विकास में कोई अन्तर नहीं है किन्तु दोनों में वही अन्तर है जो ज्ञान और बुद्धि में होता है । बुद्धि और ज्ञान में बहुत अन्तर है। ज्ञानात्मक विकास के स्वरूप आदि की व्याख्या से पूर्व ज्ञान और वृद्धि के स्वरूप में सूक्ष्म अन्तर की एक संक्षिप्त व्याख्या यहाँ अपेक्षित है।

ज्ञान अर्जित है किन्तु वृद्धि जन्मजात। हम संसार में बुद्धि लेकर जन्म लेते हैं किन्तु ज्ञान लेकर नहीं। जन्म के समय सभी ज्ञान–शून्य होते हैं। जन्म के समय सभी में केवल संवेदना करने मात्र या शक्ति वरदान रूप में (बुद्धि रूप) में प्राप्त रहती जिसके सहारे व्यक्ति बाह्य संसार के उद्दीपकों से संवेदनशील होकर तथा वातावरण से प्रभावित होकर प्रत्यक्षीकरण करना सीखता है। प्रत्यक्षीकरण ज्ञानयुक्त संवेदना है। प्रत्यक्षीकरण प्रत्येक तरह से ज्ञान का आधार होता है तथा प्रत्यक्षीकरण का आधार संवेदना है। वह बालक जिसके लिए सम्पूर्ण संसार एक अर्थहीन संवेदन था, वह आज परम पंडित, ज्ञानी तथा इस संसार के अनेक सूक्ष्म तत्त्वों का विश्लेषण करने वाला बन जाता है । यह ज्ञान कहाँ से प्राप्त किया गया? यह सम्पूर्ण ज्ञान बालक ने इसी संसार के वातावरण से प्राप्त किया, जिसका आधार संवेदना और प्रत्यक्षीकरण था। इस प्रकार ज्ञान अर्जित है किन्तु बुद्धि अर्जित नहीं है।

ज्ञानात्मक विकास के इस स्वरूप को यदि हम ध्यान से देखते हैं तो इसकी कतिपय विशेषताएं स्पष्ट हो जाती हैं। ज्ञानात्मक विकास की कुछ विशेषताओं को इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।

(i) ज्ञानात्मक विकास एक मानसिक प्रक्रिया है।

(ii) इसमें बाह्य सूचनाओं को सिद्धान्त रूप में ग्रहण कर व्यावहारिक रूप में क्रियान्वयन की क्षमता विद्यमान रहती है।

(ii) ज्ञानात्मक विकास का स्वरूप वैयक्तिक होता है। यह वैयक्तिकता व्यक्ति के अनेक ज्ञान संचय एवं प्रक्रिया में देखा जाता है। जैसे–किसी मूर्त या अमूर्त ज्ञान के प्रयोग में, किसी प्रत्यक्षीकरण में, किसी प्रकार के ज्ञान को दूसरे क्षेत्र में स्थानान्तरित करने में, किसी ज्ञान की व्याख्या,करने में या किसी बिम्बों या प्रतीकों के उपयोग आदि में। ज्ञान की इन सभी परिस्थितियों में व्यक्ति की वैयक्तिकता कार्य करती है। इस वैयक्तिकता का कारण व्यक्ति के ज्ञानात्मक विकास के स्वरूप एवं परिस्थिति पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए फल शब्द एक उद्दीपक है।

'फल' बेचने वाला इसका प्रयोग सेव, केला, सन्तरा के रूप में करता है, तो परीक्षार्थी अपने परीक्षाफल के रूप में करता है। उसी तरह सन्त पाप–पुण्य के फल का प्रत्यक्षीकरण करता है तात्पर्य यह है कि ज्ञानात्मक विकास की यह एक विशेषता होती है कि उसमें वैयक्तिक गश्ंिण विद्यमान होता है।

(iv) चूँकि ज्ञानात्मक विकास सभी प्रकार के ज्ञान से सम्बन्ध रखता है इसलिए यह एक अत्यन्त पेचीदी मानसिक प्रक्रिया है। इसका विस्तार संवेदना से प्रारम्भ होकर तर्क एवं निर्णय के संतुलित ज्ञान तक फैला है । संवेदना से तर्क एवं निर्णय के बीच प्रत्यक्षीकरण,प्रतिमायें, स्मृति, कल्पना, चिन्तन आदि मानसिक प्रक्रियाएं सम्मिलित हैं। ज्ञानात्मक विकास में ये सभी प्रक्रियायें श्रृंखलाबद्ध रूप में विद्यमान रहती हैं

(क) किन्तु ज्ञानात्मक विकास अत्यन्त जटिल होते हुए भी अपनी चयनात्मकता की विशेषता के कारण अपनी दुरूहता कम किए हुए है। अर्थात् वातावरण में विद्यमान अनेक उद्दीपकों में से अपने प्रयोजन के अनुकूल उन्हीं उद्दीपकों को चुनता है जिनकी उसे तत्काल आवश्यकता होती है। इसी प्रकार ज्ञान का विशाल भण्डार मस्तिष्क में विद्यमान है किन्तु उद्दीपकों के अनुसार जिसकी आवश्यकता पड़ती है, मस्तिष्क उसी ज्ञान को चुनकर प्रयोग करता है। मनोविज्ञान का प्रवक्ता "ज्ञानात्मक विकास" पर व्याख्यान देते समय सन्दर्भित विषयवस्तु से सम्बन्धित ज्ञान को ही चुन–चुन कर प्रस्तुत करता है। अर्थात् जिस किसी ज्ञान की इकाई की आवश्यकता होती है, ज्ञानात्मक पक्ष उसे अति चेतना के पटल पर तैराने लगता है।

इस प्रकार ज्ञानात्मक विकास व्यक्ति के विभिन्न प्रकार के व्यवहारों का नियन्त्रण एवं संचालन करता है। व्यक्ति कब कैसा व्यवहार करता है या करेगा, यह ज्ञानात्मक विकास की परिधि पर आधारित होता है। अर्थात् वातावरण में विद्यमान उद्दीपकों और उनके प्रति की जाने वाली व्यक्ति की अनुक्रियाओं के बीच ज्ञानात्मक भण्डार विद्यमान रहकर उचित अनुक्रिया का संचालन करता है।

2. **ज्ञानात्मक विकास की अवस्थायें**– विकास की अवस्थाओं के सन्दर्भ में डॉ. अर्नेस्ट जोन्स का एक वाक्य उद्धृत करने से विषयवस्तु अधिक बोधगम्य हो सकती है । "मानव विकास की स्पष्ट चार परिभाषित अवस्थायें हैं : शैशवावस्था, पाँच वर्ष की आयु तक, बाल्यावस्था, बारह वर्ष की आयु तक, किशोरावस्था, अठारह वर्ष की आयु तक, तथा अन्तिम, परिपक्वावस्था या प्रौढ़ावस्था"। डॉ. जोन्स का यह वाक्य स्पष्ट करता है कि बालक के विकास की अवस्थायें उसकी आयु के अनुसार होती हैं– शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था। यद्यपि यह विभाजन अत्यन्त पुराना पड़ गया है क्योंकि विकास का क्रम निरन्तर चलता है। इनमें कोई विभाजन रेखा नहीं खड़ी की जा सकती। अर्थात् एक बालक अपनी पाँच वर्ष की अवस्था तक शिशु है तथा छठे वर्ष में प्रवेश करते ही बाल्यावस्था के सभी लक्षणों को छोड़कर किशोरावस्था के लक्षणों से परिपूर्ण हो जाता है–ऐसी प्रक्रिया स्वाभाविक नहीं प्रतीत होती।

जीन पियाजे ने अपनी ज्ञानात्मक अधिगम के सिद्धान्त में ज्ञानात्मक विकास को निम्न चार भागों में विभाजित किया है

(i) संवेदी पेशीय अवस्था

(ii) पूर्व क्रियात्मक अवस्था

(iii) मूर्त क्रियात्मक अवस्था

(vi) औपचारिक क्रियात्मक अवस्था

1. संवेदी पेशीय अवस्था– संवेदी–पेशीय से तात्पर्य संवेदना तथा शारीरिक क्रियाओं से है अर्थात् इस अवस्था में बालक संवेदना तथा अपनी अव्यवस्थित शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से ज्ञान का आभास मात्र प्राप्त करता है। पियाजे के अनुसार यह अवस्था दो वर्ष तक रहती है। जान पी. डिसेको इस अवधि को आधा वर्ष घटा कर डेढ़ वर्ष ही कहता है किन्तु इस विवाद से तथ्य में अन्तर नहीं आता है। ज्ञानात्मक विकास की इस अवस्था के बारे में जान पी. डिसेको ने लिखा है "ज्ञानात्मक अवस्था का प्रथम काल संवेदी–पेशीय काल है जो लगभग डेढ़ वर्ष पर समाप्त हो जाता है। इस अवधि के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की सम्पूर्ण क्रियाएं शरीर से सम्बन्धित ही होती हैं। उत्तरार्द्ध भाग में वह ऐसे व्यावहारिक बौद्धिक तरीकों का विकास करता है जिससे वह बाह्य जगत के पदार्थों के साथ क्रिया अपने शरीर से अलग बाह्य पदार्थो की ओर नहीं होती किन्तु आधी अवधि के बाद (जन्म के लगभग दस माह बाद) वह बाह्य पदार्थों के प्रति भी क्रियात्मक चेष्टा करने लगता है। अतः यह अवस्था सहज क्रियाओं तथा बाह्य पदार्थों के प्रति उत्पन्न संवेदना का होता है जिसके माध्यम से बालक सभी कर्मेन्द्रियों की संवेदना प्राप्त करता है जैसे गन्ध, स्वाद, ध्वनि, स्पर्श, पदार्थों का अवलोकन आदि । इन सभी संवेदनाओं की बार–बार आवृत्ति से उन उद्दीपकों की विशेषताओं का धीरे–धीरे उसे ज्ञान प्राप्त होने लगता है जिसकी मात्र वह अनुभूति कर सकता है, उसकी अभिव्यक्ति नहीं कर सकता। इस अवस्था में बालक अपनी क्रियाओं से ही अपने में मस्त रहता है। इस प्रथम अवस्था को विकास–क्रम के अनुसार मेरी ऑन स्पेन्सर पुलास्की ने निम्न छः अवस्थाओं में विभाजित किया है।

पहली अवस्था (0 से 1 मास तक) – यह पूर्ण स्वकेन्द्रित अवस्था है जिसमें बालक अपने आत्म तथा बाह्य वास्तविकता में भेद नहीं करता। यहाँ तक कि वह अपने स्व से अनभिज्ञ रहता है।

दूसरी अवस्था (1 से 4 मास तक) – संयोगवश कभी–कभी नयी अनुक्रिया का सूत्रपात हो जाता है जो पूर्णरूप से सहज क्रियाओं से सम्बन्धित रहती है। बालक अपने हाथ–पैर को बार–बार तेजी से हिलाते–डुलाते रहने के कारण अचानक कभी मुँह में पड़ जाता है और वह उसे पीने लगता है। यह क्रिया सुनिश्चित नहीं बल्कि संयोगवश ही होती है।

तीसरी अवस्था (4 से 8 मास तक) – इस अवधि में नयी–नयी अनुक्रियाओं के सूत्र बनने लग जाते हैं तथा वह ऐच्छिक रूप से उनकी पुनरावृत्ति करने लगता है ताकि वातावरण में कुछ रूचिकर परिवर्तन हो।

चौथी अवस्था (8 से 12 माह तक) – इस अवधि में शिशु की अधिकांश क्रियाएं जानबूझ कर होने लगती हैं तथा शिशु अपेक्षाकृत अधिक क्रियाशील हो जाता है। उसमें प्रत्यक्षीकरण की क्षमता का विकास हो जाता है तथा वह अपने समीप के अवरोध उत्पन्न करने वाली वस्तुओं को खींचने तथा हटाने लगता है। वह माँ–बाप के हाथ को भी आशा से पकड़ता है कि वह जो चाहता है उसे मान लिया जाये। इसी अवस्था में सामने से एकाएक हटा ली गई वस्तु या खिलौनों को खोजने की प्रवृत्ति का विकास प्रारम्भ हो जाता है।

पाँचवीं अवस्था (12 से 18 माह तक) – इस अवधि में बालक अपनी क्रियाओं के प्रयोग में और अधिक जागरूक हो जाता है। बहुत से उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए शिशु विभिन्न प्रकार के तरीकों को खोज लेता है। एक पदार्थ को बार–बार एक स्थान पर गिराते–गिराते फेंकना सीख जाता है। यदि किसी

वस्तु को बिस्तर के नीचे गिरा दिया जाये तथा पुनः उसे उस स्थान से हटाकर दूसरे बिस्तर के नीचे रख दिया जाये तो इस अवस्था में शिशु दूसरा वाला बिस्तर हटाने लगता है। यह इसलिए नहीं करता कि वस्तु रखते हुए देख लिया है बल्कि वह सर्वप्रथम पहले बिस्तर के नीचे ही खोजता है। पहले बिस्तर के नीचे वस्तु न मिलने पर ही दूसरे बिस्तर के पास जाकर खोजने की प्रक्रिया करता है। अर्थात् इस अवस्था में शिशु में इतनी चिन्तन शक्ति का विकास हो गया होता है कि यदि वस्तु यहाँ नहीं है तो अन्यत्र कहीं अवश्य होगी। इस प्रकार इस अवस्था के अन्त तक वह स्थान, समय, कार्य, कारण का सम्बन्ध तथा नकल की प्रवृत्ति का ज्ञान उपलब्ध कर लेता है।

– **छठी अवस्था** (1 1/2 वर्ष से 2 वर्ष तक) – संवेदी–पेशीय अवस्था की इस अवधि में शिशु विभिन्न प्रकार की क्रियाओं की कल्पना करने लगता है तथा उन्हें क्रियान्वित भी करने लगता है । शिशु का यह कार्य उसी प्रकार होता है जिस प्रकार कोहलर का चिंपैजी अधिगम के सूझ के सिद्धान्त में किसी उद्देश्य की प्राप्ति में साधनों का प्रयोग करता है। 1963 में जीन पियाजे ने स्वयं इसी तरह के व्यवहारों का वर्णन अपनी पुत्री जैक्विलिन के बारे में करते हुए लिखा है कि किस प्रकार उसकी पुत्री ने छिपायी गयी मुद्रा को पाने का प्रयास किया। पियाजे महोदय ने मुद्रा को अपने हाथ में लेकर अपना हाथ गद्दे के नीचे रखा । पुनः हाथ को बाँधे (मुट्ठी) हुए गद्दे से बाहर निकाल लिया। उसने पुनः अपने हाथ को तुरन्त एक कपड़े में लपेट कर छिपा लिया तथा पुनः बाहर निकाल लिया । मुद्रा ढूँढ़ने की भावना से पुत्री ने अपने पिता के हाथ न देखकर पहले गद्दे के नीचे, फिर उस कपड़े में देखा तथा मुद्रा पाकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस प्रकार पियाजे ने अपनी पुत्री के इस तरह के कई व्यवहारों का अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि इस अवधि में शिशु में इस प्रकार की कल्पनात्मक प्रक्रिया के विकास में ज्ञानात्मक आत्मसात करने की शक्ति तथा ज्ञानात्मक समायोजन की प्रक्रिया कार्यरत रहती है । इस प्रकार संवेदी–पेशीय अवस्था की यह अन्तिम अवधि है जिसमें शिशु कल्पना, चिन्तन तथा स्थूल निर्णय की शक्ति को सामान्य स्तर पर विकसित कर लेता है।

2. **पूर्व क्रियात्मक अवस्था**– जान पी. डिसेको ने पियाजे महोदय को उद्धृत करते हुए लिखा है– "ज्ञानात्मक विकास की दूसरी अवस्था डेढ़–दो वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर बालक के सात–आठ वर्ष की आयु तक चलती है। पियाजे इसे बुद्धि –प्रदर्शन अवधि कहता है क्योंकि बालक वास्तविकता को भाषा एवं मानसिक प्रतिमाओं के रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता अर्जित कर लेता है। बालक के लिये यह अवधि जादूमय प्रतीत होती है क्योंकि इस अवधि में वह शब्द, चित्र संवेग, कल्पना तथा स्वन आदि सभी को बाह्य जगत के यथार्थ ही अंश मानता है।'

पुलास्की ने इस अवस्था को विकासक्रम की दृष्टि से निम्न अवस्थाओं में विभाजित किया हैः

पूर्व सम्प्रत्यात्मक अवस्था– यह अवधि दो से चार वर्ष तक चलती है। इस अवधि में प्रत्यक्ष ज्ञान में स्थिरता आती है तथा उन्हें बालक चित्र खींचने, भाषा, स्वप्न तथा प्रतीकात्मक खेलों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। प्रारम्भ में सम्प्रदायों के निर्माण में अति सामान्यीकरण करता है जैसे सभी कुत्तों को अपना ही कुत्ता कहता है। इस अवधि में मूर्त सम्प्रदायों का निर्मित होना प्रारम्भ होता है।

प्रत्यक्षात्मक अवस्था– यह अवधि 4 वर्ष से 7 वर्ष या 8 वर्ष तक चलती है। इस अवधि में पूर्व तार्किक चिन्तन का उदय होता है अर्थात् तार्किक चिन्तन के आधारभूत अथवा सहायक तत्त्वों का विकास प्रारम्भ होता है । त्रुटि एवं प्रयास के माध्यम से वह सम्प्रदायों के सही सम्बन्धों की खोज करने लगता है। ज्ञानात्मकता के इसी पक्ष के विकास के कारण वह कभी–कभी कहता है कि चाचा जी आज नये पोशाक में पहचान में नहीं आ रहे हैं। वह न पहचानने के स्वरूप को भी पहचान लेता है। इस अवस्था में बालक में समानता एवं असमानता का बोध होने लगता है। वह समान पदार्थों को एक जगह तथा असमान को दूसरे जगह रखने लगता है। इसके लिए तर्क भी प्रस्तुत करने लगता है। वैसे बालक प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में पदार्थ के सम्पूर्ण अंगों का प्रत्यक्षीकरण न कर आंशिक प्रत्यक्षीकरण ही कर पाता है।

3. **मूर्त क्रियात्मक अवस्था–** ज्ञानात्मक विकास की अवस्था की यह अवधि बालक के 7.8 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होकर 11, 12 वर्ष की आयु तक चलती है। बालक इस अवधि में सामान्य तार्किक चिन्तन करने लगता है किन्तु अभी उसका चिन्तन मूर्त पदार्थों के सन्दर्भ में ही होता है अब दो पदार्थों के समानता तथा असमानता के कारणों पर भी प्रकाश डालने में सक्षम हो जाता है। कार्य–कारण सम्बन्ध का ज्ञान भी इस अवस्था में विकसित होने लगता है। कार्य–कारण सम्बन्धों में ज्ञान के आधार पर बालक में निर्णय शक्ति का भी विकास होने लगता है। चूँकि इस अवधि में बालक अपने को कार्यों में व्यस्त रखने की क्षमता विकसित कर लेता है। इसलिए जीन पियाजे ने इस अवधि को क्रियात्मक अवस्था कहा है ।

इस अवधि में तर्क चिन्तन का विकास तो होता है किन्तु वे मूर्त वस्तुओं को एक सामान्य विहंग में निरीक्षण ही कर पाते हैं। उनकी सूक्ष्मता पर उनका ध्यान नहीं जाता। जीन पियाजे ने इस अवस्था के बालकों के विषय में उनके क्रम में रखने एवं उनका आदान–प्रदान करने की क्रिया के कारण परिलक्षित होती है किन्तु वे इन तथ्यों की व्याख्या नहीं कर सकते । इस प्रकार हम देखते हैं कि इस अवस्था का बालक मूर्त तथा अमूर्त चिन्तन एवं तर्क के बीच उलझा सा रहता है ।

4. **औपचारिक क्रियात्मक अवस्था–** यह किशोरावस्था के उदय की अवस्था है। इस अवस्था में शारीरिक एवं मानसिक दोनों पक्षों में आमूलचूल परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन इतना अचानक होता प्रतीत होता है कि स्वयं बालक भी उन परिवर्तनों के प्रति समायोजित होने में कठिनाई महसूस करता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे तूफानी अवस्था कहा है तथा कुछ ने इसे मानसिक उथल–पुथल की अवस्था के रूप में वर्णित किया है । ज्ञानात्मक विकास की अवस्था के सन्दर्भ में यह अवस्था 11, 12 वर्ष की आयु के पश्चात् से प्रारम्भ होकर 15, 16 वर्ष की आयु तक चलती है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस अवस्था का आंकलन 13 वर्ष की आयु से 19 वर्ष की आयु के बीच किया है।

इस अवस्था में बालक अमूर्त चिन्तन के प्रति प्रौढ़ की भाँति क्षमता अर्जित करने लगता है। कभी–कभी वह प्रौढ़ को किसी विशेष समस्या पर समुचित राय देने की भी क्षमता का विकास करने लगता है। किशोर बालक अपनी इस अवस्था में किसी विचार के प्रति सिद्धान्त निर्माण करने तथा वर्तमान संसार की क्रिया–कलापों की आलोचना करने के लिए अनेक सम्भव तरीकों का तथा अन्य विकल्पों की संकल्पना करने लगता है। उसकी मानसिकता इतनी प्रगतिशील प्रतीत होने लगती है कि वह तात्कालिक सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों की खुलकर आलोचना करता है।

संवेगात्मक विकास से आप क्या समझते हैं? जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक विकास की स्थिति स्पष्ट कीजिए।

संवेगात्मक विकास :

संवेग से आशय– संवेग शब्द अंग्रेजी भाषा के 'Emotion* शब्द का हिन्दी रूपांतर है। अंग्रेजी का Emotion शब्द लैटिन भाषा के 'इमोवर' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है भड़क उठना या उद्दीप्त होना। जहाँ तक जीव के शरीर के भड़कने एवं उद्दीप्त होने की स्थिति का प्रश्न है, संवेग तथा प्रेरणा में कोई अंतर नहीं है। संवेग भावों के अत्यंत निकट है। जब भाव या अनुभूति की मात्रा बढ़ जाती है तथा शरीर में उदीप्त स्थिति का कारण बनती है तब उसे संवेग कहते हैं। क्रोध, भय, ईर्ष्या, द्वेष, प्रेम, पीड़ा आदि को संवेगों के अंतर्गत रखा गया है । संवेगों का मानव व्यवहार में बड़ा महत्व है। ये हमारे व्यवहार को भी प्रेरित करते हैं। संवेगों का बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास पर प्रभाव पड़ता है। संवेगों का विकास होने पर अतिरिक्त शक्ति का संचार होता है तथा व्यक्ति ऐसे कार्य कर दिखाता है जो सामान्य अवस्था में संभव न हों। जैसे भय की परिस्थिति में तीव्र गति से काँटे,ऊंचे नीचे गड्ढों को लांघकर भागना आदि । वहीं दूसरी तरफ तीव्र संवेग मानसिक तनाव पैदा करके बच्चों के ध्यान को भंग कर देते हैं, जिससे अध्ययन में बाधा पैदा होती है।

शैशवावस्था– इस अवस्था में बच्चे के संवेग अधिक निश्चित तथा स्पष्ट हो जाते हैं। संवेगों की तीव्रता में कमी आने के कारण व्यवहार में भी परिवर्तन दिखाई देता है । बच्चा भय तथा क्रोध पर नियंत्रण करने लगता है। मानसिक विकास से पैदा समझ के कारण भाषा का विकास होता है। अतः अब वह क्रिया की बजाय अपने भावों को भाषा के माध्यम से प्रकट करता है। उत्तेजना पैदा करने वाली परिस्थितियों के प्रति सचेत हो जाता है। हास्यास्पद स्थिति से बचने के लिए बच्चा अपने संवेगों को परिवर्तित करने लगता है। इस अवस्था में क्रोध, भय, ईर्ष्या, द्वेष, हर्ष तथा प्रेम आदि संवेग पाये जाते हैं।

बाल्यकाल तथा संवेगात्मक विकास– शैशवावस्था में विकसित संवेगों की अभिव्यक्ति ही बाल्यकाल में होती है। इस काल में दुःख–सुख के संवेग बहुत प्रभावशाली होते हैं। बालक अपनी गलती पर दुःख तथा प्रशंसा पर आनंद का अनुभव करता है। इस अवस्था में बालक में सामूहिक भावना का विकास हो जाता है तथा वह अपने साथियों से प्रेम, घृणा, द्वेष एवं प्रतिस्पर्धा की भावना अभिव्यक्त करने लगता है।

बाल्यावस्था में बच्चों के संवेगों में स्थायित्व आ जाता है। बालक भय तथा क्रोध पर नियंत्रण करने लगता है। यद्यपि बालकों के संवेगों में उग्रता होती है, उनका रूप परिवर्तित होता रहता है तथा उनमें व्यक्तिगत भिन्नता पाई जाती है। इस अवस्था में बालकों में कई कारणों से संवेगात्मक अनुभव तथा प्रभाव के कारण कुछ दूषित प्रवृत्तियाँ एवं आदतें निर्मित हो जाती हैं, जैसे झूठ बोलना, गलतियों को छिपाना, दूसरे को चिढ़ाना तथा कष्ट पहुँचाना आदि।

किशोरावस्था– किशोरावस्था में संवेगों का विकास तीव्र गति से होता है। किशोरावस्था में शारीरिक तथा मानसिक विकास भी तीव्र गति से होते हैं अतः इस अवस्था में बच्चा समायोजन की समस्या अनुभव करने लगता है। इच्छा पूर्ति में बाधा, प्रतिकूल, पारिवारिक संबंध, स्वयं की अयोग्यता, नई परिस्थितियों में समायोजन न कर पाना आदि कारकों के कारण किशोरों में असंतुलित संवेगात्मक स्थिति पैदा होती है।

शरीर के विकास से संवेगों का विकास प्रभावित होता है। स्वस्थ शरीर वाले किशोरों में संवेगात्मक अस्थिरता ज्यादा नहीं होती है जबकि निर्बल (अस्वस्थ) किशोर में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है। किशोर के ज्ञान, रुचियों तथा इच्छाओं की वृद्धि के साथ संवेगों को पैदा करने वाली घटनाओं की परिस्थिति में परिवर्तन आ जाता है।

शैशवावस्था से किशोरावस्था तक बालक के सामाजिक विकास का वर्णन कीजिए।

सामाजिक विकास :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जन्म से ही वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति समाज के बगैर नहीं कर पाता है। अच्छा सामाजिक जीवन व्यतीत करने हेतु उसमें सामाजिक गुणों का विकास होना आवश्यक है। विभिन्न व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहार में उसका सामाजिक विकास दिखाई देता है।

शैशवावस्था– 2 माह के पूर्व बालक जो प्रतिक्रिया करता है, उसे सामाजिक प्रतिक्रिया के नहीं कहा जा सकता है, पर 2 माह के बाद शिशु जो प्रतिक्रियायें करता है, उसे सामाजिक प्रतिक्रिया कहा जा सकता है। 2 वर्ष का बच्चा अकेले खिलौने से खेलता है। तीन वर्ष की आयु में दूसरे बच्चों के साथ खेलता है, सामूहिक खेलों में भाग लेता है तथा तब वह अपनी आयु समूह की छोटी सी दुनिया का सदस्य बन जाता है। इस अवस्था में अधिकतर बच्चे एक सा ही सामाजिक व्यवहार करते हैं। लड़के तथा लड़कियों के सामाजिक विकास में विशेष अंतर नहीं होता है। लड़कियाँ गुड़ियां खेलती हैं। लड़के अनुकरणात्मक खेल खेलते हैं।

बाल्यावस्था– इस अवस्था में बच्चे सामाजिक दायरे में ज्यादा आनंद का अनुभव करते हैं। बाल्यावस्था में सामाजिक विकास पर खेलों एवं स्कूल के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। अतः उस अवस्था में बच्चों को ऐसे खेल खिलाने चाहिए जो सामूहिकता को प्रोत्साहित करें तथा विद्यालय में भी सामूहिक कार्यों को करने की व्यवस्था होनी चाहिए। इस अवस्था के बच्चों में सहभागिता की भावना पैदा हो जाती है। वह अपने समूह के सदस्यों के प्रति स्नेह, प्रेम, सहयोग की भावना प्रकट करने लगता है। उसके साथ ही बच्चे में सहनशीलता की भावना भी बढ़ जाती है।

किशोरावस्था– जब बच्चे किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं, तो उनमें शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास की प्रक्रिया भी चलती रहती है। किशोरावस्था में बच्चे में विविध रुचियों का विकास होने से वह किसी एक टोली में संबंधित नहीं रहता है वरन् विभिन्न रुचियों तथा दृष्टिकोण वाले अनेक समूहों से संबंध बढ़ाने लगता है। 14 वर्ष की आयु के बाद मित्रों की संख्या घटकर सीमित रह जाती है। इस अवस्था में बालकों की बालिकाओं से एवं बालिकाओं की बालकों से मित्रता बढ़ाने की इच्छा प्रबल हो जाती है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण बढ़ जाने के कारण वे अपनी वेशभूषा तथा बनाव श्रृंगार पर अधिक ध्यान देने लगते हैं। किशोरों का अपने माता–पिता से किसी न किसी विषय पर मतभेद् चलता रहता है। माता–पिता इस अवस्था में बच्चों जैसा व्यवहार करते हुए उसे सदैव उपदेश देते रहते हैं तथा उन कार्यों के लिए उसे मना करते हैं, जो वे स्वयं करते हैं, इससे किशोरों के मन में कई बार तनाव तथा विरोध की भावना उत्पन्न होती है। किशोर भावी व्यवसाय के बारे में चिंतित रहते हैं एवं इन व्यवसायों में उपलब्ध होने वाली सश्ंिलता अथवा असफलता उनके सामाजिक विकास को प्रभावित करती है।

मूल्य–परक (नैतिक)विकास की विभिन्न अवस्थाओं तथा उसे प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों का वर्णन करो।

बालक अपने वातावरण में कई व्यक्तियों एवं वस्तुओं से घिरा रहता है। विकास क्रम में वह धीरे–धीरे इनके सम्पर्क में आने लगता है तथा इनसे संबंध स्थापित करने लगता है। इन संबंधों के कारण वह सुख–दुःख का अनुभव करने लगता है । फलस्वरूप वातावरण में उपस्थित व्यक्तियों तथा विभिन्न वस्तुओं के प्रति इसके भीतर मनोवृत्तियों का निर्माण होने लगता है बालक अपने व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर कुछ व्यक्तियों में स्थायी रूप से रुचि लेने लगता है । जब बालक कुछ बड़ा हो जाता है, तब अपने परिवार, समुदाय एवं समाज के द्वारा अपनायी हुई नैतिक भावनाओं, आदर्शों या मूल्यों को भी ग्रहण करने लगता है। यह प्रक्रिया एक क्रमिक प्रक्रिया होती है तथा इस दौरान बालक को यह चेतना भी नहीं रहती कि वह सामाजिक आदर्शों को सीख रहा है। धीरे–धीरे बालक का अधिकांश व्यवहार उसके परिवार, विद्यालय एवं समुदाय द्वारा स्वी–त नैतिक मूल्यों के नियंत्रण में आ जाता है। सामाजिक नैतिक मूल्यों को अपनाकर ही बालक अपने परिवार अथवा समुदाय की वास्तविक सदस्यता प्राप्त कर पाता है।

मूल्य व्यक्ति की वह नैतिक शक्ति है। जिसकी मदद से वह अच्छे–बुरे एवं उचित–अनुचित में अन्तर समझ पाता है। मूल्यों को बालक शुरू में अपने सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश से सीखते हैं एवं जब वह उन्हें भली–भाँति ग्रहण कर लेता है, तो वे नैतिक विशेषताएँ बन जाती है।

बालक अपने जीवन प्रसार में जिस परिवार, पाठशाला तथा समाज का सदस्य बनता है उनके कुछ विशेष सामाजिक और नैतिक मूल्य एवं आदर्श होते हैं। बालक को इन सामाजिक मानों के अनुरूप बनना पड़ता है तथा उन्हीं के द्वारा निर्देशित आचरण करने पड़ते हैं। अतः सामाजिक तथा नैतिक मूल्य बालक के सम्पूर्ण आचरण के निर्धारक माने जाते हैं एवं उनका उसके व्यवहार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। भिन्न–भिन्न संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न तरह के मूल्य विकसित होते हैं। यही नहीं एक ही बालक के परिवार एवं उसके समुदाय के मूल्यों में भी अन्तर पाया जाता है। अगर बालक के परिवार एवं उसके समुदाय के नैतिक स्तरों में महत्त्वपूर्ण अन्तर हुआ तो बालक के आचरण पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है तथा उसके सामने मानसिक द्वन्द्व की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसी दशा में सबसे उत्तम बात यह समझी जाती है कि व्यक्ति अपने पुराने तथा नये दोनों समुदायों के मुख्य–मुख्य नैतिक मूल्यों को स्वीकार कर ले। लेकिन ऐसा तभी सम्भव है जब दोनों समुदायों के मूल्यों में परस्पर बहुत ज्यादा विरोध न हो।

मूल्य परक (नैतिक) विकास की अवस्थाएँ :

मनोवैज्ञानिकों ने बालक के नैतिक विकास की भिन्न–भिन्न अवस्थाएँ निर्धारित की हैं। फिर भी एक ही आयु के बालकों में नैतिक विकास में भिन्नता देखी जाती है।

1. नवजात शिशु– नवजात शिशु में नैतिकता संबंधी भावना अविकसित होती है।

2. प्रथम तीन वर्ष– प्रारम्भिक वर्षों में बालक आत्मकेन्द्रित होता है। उसका प्रत्येक व्यवहार संवेगजनक होता है। वह नैतिकता को ठीक–ठीक नहीं समझ पाता।

3. तीन से छः वर्ष की आयु – इस आयु में नैतिकता का पूरा–पूरा विकास नहीं होता है। उसका व्यवहार अब भी प्रौढ़ व्यक्तियों की प्रशंसा तथा निन्दा पर निर्भर करता है। बालक अभी 'झूठ' तथा 'सच' की पहचान नहीं कर सकता। उसकी किसी बात को 'झूठ' कहने पर वह हैरान होता है।

4. छः से नौ वर्ष की आयु – छः वर्ष की आयु में बालक में ध्वंसात्मक प्रवृत्ति जोर पकड़ लेती है। इस अवस्था के बालक प्राथमिक पाठशाला के छात्र होते हैं। वे न्याय तथा दयानंतदारी में बड़ी गहरी आस्था रखते हैं। उनके व्यवहार में अभी भी संवेगात्मकता का पर्याप्त अंश रहता है।

5. नौ से बारह वर्ष की आयु – इस अवस्था में वह अच्छाई तथा बुराई को समझने लगता है। किशोरावस्था से पहले बालक नैतिक विकास की दृष्टि से अभी भी अपरिपक्व होता है। प्रौढ़ों के उपदेशों की बजाय वह उनके व्यावहारिक जीवन से ज्यादा प्रभावित होता है।

मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व :

बालक के मूल्यों के विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्व निम्न हैं–

1. **बुद्धि का प्रभाव**– बालक की बुद्धि का प्रभाव उसकी नैतिकता के विकास पर भी पड़ता है। बालक नैतिक तथा अनैतिक आचरणों, सत्य एवं असत्य निर्णयों और अच्छी तथा बुरी भावनाओं के अन्तर को अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर ही समझ पाता है

2. **आयु का प्रभाव**– स्याने बालकों में अल्प आयु के बालकों की बजाय बुरे–भले, उचित–अनुचित एवं सत्य–असत्य के भेद को समझने की क्षमता ज्यादा विकसित हो जाती है।

3. **यौन भिन्नता का प्रभाव**– बालक तथा बालिकाओं में नैतिक एवं चारित्रिक स्तरों में यौन के कारण भी भिन्नता दिखाई पड़ती है। बालक–बालिकाओं के भीतर ग्रंथि संस्थान भिन्न–भिन्न तरह का होता है । इसकी भिन्नता का प्रभाव उनके चरित्र, नैतिकता तथा व्यक्तित्व के ऊपर बहुत ज्यादा पड़ता है।

4. **घर का प्रभाव**– बालक की नैतिकता तथा चरित्र को प्रभावित करने वाला सबसे शक्तिशाली तत्व उसका परिवार माना जाता है। जिन घरों में बालकों को ज्यादा प्यार मिलता है, उन पर पर्याप्त ध्यान दिया जाता है एवं उनके साथ सद्भावनापूर्ण व्यवहार किया जाता है, वहाँ के बालकों का परिवार समायोजन अच्छे तरह का होता है।

5. **विद्यालय का प्रभाव**– बालक के नैतिक विकास में उसके विद्यालय का बहुत बड़ा हाथ होता है। विद्यालय के शिक्षक, शिक्षकों द्वारा चुना गया पाठ्यक्रम, विद्यालय के साथी एवं विद्यालय की व्यवस्था ये चार तत्व उसके ऊपर विभिन्न रूपों में अपना प्रभाव डालते हैं।

6. **धार्मिक संस्थाओं का प्रभाव**– धार्मिक संस्थाओं की स्थापना व्यक्तियों के भीतर नैतिक तथा चारित्रिक विकास के लिए होती है, लेकिन इन धार्मिक संस्थाओं का प्रभाव बालक के ऊपर उसी सीमा तक पड़ सकता है जिस सीमा तक उसके माता–पिता अथवा शिक्षक उसमें विश्वास रखते हैं।

विभिन्न अवस्थाओं में भाषा विकास का आशय तथा उसको प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन करो।

भाषा विकास बौद्धिक विकास की सर्वाधिक उत्तम कसौटी मानी जाती है। बच्चे को सर्वप्रथम भाषा ज्ञान परिवार से होता है। तत्पश्चात् विद्यालय तथा समाज के सम्पर्क में उनका भाषायी ज्ञान समृद्ध होता है।

कार्ल सी. गैरिसन के अनुसार– "स्कूल जाने से पूर्व बच्चों में भाषा ज्ञान का विकास उनके बौद्धिक विकास की सबसे अच्छी कसौटी है। भाषा का विकास भी विकास के अन्य पहलुओं के लाक्षणिक सिद्धान्तों के अनुसार होता है। यह विकास परिपक्वता एवं अधिगम दोनों के फलस्वरूप होता है तथा इसमें नई अनुक्रियाएँ सीखनी होती हैं एवं पहले की सीखी हुई अनुक्रियाओं का परिष्कार भी करना होता है।"

1. शैशवावस्था में भाषा विकास :

जन्म के समय शिशु क्रन्दन करता है। यही उसकी पहली भाषा होती है। इस समय है उसे न तो स्वरों का ज्ञान होता है तथा न व्यंजनों का। 25 सप्ताह तक शिशु जिस तरह की ध्वनियाँ निकालता है, उनमें स्वरों की संख्या ज्यादा होती है।

10 मास की अवस्था में शिशु पहला शब्द बोलता है, जिसे बार–बार दोहराता है। एक वर्ष तक शिशु की भाषा समझना कठिन होता है। सिर्फ अनुमान से ही उसकी भाषा समझी जा सकती है। मेक–कॉर्थी ने 1950 में एक अध्ययन किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि 18 मास के बालक की भाषा 26% समझ में आती है। शुरू में बालक एक शब्द से वाक्यों का बोध कराते हैं । स्किनर के अनुसार–"आयु –स्तरों पर बालकों के शब्द ज्ञान के गुणात्मक पक्षों के अध्ययन से पता चलता है कि शब्दों की परिभाषा के स्वरूप में वृद्धि होती है।" शैशवावस्था में भाषा विकास जिस ढंग से होता है, उस पर परिवार की संस्कृति एवं सभ्यता का प्रभाव पड़ता स्मिथ ने शैशवावस्था में भाषा के विकास के क्रम का परिणाम इस तरह व्यक्त किया है।

सारणी : भाषा विकास की प्रगति

आयु	शब्द
जन्म से 8 मास	0
10 मास	1
1 वर्ष	3
1 वर्ष 3 मास	19
1 वर्ष 6 मास	22
1 वर्ष 7 मास	118
2 वर्ष	212

4 वर्ष	550
5 वर्ष	2072
6 वर्ष	2562

शिशु की भाषा पर उसकी बुद्धि एवं विद्यालय का वातावरण अपनी भूमिका पेश करते हैं। एनास्टसी ने कहा है कि लड़कों की बजाय लड़कियों का भाषा–विकास शैशवकाल में ज्यादा होता है। जिन बच्चों में गूंगापन, हकलाना, तर्श्न्तिलाना आदि दोष होते हैं, उनका भाषा विकास धीमी गति से होता है।

2. बाल्यावस्था में भाषा विकास :

आयु के साथ–साथ बालकों के सीखने की गति में वृद्धि होती है। प्रत्येक क्रिया के साथ विस्तार में कमी होती है। बाल्यकाल में बालक, शब्द से लेकर वाक्य विन्यास तक की सभी क्रियाएँ सीख लेता है। हाइडर ने अध्ययन करके यह परिणाम निकाला कि–

(1) लड़कियों की भाषा का विकास लड़कों की बजाय ज्यादा तेजी से होता है ।

(2) लड़कों की बजाय लड़कियों के वाक्यों में शब्द संख्या ज्यादा होती है ।

(3) अपनी बात को सही ढंग से पेश करने में लड़कियाँ ज्यादा तेज होती हैं।

सीशोर ने बाल्यावस्था में भाषा विकास का अध्ययन किया। 4 से 10 वर्ष तक के 117 बालकों पर चित्रों की सहायता से उसने प्रयोग किये। उसके परिणामों का संकलन निम्न तालिकानर्श्निसार है–

सारणी : भाषा विकास की प्रगति

आयु (वर्ष में)	शब्द
4	5,600
5	9,600
6	14,700
7	21,200
8	26,309
10	34,300

भाषा के विकास में समुदाय, घर, विद्यालय, परिवार की आर्थिक, सामाजिक परिस्थिति का प्रभाव बहुत पड़ता है। वस्तुओं को देखकर उसका प्रत्यय–ज्ञान उसे हो बाद उसे अभिव्यक्ति में भी आनन्द प्राप्त होता है ।

प्रत्यय–ज्ञान स्थूल से सूक्ष्म की तरफ विकसित होता है। उसी तरह भाषा का ज्ञान भी मूर्त से अमूर्त की तरफ होता है ।

3. किशोरावस्था में भाषा विकास :

किशोरावस्था में कई शारीरिक परिवर्तनों से जो संवेग पैदा होते हैं, भाषा का विकास भी उनसे प्रभावित होता है। किशोरों में साहित्य पढ़ने की रुचि पैदा हो जाती है। उनमें कल्पना शक्ति का विकास होने से वे कवि, कहानीकार, चित्रकार बनकर कविता, कहानी एवं चित्र के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं। किशोरावस्था में लिखे गये प्रेम–पत्रों की भाषा में भावुकता का मिश्रण होने से भाषा–सौन्दर्य प्रस्फुटित होता है । एक–एक शब्द अपने स्थान पर सार्थक होता है।

किशोरों का शब्दकोष भी विस्तृत होता है। भाषा तो पशुओं हेतु भी जरूरी है। वे भी भय, भूख तथा कामेच्छा को आंगिक और वाचिक क्रन्दन से प्रकट करते हैं। फिर किशोर तो विकसित सामाजिक प्राणी है । भाषा को न सिर्फ लिखकर वरन् बोलकर तथा उसमें नाटकीय तत्व पैदा करके वह भाषा के अधिगम को विकसित करता है।

किशोर कई बार गुप्त भाषा को भी विकसित करते हैं। यह भाषा कुछ प्रतीकों के माध्यम से लिखी जाती है, जिसका अर्थ वे ही जानते हैं, जिन्हें 'कोड' मालूम है। इसी तरह बोलने में प्रतीकात्मकता का निर्माण कर लेते हैं। भाषा के माध्यम किशोर की संकल्पनाओं का विकास होता है। ये संकल्पनाएँ उसके भावी जीवन की तैयारी का प्रतीक होती है।

भाषा के विकास का किशोर के चिन्तन पर भी प्रभाव पड़ता है। वाटसन ने इसे व्यवहार का एक अंग माना है। भाषा के माध्यम से किशोर अनुपस्थित परिस्थिति का वर्णन करता है तथा साथ ही साथ विचार–विमर्श के माध्यम के रूप में प्रयोग करता है। किशोरावस्था तक व्यक्ति जीवन में भाषा का प्रयोग किस तरह किया जाये, कैसे किया जाये आदि रहस्यों को जान लेता है।

भाषा विकास के प्रभावी कारक :

भाषा विकास अपने–आप में स्वतन्त्र रूप से विकसित नहीं होता। इस पर कई तरह के प्रभाव पड़ते हैं। शब्द भण्डार, वाक्य–विन्यास एवं अभिव्यक्ति के प्रसार आदि पर इन कारकों का प्रभाव पड़ता है

1. स्वास्थ्य– स्मिथ के अनुसार– "लम्बी बीमारी (विशेष रूप से पहले दो वर्ष में) के कारण बालक भाषा विकास में दो मास हेतु पिछड़ जाते हैं।" इसका कारण है– भाषा की सम्पर्कजन्यता । सम्पर्क से भाषा सीखी जाती है तथा बीमारी के दौरान बालक समाज के सम्पर्क में कम रहता है, इसलिए इस स्थिति का प्रभाव बालक के भाषा विकास पर पड़ना स्वाभाविक है । यह भी देखा गया है कि कम सुनने वाले बालकों का भाषा विकास अवरुद्ध हो जाता है । ऐसे बालकों का शब्द भण्डार भी कम होता है। इसका कारण है–बालक भाषा को अनुकरण के माध्यम से सीखता है। स्वास्थ्य के ठीक न होने से उसे अनुकरण के अवसर नहीं मिलते ।

2. बुद्धि – टर्मन के अनुसार– "बुद्धि एवं भाषा का घनिष्ठ संबंध होता है। भाषा के स्तर से ही बुद्धि का पता चलता है। यह बात बाल्यावस्था पर बालक के शब्द भण्डार में वृद्धि के कारण प्रकट होती रहती है।" अध्ययनों से पता चलता है कि पहले दो वर्षों में भाषा एवं वृद्धि का सह–संबंध अधिक होता है। स्पीकर के अनुसार–"भाषा विकास एवं बुद्धि –लब्धि का घनिष्ठ संबंध होता है। बालक बोलने में स्वर एवं व्यंजनों की आवृत्ति से शिशु की बुद्धि का पता चलाया जा सकता है।" क्योंकि आरम्भिक अवस्था में भाषा विकास बुद्धि का द्योतक है, अतः अभिभावकों का दायित्व भी बढ़ जाता है ।

3. हकलाना– हकलाना वाणी दोष है। मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि हकलाना मानसिक अव्यवस्था के कारण होता है। बालक जब स्वाभाविक रूप से शब्दोच्चारण पर जोर नहीं देता, तब उच्चारण संबंधी तन्त्र को अधिक शक्ति लगानी पड़ती है। इसका परिणाम यह होता है कि वसन शक्ति की गति तीव्र हो जाती है, फेफड़ों में हवा नहीं रहती, ऐसी स्थिति में उच्चारण में दोष पैदा होता है, जो हकलाने के रूप में प्रकट होता है। थाम्पसन के अनुसार–"भाषा की परिभाषा में संवाद–वाहन के सभी तत्व निहित रहते हैं। मौखिक एवं अमौखिक, गति, मुद्रा, लिखित और छपित चिह्न इसके प्रतीक होते हैं। परिवार में ऐसे बालकों की शिक्षा हेतु विशेष प्रयास किया जाना चाहिए।"

हकलाना दो तरह का होता है –

1. प्रारम्भिक हकलाना – इस तरह की हकलाहट में बालक को पहला शब्द उच्चरित करने में कठिनाई अनुभव होती है ।

2. पुनर्वाद–व्यंजन अथवा हकलाहट– इस तरह की हकलाहट में वसन तीव्रगति होने से वाक्य के मध्य में ही हकलाहट होने लगती है।

हकलाने के कारण इस तरह हैं–

(1) वंशक्रम से प्राप्त स्नायु रोग हकलाने हेतु उत्तरदायी हैं ।

(2) असाधारण उत्तेजना से भी व्यक्ति हकलाने लगता है ।

(3) जब सामान्य बालक, हकलाने तथा तुतलाने वाले अन्य बालकों की नकल करते हैं, तो वह आदत बन जाती है।

(4) गम्भीर आघात में भी हकलाना शुरू हो जाता है ।

(5) टॉंसिल बढ़ जाने से भी हकलाने का दोष आ जाता है ।

हकलाने के उपचार– हकलाना, मानसिक अव्यवस्था के कारण होता है, इसका उपचार भी इसी तरह का है। इस दोष के उपचार हेतु निम्न कार्य किये जाने चाहिए–

(1) बालक के सामान्य स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

(2) अगर बालक में खून की कमी है, तो उसे उचित आहार एवं औषधि से दूर किया जाना चाहिए ।

(3) दाँतों की खराबी दूर करनी चाहिए।

(4) हकलाने वाले बालक की मानसिक अव्यवस्था को दूर करना चाहिए।

(5) शारीरिक दोषों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

(6) बालक को अच्छे मनो–चिकित्सक की देख–रेख में वसन–व्यायाम का प्रशिक्षण देना चाहिए ।

(7) माता–पिता को भी चिकित्सक एवं बालक के साथ सहयोग करना चाहिए।

हकलाने वाले बालकों की शिक्षा– प्रायः हकलाने वाले बालक की उपेक्षा की जाती है। इसी उपेक्षा के कारण वह पिछड़े हुए बालकों में गिना जाता है। इस दोष को दूर करने हेतु निम्न कार्य करने चाहिए–

(1) वह बालक में आत्म–विश्वास भरें। आत्म–विश्वास विकसित होने से हकलाने का दोष दूर होने लगता है।

(2) बालक को सामूहिक कार्यों एवं आयोजनों में भाग लेने हेतु अभिप्रेरणा देनी चाहिए।

(3) वाद–विवाद, नाटक, संगीत आदि में भाग लेने हेतु प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

(4) हकलाने वाले बालक से हीन–भावना निकालनी चाहिए।

(5) हकलाने वाले बालक अगर प्रश्न का पूरा उत्तर दे भी न पायें, तो अधूरे उत्तर को स्वीकार करना चाहिए।

(6) हकलाने वाले बालक के साथ हमेशा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना चाहिए ।

4. सामाजिक आर्थिक स्तर– अनुसन्धानों से पता चला है कि जिन परिवारों का सामाजिक आर्थिक स्तर नीचा होता है, वहाँ पर बालकों की भाषा का विकास द्रुत गति से नहीं होता। इसका कारण है–निम्न सामाजिक, आर्थिक समूहों के बालकों में सीखने की गति का धीमा होना। व्यापारी वर्ग, श्रमिक वर्ग बुद्धि जीवी वर्ग के बच्चों की भाषा का अध्ययन करने से यह परिणाम निकाला गया है कि वर्गों के बालकों की शब्दावली तथा वाक्य विन्यास आदि में भिन्नता पायी जाती है। उच्च वर्ग के बालकों के आपसी संबंध भी इसी तरह के लोगों में रहते हैं एवं वे सुसंस्कृत शब्दावली युक्त लोक–व्यवहार की भाषा बोलते हैं।

5. यौन– बच्चों की भाषा में प्रथम वर्ष में कोई अन्तर नहीं होता। लड़कियों की भाषा में यौन भिन्नता दो वर्ष की आयु के बाद शुरू हो जाती है। डरविन के अनुसार–"लडकियाँ, लड़कों की बजाय शीघ्र ही ध्वनि संकेत ग्रहण करती हैं।" मैकार्थी ने पारिवारिक संबंध को इसका कारण बताया है। लड़कियों का संबंध एवं समाजीकरण माता से ज्यादा होता है। इसलिए उसी सम्पर्क से लड़कियों की भाषा में अन्तर आने लगता है। यह भी देखा गया है कि वाणी दोष लड़कियों की बजाय लड़कों में ज्यादा पाये जाते हैं । मैकार्थी ने इसका कारण लड़कों में संवेगात्मक असुरक्षा बताया है।

6. पारिवारिक संबंध– अनाथालयों, छात्रावासों एवं परिवारों में पले बच्चों के अध्ययन से पता चला कि भाषा सीखने और प्रभावित करने में पारिवारिक संबंधों का विशेष महत्व है। संस्थाओं के बच्चों का

संवेगात्मक सम्पर्क परिवार के सदस्यों से नहीं हो पाता, अतः वे भाषा सीखने में देरी लगाते हैं। भाषा के सीखने में परिवार के आकार का भी महत्पूवर्ण स्थान है। बच्चे, बड़े, बालकों के सम्पर्क से भी भाषा का विकास करते हैं।

बालक के विकास को प्रभावित करने वाले अन्य कारक

बालक के विकास को प्रभावित करने वाले अन्य कारक निम्नानशिंन्सार हैं–

1. जनसंचार माध्यम :

जनसंचार माध्यमों का भी बालक के विकास पर प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है, दूरदर्शन का प्रभाव तो आजकल बालक पर तीन अथवा चार वर्ष की आयु से ही पड़ने लगता हैं। रेडियो, टेपरिकॉर्डर, चलचित्र आ का प्रभाव बालक पर बहुत पहले से ही पड़ने लगा है। आजकल टेलीफोन, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों का प्रभाव विद्यालय में प्रवेश और अध्ययन करने के बाद पड़ता है क्योंकि इन साधनों हेतु शैक्षिक ज्ञान की जरुरत होती है। बालक जब पढ़ना सीख जाता है तब इन संचार साधनों से प्रभावित होता है। इस तरह बाल–विकास में संचार साधनों की भूमिका को वर्तमान समय में पूर्ण रुप से स्वीकार कर लिया गया है।

बालक के विकास में संचार साधनों की भूमिका को अग्रलिखित शीर्षकों द्वारा समझा जा सकता है–

1. **शारीरिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव–** आधुनिक समय में संचार साधनों के द्वारा बालकों को स्वास्थ्य संबंधी सूचनाएँ प्राप्त होती हैं, जिनके माध्यम से बालक अपने शारीरिक विकास को सन्तुलित रुप प्रदान कर सकते हैं, जैसे– दूरदर्शन पर योगाभ्यास के कार्यक्रमों एवं आसनों के माध्यम से बालक अपनी शारीरिक विकृतियों को दूर कर सकता है और अपने शरीर का सन्तुलित विकास कर सकता है। इसी प्रकार संचार माध्यमों के द्वारा बालक ज्ञान प्राप्त करके अपने शारीरिक विकास को नवीन दिशा प्रदान कर सकते हैं।

2. **मानसिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव–** बालक के मानसिक विकास में भी संचार माध्यमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संचार साधनों के द्वारा बालक नवीन तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जिनसे उनमें तर्क एवं चिन्तन शक्ति का विकास होता है। दूरदर्शन के माध्यम से बालक नयी घटनाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं, जैसे डिसकवरी चैनल द्वारा उनमें तर्क एवं चिन्तन शक्ति विकसित होती है। कई कार्यक्रम वे इन्टरनेट एवं वेबसाइटों के माध्यमों से देखते हैं, इससे उनका सन्तुलित मानसिक विकास होता है।

3. **संवेगात्मक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव–** बालक संचार साधनों के माध्यमों से विविध तरह की कहानियाँ, कविताएँ एवं नाटकों को आत्मसात करता है। उनके संवेगों की स्थिरता एवं स्वयं के संवेगों पर नियंत्रण रखकर उनको देखता एवं सुनता है। इसके सशिंन्खद एवं अच्छे परिणामों से परिचित होता है। इससे बालक संवेगात्मक स्थिरता एवं संवेगों पर नियंत्रण रखना सीखता है। इन समस्त माध्यमों से उसमें विविध तरह के संवेग, प्रेम, भय, क्रोध आदि का सन्तुलित विकास होता है। इसलिए सन्तुलित संवेगात्मक विकास में जनसंचार साधनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

4. सामाजिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– जनसंचार माध्यमों से सामाजिक एवं सांस्कृतिक सामग्रियों का प्रचार किया जाता है । इस प्रकार उससे बाल–विकास भी प्रभावित होता है। इस तरह के कार्यक्रम देखकर बालकों में भी सामाजिक गुणों का विकास होता है। बालकों द्वारा टेलीविजन देखते समय विभिन्न नाटक एवं फिल्में देखी जाती हैं जिनमें हमारे सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन की झाँकी दिखाई देती है। इसी क्रम में रेडियो, टेपरिकॉर्डर, पत्रिका एवं समाचार–पत्रों के माध्यम से छात्रों में सामाजिक विकास की तीव्रता पायी जाती है। इससे यह ज्ञात होता है कि संचार माध्यम सामाजिक विकास को प्रभावित करते हैं ।

5. भाषायी विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– बालकों के भाषायी विकास पर भी संचार साधनों का विशेष प्रभाव पड़ता है क्योंकि भाषायी विकास में श्रवण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संचार साधनों में कुछ साधन ऐसे होते हैं जो श्रव्य–दृश्य हैं, जैसे– चलचित्र, दूरदर्शन तथा वीडियो आदि। इस तरह के साधन बालकों के भाषायी विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि इसमें बालक भाषा के शब्दों का उच्चारण की प्रक्रिया एवं बोलने वाले व्यक्ति के हावभाव को समझ सकता है। इसी तरह सुनने वाले तथा देखने वाले संचार साधनों के माध्यम से भी भाषायी विकास प्रभावित होता है।

6. चारित्रिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– संचार साधनों में विविध साधन ऐसे होते हैं, जिनके द्वारा बालक का चारित्रिक विकास सम्भव होता है, जैसे समाचार–पत्र एवं पत्रिकाओं में विविध कहानियाँ, लघु कथाएँ निकलती रहती हैं, जिन्हें पढ़कर या सुनकर बालक अपने भीतर त्याग, सहयोग, प्रेम, परोपकार, दया जैसे विभिन्न चारित्रिक गुणों को समाहित करता है। टेलीविजन पर नाटक अथवा फिल्में देखकर स्वयं की तुलना नायक अथवा नायिका से करके उसके गुणों को स्वयं व्यक्त करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि चारित्रिक विकास पर भी जनसंचार साधनों का प्रभाव पड़ता है

7. दक्षताओं के विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– कम्प्यूटर तथा इन्टरनेट के माध्यम से आज छात्र कई तरह के खेलकूद अथवा पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं के बारे में ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। दूरदर्शन स्पोर्ट चैनल एवं पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं से संबंधित विविध चैनलों को देखकर बालक विभिन्न क्षेत्रों में दक्षताओं को प्राप्त कर सकता है। छात्र कम्प्यूटर पर ड्राइंग प्रोग्राम के माध्यम से ड्राइंग में दक्षता प्राप्त करता है एवं टाइपिंग के माध्यम से टाइपिंग में मास्टरी कर सकता है। इससे सिद्ध होता है कि संचार साधन बालकों में विविध तरह की दक्षताओं का विकास कर सकते हैं।

8. मूल्यों के विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– संचार साधनों के द्वारा सामाजिक मूल्य, जीवन मूल्य, नैतिक मूल्य कई मानवीय मूल्यों को कई तरह की कथाओं एवं नाटकों के माध्यम से विकसित किया जाता है। इन नाटकों को देखकर छात्र अपने विवेक से उन गुणों को जो उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं अपने भीतर समाहित करते हैं। समाचार–पत्रों में भी विविध शीर्षकों के माध्यम से मूल्यों को विकसित करने वाली लघु कथाएँ प्रभावित होती हैं। इस तरह संचार साधन मूल्य विकास को भी प्रभावित करते हैं।

9. सृजनात्मक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– संचार साधन बालक के सृजनात्मक विकास में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। टेलीविजन पर ज्ञानदर्शन के माध्यम से शैक्षिक कार्यक्रमों का

प्रसारण किया जाता है। उसमें विविध आकृतियों के निर्माण एवं विज्ञान संबंधी प्रयोगों का प्रसारण होता है । इन कार्यक्रमों को देखकर बालकों में सृजनात्मकता का विकास होता है।

10. शैक्षिक विकास पर संचार साधनों का प्रभाव– कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट के माध्यम से हम विश्व के किसी भी देश के शैक्षिक कार्यक्रमों को देख सकते हैं जिसके द्वारा बालक अपनी रुचि एवं इच्छा के अनुसार शैक्षिक गतिविधियों का निरीक्षण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिकाओं एवं रेडियो पर भी विविध शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं। टेलीविजन पर भी विज्ञान एवं गणित से संबंधित शैक्षिक कार्यक्रम आते हैं। इन सभी से बालकों का शैक्षिक विकास बहुत तेजी से होता है।

2. पोषण :

माता का आहार गर्भकालीन अवस्था से ही शिशु के विकास को प्रभावित करने लगता है। गर्भकालीन अवस्था में शिशु अपना आहार माता से प्लासेन्टा द्वारा प्राप्त करने लगता है तथा वह पूर्ण रुप से अपने आहार हेतु अपनी माता पर निर्भर करता है। इसलिए जरुरी है कि माता का आहार सन्तुलित हो तथा माता के भोजन में सभी पोषक तत्व मौजूद हों। माता के आहार में प्रोटीन, फैट्स एवं कार्बोहाइड्रेट उपयुक्त मात्रा में होना जरुरी है। प्रोटीन से कोशिकाओं का निर्माण होता है । फैट्स शरीर में ईंधन का कार्य करते हैं तथा कार्बोहाइड्रेट शरीर को शक्ति प्रदन करते हैं। कुछ गर्भवती स्त्रियों की यह धारणा होती है कि गर्भकालीन अवस्था में उन्हें दो जीवों के लिए भोजन करना होता है– एक स्वयं के लिए एवं दूसरा बच्चे के लिए। इस प्रवृत्ति से गर्भस्थ शिशु मोटा हो सकता है एवं जन्म से समय गर्भवती स्त्री को परेशानी हो सकती है । जरुरी है कि गर्भवती सन्तुलित आहार ले जिससे गर्भस्थ शिशु का विकास सामान्य रुप से हो सके।

हैपनर (Hepner] 1988) ने अपने एक अध्ययन में देखा कि गर्भवती स्त्रियों का अगर अहार सन्तुलित नहीं होता है, तो गर्भस्थ शिशु में कई तरह के दोष पैदा हो सकते हैं। इन दोषों के कारण जन्म के बाद कई विकृतियाँ देखी गयी हैं, जैसे– मानसिक दुर्बलता, शारीरिक असामान्यता,सामान्य शारीरिक कमजोरी,स्नायुविक अस्थिरता एवं मिर्गी आदि रोग । इस अवस्था में माँ द्वारा लिये गये आहार में अगर विटामिन 'ए' की कमी होती है तो नवजात शिशु की आँख में विकृतियाँ पैदा हो सकती हैं। इसी तरह विटामिन 'डी' की कमी से दाँत तथा हड्डियों में विकृतियाँ पैदा हो सकती हैं। कुछ अध्ययनों में देखा गया है कि माँ के आहार में अगर लगातार विटामिन 'बी' की कमी होती है तो नवजात शिशु की प्रारम्भ के कुछ वर्षों तक बुद्धि कम रहती है। ऐसे बच्चों को स्कूल में सीखने में भी असुविधा होती है। सामान्यतः उन स्त्रियों में आहार की ज्यादा गड़बड़ी होती है जो पतली रहने हेतु भोजन ही कम करती हैं। ऐसी स्त्रियाँ जब गर्भवती होती हैं तो आहार कम ही लेती हैं कि कहीं उनका पेट ज्यादा न निकल आए। इस तरह की स्त्रियों में आहार से संबंधित दोष गर्भस्थ शिशु के विकास को बहुत ज्यादा प्रभावित करते हैं

एक अन्य अध्ययन (Morgane et- al- 1993) में देखा गया कि गर्भकालीन अवस्था में कुपोषण से गर्भस्थ शिशु का केन्द्रीय नाड़ी संस्थान क्षतिग्रस्त हो सकता है। माँ का आहार गर्भकाल के अन्तिम तीन माह में जितना खराब होगा गर्भस्थ शिशु के मस्तिष्क का भार उतना ही कम होगा क्योंकि गर्भकाल के अन्तिम तीन महीनों में ही मस्तिष्क के आकार का विकास तीव्र गति से होता है । इसी तरह इस दिशा में हुए एक अन्य अध्ययन (Baker, 1994) में देखा गया कि गर्भकालीन अवस्था में माँ को यदि पर्याप्त आहार दिया जाता है

तो गर्भस्थ शिशु के पैन्क्रियाज, यकृत एवं खून की नलियों में विकृति आ जाती है जिससे उसे जीवनभर स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। एक अध्ययन (Chandra, 1991) में देखा गया कि गर्भकालीन अवस्था में जिन शिशुओं को पर्याप्त सन्तुलित आहार प्राप्त नहीं होता है, उनकी रक्षा प्रणाली पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा ऐसे बच्चे वसन संबंधी बीमारियों से बहुत जल्दी ग्रसित हो जाते हैं ।

3. बाल पोषण अभ्यास :

बालक के विकास को प्रभावित करने में बाल पोषण अभ्यास का भी विशेष महत्त्व है । बालक का पालन–पोषण किस विधि से किया जा रहा है बालक का विकास उससे प्रभावित हो जाता है। बाल पोषण अभ्यास की मुख्य विधियाँ अग्रांकित हैं–

1. प्रभुत्वपूर्ण विधि– इस विधि में माता–पिता एवं अभिभावक बालक के साथ बहुत सख्ती से पेश आते हैं। उसे बात–बात पर शारीरिक दण्ड देते हैं एवं पूर्ण रुप से अपने अनुशासनमें रखने का प्रयास करते हैं। ऐसे बालकों का विकास सामान्य रुप से नहीं हो पाता है। ऐसे बच्चे डर के कारण माता–पिता एवं अभिभावकों की आज्ञा का पालन करते हैं तथा पीठ पीछे वह उसके विपरीत कार्य करते हैं। माता–पिता से उनके संबंध खराब हो जाते हैं। कभी–कभी तो वे अपने माता–पिता से घृणा भी करने लगते हैं।

2. प्रजातांत्रिक विधि– इस विधि से अपने बच्चों का पालन–पोषण करने वाले माता–पिता बच्चों को पर्याप्त स्वतन्त्रता देते हैं । वे विविध तरह की आदतों को सिखाने में ज्यादा अनुमति देने वाले अथवा छूट प्रदान करने वाले होते हैं। माता–पिता उदारता का प्रदर्शन करते हैं तथा बच्चों को बहुत कम दण्ड देते हैं। वे बालक पर ज्यादा अपेक्षाों नहीं लादते हैं। बालक की योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुसार उसे प्रशिक्षण देते हैं। अगर बाल पोषण विधि प्रजातान्त्रिक वातावरण से संबंधित है तो बालक में स्वतंत्र चिन्तन, ज्यादा सृजनात्मकता, ज्यादा सहयोग जैसे लक्षण पैदा हो सकते हैं। इन लक्षणों की उपस्थिति से बालक के पारिवारिक संबंध बेहतर हो सकते हैं ।

3. अनुमतिपूर्ण विधि– इस विधि से बच्चों का पोषण करने वाले माता–पिता एवं अभिभावक बच्चों को उतनी स्वतंत्रता प्रदान करते हैं जितनी बच्चा चाहता है। इस विधि को मानने वाले अभिभावक यह मानते हैं कि बालक जब अपने द्वारा किये गये बुरे कर्मों का फल भोगेगा तो वह स्वयं ही सुधर जायेगा। इस विधि का प्रयोग अत्यधिक शिक्षित माता–पिता ही करते हैं।

4. भाई–बहन तथा साथी समूहःबालक के विकास में उसके भाई–बहनों एवं साथी–समूह की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। बच्चे ज्यादातर अनुकरण से सीखते हैं एवं वे ज्यादातर अपने भाई–बहनों एवं साथी समूह का अनुकरण करते हैं। किशोर अपने भाई–बहनों एवं साथियों से अन्तःक्रिया करता है जिससे उसे नये–नये विचार और मूल्य प्राप्त होते हैं। भाई–बहन हर कदम पर उसका साथ देते हैं तथा घनिष्ठ मित्र भी हर कठिन परिस्थिति में उसे भावनात्मक सहारा प्रदान करते हैं। किशोर बहुत से महत्त्वपूर्ण निर्णय यहाँ तक कि व्यवसायगत निर्णय भी अपने मित्रों से प्रभावित होकर लेता है। कुछ भाई–बहन एवं मित्र बालक हेतु रोल मॉडल का कार्य भी करते हैं।

Unit III:

Understanding the Learniner   इकाई 3– अधिगम की समझ

(1) अर्थ प्रकृति ,व शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक। **Meaning, Nature and Factors Influencing the Education-**

(2) अधिगम की विधियाँ। **Learning Styles**

(3) अधिगम का स्थानांतरण ,व इसके निहितार्थ। : **Transfer of Learning and its classroom implications**

(4) अधिगम के सिद्धांत – पैवलॉव का अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत; स्किनर का क्रियाप्रसूत अनुकूलन सिद्धांत थार्नडाइक का प्रयत्न ,वं भूल का सिद्धांत •गेस्टाल्टवाद का सिद्धांत ,व उनके शैक्षणिक निहितार्थ।

Learning Theories, Pavlovs Classical Conditioning Theory, Skinners Operant Conditioning Theory, Thorndike Trial and Error Theory, Gestalt Theory and their Educational Implications-

सीखने अथवा अधिगम की परिभाषा देते हुए उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

सीखने का अर्थ तथा परिभाषा :–

'सीखना' किसी स्थिति के प्रति सक्रिय प्रतिक्रिया है। हम अपने हाथ में आम लिये चले जा रहे हैं। कहाँ से एक भूखे बंदर की उस पर नजर पड़ती है। वह आम को हमारे हाथ से छीनकर ले जाता है। यह भूखे होने की स्थिति में आम के प्रति बंदर की प्रतिक्रिया है। लेकिन यह प्रतिक्रिया स्वाभाविक है, सीखी हुई नहीं। इसके विपरीत, बालक हमारे हाथ में आम देखता है। वह उसे छीनता नहीं है। जन्म के कुछ समय पश्चात् से ही उसे अपने वातावरण में कुछ–न–कुछ सीखने को मिल जाता है। पहली बार आग को देखकर वह उसे छू लेता है तथा जल जाता है। फलस्वरूप उसे एक नया अनुभव होता है। अतः जब वह आग को फिर देखता है, तब उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया भिन्न होती है। अनुभव ने उसे आग को न छूना सिखा दिया है। अतः वह आग से दूर रहता है । इस तरह, "सीखना–अनुभव द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है।"

हम सीखने' के अर्थ को और ज्यादा स्पष्ट करने हेतु कुछ परिभाषाएं दे रहे हैं, यथा

स्किनर– "सीखना, व्यवहार में उत्तरोत्तर सामंजस्य की प्रक्रिया है।"

वुडवर्थ– "नवीन ज्ञान तथा नवीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्त करने की प्रक्रिया सीखने की प्रक्रिया है।'

क्रो तथा क्रो– "सीखना–आदतों, ज्ञान तथा अभिवृत्तियों का अर्जन है।"

मार्गन तथा गिलीलैंड– "सीखना, अनुभव के कारण प्राणी के व्यवहार में परिमार्जन है जो प्राणी द्वारा कुछ समय हेतु धारण किया जाता है।"

कुन्पूस्वामी– "अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीव, एक परिस्थिति में उसके अंतःक्रिया के परिणाम के रूप में व्यवहार का एक नवीन प्रतिरूप अर्जित करता है, जो कुछ अंश तक स्थिरोन्मुख रहता है एवं जीव के सामान्य व्यवहार प्रतिमान को प्रभावित करता है।"

थार्नडाइक– "उपयुक्त अभिक्रिया के चयन एवं उसे उत्तेजना से जोड़ने को अधिगम कहते हैं।"

उदय पारीक– "अधिगम ज्ञानात्मक, मामक या व्यवहारगत निवेशों की जरूरत पड़ने पर उनके प्रभावात्मक तथा विभिन्न प्रयोग के लिए अधिग्रहण, आत्मीकरण तथा अंतरीकरण करने एवं आगामी स्वचालित अधिगम की बढ़ी हुई क्षमता की तरफ ले जाने वाली प्रक्रिया है।"

इन परिभाषाओं का विश्लेषण करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि सीखना, क्रिया द्वारा व्यवहार में परिवर्तन है, व्यवहार में हुआ यह परिवर्तन कुछ समय तक बना रहता है, यह परिवर्तन व्यक्ति के पूर्ण अनुभवों पर आधारित होता है ।

सीखने की विशेषताएं

योकम तथा सिम्पसन के अनुसार– सीखने की सामान्य विशेषताएं निम्न तरह हैं–

1. **सीखना : संपूर्ण जीवन चलता है** :– सीखने की प्रक्रिया आजीवन चलती है। व्यक्ति अपने जन्म के समय से मृत्यु तक कुछ–न–कुछ सीखता रहता है ।

2. **सीखना : परिवर्तन है** :– व्यक्ति अपने तथा दूसरों के अनुभवों से सीखकर अपने व्यवहार, विचारों,इच्छाओं, भावनाओं आदि में परिवर्तन करता है । गिलफोर्ड के अनुसार–"सीखना, व्यवहार के कारण व्यवहार में कोई परिवर्तन है।"

3. **सीखना सार्वभौमिक है** :– सीखने का गुण सिर्फ मनुष्य में ही नहीं पाया जाता है। वस्तुतः संसार के सभी जीवधारी, पशु–पक्षी तथा कीड़े–मकौड़े भी सीखते हैं ।

4. **सीखना : विकास है** :– व्यक्ति अपनी दैनिक क्रियाओं तथा अनुभवों के द्वारा कुछ–न–कुछ सीखता है। फलस्वरूप, उसका शारीरिक तथा मानसिक विकास होता है। सीखने की इस विशेषता को पेस्टालॉजी ने वृक्ष तथा फ्रोबल ने उपवन का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है।

5. सीखना : अनुकूलन है :– सीखना, वातावरण से अनुकूलन करने हेतु जरूरी है सीखकर ही व्यक्ति, नई परिस्थितियों से अपना अनुकूलन कर सकता है। जब वह अपने व्यवहार को इनके अनुकूल बना लेता है, तभी वह कुछ सीख पाता है। गेट्स तथा अन्य का मत है–"सीखने का संबंध स्थिति के क्रमिक परिचय से है।"

6. सीखना : नया कार्य करना है :– वुडवर्थ के अनुसार–सीखना कोई नया कार्य करना है। लेकिन उसने उसमें एक शर्त लगा दी है। उसका कहना है कि सीखना, नया कार्य करना तभी है, जबकि वह कार्य फिर किया जाये तथा दूसरे कार्यों में प्रकट हो ।

7. सीखना : अनुभवों का संगठन है :– सीखना न तो नये अनुभव की प्राप्ति है तथा न पुराने अनुभवों का योग बल्कि नये तथा पुराने अनुभवों का संगठन है। जैसे–जैसे व्यक्ति नये अनुभवों द्वारा नई बातें सीखता जाता है, वैसे–वैसे वह अपनी जरूरतों के अनुसार अपने अनुभवों को संगठित करता चला जाता है।

8. सीखना : उद्देश्यपूर्ण है :– सीखना, उद्देश्यपूर्ण होता है। उद्देश्य जितना ज्यादा प्रबल होता है, सीखने की क्रिया उतनी ही जयादा तीव्र होती है । उद्देश्य के अभाव में सीखना असफल होता है। मर्सेल के अनुसार–"सीखने के लिए उत्तेजित तथा निर्देशित उद्देश्य की अति जरूरत है एवं ऐसे उद्देश्य के बगैर सीखने में असफलता निश्चित है।"

9. सीखना : विवेकपूर्ण है :– मर्सेल का कथन है कि सीखना, यांत्रिक कार्य के बजाय विवेकपूर्ण कार्य है । उसी बात को शीघ्रता तथा सरलता से सीखा जा सकता है, जिसमें बुद्धि अथवा विवेक का प्रयोग किया जाता है। बगैर सोचे–समझे, किसी बात को सीखने में सफलता नहीं मिलती है। मर्सेल के शब्दों में– "सीखने की असफलताओं का कारण समझने की असफलताएं हैं।"

अधिगम की प्रकृति :

1. अधिगम एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है :– अधिगम न तो किसी विशिष्ट व्यक्ति तथा समाज तक सीमित है और न ही केवल व्यक्तियों तक, वरन् समस्त विश्व के समस्त प्राणी अधिगम के आधार पर विकास करते हैं।

2. अधिगम विकास की अविरल प्रक्रिया है :– घटनाओं, आवश्यकताओं, विभिन्न समस्याओं आदि की विविधता तथा निरंतरतावश प्रत्येक प्राणी निरंतर कुछ न कुछ सीखता है। मात्र उसके अधिगम की क्षमता या अर्जन आदि में अंतर होता है। ।

3. अधिगम वातावरण से अनुकूलन की प्रक्रिया है :– विभिन्न अधिगमजन्य अनुभवों को प्राप्त करके बालक को यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि वह अपनी आवश्यकताओं, इच्छाओं, संवेगों आदि के अनुसार किस प्रकार समायोजन करे।

4. अधिगम विकास की प्रक्रिया है :– अधिगम के परिणामस्वरूप बालक को कई अनुभव प्राप्त होते हैं । इन अनुभवों का प्रत्यक्ष प्रभाव व्यवहार परिवर्तनों के रूप में दृष्टिगोचर होता है ये परिवर्तन बालक के विकास के ही सूचक हैं।

5. अधिगम उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है :– उददेश्य के अभाव में अधिगम की प्रक्रिया सुचारु रूप से नहीं हो सकती है। अतः बालक किसी न किसी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उद्देश्य के आधार पर ही सार्थक अधिगम की दिशा में प्रेरित होता है।

6. अधिगम का आधार मानव प्रकृति है :– प्रत्येक बालक में रुचि, बुद्धि, क्षमता की आवश्यकतानुसार ही वातावरण से क्रिया–प्रतिक्रिया होती है एवं उनके अनश्रिंरूप ही उसके अधिगम व प्राप्त अनुभवों की मात्रा व स्वरूप निर्धारित होता है

7. अधिगम एक मानसिक प्रक्रिया है :– विभिन्न मानसिक शक्तियों की क्रिया–प्रतिक्रियात्मक क्षमता ही व्यक्ति को अधिगम के लिए सक्षम बनाती है। अभिकरण, धारणा, प्रत्यास्मरण, अवबोध आदि शक्तियों के माध्यम से क्रमानुसार अधिगम संभव होता है ।

8. अधिगम वातावरण की उपज है :– बालक एक सामाजिक प्राणी है तथा वह समाज में रहकर ही सीखता है । वातावरण की भिन्नता अथवा सामाजिक मूल्यों, मान्यताओं, व्यवहारों, प्रेरकों, विचारों के अनुरूप ही अधिगम का भी निर्धारण होता है ।

9. अधिगम व्यावहारिक परिवर्तन है :– समाज या वातावरण में रहकर व्यक्ति अपनी क्रिया–प्रतिक्रिया करता हुआ जो कुछ भी सीखता है, वह उसमें अनुभव के रूप में प्रत्यक्ष हो जाता है। अधिगम इन अनुभवों को व्यवस्थित भी करता है।

10. अधिगम व्यवहार परिवर्तन है :– बालक जो कुछ भी सीखता है, उसका प्रभाव जहाँ एक तरफ उसकी अमूर्त शक्तियों पर पड़ता है, वहीं तदन्तर उसका व्यवहार भी परिवर्तित होने लगता है। उसकी भावनाओं, रुचियों, जीवन–शैली आदि में ये परिवर्तन देखे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, अधिगम विवेक तथा सक्रियता पर आधारित खोज की ऐसी व्यक्तिगत व सामाजिक प्रक्रिया भी कही जाती है, जो परिणामजन्य तथा समस्या–समाधान में मददगार होती है। अधिगम की यह प्रक्रिया सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार की हो सकती है

अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

ऐसे कई कारण या दशायें हैं, जो सीखने की प्रक्रिया में सहायक अथवा बाधक सिद्ध होते हैं।

सीखने को प्रभावित करने वाले कारक निम्न हैं :—

1. **सीखने का समय तथा थकान :—** सीखने का समय, सीखने की क्रिया को प्रभावित करता है; उदाहरणार्थ, जब छात्र विद्यालय आते हैं, तब उनमें स्फूर्ति होती है। अतः उनको सीखने में सुगमता होती है । जैसे—जैसे शिक्षण के घंटे बीतते जाते हैं, वैसे—वैसे उनकी स्फनूर्ति में शिथिलता आती जाती है तथा वे थकान का अनुभव करने लगते हैं। परिणामतः उनकी सीखने की क्रिया मंद हो जाती है।

2. **परिपक्वता :—** शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता वाले छात्र नये पाठ को सीखने हेतु हमेशा तत्पर तथा उत्सुक रहते हैं। अतः वे सीखने में किसी तरह की कठिनाई का अनुभव नहीं करते हैं। अगर छात्रों में शारीरिक तथा मानसिक परिपक्वता नहीं है तो सीखने में उनके समय तथा शक्ति का ह्रास होता है।

3. **बालकों का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य** :— जो छात्र, शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होते हैं, वे सीखने में रुचि लेते हैं एवं शीघ्र सीखते हैं। इसके विपरीत, शारीरिक अथवा मानसिक रोगों से पीड़ित छात्र सीखने में किसी प्रकार की रुचि नहीं लेते हैं। फलतः वे किसी बात को बहुत देर में एवं कम सीख पाते हैं ।

4. **विषय—सामग्री का स्वरूप :—** सीखने की क्रिया पर सीखी जाने वाली विषय—सामग्री का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। कठिन तथा अर्थहीन सामग्री की बजाय सरल एवं अर्थपूर्ण सामग्री ज्यादा शीघ्रता तथा सरलता से सीख ली जाती है। इसी तरह, अनियोजित सामग्री की तुलना में 'सरल से कठिन की तरफ सिद्धांत पर नियोजित सामग्री सीखने की क्रिया के सरलता प्रदान करती है।

5. **संपूर्ण परिस्थिति** :— बालक के सीखने को प्रभावित करने वाले तत्व उस पर पृथक रूप से बजाय सामूहिक रूप से प्रभाव डालते हैं। अतः सीखने की संपूर्ण परिस्थिति का विद्यालय में होना जरूरी है। विद्यालय की संपूर्ण परिस्थिति का बालक के बाह्य एवं सामाजिक जीवन से घनिष्ठ संबंध होना चाहिए। रायबर्न के अनुसार—"उस संपूर्ण परिस्थिति का, जिसमें बालक अपने को विद्यालय में पाता है, जीवन में जितना ही ज्यादा संबंध होता है, उतना ही ज्यादा सफल तथा स्थायी उसका सीखना होता है।"

6. **अधिगम विधियाँ** :— सीखने की विधि का संबंध छात्र तथा विषय दोनों से है। यह विधि जितनी ही ज्यादा रुचिकर तथा उपयुक्त होती है, सीखना उतना ही ज्यादा सरल होता है । अतएव प्रारंभिक कक्षाओं में 'खेल' तथा 'करके सीखना' विधियों का तथा उच्च कक्षाओं में 'पूर्ण', 'सामूहिक' तथा 'सहसंबंध' विधियों का प्रयोग किया जाता है।

7. सीखने का उचित वातावरण :– सीखने की क्रिया पर न सिर्फ कक्षा के भीतर के बल्कि बाहर के वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है। कक्षा के बाहर का वातावरण शांत होना चाहिए। निरंतर शोरगुल से छात्रों का ध्यान सीखने की क्रिया से हट जाता है। अगर कक्षा के अंदर छात्रों को बैठने के लिए पर्याप्त स्थान नहीं है तथा उसमें वायु एवं प्रकाश की कमी है, तो छात्र थोड़ी ही देर में थकान का अनुभव करने लगते हैं। परिणामतः उनकी सीखने में रुचि खत्म हो जाती है । कक्षा का "मनोवैज्ञानिक वातावरण" भी सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। अगर छात्रों में एक–दूसरे के प्रति सहयोग तथा सहानुभूति की भावना है, तो अधिगम प्रक्रिया को आगे बढ़ने में सहयोग मिलता है।

8. अध्यापक तथा अधिगम प्रक्रिया :– सीखने की प्रक्रिया में पथ–प्रदर्शक के रूप में शिक्षक का स्थान अति महत्वपूर्ण है। उसके कार्य तथा विचार, व्यवहार तथा व्यक्तित्व, ज्ञान तथा शिक्षण–विधियों का छात्रों के सीखने पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इन बातों में शिक्षक का स्तर जितना ऊंचा होता है, अधिगम प्रक्रिया उतनी ही तीव्र तथा सरल होती है।

9. प्रेरणा :– सीखने की प्रक्रिया में प्रेरकों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है प्रेरक, बालकों को नयी बातें सीखने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। अतः अगर अध्यापक चाहता है कि उसके छात्र नये पाठ को सीखें, तो वह प्रशंसा, प्रोत्साहन, प्रतिद्वंद्विता आदि विधियों का प्रयोग करके उनको प्रेरित करे। स्टीफेन्स के अनुसार शिक्षक के पास जितने भी साधन उपलब्ध है, उनमें प्रेरणा संभवतः सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।" ।

सीखने की प्रभावशाली विधियाँ :

किसी नयी क्रिया अथवा नये पाठ को सीखने हेतु विभिन्न विधियों का प्रयोग किया जा सकता है। हम इनमें से सिर्फ उन विधियों का वर्णन कर रहे हैं, जिनको मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर ज्यादा उपयोगी तथा प्रभावशाली पाया गया है। ये विधियाँ निम्न हैं–

1. करके सीखना :– डॉ. मेस का कथन है– "स्मृति का स्थान मस्तिष्क में नहीं, बल्कि शरीर के अवयवों में है। यही कारण है कि हम करके सीखते हैं।"

बालक जिस कार्य को स्वयं करते हैं, उसे वे जल्दी सीखते हैं। कारण यह है कि उसके करने में वे उसके उद्देश्य का निर्माण करते हैं, उसको करने की योजना बनाते हैं तथा योजना को पूर्ण करते हैं। फिर, वे यह देखते हैं कि उनके प्रयास सफल हुए हैं अथवा नहीं। अगर नहीं, तो वे अपनी गलतियों को मालूम करके उनमें सुधार करने का प्रयास करते हैं।

2. निरीक्षण करके सीखना :– योकम तथा सिम्पसन के अनुसार– "निरीक्षण–सूचना प्राप्त करने, आधार सामग्री एकत्र करने तथा वस्तुओं एवं घटनाओं के बारे में यही विचार प्राप्त करने का साधन है।" बालक जिस वस्तु का निरीक्षण करते हैं, उसके बारे में वे जल्दी तथा स्थायी रूप सीखते हैं। इसका कारण यह है कि निरीक्षण करते समय वे उस वस्तु को छूते हैं अथवा प्रयोग करते हैं या उसके बारे में बातचीत

करते हैं। इस तरह वे अपनी एक से ज्यादा इंद्रियों का प्रयोग करते हैं। फलस्वरूप, उनके स्मृति–पटल पर उस वस्तु का स्पष्ट चित्र अंकित हो जाता है।

3. परीक्षण करके सीखना :– नयी बातों की खोज करना एक तरह का सीखना है। बालक इस खोज को परीक्षण द्वारा कर सकता है। परीक्षण के पश्चात् वह किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है। इस तरह वह जिन बातों को सीखता है, वे उसके ज्ञान का अभिन्न अंग हो जाती हैं; उदाहरणार्थ, वह इस बात का परीक्षण कर सकता है कि गर्मी का ठोस तथा तरल पदार्थों पर क्या प्रभाव पड़ता है। वह इस बात को पुस्तक में पढ़कर भी सीख सकता है। लेकिन यह सीखना उतना महत्वपूर्ण नहीं होता है जितना कि स्वयं परीक्षण करके सीखना ।

4. सामूहिक विधियों द्वारा सीखना :– सीखने का कार्य– व्यक्तिगत तथा सामूहिक विधियों द्वारा होता है। इन दोनों में सामूहिक विधियों को ज्यादा उपयोगी तथा प्रभावशाली माना जाता है। इनके संबंध में कोलसनिक की धारणा इस तरह है–"बालक को प्रेरणा प्रदान करने, उसे शैक्षिक लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद देने, उसके मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम बनाने, उसके सामाजिक समायोजन को अनुप्राणित करने,उसके व्यवहार में सुधार करने तथा उसमें आत्मनिर्भरता एवं सहयोग की भावनाओं का विकास करने हेतु व्यक्तिगत विधियों की तुलना में सामूहिक विधियाँ कहीं ज्यादा प्रभावशाली हैं।"
मुख्य सामूहिक विधियाँ निम्न हैं :–

(1) वाद–विवाद विधि :– इस विधि में हर छात्र को अपने विचार व्यक्त करने तथा प्रश्न पूछने का अवसर दिया जाता है।

(2) वर्कशॉप विधि :– इस विधि में विभिन्न विषयों पर छात्र सभाओं का आयोजन किया जाता है तथा इन विषयों के हर पहलू का छात्रों द्वारा अध्ययन किया जाता है।

(3) सम्मेलन तथा विचार–गोष्ठी विधि :– इन विधियों में से किसी विशेष विषय पर छात्रों द्वारा विचार–विनिमय किया जाता है।

(4) प्रोटेक्ट डाल्टन तथा बेसिक विधिय :– इन आधुनिक विधियों में व्यक्तिगत तथा सामूहिक–दोनों तरह के प्रेरकों का स्थान होता है। हर छात्र अपनी व्यक्तिगत रुचि, ज्ञान तथा क्षमता के अनुसार स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, जिससे उसका सीखने का कार्य सरल हो जाता है। इसके अलावा सामूहिक रूप से कार्य करनेसे उसमें स्पर्धा, सहयोग तथा सहानुभूति का विकास होता है।

5. मिश्रित विधि द्वारा सीखना– सीखने की दो महत्वपूर्ण विधियाँ हैं :– पूर्ण विधि तथा आंशिक विधि । पहली विधि में छात्रों को सर्वप्रथम पाठ्य–विष्य का पूर्ण ज्ञान कराया जाता है तथा फिर उसके विभिन्न अंगों में संबंध स्थापित किया जाता है। दूसरी विधि में पाठ्य–विषय को खंडों में बाँट दिया जाता है । आधर्श्निनिक विचारधारा के अनुसार इन दोनों विधियों को मिलाकर सीखने हेतु मिश्रित विधि का प्रयोग किया जाता है।

6. सीखने की स्थिति का संगठन :– सीखने के कार्य को सरल तथा सफल बनाने हेतु सबसे ज्यादा जरूरत होती है–सीखने की स्थिति का संगठन । यह तभी संभव हो सकता है, जब विद्यालय का निर्माण इस तरह किया जाये कि उसमें सीखने की सभी क्रियाएं उपलब्ध हों तथा सीखने की सभी विधियों का प्रयोग किया जाये।

सीखने की ये सभी विधियाँ व्यक्ति के मनोविज्ञान पर आधारित हैं। इन विधियों के प्रयोग से अधिगम एवं शिक्षण, दोनों ही प्रभावशाली हो जाते हैं।

अधिगम स्थानांतरण से क्या अभिप्राय है? अधिगम स्थानांतरण के विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए। शिक्षक को अधिकतम स्थानांतरण हेतु क्या करना चाहिए?

अधिगम का स्थानांतरण :

मानव विकास में सीखने का मुख्य स्थान है । हम हर नवीन कार्य को सीखने में अपने संचित ज्ञान की मदद लेते हैं । यह संचित ज्ञान हमारे सीखने को सरल बनाता है। बी.एड. शिक्षारत छात्र–छात्राएं पूर्व संचित गणित के ज्ञान को मस्तिष्क में जाग्रत करके सांख्यिकी को सीखने में मदद लेते हैं। इस तरह से सीखने में समय तथा शक्ति दोनों की बचत हो जाती है एवं संचित ज्ञान की पुनरावृत्ति भी। अतः जब पूर्व सीखे गये ज्ञान का नवीन सीखे जाने वाले ज्ञान पर प्रभाव पड़ता है, तो उसे सीखने का स्थानांतरण कहते हैं।

डीज ने लिखा है– "सीखने का स्थानांतरण तब होता है, जब एक कार्य का सीखना या निष्पादन दूसरे कार्य के सीखने या निष्पादन में लाभ या हानि पहुंचाता है।"

शिक्षा शब्दकोष के अनुसार– "जब कोई व्यक्ति किसी उद्दीपक के प्रति प्रतिक्रिया करता है, अधिगम अथवा सीखना शुरू हो जाता है। जब अधिगम के विशेष अनुभव व्यक्ति की योग्यता को प्रभावित करते हैं तथा उनका रूप भिन्न होता है, तो वह क्रिया अधिगम–स्थानांतरण के रूप में स्वीकारी जाती है।"

क्रो तथा क्रो के अनुसार– 'सीखने के एक क्षेत्र में प्राप्त होने वाले ज्ञान अथवा कुशलताओं का चिंतन करके, अनुभव करने तथा कार्य करने की आदतों का सीखने के दूसरे क्षेत्र में प्रयोग करना साधारणतः प्रशिक्षण का स्थानांतरण कहा जाता है।"

विश्लेषण :

उपर्युक्त का अगर हम विश्लेषण करें, तो निम्न विशेषताएं पाते हैं–

1. स्थायी सीखना :– अधिगम का स्थानांतरण सीखने के स्थायित्व पर निर्भर करता है। किसी कार्य को सीखने से मस्तिष्क में चिन्ह अंकित हो जाते हैं, जो समयानुसार जाग्रत होकर हमारे व्यवहार अथवा क्रिया को सरल बनाते हैं। अतः सीखना स्थायी होना स्थानांतरण हेतु जरूरी है।

2. स्थिति का चयन :– अधिगम में स्थानांतरण स्थिति चयन पर निर्भर करती है। थॉर्नडाइक ने अपने प्रयोगों से स्पष्ट कर दिया है कि जो व्यक्ति सही प्रतिचारों का चयन करके अभ्यास करते हैं, वे सीखने में जल्दी उन्नति करते हैं। यही स्थिति सीखने के स्थानांतरण में भी होती है। जब व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों में से सही को छाँट कर प्रयोग करता है, तो सीखने में स्थानांतरण होता है। इसी को स्थिति का चयन कहते हैं।

3. प्रभाव :– सीखने में स्थानांतरण उसी समय स्पष्ट होता है, जब सीखने में उन्नति होती । इस प्रभाव के अंतर्गत अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण तथा आदतों आदि के प्रभाव सम्मिलित हैं, जिससे सीखने में स्थानांतरण सकारात्मक अथवा नकारात्मक तरह से प्रतिपादित होता है।

अधिगम के स्थानांतरण की परिभाषाएं :

अधिगम अथवा शिक्षा के स्थानांतरण की कुछ परिभाषाएं इस तरह हैं–

कॉलसनिक के अनुसार– "शिक्षा के स्थानांतरण से तात्पर्य एक परिस्थिति में प्राप्त ज्ञान, आदत, निपुणता, अभियोग्यता का दूसरी परिस्थिति में प्रयोग करना है।"

सोरेन्सन के अनुसार– "शिक्षा के स्थानांतरण के द्वारा व्यक्ति उस सीमा तक सीखता है, जब तक एक परिस्थिति से प्राप्त योग्यताएं दूसरी में मदद करती हैं।"

क्रो एवं क्रो के अनुसार–"जब सीखने के एक क्षेत्र में प्राप्त विचार, अनुभव अथवा की आदत या निपुणता का प्रयोग दूसरी परिस्थिति में किया जाता है, तो वह अधिगम का अंतरण कहलाता है।"

शिक्षा शब्दकोष के अनुसार–"प्रत्यक्ष प्रशिक्षण के बगैर निश्चित अधिगम में विकास, वृद्धि, किसी संशोधन क्रिया के अभ्यास के द्वारा संबंधित क्रिया में आदान–प्रदानात्मक संशोधन ही शिक्षा का स्थानांतरण है।"

अधिगम स्थानांतरण के प्रकार :

सीखने के स्थानांतरण में यह पाया गया है कि पूर्व ज्ञान कभी–कभी सीखने में सहायता देता है तथा कभी–कभी बाधाएं पैदा करता है। अतः हम स्थानांतरण को निम्न रूपों में पेश करते है–

1. धनात्मक स्थानांतरण :– जब एक परिस्थिति में सीखा गया ज्ञान अथवा क्रिया दूसरी परिस्थिति में ज्ञान अथवा क्रिया को अर्जित करने में मदद सिद्ध होता है, तो सकारात्मक अथवा धनात्मक स्थानांतरण

होता है; जैसे–साइकिल का ज्ञान, मोटर साइकिल सीखने में सहायक होता है तथा गणित का ज्ञान, व्यापार में सहायक होता है ।

2. ऋणात्मक स्थानांतरण :– ऋणात्मक अथवा नकारात्मक स्थानांतरण तब होता है, जब पूर्व संचित ज्ञान नवीन ज्ञान के सीखने में रुकावट पैदा करता है; जैसे–हिन्दी भाषा में गिनती सीखने पर हम अंग्रेजी भाषा की गिनती सीखते हैं, तो हिन्दी भाषा की बनावट हमें रुकावट पैदा करती है।

3. शून्य स्थानांतरण :– जब पूर्व संचित ज्ञान नवीन सीखने में न मदद करते हैं तथा न रुकावट पैदा करते हैं, तब शून्य स्थानांतरण होता है। मानव मस्तिष्क में ऐसा बहुत–सा ज्ञान होता है जो किसी समय मानव के सीखने को प्रभावित नहीं करता है। इसलिए विद्वानों ने इसे स्थानांतरण नहीं माना है।

स्थानांतरण के सिद्धांत :

सीखने में स्थानांतरण के स्वरूप को स्थापित करने वाले सिद्धांतों को हम दो भागों में विभक्त करके पेश करते हैं–

1. स्थानांतरण के प्रचीन सिदान्त :– सीखने के स्थानांतरण के प्राचीन सिद्धांतों में 'मानसिक शक्तियों का सिद्धांत' तथा 'औपचारिक मानसिक प्रशिक्षण' के सिद्धांत शामिल है। मानसिक शक्तियों के सिद्धांत के बारे में गेट्स तथा अन्य ने लिखा है–

"अवधान, स्मृति, कल्पना, तर्क, इच्छा, स्वभाव, कभी–कभी चरित्र तथा अन्य गुण मानसिक शक्तियों के रूप में होते हैं। यह सभी शक्तियाँ एक–दूसरे से स्वतंत्र होती हैं, इसलिए इनको स्वतंत्र रूप में सक्षम बनाया जा सकता है।"

उपयुक्त विचार से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानसिक प्रक्रियाएं अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं तथा वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने में समर्थ हैं। अतः इनका प्रशिक्षण ही सीखने में स्थानांतरण को बढ़ावा देता है।

इसी तरह से औपचारिक मानसिक प्रशिक्षण के सिद्धांत के बारे में गेट्स तथा अन्य ने लिखा है–"मानसिक शक्तियों को प्रशिक्षण के द्वारा समान तथा समग्र रूप में किसी भी परिस्थिति में कुशलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है।"

उपयुक्त विचार से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानसिक प्रक्रियाएं अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती हैं तथा वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने में समर्थ हैं। अतः इनका प्रशिक्षण ही सीखने में स्थानांतरण को बढ़ावा देता है–

इसी तरह से औपचारिक मानसिक प्रशिक्षण के सिद्धांत के बारे में गेट्स तथा अन्य ने लिखा है–"मानसिक शक्तियों को प्रशिक्षण के द्वारा समान तथा समग्र रूप में किसी भी परिस्थिति में कुशलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है।"

उपयुक्त विचार से स्पष्ट होता है कि अवधान, स्मृति आदि मानसिक शक्तियों को किसी भी क्षेत्र में प्रशिक्षण दिया जाये, तो सीखने में स्थानांतरण होता है। आज इन प्राचीन सिद्धांतों का कोई महत्व नहीं है, क्योंकि ये वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में आज निरीक्षण तथा परीक्षण का इतना प्रयोग बढ़ गया है कि हर सिद्धांत का वैज्ञानिक मापदंड बन चुका है।

2. **स्थानांतरण के आधुनिक सिद्धांत** :– सीखने के आधुनिक सिद्धांत विभिन्न प्रयोगों के आधारों पर गठित हैं। इनमें थॉर्नडाइक, जड तथा बागले आदि के सिद्धांत आते हैं। इन सिद्धांतों के महत्व को देखते हुए हम हर का विस्तार से वर्णन करेंगे–

I- थॉर्नडाइक का सिद्धांत :– थॉर्नडाइक महोदय ने सीखने महत्वपूर्ण कार्य किये हैं। आपने स्थानांतरण के सिद्धांत को 'समरूप तत्वों का सिद्धांत' नाम दिया है। इस समरूप सिद्धांत का वर्णन हम निम्न तरह से करते हैं–

समरूप तत्वों के सिद्धांत का अर्थ–थॉर्नडाइक ने सीखने के प्रयोगों में पाया कि बिल्ली अपने पूर्व अनुभवों का प्रयोग सीखने में करती है। इसलिए जब व्यक्ति संचित अनुभवों में से नवीन सीखने हेतु समरूप तत्वों को छाँट लेता है तथा उनका प्रयोग करके नवीन कार्य को शीघ्र सीख लेता है, तो इसे समरूप तत्वों का सिद्धांत कहा जाता है। सरलीकरण के रूप में कहा जा सकता है कि नवीन कार्य तथा संचित अनुभवों में से समान तत्वों को छाँट लेना ही सीखने में उन्नति करता है; जैसे–दर्शनशास्त्र का ज्ञान मनोविज्ञान के सीखने में मदद देता है।

स्थानांतरण कैसे हो? थॉर्नहाइक ने स्थानांतरण को सीखने तथा बुद्धि पर निर्भर माना है। जब सीखना स्थायी होगा तथा बुद्धि के प्रयोग से हम समरूप तत्वों का चयन कर लेंगे, तो स्थानांतरण आसानी से होगा। अगर हम सीखने के ज्ञान को चयन करने में सफल नहीं होते हैं, तो उसका स्थानांतरण संभव नहीं हो सकता है। अतः शिक्षक को शिक्षा देते समय छात्रों के संचित ज्ञान को जाग्रत कर देना चाहिए, ताकि वे स्थानांतरण के द्वारा जल्दी सीख सकें।

II- सी.एच. जड का सिद्धांत :– आपने सीखने में स्थानांतरण पर प्रयोग किये तथा एक नवीन सिद्धांत को प्रतिपादित किया। इसको 'सामान्यीकरण का सिद्धांत' कहा जाता है।

सामान्यीकरण का अर्थ– बालक अपने विकास के साथ–साथ विभिन्न अनुभव अर्जित करता है। यह अनुभव मिलकर एक निष्कर्ष निकालते हैं, जिसे नियम अथवा सिद्धांत का नाम दिया जाता है। भविष्य में वह इसका प्रयोग सामान्य जीवन की समस्याओं को सुलझाने में करता है। इस संपूर्ण प्रक्रिया को सामान्यीकरण कहते

हैं, जैसा कि गेट्स तथा अन्य ने लिखा है–"विशिष्ट परिस्थितियों में समान विशेषताएं अथवा सिद्धांत या संबंध स्थापना की प्रक्रिया सामान्यीकरण होती है।

स्थानांतरण कैसे हो? व्यक्ति सीखते समय ज्ञान की क्रमबद्धता, आदतों तथा मनोवृत्तियों को धारण करता है। जब वह अन्य परिस्थितियों में सीखता है, तो वह इनका प्रयोग करके सीखने को सरल बना लेता है । यानी वह संचित ज्ञान,आदतों,मनोवृत्तियों आदि के आधार पर बनाये गये नियमों का व्यवहार में पालन करके नवीन कार्य को सीखता है। अतः जिस व्यक्ति के पास जितने ज्यादा सामान्य सिद्धांत होंगे वह उतना ही उनका स्थानांतरण नवीन सीखने में कर सकेगा। 'जड' महोदय ने 1908 में एक प्रयोग द्वारा इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया। आपने दो दलों (लड़कों) को निशाना लगाने हेतु तैयार किया। जब वे एक विशेष गहराई पर निशाना लगाने में सफल हो गये, तब निशाने की गहराई को बदल दिया गया। जो लड़के 'किरण की वक्र रेखा' के नियमों को समझ गये थे, उन्होंने निशाने की गहराई को बदलने पर ही सही निशाना लगाया, पर जो इस नियम से परिचित नहीं थे, वे निशाना लगाने में असफल हुए । इससे 'जड़ महोदय ने यह निष्कर्ष निकाला कि स्थानांतरण किसी कार्य के नियमों तथा सिद्धांतों को समझने से एवं उनका सामान्यीकरण करने से होता है। सी.एच. जड ने लिखा है–"एक शिक्षक जिसका दृष्टिकोण ज्ञान के क्षेत्र में व्यापक है तथा वह सिर्फ सूचना के माध्यम से एक सत्य का उद्घाटन नहीं करता, वरन् उन सभी संकेतों का ताना–बाना तैयार करता है जो शेष संसार का केन्द्रीभूत सत्य है।

III- बाग्ले का सिद्धांत :– डब्लू. सी बाग्ले ने सीखने में स्थानांतरण को बहुत ही महत्वपूर्ण माना है। सामान्यीकरण के पीछे तथा समान तत्वों के पीछे आदर्श और मूल्य माने हैं, जो सीखने में स्थानांतरण को सफल बनाते हैं। अतः आपने अपने सिद्धांतों का नाम 'आदर्शों तथा मूल्यों' का सिद्धांत रखा है। बच्चों में विकास के साथ–साथ आदर्शों तथा मूल्यों का गठन होता रहता है । अतः वे जीवन भर उनका प्रयोग करते रहते हैं; उदाहरण के लिए–बच्चों में अगर स्वच्छता तथा सौंदर्यता का भाव विकसित करना है, तो उन्हें सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक रूप से प्रशिक्षित किया जाये। भविष्य में वे स्वयं अपने इस आदर्श का पालन अपने जीवन में करते रहेंगे। अतः निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा के द्वारा बच्चों में आदर्शों तथा मूल्यों का गठन करना चाहिए, ताकि वे जीवन भर उनका स्थानांतरण करके लाभ उठा सकें।

सकारात्मक स्थानांतरण के उपाय :

दैनिक जीवन के अनुभवों से स्पष्ट होता है कि अधिगम अथवा सीखने की प्रक्रिया में सकारात्मक स्थानांतरण का बहुत ज्यादा महत्व है। इससे सीखने की प्रक्रिया बहुत सरल हो जाती है। संसार के प्रमुख व्यक्तियों में स्थानांतरण की शक्ति अत्यधिक पायी गयी है। इसलिए वे हर समस्या का हल स्वतः ही खोज लिया करते थे। अतः हम शिक्षा के क्षेत्र में उन बातों पर प्रकाश डालेंगे, जो बच्चों में सकारात्मक स्थानांतरण को प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

1. सीखने वाले की तैयारी :– आज के सभी शिक्षाशास्त्री इस बात पर सहमत हैं कि कोई भी ज्ञान अथवा कर्म तभी सीखा जा सकता है जब सीखने वाला तैयार हो। सीखने वाले की रुचि, मनोवृत्ति, तत्परता, उद्देश्य की स्पष्टता तथा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य आदि का प्रभाव सीखने पर पड़ता है। जब सीखने की लगन होगी तो सीखने में स्थानांतरण स्वतः ही

होगा। इसके लिए हमें बच्चों के विकास, गत्यात्मकता तथा जीवंतता का अध्ययन करना चाहिए । शिक्षक को बच्चे का व्यक्तित्व समग्र मानना चाहिए। साथ ही उस पर अचेतन मन के प्रभावों का भी ध्यान रखा जाये, ताकि बच्चों के व्यवहार को सामान्य बनाकर सीखने में सही स्थानांतरण हो सके।

2. सीखने की उपयुक्त विधियों का प्रयोग :– सीखने के क्षेत्र में आज विभिन्न विधियों का प्रतिपादन हो चुका है। हर विधि अलग–अलग ज्ञान तथा कार्य के लिए प्रयोग नहीं की जा सकती है। शिक्षक को चाहिए कि वह छात्रों को विभिन्न विषयों के सीखने हेतु उत्तम विधि बतलाये, ताकि वे अन्य विधियों की अपेक्षा जल्दी सीख सकें। बच्चों को व्यावहारिक ज्ञान अधिक से अधिक दिया जाये। विषयों में सह–संबंध स्थापित करके शिक्षा दी जाये । प्रयत्न तथा भूल, सूझ एवं अनुकरण की विधियों का प्रयोग सीखते समय करना चाहिए। जब किसी ज्ञान का स्मरण करना है, तो स्मरण की विभिन्न विधियों में से उपयुक्त विधि का प्रयोग करना चाहिए। इस तरह से बच्चे स्वतः ही सही विधि के द्वारा ज्ञान को सीख कर स्थानांतरण करने में सफलता पा लेते हैं।

3. सामान्यीकरण का प्रशिक्षण :– अध्यापकों को चाहिए कि वे बच्चों को बिखरे हुए तथ्यों के स्थान पर नियमों, सिद्धांतों के निर्माण करने पर प्रशिक्षण दें। बच्चों को अनुभवों तथा निष्कर्षों के आधार पर सामान्य नियमों का गठन करने हेतु प्रेरित करना चाहिए । उनको अनुभवों का सामान्यीकरण कैसे करना चाहिए, शिक्षण देना चाहिए। साथ ही बच्चों को अपनी बुद्धि का सही प्रयोग करना चाहिए। इस तरह से शिक्षक के सहयोग से बच्चे सामान्यीकरण के द्वारा. स्थानांतरण करना सीख जायेंगे।

4. विषय का पूर्ण ज्ञान :– थॉर्नडाइक, जड तथा बागले ने अपने–अपने प्रयोगों से स्पष्ट कर दिया है कि स्थानांतरण तभी सही रूप से होता है जब बच्चों को विषय का सही तथा पूर्ण ज्ञान होता है। विषय के पूर्ण ज्ञान से अभिप्राय बच्चों को सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक पक्षों से परिचित करवाना, ताकि वे उसका स्थानांतरण के द्वारा दैनिक जीवन में प्रयोग कर सकें।

5. समान तत्वों का चयन :– थॉर्नडाइक महोदय के स्थानांतरण के सिद्धांत का प्रयोग बालक अधिक से अधिक करते हैं। यह सरल भी है। शिक्षक को चाहिए कि वे बच्चों को ऐसा प्रशिक्षण दें, ताकि बच्चे संचित ज्ञान तथा अर्जित ज्ञान दोनों के समान तत्वों को छाँट लें, फिर उसका स्थानांतरण करके क्रिया को जल्दी सीख लेते हैं। इसके लिए अनुभवों की अधिकता तथा बुद्धि का सही प्रयोग जरूरी है। जैसा कि सोरेन्सन ने लिखा है–"समान तत्वों के सिद्धांत के अनुसार, एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में उस सीमा तक स्थानांतरण हो जाता है, जबकि दोनों ही समान होते हैं।

6. स्थानांतरण का अभ्यास :– सीखने वाले को स्थानांतरण का प्रशिक्षण देने से अथवा अभ्यास कराने से स्थानांतरण में उन्नति होती है, उदाहरण के लिए अगर हम सीधे हाथ (दायें) से कार्य को न करके बायें हाथ से करना सीखते हैं, तो पूर्व ज्ञान का स्थानांतरण अभ्यास के द्वारा शीघ्र हो जाता है। इसमें हमें समान तत्वों का भी चुनाव करना पड़ता है तथा नियमों का सामान्यीकरण भी करना पड़ता है। अतः अभ्यास के द्वारा ही स्थानांतरण में कुशलता आती है। उपयुक्त सकारात्मक स्थानांतरण के उपायों से स्पष्ट होता है कि छात्र को अध्यापक के द्वारा तैयारी करवानी चाहिए, ताकि वह विकास के साथ–साथ स्थानांतरण करने में कुशलता प्राप्त कर ले। अध्यापक की भूमिका के बारे में औरेटा ने लिखा है–

प्रथम– स्थानांतरण सामग्री का ज्ञान अध्यापक को होना चाहिए।

द्वितीय– स्थानांतरण के लिए शिक्षण पद्धति निश्चित करना।

तृतीय– बच्चों में स्थानांतरण को व्यावहारिक रूप से लागू करना चाहिए।

अधिगम के स्थानांतरण का महत्व :

छात्र की शिक्षा में अधिगम के अंतरण का विशेष महत्व है। अधिगम के अंतरण से वैज्ञानिक विज्ञान के अनुभवों के आधार पर नवीन समस्याओं का समाधान करते हैं। शक्ति–मनोविज्ञान के समर्थक अधिगम के अंतरण का विशेष महत्व मानते हैं। शक्ति–मनोविज्ञान के समर्थक कहते हैं कि–"मस्तिष्क की कोई भी शक्ति हर परिस्थिति में एक जैसा व्यवहार करती है। अगर किसी बालक की स्मरण–शक्ति अच्छी है, तो वह जीवन के हर क्षेत्र में सफल होगा।'

शक्ति–मनोविज्ञान के समर्थकों का विश्वास है कि जिस तरह व्यायाम के द्वारा शरीर को स्वस्थ बनाया जा सकता है, उसी तरह अध्ययन के द्वारा मानसिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार अधिगम के अंतरण का महत्व इस तरह है–

"लैटिन भाषा के पढ़ने से तर्क, निरीक्षण, तुलना तथा संश्लेषण की शक्ति बढ़ती है। गणित का अध्ययन अवधान बढ़ाता है एवं तर्क शक्ति को विकसित करता है। इसी तरह चरित्र की संकल्प सक्ति को शक्तिशाली बनाने हेतु अध्ययन से श्रेष्ठ और कोई साधन नहीं है।"

अधिगम के अंतरण के पीछे अनुशासनकार्य करता है। अनुशासन का अर्थ मानसिक शक्तियों का उचित उपयोग है, जो किसी विशेष विधि से कार्य में सश्लिंलता प्राप्त करने हेतु होना चाहिए। मनोविज्ञान के जन्म से ही अधिगम उसका केन्द्र बिन्दु रहा है। अधिगम का अंतरण शिक्षण के कार्य को सरल बना देता है।

शिक्षक अधिगम के अंतरण के द्वारा ही बालक के भविष्य का निर्माण करता है।

अधिकतम अधिगम अंतरण के लिए शिक्षा व्यवस्था

अधिगम का अंतरण अधिकतम हो, इसके लिए शिक्षा व्यवस्था निम्न तरह से की जा सकती है :–

(1) बालक को ज्यादा से ज्यादा सामान्यीकरण करने को कहा जाये। अगर बालक अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर सामान्य सिद्धांत निकाल लेता है, तो अपने अधिगम का अंतरण कर लेता है।

(2) अधिकतम अधिगम अंतरण हेतु बालक को अर्थपूर्ण तथ्य अधिक से अधिक सीखने चाहिए। स्थानांतरण समझने की योग्यता पर निर्भर करता है। थॉर्नडाइक का कथन है–"समझने में समान वंश का ज्ञान होता है। समानता अंतरण का मुख्य लक्षण है।"

(3) बालक में उस ज्ञान को प्राप्त करने के प्रति मनोवृत्ति होनी चाहिए, जिसका अंतरण होना है। किसी विषय–वस्तु के प्रति स्थानांतरण हेतु उस विषय के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति होनी आवश्यक है।

(4) शिक्षक को विषयों में समन्वय करके पढ़ाना चाहिए। इस तरह एक विषय के ज्ञान का अंतरण दूसरे विषय में हो जायेगा।

(5) अधिगम के अंतरण हेतु बालक को अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ।

(6) नवीन परिस्थितियों को पूर्व अनुभवों के संदर्भ में सीखा हुआ ज्ञान प्रयोग करने से संस्कारों का स्थानांतरण संभव होता है।

(7) अधिकतम अंतरण के लिए ज्यादा याद करना अधिगम के स्थानांतरण में मददगार होता है।

(8) स्थानांतरण होने वाले विषय के प्रति बालक में आत्म–विश्वास की मनोवृत्ति होनी चाहिए।

(9) क्रियात्मक अनुभव भी अधिगम के अंतरण को संभव बनाता है।

(10) उपयुक्त शिक्षण पद्धति अधिकतम अधिगम के अंतरण में मदद करती है।

अधिगम के पैवलॉव के अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का वर्णन कीजिए।

पैवलॉव का अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत :

पैवलॉव के इस सिद्धांत को संबंध प्रत्यावर्तन सिद्धांत भी कहते हैं। इस सिद्धांत का प्रतिपादन सन् 1904 में रूस के सुविख्यात मनोवैज्ञानिक आई.वी. पैवलॉव के द्वारा किया गया । यह सिद्धांत शरीर विज्ञान से संबंधित है तथा इस सिद्धांत के प्रबल समर्थक व्यवहारवादी है।

व्यवहारवादियों के अनुसार, "अधिगम अनुकूलन द्वारा आदत का बनना है।"

इस सिद्धांत के अनुसार जब कोई अस्वाभाविक उत्तेजक कई बार स्वाभाविक उत्तेजक के साथ आता है तो व्यक्ति अस्वाभाविक उत्तेजक के प्रति भी स्वाभाविक प्रतिक्रिया करने लगता है। अस्वाभाविक उत्तेजक के प्रति स्वाभाविक प्रतिक्रिया करने को संबंध प्रत्यावर्तन कहते हैं। उदाहरणार्थ–हम अपने मित्र को देखकर प्रसन्न होते हैं जो एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। जब हमारे मित्र हमारे घर आते हैं तो घर के दरवाजे पर एक विशेष तरह की आहट करते हैं। ऐसी स्थिति में कुछ समय बाद हम मित्र को देखने से पहले आहट सुनकर ही प्रसन्न हो जाते हैं । इस प्रकार प्रसन्न होने (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) का संबंध आहट होने (अस्वाभाविक उत्तेजक) के साथ हो जाता है। इस विचार की पुष्टि करने के लिए पैवलॉव ने कुत्ते पर प्रयोग किया।

पैवलॉव का प्रयोग–पैवलॉव ने एक कुत्ते की लार ग्रंथि का ऑपरेशन करके उसके गले में लार को एकत्रित करने के लिए काँच की एक नली लगाई। इसके उपरांत कश्न्ति को भूखा रखा गया तथा उसे भोजन देने से पहले कुछ दिनों तक घण्टी बजाई गई। इस प्रयोग के आधार पर पैवलॉव ने यह देखा कि घण्टी के बजते ही कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगती है। कुत्ते के द्वारा की जाने वाली इस अनुक्रिया को ही उसके

द्वारा संबद्ध सहज क्रिया की संज्ञा दी गई है । पैवलॉव ने यह निष्कर्ष निकाला कि कुत्ते के समान बालक भी एक कृत्रिम उद्दीपक से संबद्ध होकर अनुक्रिया करना सीख लेते हैं।

इस संबंध में गिलफोर्ड कहते हैं कि इस तथ्य की सामान्य व्याख्या यह है कि जब दो उद्दीपक बार–बार दिये जाते हैं, पहले नया, बाद में पुराना एक समय पहली क्रिया भी प्रभावशाली हो जाती है।

लाडैल ने अनुकूलित अनुक्रिया के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा है कि–"अनुकूलित अनुक्रिया में कार्य के प्रति स्वाभाविक उत्तेजक के स्थान पर एक प्रभावहीन

उद्दीपक होता है, जो स्वाभाविक उद्दीपक के साथ संबद्ध होने के परिणामस्वरूप प्रभावपूर्ण हो जाता है।"

अनुकूलित अनुक्रिया को नियंत्रित करने वाले मुख्य कारक :

अनुकूलित अनुक्रिया को नियंत्रित करने वाले मुख्य कारक इस तरह हैं :–

1. **भावात्मक प्रेरक :–** अनुकूलित अनुक्रिया को नियंत्रित करने वाला सर्वाधिक प्रबल कारक भावात्मक प्रेरक है। भावात्मक अभिप्रेरक जितने ज्यादा सबल होंगे, अनुक्रिया उतनी ही अधिक होगी एवं उत्तेजना तथा अभिप्रेरणा के बीच जितने अधिक सबल अभिप्रेरक होंगे उतने अधिक स्थायी उनके प्रभाव होंगे।

2. **उद्दीपनों की पुनरावृत्ति :–** किसी क्रिया की बार–बार पुनरावृत्ति करने पर वह क्रिया व्यक्ति के स्वभाव का अंग बन जाती है। इसको पुष्ट करने हेतु वाटसन ने एक बालक पर प्रयोग किये। वाटसन ने सबसे पहले बालक को बिल्ली से डराया, तदोपरांत रोयेंदार चीजों से उसे डराया गया। बाद में उस बालक में प्रत्येक रोयेंदार चीज से डरने की आदत विकसित हो गयी।

3. **अनुक्रिया का प्रभुत्व :–** उद्दीपन में, अनुकूलित अनुक्रिया हेतु , अनुक्रिया पैदा करने की शक्ति होनी चाहिए एवं अनुक्रिया को पैदा करने हेतु तदनुरूप ही उद्दीपन भी होने चाहिए। पैवलॉव ने अपने प्रयोग में घण्टी बजने व भूखे कुत्ते को भोजन के साथ संयुक्त किया न कि भोजन को घंटी बजने के साथ। लार, मात्र भोजन से ही पैदा हो सकती है, किसी अन्य वस्तु से नही।

4. **दो उद्दीपनों में समय का संबंध :–** अनुकूलित अनुक्रिया के अंतर्गत सर्वप्रथम नवीन उद्दीपन दिया जाना चाहिए, तदोपरांत ही मौलिक उद्दीपन किया जाना चाहिए। इन दोनों उद्दीपनों के मध्य समय का अधिक अंतर होने से, प्रभाव उतना ही कम होगा। दोनों उद्दीपनों के मध्य 5 सैकिण्ड के अंतर का सर्वाधिक प्रभाव होता है।

अनुकूलित अनुक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक :

अनुकूलित अनुक्रिया को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक इस तरह है :–

1. अभिप्रेरक :– यह अनुकूलित अनुक्रिया को प्रभावित करने वाला एक प्रमुख कारक है प्रयोज्य को अगर अभिप्रेरणा प्रदान की जाने वाली अनुकूलित अनुक्रिया है तो वह बहुत ही जल्दी संपन्न होगी।

2. बुद्धि :– अधिक विवेकशील व्यक्ति अनुकूलित अनुक्रिया को अत्यन्त अल्प समय में कर लेता है दूसरे शब्दों में वह स्व विक एवं अस्वाभाविक उद्दीपनों के बीच अत्यंत शीघ्र संबंध स्थापित कर लेता है।

3. आयु:– अल्पायु के बालकों पर सामाजिक नियंत्रण का प्रभाव कम पड़ने के कारण, उनमें अल्प समय में ही अनुकूलित अनुक्रिया होती है।

4. मानसिक स्वास्थ्य:– अनुकूलित अनुक्रिया के संपन्न होने में मानसिक स्वास्थ्य का भी अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है। मानसिक दृष्टि से स्वस्थ बालक में, मानसिक रूप में अस्वस्थ बालक की बजाय अनुकूलित अनुक्रिया बहुत शीघ्र होगी।

5. बाह्य विघ्न:– स्वाभाविक उत्तेजना एवं अस्वाभाविक उत्तेजना के बीच कोई बाह्य उत्पन्न होने से उत्तेजना की अनुक्रिया में अधिक समय लगता है ।

6. अभ्यास:– अभ्यास भी अनुकूलित अनुक्रिया को प्रभावित करता है। स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक उत्तेजना की बार–बार पुनरावृत्ति करने से अनुकूलित अनुक्रिया उतनी ही अधिक सु.ढ़ होती है।

प्रानुकूलित अनुक्रिया–जब अन्य क्रिया से अनुकूलित अनुक्रिया से संबंध में वृद्धि कर दी जाती है तो उसे प्रानुकूलित अनुक्रिया कहते हैं। प्रानुकूलित अनुक्रिया के अंतर्गत स्वाभाविक उद्दीपनों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। अग्रलिखित विश्लेषण द्वारा प्रानुकूलित अनुक्रिया को स्पष्ट किया गया है–

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह ज्ञात होता है कि जैसे–जैसे अस्वाभाविक उत्तेजनाओं की संख्या में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे उसके प्रभाव में भी वृद्धि होती जाती है।

अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का शिक्षा में प्रयोग

अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत, व्यवहार पर आधारित है।

इस संबंध में वाटसन ने कहा है– मुझे कोई भी बच्चा दे दो, मैं उसे जैसा चाहूँ वैसा बना सकता हूँ।

विद्यालयों में अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का प्रयोग सहजतापूर्वक किया जा सकता है :–

1. इस सिद्धांत के द्वारा छात्रों में विभिन्न आदतों का विकास किया जा सकता है। कोई भी कार्य बार–बार करने से आदत बन जाता है। इस सिद्धांत के शैक्षिक महत्व के संबंध में पैवलॉव ने कहा है कि "प्रशिक्षण पर आधारित भिन्न–भिन्न प्रकार की आदतें शिक्षा एवं अन्य अनुशासन अनुकूलित अनुक्रिया की श्रृंखला के अलावा और कुछ भी नहीं है।'

2. यह सिद्धांत बालकों में विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों का विकास करने में मददगार है।

3. बालकों को अक्षर ज्ञान कराने एवं शब्दों का अर्थ सिखाने के लिए भी इस सिद्धांत का प्रयोग किया जा सकता है। यह अभ्यास के द्वारा ही संभव है।

4. यह सिद्धांत शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया में अभ्यास के महत्व पर बल देता है।

5. इस सिद्धांत के माध्यम से बालकों में विकसित बुरी आदतों को दूर किया जा सकता है।

6. बालकों में उत्पन्न संवेगात्मक अस्थिरता का प्रभावी उपचार करने में भी यह सिद्धांत सहायक है।

7. यह सिद्धांत छात्रों में निहित आवश्यकताओं की पूर्ति पर बल देता है।

8. इस सिद्धांत के द्वारा शिक्षक बाह्य बाधाओं पर नियंत्रण कर सकता है।

9. अध्यापक इस सिद्धांत के द्वारा बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य कर सकता है।

10. अध्यापक इस सिद्धांत का प्रयोग, बालकों में व्याप्त भय इत्यादि का उपचार करने के लिए भी कर सकता है।

अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत का मूल्यांकन :

सिद्धांत के गुण :–

(1) इस सिद्धांत के द्वारा बालकों में अनुशासनकी भावना का विकास किया जा सकता है।

(2) इस सिद्धांत के आधार पर बालकों में विभिन्न तरह की अभिवृत्तियों का विकास किया जा सकता है।

(3) अनुकूलित अनुक्रिया सिद्धांत के आधार पर उत्तम आदतों का विकास किया जा सकता है।

(4) यह सिद्धांत बालकों में उत्पन्न मानसिक तथा संवेगात्मक अस्थिरताओं का उपचार करने में सहायक है।

इस सिद्धांत के महत्व के संबंध में जी.लैस्ट एण्डरसन ने कहा है कि– "अनुकूलित अनुक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उसके आधार पर हमें एक ऐसी आधारभूत वैज्ञानिक सामग्री प्राप्त हुई है, जिसके द्वारा हम अधिगम के एक सिद्धांत का निर्माण कर सकते हैं।"

सिद्धांत के दोष :–

(i) इस सिद्धांत के आधार पर अधिगम के शारीरिक आधारों को स्पष्ट करने में सुफलता प्राप्त नहीं हो सकी है।

(ii) इस सिद्धांत का प्रयोग प्रौढ़ों पर नहीं किया जा सकता है।

(iii) इस सिद्धांत में स्थायित्व का अभाव पाया जाता है। अनुभवों के आधार पर ऐसा देखने में आता है। उद्दीपकों को हटा देने से बालकों की अनुक्रिया भी प्रभावहीन होती चली जाती हैं ।

(iv) यह सिद्धांत मनुष्य को एक यंत्र के रूप में मानकर चलता है, जबकि मनुन्ष्य अपनी चिंतन शक्ति के आधार पर भी अपनी क्रियाओं को संपन्न करता है।

अधिगम के व्यवहारवादी उपागम की व्याख्या कीजिए। इसकी कमियों पर भी प्रकाश डालिए।

अधिगम के व्यवहारवादी उपागम का अर्थ– अधिगम का व्यवहारवादी उपागम उद्दीपन और प्रत्युत्तर को जोड़ता है। यह उपागम इस बात पर जोर देता है कि व्यवहार प्रतिक्षेपों से शुरू होता है अर्थात् स्वाभाविक प्रत्युत्तर और उद्दीपन के नये बाण्ड से उत्पन्न नये व्यवहार और अनुभवों द्वारा प्रत्युत्तर । इस उपागम के अनुसार जब कोई अधिगमकर्ता किसी ज्ञान को प्राप्त करता है तो इसे अन्य विचारों से जोड़कर ग्रहण करता है। उदाहरण के लिए फूलों की सुदरता से व्यक्ति कई बुरे और अच्छे अनुभव जीवन में प्राप्त करता है।

इस प्रकार व्यवहारवादी उपागम में निम्नलिखित बातें शामिल हैं :–

(1) अधिगम से व्यवहार में परिवर्तन आता है।

(2) अधिगम उस समय होता है जब वातावरण की परिस्थितियां अनुकूल होती हैं। अधिगम व्यक्ति के वातावरण के साथ निरन्तर का अनुक्रिया का परिणाम होता है।

(3) उत्पन्न व्यवहारिक परिवर्तन रूप से प्रेक्षणीय है।

व्यवहारवादी उपागम के क्षेत्र में प्रसिद्ध रूसी मनोवैज्ञानिक इवान पवलोव का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके अनुसार व्यवहार का निर्धारण स्वतंत्र उद्दीपन–प्रत्युत्तर के जटिल व्यवस्था द्वारा होता है। जो अधिगम से और जटिल हो जाता है । थार्नडाईक, वाटसन और स्कीनर ने व्यवहार की वस्तुनिष्ठता पर अधिक जोर दिया है।

अधिगम के व्यवहारवादी उपागम की विशेषतायें– अधिगम के व्यवहारवादी उपागम की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं–

(1) व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक जानवरों और मानव जाति दोनों के व्यवहार को वस्तुनिष्ठ अध्ययन मानते हैं।

(2) यह उपागम वातावरण पर विशेष बल देता है। इसके अनुसार वातावरण व्यवहार के वाहक आनुवंशिकता से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

(3) अनुकूलन व्यवहार के बोध की कुजी है जो उद्दीपन और प्रत्युत्तर के योग से बना है और वस्तुनिष्ठ वैज्ञानिक विधि से सुफतापूर्वक विश्लेषित किया जा सकता है।

(4) अधिगम की प्रमुख विधि अनुकूलन है।

(5) व्यवहारवादियों का विचार है कि ज्ञान की इकाई ज्ञान की नई इकाई से समानता, असमानता या निकटता के द्वारा जुड़ जाती है।

अभिक्रमित अनुदेशन में अनुकूलन की भूमिका अभिक्रमित अनुदेशन 'तुरन्त प्रतिपुष्टि' के संप्रत्यय पर आधारित है। तुरन्त प्रतिपुष्टि प्रतिक्रिया का एक रूप है जो एक पुरस्कार है। इस प्रकार पुरस्कृत करके एक अधिगमकर्ता को अभिप्रेरित किया जाता है। इसलिए अधिगमकर्ता का अनुदेशन उसके तुरन्त प्रतिपुष्टि तथा सीखने लिए उसकी रुचि पर आधारित है।

व्यवहार उपागम की कमियां :–

(1) यह उपागम मनुष्यों को एक मशीन के रूप में प्रयोग करता है जो सही नहीं

(2) यह उपागम संवेगों, विचारों और कार्यों को सम्पूर्ण रूप से प्रत्यक्ष प्रेक्षणीय व्यवहार के सन्दर्भ में व्याख्या करता है ।

(3) इसके परिणाम जानवरों पर किये गये प्रयोग पर आधारित है। इसलिए यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि मानव के सामाजिक अधिगम स्थितियों में भी सफल होगा।

(4) व्यवहारवादियों ने संरचनात्मक और वंशानुक्रम के कारकों की उपेक्षा की है जो भाषा की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया के विकास में बहुत महत्वपूर्ण है।

(5) अनुकूलित पुर्नबलन व्यवस्था में सर्जनशीलता, उत्सुकता आदि तत्वों को विशेष महत्व नहीं दिया जाता।

(6) व्यवहारवादियों का तर्क है कि व्यक्ति के सही व्यवहार उसके जीवनकाल में ही प्राप्त कर लिये जाते हैं। इस प्रकार वह सिद्धान्त आनुवंशिकता को कोई महत्व नहीं देता।

(7) स्किनर का सिद्धांत मानव की अधिगम प्रक्रिया का मशीनीकरण करता है।

(8) अधिगम का अनुकूलन सिद्धान्त मस्तिष्क की गहराई से विचार नहीं करता और इस प्रकार यह प्रकृति से कृत्रिम है।

अधिगम के संज्ञात्मक उपागम का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसकी विशेषताएँ बताइए।

संज्ञान का तात्पर्य– संज्ञान शब्द की व्युत्पत्ति धातु से हुई है जिसका अर्थ है जानना अथवा अवबोधन करना, ग्रहण करना, समझना या सामान्य रूप से जानना है। इस प्रकार संज्ञानात्मक उपागम का अर्थ जानने की सामर्थ्य या वृद्धि या बोध के उपायों से है जो परिपक्वता और वातावरण की अनुक्रिया से प्राप्त होता है। संज्ञान के अन्तर्गत तर्क, स्मरण और भाषा के माध्यम से मानसिक स्वरूप निर्माण करने की क्षमता आती है । इस उपागम के अनुसार अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है और इसे परिवर्तनों के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार अधिगम संज्ञानात्मक रचना में परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

ये प्रायः तीन रुपों में होते हैं :–

(1) **अन्तरीकरण** :– परिवर्तन अधिगम एक व्यक्ति के स्वयं और उसके वातावरण के विशिष्ट क्षेत्रों के अन्तरीकरण से प्रारम्भ होता है। उदाहरण के लिए एक शिशु प्रत्येक स्त्री को मां के रूप में स्वीकार करता

है और आगे चलकर वह मां, चाची, बहन आदि में अन्तर करता है। इस प्रकार संज्ञानात्मक रचना अधिक विशिष्ट हो जाती है।

(2) सामान्यीकरण :— इसके अन्तर्गत ठोस और विशिष्ट उदाहरण दिये जाते हैं और बालक किसी सामान्य परिणाम पर पहुंचता है। सामान्यीकरण के आधार पर बालक विभिन्न। संप्रत्ययों का वर्गीकरण करता है । उदाहरण के लिए बालक प्रारम्भ में विभिन्न वस्तुओं यथा—औरत, जानवर, चिड़िया आदि को अलग—अलग पहचानता है और बाद में विभिन्न प्रत्ययों को मिलाकर एक संप्रत्यय बनाता है यथा—जीवित वस्तुएं । इस प्रकार सामान्यीकरण तक पहुचाता है ।

(3) पुनर्संरचनाकरण :— अन्तरीकरण और सामान्यीकरण के पश्चात बालक अपनी संज्ञानात्मक रचना को इससे समन्वित करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए—बालक जीवित वस्तुओं के संप्रत्यय से सीखता है कि सभी जीवित वस्तुएँ मानव जाति में समान नहीं हैं। इस प्रकार जीवित वस्तुओं का संप्रत्यय भी पुनसंरचना होता है ।

संज्ञानात्मक उपागम की प्रमुख विशेषताएँ— संज्ञानात्मक उपागम की प्रमुख विशेषतया निम्नलिखित हैं :—

(1) आरंभिक संज्ञावादी अंर्त.ष्टि पर विशेष जोर देते हैं जबकि आधुनिक संज्ञानवादी मानव मानसिक प्रक्रिया को महत्व देते हैं।

(2) अधिगम में संज्ञानात्मक उपागम को एक क्रियाशील गतिशील प्रक्रिया को महत्व देते हैं।

(3) इस उपागम से अधिगमकर्ता अंतरीकरण, सामान्यीकरण और पुनर्संरचनाकर के द्वारा ज्ञान प्राप्त करता है अर्थात विशिष्ट संज्ञानात्मक रचना तक पहुंचता है।

(4) संज्ञानात्मक उपागम गतिशील व्यवस्था के द्वारा प्रदर्शित की जाती है।

(5) सीखने वाला अपने उद्देश्यों में प्रयोजनकर्ता और अनुक्रियात्मक होता है।

(6) यह सर्वाधिक संप्रत्यय निर्माण, समस्या समाधान और अन्य उच्च मानसिक प्रक्रियाओं के लिए सन्तुलित है।

गेस्टाल्ट के अधिगम सिद्धांत का संक्षिप्त विवरण दीजिए। इसके शैक्षणिक निहितार्थों को अभिव्यक्त कीजिए।

सूझ या अंत.दृष्टि का सिद्धांत— हम कुछ कार्यों को करके सीखते हैं, और कुछ को दूसरों को करते हुए देखकर सीखते हैं। कुछ कार्य ऐसे भी होते हैं जिन्हें हम बिना बताए अपने आप सीख लेते हैं। इस प्रकार के सीखने को 'सूझ द्वारा सीखना' कहते हैं। इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए गुड ने लिखा है— "सूझ, वास्तविक स्थिति का आकस्मिक, निश्चित और तात्कालिक ज्ञान है।"

कोहलर का प्रयोग :– 'सूझ द्वारा सीखने' के सिद्धांत के प्रतिपादक जर्मनी के 'गेस्टाल्टवादी' हैं। इसलिए इस सिद्धांत को 'गेस्टाल्ट सिद्धांत' कहते हैं। गेस्टाल्टवादियों का कहना है कि व्यक्ति अपनी संपूर्ण परिस्थिति को अपनी मानसिक शक्ति से अच्छी तरह समझ लेता है और सहसा उसे ठीक–ठीक करना सीख जाता है । वह ऐसा अपनी सूझ के कारण करता है। इस संबंध में अनेक प्रयोग किये जा चुके हैं, जिनमें सबसे प्रसिद्ध प्रयोग कोहलर का है।

कोहलर ने सुलतान नामक एक वनमानुष को एक कमरे में बन्द कर दिया। कमरे की छत में एक केला लटका दिया गया और कुछ दूर पर एक बक्स रख दिया गया। वनमानुष ने उछल कर केले को लेने का प्रयास किया पर सफल नहीं हुआ। वह थोड़ी देर कमरे में इधर–उधर घुमा,बक्स के पास खड़ा हुआ, उसे खींचकर केले के नीचे ले गया, उस पर चढ़ गया और उछल कर केला ले लिया।

दूसरी बार उसने केले को थोड़ी और ऊंचाई पर लटका दिया। इस बार कोहलर ने कमरे में एक के स्थान पर दो बक्स रखे। सुलतान ने सूझ–बूझ से यह तो सीख लिया था कि यदि बक्स पर चढ़कर उछला जाए तो वह अधिक ऊंचा उछल सकता है। उसने पहले एक बक्स को केले के नीचे खिसकाया। उस पर चढ़कर वह केले को लेने उछला, परन्तु असफल रहा। उसने सोचा कि यदि किसी और ऊंची वस्तु पर चढ़कर उछला जाए तो वह केले तक पहुंच सकता है। सुलतान ने इधर उधर देखा। दूसरे बक्स को वहां पाकर उसने उस बक्स को पहले बक्स के ऊपर रखा और उस पर चढ़ गया। अब वह पहले से अधिक ऊंचाई पर था। उसने उछलकर केला प्राप्त कर लिया।

कोहलर ने फिर एक और प्रयोग किया। इस बार केला उसने पिंजड़े से बाहर इतनी दूरी पर रखा जिसे सुलतान हाथ बढ़ाकर न पकड़ सके । पिंजड़े में उसने एक लकड़ी रख दी। सुलतान ने पहले अपना हाथ पिंजड़े से बाहर निकालकर केला लेना चाहा । जब उसका अपना हाथ केले तक न पहुच सका तो उसने सोचा अपना हाथ किस प्रकार लम्बा किया जाए। इधर–उधर देखकर उसने पिंजड़े में रखी लकड़ी को उठाया। फिर उसने लकड़ी की सहायता से केले को खिसकाया। इस प्रकार उसे केला मिल गया।

कोहलर ने एक अन्य प्रयोग में पिंजड़े में एक स्थान पर दो लकड़ियां रख दी । लकड़ियां इस प्रकार की थीं कि उन्हें एक–दूसरे में फंसाया जा सकता था। केला पिंजड़े के बाहर और अधिक दूरी पर रख दिया। सुलतान ने बारी–बारी लकड़ी से केला खिसकाने का प्रयास किया, किन्तु असफल रहा। फिर उसने एक लकड़ी में दूसरी लकड़ी को फंसाने का प्रयास किया। जब एक लकड़ी में दूसरी लकड़ी में फंस गई तो फिर उसने उसकी सहायता से केले को अपनी ओर खींच लिया।

सुलतान के इस सब कार्यों से सिद्ध हुआ कि उसमें सूझ थी जिसने उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता दी। वनमानुष के समान बालक और व्यक्ति भी सूझ द्वारा सीखते हैं। सूझ का आधार कल्पना है । जिस व्यक्ति में कल्पना शक्ति जितनी अधिक होती है उसमें सूझ भी उतनी ही अधिक होती है और इसलिए उसे सफलता भी अधिक प्राप्त होती है। बड़े–बड़े दार्शनिकों, इंजीनियरों, और राजनीतिज्ञों की सफलता का रहस्य उनकी सूझ ही है।

सिद्धांत का शिक्षा में महत्त्व– शिक्षा में 'सूझ द्वारा सीखने के सिद्धांत के महत्त्व को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–(1) यह सिद्धांत रचनात्मक कार्यों के लिए उपयोगी है।

(2) यह सिद्धांत बालकों की बुद्धि, कल्पना और तर्क शक्ति का विकास करता है।

(3) यह सिद्धांत गणित जैसे कठिन विषयों के शिक्षण के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

(4) क्रो एवं क्रो के अनुसार— यह सिद्धांत कला, संगीत और साहित्य की शिक्षा के लिए उपयोगी है।

(5) स्किनर के अनुसार, यह सिद्धांत आदत और सीखने के यांत्रिक स्वरूपों के महत्त्व को कम करता है।

(6) गेट्स तथा अन्य के अनुसार— यह सिद्धांत बालक को स्वयं खोज करके ज्ञान का अर्जन करने के लिए प्रोत्साहित करता है ।

(7) ड्रेवर के अनुसार— यह सिद्धांत बालक को किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उचित व्यवहार की चेतना प्रदान करता है।

(8) गैरिसन व अन्य के शब्दों में— "विद्यालय में बालकों के समस्या समाधान पर आधारित अधिकांश सीखने की इस सिद्धांत के द्वारा व्याख्या की जा सकती है।

Unit IV:

Foundations of Behaviour इकाई 4–व्यवहार के आधाार

1 मूल प्रवृत्ति, संवेदना, प्रत्यक्षीकरण व अवधाारणा, अभिप्रेरणा, स्मृति, ध्यान ,व रुचि, चिंतन, तर्क ,व कल्पना, आदत, थकान।

Instincts, Sensation, Perception and Concept, Motivation, Memory, Attention and Interest,Thinkin, Reasoning and Imagination,Habit,Fatigue-

संवेगों के प्रकारों के बारे में लिखो ।

संवेगों के प्रकार

लगभग तीन माह की अवस्था से ही बालक में विभिन्न संवेग विकसित होनहो जाते हैं जिनका विकास आयु बढ़ने के साथ–साथ होता रहता है । इन संवेगों से सम्बन्धित बालक में कुछ सामान्य व्यवहार प्रतिमान या संवेगात्मक प्रतिमान पाये जाते हैं।

बालकों के कुछ प्रमुख संवेगों का वर्णन निम्न तरह से है–

1. भय– भय वह आन्तरिक अनुभूति है जिसमें प्राणी किसी खतरनाक परिस्थिति से दूर भागने का प्रयत्न करता है। भय की अवस्था में बालकों में रोने, चिल्लाने, काँपने, रोंगटे खड़े होने, साँस तथा हृदय की धड़कन मन्द होने तथा रक्तचाप बढ़ जाने जैसे लक्षण पैदा हो जाते हैं। अध्ययनों में देखा गया है कि बालक की बौद्धिक योग्यताओं के विकास के साथ–साथ उसमें भय की तीव्रता ही नहीं बढ़ती है वरन् वह अपेक्षाकृ त अधिक चीजों से भय खाने लगता है।

बचपन में ज्यादातर बालक जानवरों, अंधेरे स्थान, ऊंचे स्थान, अकेलेपन, पीड़ा, अनजान व्यक्तियों तथा वस्तुओं, तीव्र ध्वनि एवं अचानक उन्हें गलत तरीके से उठा लेने पर डरते हैं। बाल्यावस्था में बालकों के भय उद्दीपकों की संख्या बढ़ जाती है, साथ ही साथ भय की तीव्रता भी बढ़ जाती है। कारमाइकेल (1944) का विचार है कि दो वर्ष की अवस्था से छः वर्ष की अवस्था तक भय संवेगों का विकास सामान्यतः चरम सीमा तक पहुँच जाता है। ज्यादा बड़े बच्चों में काल्पनिक भय, मृत्यु का भय, चोट लग जाने का भय आदि भी विकसित होने लगते हैं। वयः सन्धि अवस्था तक बालक को अपने स्वयं की प्रतिष्ठा तथा स्तर का भय लगने लगता है। बालकों में भय अचानक पैदा होता है।

लगभग तीन वर्ष के बालकों में देखा गया है कि भय की परिस्थिति में वे अपने को असहाय समझते हैं, सहायता माँग करते हैं, अपना मुँह छुपाकर वह समझ सकते हैं कि भय उत्तेजना से बच गए, वह भाग कर परिचित व्यक्ति या माँ के पास छुप जाते हैं। बच्चे जैसे–जैसे बड़े होते जाते हैं, उनके भय की उत्तेजना से भागने की ये अनुक्रियाएं कम होती जाती हैं। लेकिन उनकी मुखात्मक अभिव्यक्तियों में भय की अवस्था में कोई विशेष परिवर्तन नहीं आते हैं। कुछ और बड़े होने पर बच्चे भय उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से दूर रहते हैं। बालकों में भय कई कारणों से पैदा होता है। उदाहरण के लिए, अध्ययनों में देखा गया है कि बुद्धि की मात्रा के बढ़ने के साथ–साथ बालकों में भय बढ़ने लग जाता है। कम बुद्धि वाले बच्चे कम डरते हैं लड़कियाँ लड़कों की बजाय ज्यादा डरती हैं। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के बालकों को उच्च एवं मध्यम आर्थिक–सामाजिक स्तर वाले बालकों की बजाय हिंसा का भय ज्यादा होता है। भूख, थकान, दुर्बल स्वास्थ्य की अवस्था में भय बच्चों को ज्यादा लगता है। बालकों के जैसे–जैसे सामाजिक सम्बन्ध बढ़ते जाते हैं उनकी मित्र–मण्डली की संख्या बढ़ती जाती है, उनका भय कम होता जाता है। जन्मक्रम भी बालकों के भय को प्रभावित करता है। पहले जन्मे बच्चे को अन्य बच्चों की बजाय ज्यादा डर लगता है। जिन बालकों में असुरक्षा की भावना जितनी ही ज्यादा होती है, उन्हें उतना ही ज्यादा डर लगता है।

2. **शर्मीलापन**– शर्म एक तरह का भय है जिसमें व्यक्ति दूसरों के सम्पर्क में आने तथा परिचय प्राप्त करने में झिझकता अथवा कतराता है। शर्म व्यक्तियों से ही होती है, वस्तुओं तथा, परिस्थितियों में नहीं होती है। बहुधा बच्चे उन बच्चों अथवा व्यक्तियों से शर्म करते हैं जो उनके लिए अपरिचित होते हैं अथवा शर्म करने वाले से ज्यादा शक्ति अथवा विशेषताओं वाले होते हैं। यह जरूरी नहीं है कि बालक एक समय में एक व्यक्ति से शर्म करे, वह एक समय में एक व्यक्ति या अधिक व्यक्तियों से शर्म कर सकता है। अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि बालकों में शर्म की अभिव्यक्ति वैसे–वैसे कम होती जाती है जैसे–जैसे वे अधिक और अधिक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते जाते हैं। उनकी शर्म की आवृत्ति तथा तीव्रता, दोनों ही कम होती जाती हैं यह संवेग बालकों के सामाजिक सम्बन्धों को भी दुर्बल बनाता है। बहुधा बच्चे अपने घर आने वाले मेहमानों, अध्यापकों से शर्म करते हैं अथवा किसी समूह या किसी के सामने बोलने, बातचीत करने तथा गाना आदि सुनाने से शर्माते हैं। छोटा बच्चा शर्म के मारे अनजान व्यक्ति से दूर भागकर परिचित के पास छुप सकता है। ज्यादा बड़ा बच्चा शर्म के मारे तुतला या हकला सकता है, कम बात कर सकता है अथवा शर्म के मारे उसका चेहरा लाल हो सकता है।

यह संवेग बालकों हेतु कई तरह से हानिकारक है। यह देखा गया है कि शर्म के मारे जब एक बालक दूसरे बालक से बातचीत नहीं करता है तो दूसरा भी बातचीत नहीं करता है। फलस्वरूप बालक अकेला रह जाता है। दूसरे इस तरह के बालक समूह द्वारा कम पसन्द किए जाते हैं, इनका समूह द्वारा तिरस्कार किया जाता है। इन्हें कभी समूह का नेता नहीं बनाया जाता है। तीसरे, जब समूह में इनका तिरस्कार किया जाता है तो यह सामाजिक अधिगम से वंचित रह जाते हैं। चौथे, इस तरह के बच्चों का व्यक्तिगत तथा सामाजिक समायोजन दुर्बल होता है।

3. **परेशानी**– परेशानी एक तरह का वह काल्पनिक भय है जो बालक के स्वयं के मन की उपज अथवा उत्पादन होता है। यह वह ज्यादा बढ़ा–चढ़ा हुआ भय है, जो गलत तर्क पर आधारित होता है। परेशानी महसूस करना बालक उस समय से शुरू कर सकते हैं जब उनमें कल्पना तथा बौद्धिक योग्यताओं का विकास पर्याप्त मात्रा में हो जाता है। यही कारण है कि उसका विकास लगभग तीन वर्ष की अवस्था से

शुरू होता है। सम्पूर्ण बाल्यावस्था में इसका विकास होता रहता है तथा वयःसन्धि अवस्था तक यह संवेग चरम सीमा तक पहुँच जाता है इस अवस्था के बाद बौद्धिक क्षमताओं का एवं तर्क का विकास अपनी चरम सीमा की तरफ बढ़ने से उनके इस संवेग की तीव्रता एवं आवृत्ति, दोनों ही कम हो जाती हैं। बहुधा बच्चे जब भय पैदा करने वाली परिस्थितियों का वर्णन सुनते हैं अथवा टेलीविजन तथा फिल्मों आदि से देखते हैं तब उनमें उस संवेग का पैदा होना कल्पना के आधार पर स्वाभाविक हो जाता है ।

अध्ययनों में देखा गया है कि बालक उन वस्तुओं अथवा चीजों के बारे में ज्यादा परेशान होते हैं, जो उनके उस समय के जीवन को सबसे महत्त्वपूर्ण चीजें होती हैं। बच्चों की ज्यादातर परेशानियाँ, परिवार, मित्र–मण्डली और स्कूल आदि के सम्बन्ध में होती हैं। एक अध्ययन में यह देखा गया कि वयःसन्धि अवस्था में शारीरिक परिवर्तनों के शुरू होते ही बालकों की परेशानियाँ शरीर तथा यौन के उपयुक्त विकास के सम्बन्ध में होती हैं। भिन्न–भिन्न व्यक्तित्व प्रतिमान वाले व्यक्तियों की परेशानियाँ भिन्न–भिन्न होती हैं । बहुधा देखा गया है कि जिन बालकों का समायोजन सामान्य या अच्छा होता है, वे अक्सर उन व्यक्तियों या बच्चों के सम्बन्ध में परेशान होते हैं जो उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं। इसी तरह जो बच्चे अपने आपको हीन समझते हैं, बहुधा वे अपने ही सम्बन्ध में परेशान रहते हैं। यह संवेग बालक में अगर ज्यादा दिनों तक रहता है तो यह उसके Homcostatis को गड़बड़ कर देता है फलस्वरूप उसमें स्वास्थ्य सम्बन्धी वैसे ही विकार उत्पन्न हो जाते हैं जैसे कि भय संवेग में पैदा होते हैं। इससे बालक की मानसिक दक्षता तथा बालक का समायोजन प्रभावित होता है इतना होते हुए भी यह हर बालक के लिए उस समय लाभदायक हो जाता है जब वह अपने स्कूल के काम के सम्बन्ध में चिन्तित रहता है। इस अवस्था में यह प्रेरक का कार्य करता है।

4. **चिन्ता**– चिन्ता व्यक्ति की वह कष्टप्रद मानसिक स्थिति है जिसमें वह भविष्य की विपत्तियों की आशंकाओं से व्याकुल रहता है । यद्यपि यह भय तथा परेशानी से ही विकसित होती है लेकिन यह चिन्ता भिन्न इसलिए है कि यह वर्तमान परिस्थिति तथा उद्दीपक के सम्बन्ध में न होकर पूर्वानुमानित उद्दीपक के सम्बन्ध में होती है। इसका विकास भय संवेग के विकास के बाद शुरू होता है क्योंकि यह बालक में उस समय उत्पन्न होती है जब उसमें कल्पना का विकास शुरू हो जाता है, यह बालकों में उस आयु से प्रारम्भ होती है जब वह स्कूल जाना शुरू करते हैं। इसका विकास बाल्यावस्था में होता रहता है। यह वयःसन्धि अवस्था में अति तीव्र हो जाती है।

अनेक अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि तीव्र चिन्ता की उपस्थिति में लड़कियों की प्रतिक्रिया दिवास्वप्न तथा अनुपयुक्तता की भावना के द्वारा व्यक्त होती है। लड़के यह समझते हैं कि चिन्ता करना लड़कों का काम नहीं है इसलिए वह उच्च चिन्ता को छुपाने का साधन ढूँढ़ते हैं। इन साधनों में वह विद्रोही, तंग करने वाले अथवा कोलाहली व्यवहार प्रतिमानों को अपना लेते हैं। बच्चे अपनी तीव्र चिन्ता को छिपाने में कुछ और व्यवहार प्रतिमान भी अपनाते हैं, ज्यादा मानसिक मनोरचनाओं का उपयोग कर सकते हैं, अपने चरित्र के विपरीत व्यवहार कर सकते हैं; जैसे–मित्रवत् व्यवहार करने वाला बालक निर्दयी हो जाए और बोरडम का अनुभव करने लग जाए।

5. **क्रोध**– अन्य संवेगों की बजाय यह संवेग अपेक्षाकृत ज्यादा मात्रा में बालकों में पाया जाता है। सम्भवतः बालक को बहुत छुटपन में ही मालूम हो जाता है कि क्रोध एक प्रभावशाली तरीका है जिसकी मदद से ध्यान आकर्षित किया जा सकता है । भिन्न–भिन्न बालकों में इस संवेग की आवृत्ति और तीव्रता

भिन्न–भिन्न होती है। क्रोध किसी भी व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति हो सकता है। क्रोध में बालक आक्रामक व्यवहार अपनाता है। बालक आक्रामक व्यवहार में मारना, काटना, थूकना, धक्का देना, चुटकी काटना, झटका देकर खींचना आदि किसी तरह का व्यवहार अपना सकता है । क्रोध में वह अवरोधित व्यवहार अनुक्रिया भी अपना सकता है बालक अपने क्रोध को नियन्त्रित कर लेता है अथवा दबा लेता है जब वह अवरोधित अनुक्रियाएं अपनाता है । इस तरह की अुनक्रियाओं में वह उदासीनता या तटस्थता का व्यवहार अपना सकता है अर्थात् वह जिस वस्तु या व्यक्ति से क्रोधित है, उससे अपने आपको ˇपजीकतूं कर सकता है। क्रोध में बालक आक्रामक व्यवहार अपनायेगा अथवा अवरोधित व्यवहार अपनायेगा, यह निश्चित नहीं होता है। कई बार यह देखा गया है कि बालक जब संरक्षकों के भय के कारण घर पर क्रोध प्रदर्शित नहीं कर पाता है तो वह उनकी अनुपस्थिति में घर में, बाहर या स्कूल में अपना क्रोध प्रदर्शित करता है। क्रोध को व्यवहार अनुक्रियाओं में विचलन छोटे बच्चों की अपेक्षा बड़े बालकों में ज्यादा इसलिए पाया जाता है कि वह इन अनर्श्निक्रियाओं को अनुभव के आधार पर सीख चुके होते हैं।

एक अध्ययन में यह देखा गया कि लगभग तीन वर्ष की अवस्था में बालक–बालिकाओं में क्रोध सर्वाधिक मात्रा में होता है, इसके बाद यह थोड़े उतार–चढ़ाव के साथ–साथ चौदह वर्ष की अवस्था तक तीन वर्ष की अवस्था में बालक–बालिकाओं में क्रोध सर्वाधिक मात्रा में होता है, इसके बाद यह थोड़े उतार–चढ़ाव के साथ–साथ चौदह वर्ष की अवस्था तक तीन वर्ष आयु की बजाय लगभग एक चौथाई रह जाता है। छोटे बालकों से जब उनका खिलौना ले लिया जाए, उनकी शारीरिक क्रियाएं अवरुद्ध हो जाएं, उन्हें पीटा जाए, उन्हें चिढ़ाया जाए तो उन्हें क्रोध आता है। भूख, प्यास, बीमारी, अस्वस्थता तथा कुसमायोजन की अवस्था में भी बालकों को क्रोध अपेक्षाकृत शीघ्र आता है ।

6. **ईर्ष्या**– ईर्ष्या के मूल में अप्रसन्नता होती है तथा इसकी उत्पत्ति क्रोध से होती है। हरलॉक का विचार है कि "Jealously is a normal response to actual supposed or threatened loss of affection-" बहुधा देखा गया है कि जब एक बच्चे के माता–पिता उसे स्नेह न देकर दूसरे बच्चों को देते हैं तो बालक में ईर्ष्या पैदा हो जाती है। नवजात शिशु के आगमन पर इस शिशु के भाई–बहनों में इसके आगमन के कारण ईर्ष्या उत्पन्न हो सकती है । लगभग डेढ़ वर्ष की अवस्था में ईर्ष्या का अंकुरण बालक में शुरू हो जाता है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि लड़कों की बजाय लड़कियों में ईर्ष्या ज्यादा होती है। अन्य अवस्था की बजाय ईर्ष्या की मात्रा तीन–चार वर्ष की अवस्था में ज्यादा होती है। ज्यादा बुद्धि वाले लोगों में ईर्ष्या अपेक्षाकृत ज्यादा होती है। अन्य बच्चों की बजाय सबसे बड़े बच्चे में ईर्ष्या ज्यादा होती है। छोटे परिवारों के बच्चों में ईर्ष्या अपेक्षाकृत ज्यादा होती है।

ईर्ष्या के कुछ प्रमुख कारण इस तरह से हैं–नवजात शिशु का पैदा होना, भाई–बहनों में ज्यादा अन्तर होना, संरक्षकों में पक्षपात की भावना का होना, माता–पिता की अभिवृत्ति आदि ।

ईर्ष्या को नियन्त्रित अथवा कम करने के उपाय निम्नलिखित हैं–बच्चों को नकारात्मक आदेश न दिये जाएं, माता–पिता सभी बच्चों के साथ समान व्यवहार करें, चिढ़ाया न जाए, तंग न किया जाए, दिनचर्या को मनोरंजक बनाया जाए।

ईर्ष्या की उपस्थिति में बालक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष, दोनों तरह की प्रतिक्रियाएं कर सकता है। प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाओं में जो वह आक्रामक व्यवहार; जैसे–काटना, नोंचना, धक्का देना आदि व्यवहार अपना सकता है।

जब ईर्ष्या में द्वेष होता है तब बालक चालाकी का व्यवहार अपनाता है। ईर्ष्या की उपस्थिति में बालक जब अप्रत्यक्ष व्यवहार अनुक्रियाएं अपनाता है तो ईर्ष्या को पहचानना कठिन हो जाता है; उदाहरण के लिए, वह बिस्तर पर पेशाब कर सकता है, उंगली या अंगूठा चूस सकता है, विध्वंसात्मक व्यवहार अपना सकता है, तीखे प्रहार तथा गाली–गलौच भी कर सकता है।

7. जिज्ञासा– जिज्ञासा बालक के जीवन को सुखात्मक रूप से उद्दीप्त करती है। यह बालक को नये अर्थों को सीखने तथा अन्वेषण करने हेतु प्रेरित करती है। जिज्ञासा बालक के लिए उत्तेजना का कार्य करती है। अगर इसका बालकों में नियन्त्रित न किया जाए तो वह बालकों के लिए हानिकारक तथा खतरनाक हो सकती है। वह दियासलाई अथवा बिजली के खेल–खेलकर अपने को नुकसान पहुँचा सकते हैं । जिज्ञासु बालक अपने वातावरण की हर चीज में रुचि रखता है। वह स्वयं अपने में भी रुचि रखता है। वह अपने शरीर के अंगों के सम्बन्ध में सोचता है कि वह अंग क्यों हैं, इनका क्या कार्य है, उसका शरीर दूसरों से भिन्न क्यों है आदि । वह दूसरे व्यक्तियों के बारे में जिज्ञासु हो सकता है। दूसरे व्यक्तियों की भाषा, क्रियाओं तथा पहनावे के सम्बन्ध में जिज्ञासु हो सकता है। स्कूल जाने की अवस्था तक उनकी जिज्ञासा घर की तमाम चीजों की मैकेनिज्म की ओर होती है। उसका जैसे–जैसे वातावरण से सम्पर्क बढ़ता जाता है, उसकी जिज्ञासा भी उसी अनुसार बढ़ती जाती है। लगभग तीन वर्ष की अवस्था में बालक प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासा की सन्तुष्टि करने लग जाता है। बाल्यावस्था में बालक की जिज्ञासा के प्रकाशन का वर्णन करते हुए हरलॉक (1990) ने लिखा है कि "शिशु जिज्ञासा की अभिव्यक्ति चेहने की तनी हुई माँसपेशियों से, मुँह खोलकर, जबान निकाल कर और माथे पर सिकुड़न डालकर प्रदर्शित करता है।" जिज्ञासा का बालकों के जीवन में बहुत महत्त्व है, उदाहरण के लिए, यह बालक के जीवन को सुखात्मक ही नहीं बनाती है वरन् यह उनके जीवन को रुचिपूर्ण तथा उद्दीपित बनाती है। यह बालक की रुचि को वातावरण की चीजों की तरफ बढ़ाती है यह बालक को चेतन्य करती है। यह बालक के बौद्धिक विकास में मददगार है। यह बालक को सीखने हेतु प्रेरित करती है।

8. स्नेह– प्रेम अथवा स्नेह व्यक्ति की वह आन्तरिक अनुभूति है जिसकी उपस्थिति में व्यक्ति दूसरे व्यक्ति या वस्तुओं की तरफ आकर्षित होता है तथा उन्हें देखकर सुख एवं सन्तोष का अनुभव करता है। बच्चा माँ को देखकर लगभग तीन महीने की अवस्था में ही मुस्कराना शुरू कर देता है, लेकिन वास्तव में प्रेम का संवेग शुद्ध रूप से बच्चों में इस अवस्था में नहीं पाया जाता है। बच्चों का इस प्रकार से मुस्कराना केवल एक सामान्य उद्दीप्तावस्था है। प्रेम की अवस्था में देखा गया है कि व्यक्ति के ओठों पर कम्पन्न, प्रसन्नता, मुस्कराहट, शरीर में सिरहन, वाणी मधुर तथा लयात्मक प्रतीत होती है। कई बार व्यक्ति अपने प्रेम उद्दीपक या आलिंगन, स्पर्श तथा चुम्बन भी करता है। अन्य संवेगों की अपेक्षा यह संवेग व्यक्ति के समायोजन तथा उसके व्यक्तित्व का एक महत्त्वपूर्ण कारक है। हरलॉक (1990) का विचार है कि लगभग छः महीने की अवस्था से बच्चों में प्रेम अंकुरित होने लगता है। सर्वप्रथम बालक में अपनी माँ के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है अथवा उस व्यक्ति के प्रति जो शैशवावस्था में उसका पालन–पोषण करता है। लगभग एक वर्ष की अवस्था में वह दूसरे व्यक्तियों और जानवरों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन करने लग जाता है।

संवेगों का नियन्त्रण :

हर सामाजिक समूह बालकों से यह अपेक्षा करता है कि वह संवेगों पर नियन्त्रण करना सीखेंगे। सम्भवतः इसी कारण बालकों के संवेगों को उचित दिशा में नियन्त्रित करना आवश्यक है। हर अध्ययनों

द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि जब एक बार संवेगात्मक व्यवहार प्रतिमानों को बालक अच्छी तरह सीख लेता है तो उनका छोड़ना उसके लिए कठिन होता है। साथ ही साथ उनको संशोधित करना भी कठिन होता है। संवेगात्मक नियन्त्रण में सुखात्मक तथा दुःखात्मक, दोनों तरह के संवेगों को नियन्त्रित करना होता है। सुखात्मक संवेगों को उचित दिशा प्रदान करने की आवश्यकता होती है जबकि दुःखात्मक संवेगात्मक को एक विशिष्ट ढंग या समाज द्वारा मान्य ढंग से व्यक्त करना सीखने या सिखाने की जरूरत होती है। संवेगों को नियन्त्रित करने के कुछ लोकप्रिय तथा प्रमुख उपाय निम्न प्रकार से हैं–

(1) **शमन**– यह एक तरह की मानसिक मनोरचना है जिसके द्वारा व्यक्ति अप्रिय, दुःखद तथा कष्टकारी घटनाओं, विचारों, इच्छाओं एवं प्रेरणाओं आदि को चेतना से जान–बूझकर निकाल देता है । इस मनोरचना के द्वारा व्यक्ति दुःख तथा अप्रिय लगने वाली अनुभूतियों को इस मनोरचना के द्वारा बाहर निकाल देता है। उदाहरण के लिए, अगर सुबह–सुबह दूध वाले से झपड़ में बहुत क्रोध आया, यह बहुत बुरा लगा तो इस बात को दिमाग से यह कहकर निकाल दिया जो हुआ सो हुआ, दूध वाला ही बेवकूफ है एवं इस तरह का विचार करके किसी अन्य कार्य में जुट जाएं।

(2) **संवेगात्मक शक्ति को समाज द्वारा स्वीकृत ढंग से व्यक्त करना**– इस ढंग को मार्गान्तरीकरण भी कह सकते हैं। इसमें बालक को इस तरह प्रशिक्षित किया जाता है कि वह अपने संवेगों का प्रकाशन इस ढंग से करता है कि लोग उसे पसन्द करने लग जाते हैं; उदाहरण के लिए भय संवेग को इस तरह मार्गान्तरित किया जा सकता है कि बालक बुरे कार्यों को करने से डरने लग जाए।

(3) **अध्यवसाय**– बालकों के संवेगों को नियन्त्रित करने का एक ढंग यह है कि बालकों में संवेगों के पैदा होने तथा व्यक्त करने का समय ही न मिले। इसके लिए जरूरी है कि बालकों को पढ़ने–लिखने अथवा किसी अन्य लाभदायक काम में व्यस्त रखा जाए। जब बच्चे अपनी रुचि के अनुसार कुछ कार्यों को करने में व्यस्त रहते हैं तब उनमें संवेग कम पैदा होते हैं।

(4) **विस्थापन**– पेज के अनुसार, यह वह मनोरचना है जिसमें किसी वस्तु या विचार से सम्बन्धित संवेग किसी अन्य वस्तु अथवा विचार में स्थानान्तरित हो जाता है। उदाहरण के लिए, एक बन्ध्या स्त्री दूसरे बच्चे से प्रेम करे या कोई अपनी स्त्री से क्रोधित हो लेकिन अपनी स्त्री पर क्रोध व्यक्त न करके अपने कुत्ते अथवा किसी पर क्रोध व्यक्त करे।

(5) **प्रतिगमन**– कोलमैन (1974) के अनुसार अहम्, एकता तथा संगठन को बनाए रखने हेतु एवं तनाव को दूर करने के लिए, जब व्यक्ति कम परिपक्व प्रत्युत्तरों का सहारा लेता है तो यह मनोरचना प्रतिगमन कहलाती है। इस मनोरचना में बालक अपने से कम आयु के बालकों जैसे व्यवहार कर अपने संवेगात्मक तनाव को दूर करता है । उदाहरण के लिए बालक ईर्ष्या तथा क्रोध को तोड़–फोड़ या बिस्तर पर पेशाब करके व्यक्त करे तो यह प्रतिगमन है ।

(6) **संवेगात्मक रेचन**– रेचन का अर्थ है शमित संवेगों को मुक्त करना। संवेगात्मक रेचन के दो प्रकार हैं–

(क) **शारीरिक रेचन**– शारीरिक रेचन का अर्थ है संवेगों के कारण उत्पन्न शारीरिक शक्ति का व्यय होना । बालकों में संवेगों के कारण पैदा शारीरिक शक्ति का व्यय मुख्यतः तीन तरह से होता है जैसे

विभिन्न खेलों द्वारा (दौड़ना, कूदना, तैरना आदि), चिल्लाने के द्वारा या जोर से हँसने के द्वारा। लेकिन जोर से चिल्लाकर या हँसकर संवेगों द्वारा पैदा शारीरिक शक्ति को व्यय करने के तरीके समाज द्वारा अधिक मान्य नहीं हैं।

(ख) मानसिक रेचन– इसमें बालक संवेगों द्वारा पैदा शक्ति का व्यय उन परिस्थितियों तथा व्यक्तियों के प्रति अपनी अभिवृत्तियों को बदल कर करता है जिनके कारण संवेग पैदा हैं। मानसिक रेचन हेतु संवेगात्मक सहनशीलता जरूरी है। एक अध्ययन में यह देखा गया है कि ज्यादातर बच्चे अपने संवेगों के कारण पैदा शक्ति को निकालने के लिए दिवास्वप्नों का सहारा लेते हैं। मानसिक रेचन बालक उस समय उपयोग में लाता है जब बालक में मानसिक योग्यताओं का विकास पर्याप्त मात्रा में हो जाता है, विशेष रूप से कल्पना का विकास हो जाता है।

अध्ययनों में देखा गया है कि बालक जो संवेगात्मक रेचन सीख जाते हैं, उन्हें उनके संवेगों से सन्तुष्टि ही प्राप्त नहीं होती है, वरन् उन्हें उनके समूह से अनुमोदन भी मिलता है ।

बालकों में संवेगात्मक रेचन निम्न तरह से मददगार हो सकते हैं–

(1) बालकों को प्रतिदिन कुछ मेहनत का काम अथवा खेल खेलने चाहिए ।

(2) माता–पिता को चाहिए कि बालक के साथ स्वस्थ सम्बन्ध रखें तथा बालक को इस बात का प्रशिक्षण दें कि वह किस तरह अपनी समस्याओं का समाधान करे।

(3) माता–पिता को चाहिए कि वह बालकों की संवेगात्मक समस्याओं को सुनें तथा उन्हें समझाएं कि वह किस तरह के संवेगों को अपनाएं ।

(4) बच्चों को हँसमुख बनाकर संवेगात्मक रेचन सम्भव है।

(5) बच्चों को सिखाया जाए कि वह किन परिस्थितियों में चिल्लाकर अथवा जोर से बोलकर उत्पन्न संवेगों से छुटकारा पाएं ।

अधिगम सिद्धान्तों व संकल्पनाओं के परिप्रेक्ष्य में उनकी विभिन्न अधिगम स्थितियों में प्रयोज्यता पर प्रकाश डालिए।

विभिन्न अधिगम सिद्धान्तों ने सीखने की प्रकृति तथा प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। विद्यार्थी के अधिगम में ये सिद्धान्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। इसी प्रकार अधिगम संबंधी विभिन्न धारणाएं भी अधिगम की विभिन्न स्थितियों में अध्यापक की शिक्षण विधि तथा विद्यार्थी की सीखने के स्तर व गति को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

अधिगम संबंधी प्रमुख सिद्धान्त व संकल्पनाएं इस प्रकार हैं :–

(1) अधिगम का व्यवहारवादी सिद्धान्त

(2) संज्ञानात्मक सिद्धान्त

(3) सूचना प्रक्रियात्मक दृष्टिकोण

(4) मानवतावादी सिद्धान्त

(5) सामाजिक रचनावादी सिद्धान्त ।

अधिगम की विभिन्न संकल्पनाएं हैं :–

(1) परिपक्वता

(2) अधिगमकर्ता के वैयक्तिक भेद

(3) अधिगम अनुभव

(4) सीखने के उद्देश्य

(5) अधिगम स्थानांतरण

(6) अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक

(7) अभिप्रेरणा

(8) पुनर्बलन

(9) बुद्धि

(10) रुचि

उक्त अधिगम सिद्धान्त व संकल्पनाएं विभिन्न अधिगम स्थितियों–कक्षा शिक्षक व कक्षा के बाहर अधिगम, अभ्यास व प्रशिक्षण, अधिगमकर्ता के पूर्व ज्ञान, अधिगम स्थल के वातावरण, अधिगम सामग्री व दृश्य–श्रव्य साधन, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम व विषयवस्तु की प्रकृति, सीखने के समय व अवधि में अपनी प्रयोज्यता सिद्ध करती है।

अधिगम संबंधी विभिन्न सिद्धान्तों तथा उनसे जुड़ी संकल्पनाओं के संदर्भ में अधिगम का उपयोग निम्नानुसार है–

(1) **व्यवहारवादी सिद्धान्त** :– थॉर्नडाइक ने अपने संबंधवाद सिद्धान्त की व्याख्या करते हुए कहा है कि जब कोई उद्दीपन व्यक्ति के सामने प्रस्तुत किया जाता है तो वह उसके प्रति कई अनुक्रियाएं करता है। इनमें सही अनुक्रिया का संबंध उस विशेष उद्दीपन के साथ स्थापित हो जाता है। इसी संबंध को सीखना कहते हैं। थॉर्नडाइक के संबंधवाद के अन्य नाम उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धान्त, प्रयास व त्रुटि का सिद्धान्त भी है।

अधिगमकर्ता के कक्षा शिक्षण में छात्र का व्यवहार बाध्य पुनर्बलनों से प्रभावित होता है। शिक्षक को चाहिए कि छात्र की सही अनुक्रिया पर वह उसकी प्रशंसा करे। शिक्षक को छात्र को स्वयं हल खोजने का अवसर देना चाहिए। कुछ प्रयासों में त्रुटि के बाद वह स्वयं सही हल खोज लेगा। अभ्यास व पुनरावृत्ति को भी कक्षा शिक्षण व गृहकार्य के रूप में निर्दिष्ट किया जाना चाहिए। मंदबुद्धि बालकों के शिक्षण में थॉर्नडाइक का सिद्धान्त प्रयोज्य है।

पावलॉव के व्यवहारवादी अनुबंधन सिद्धान्त जब कोई अस्वाभाविक (कृत्रिम) उत्तेजक अनेक बार स्वाभाविक उत्तेजक के साथ आता है तो व्यक्ति अस्वाभाविक उत्तेजक के प्रति भी स्वाभाविक प्रतिक्रिया करने लगता है। शिक्षा के क्षेत्र में अनश्विंबंधन सिद्धान्त की व्यावहारिक उपयोगिता है। शिक्षक का स्नेहपूर्ण व्यवहार और अच्छे अध्यापन के मिश्रण से छात्र अध्यापक के प्रति स्नेह व आदर भी रखते हैं तथा विषय के प्रति रुचि लेकर सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। शिक्षण के साथ–साथ संबंधित विषय पर सहायक दृश्य–श्रव्य सामग्री का उपयोग अच्छी तरह ।

विषय को सीखने में मदद देता है। इसलिए वर्णमाला शिक्षण में वर्ण से शुरू होने वाले शब्द और उसके चित्र का उपयोग प्रभावी अधिगम उत्पन्न करता है। बालकों को बुरी आदतें हटाने तथा उनमें उचित आदतों, रुचियों अभिवृत्तियों का निर्माण करने में अनुबंधन सिद्धान्त का व्यावहारिक प्रयोग परिणामदायक है।

व्यवहारवादी स्किनर के सक्रिय अनुबंधन सिद्धान्त के अनुसार किसी क्रियाप्रसूत होने के पश्चात् जब पुनर्बलन दिया जाता है तो उस अनुक्रिया की पुनरावृत्ति बार–बार होती है। स्किनर ने बॉक्स में बंद चूहे के लीवर दबने से भेजन मिलने का पुनर्बलन मिला जिससे चूहे ने लीवर दबाकर भोजन प्राप्त करना सीख लिया। स्किनर का यह प्रयोग शिक्षा और अधिगम के क्षेत्र में पुनर्बलन की उपयोगिता व प्रयोज्यता को प्रदर्शित करता है। शिक्षक उचित पुनर्बलन द्वारा छात्र की प्रशंसा करे या उसे पुरस्कृत करे तो बालक अपेक्षित व्यवहार को अधिक शीघ्रता से अपना लेते हैं। सक्रिय अनुबंधन सिद्धान्त के अनुसार दंड देने से कुछ समय के लिए बालक गलत व्यवहार छोड़ सकता है परन्तु जैसे ही दंड का भय या प्रभाव समाप्त होता है बुरे व्यवहार की पुनरावृत्ति होने लगती है। अतः दंड के स्थान पर पुरस्कार अधिगम के क्षेत्र में सही पुनर्बलन देता है।

(2) **अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त** :– गेस्टाल्टवादी (समग्रतावादी) मनोवैज्ञानिकों ने पूर्णता या समग्रता से किसी व्यक्ति को वस्तु दिखाकर पश्चात में उस वस्तु के विभिन्न अंगों का अध्ययन द्वारा अन्त.

'दुष्टि या सूझ उत्पन्न करने के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। कोहलर ने चिम्पैंजी पर किये अपने प्रयोग द्वारा बताया कि कैसे पिंजरे के बाहर लटके केलों को चिम्पैंजी ने पिंजड़े में रखे डंडों के प्रयोग से प्राप्त किया। डंडों से दो टुकड़ों से खेलते–खेलते उनके जुड़ जाने से चिम्पैंजी में यह सूझ हुई कि बड़े डंडों से वह केले हस्तगत कर सकता है। अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त की बड़ी शैक्षणिक प्रयोज्यजा व उपयोगिता है। शिक्षक को सीखने वाले को परिस्थिति का समग्र पूर्ण अध्ययन कराकर उसकी मानसिक शक्तियों का पूर्ण उपयोग करवाना चाहिए। परिस्थिति के समग्र संपूर्ण प्रत्यक्षीकरण से अन्तर्दष्टि जाग्रत होने की संभावना अधिक रहती है। परिस्थिति के संपूर्ण ज्ञान से बालक आंशिक ज्ञान को रटने या याद करने के स्थान पर अपना मार्ग स्वयं खोजकर ज्ञान की स्वयं खोज करने की ओर अग्रसर होता है और सूझ जैसी मानसिक शक्तियों के प्रयोग के अवसर बढ़ जाते हैं।

(3) **संज्ञानात्मक सिद्धान्त** :– संज्ञान का अर्थ है जानना या समझना। संज्ञान के अन्तर्गत तर्क, स्मरण और भाषा के माध्यम से मानसिक स्वरूप निर्माण करने की क्षमता आती है संज्ञानात्मक सिद्धान्त के अनुसार अधिगम के जटिल प्रक्रिया है और इसे परिवर्तनों के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार अधिगम या सीखना संज्ञानात्मक रचना में परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

ये परिवर्तन प्रायः इन तीन रूपों में होते हैं :–

(1) **अंतरीकरण या अंतर (भेद) करना** :– अधिगम एक व्यक्ति के स्वयं के और वातावरण के विशिष्ट क्षेत्रों के अंतरीकरण से आरंभ होता है। दो प्रारंभ में समान सी लगने वाली वस्तुओं व प्राणियों में अंतर करना बालक सीखता है ।

(2) **सामान्यीकरण** :– सामान्यीकरण की क्रिया में बालक विभिन्न संप्रत्ययों का वर्गीकरण करता है। उदाहरण के लिए बालक आरंभ में विभिन्न वस्तुओं/प्राणियों जैसे औरत, जानवर, चिड़िया आदि को अलग–अलग पहचानता है और बाद में विभिन्न प्रत्ययों को मिलाकर एक संप्रत्यय बनाता है यथा–जीवित प्राणी इस प्रकार वह सामान्यीकरण करता है ।

(3) **पुनर्संरचनाकरण** :– अंतर करना तथा सामान्यीकरण करने के पश्चात् बालक अपनी संज्ञानात्मक रचना को फिर से संरचित करता है। उदाहरण के लिए बालक यह बोध करता है कि सभी जीवित प्राणियों में मानव जाति भिन्न है। इस प्रकार जीवित प्राणियों के संप्रत्यय की पुनर्सरचना होती है। अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धान्त की शैक्षिक उपयोगिता यह है कि संप्रत्यय निर्माण, समस्या समाधान, ज्ञान की संरचना तथा उच्च मानसिक शक्तियों से अधिगम में यह प्रयुक्त होता है। बालक की बौद्धिक क्षमताओं के उत्तरोत्तर विकास में शिक्षक इस सिद्धान्त के अनुसार ज्ञान की रचना करा सकने में समर्थ हो सकते हैं। यह सिद्धान्त यह भी बताता है कि विद्यार्थी बिना सोचे समझे तथ्यों को रटें नहीं बल्कि अपने पूर्वज्ञान, पूर्व अनुभव, अभ्यास को अधिगम में प्रयोग करते रहें तथा ज्ञान की पुनर्रचना में अग्रसर हों। यह सिद्धान्त विभेदीकरण, सामान्यीकरण तथा पुनसंरचनाकरण को अधिगम हेतु प्रयुक्त करने का संकेत भी देता है।

(4) **सूचना प्रक्रियात्मक सिद्धान्त** :– इस सिद्धान्त के अनुसार अधिमम की प्रक्रिया में सूचना प्रक्रियाकरण का उपयोग किया जाता है। सूचना प्रक्रियाकरण से तात्पर्य एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसमें प्राप्त सूचना का भली–भाँति विश्लेषण और मंथन करके उससे कुछ निश्चित सूचना, ज्ञान या अनुभव प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। यह अधिगम प्रक्रिया मानव मस्तिष्क में ज्ञानेन्द्रियों द्वारा आभास की जाती है। नए

अनुभव ग्रहण करने, समस्याओं का हल खोजने तथा अपने व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाने हेतु प्राप्त सूचनाओं का व्यक्ति विशेष जिस ढंग से प्रक्रियाकरण करते हैं उसे सूचना प्रक्रियात्मक सिद्धान्त स्याह करते हैं।

सूचना प्रक्रियात्मक सिद्धान्त शैक्षिक द्रष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह बताता है कि सूचना सामग्री चाहे शाब्दिक रूप से उपलब्ध हो या आंकिक रूप में या अशाब्दिक चित्रादि रूप में–इसका अच्छी तरह से प्रक्रियाकरण और अधिगम तथा संभव है जब इसे सार्थक खंडों या इकाइयों में विभक्त कर लिया जाए। दूसरे, अधिगम हेतु प्राप्त सूचनाओं को बिना सोचे समझे रटने के स्थान पर अच्छी तरह से समझकर प्रक्रियाकरण करना उचित है।

(5) मानववादी सिद्धान्त :– मानववादी मनोवैज्ञानिकों में कार्ल रोजर्स, मैसलो, जोहन हाल्ट आदि आते हैं । इस सिद्धान्त में अधिगम को ऐसी मानवीय प्रक्रिया माना है जिससे मानव के उद्देश्यों की पूर्ति होती है । इसमें अधिगम को किसी भी रूप में बालक पर लादा नहीं जाता बल्कि बालक स्वयं अपनी आवश्यकता के अनुसार अपनी संतुष्टि हेतु अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते हुए अपेक्षित अधिगम अनुभवों का अर्जन करता है। कार्ल रोजर्स कोरे ज्ञान प्राप्ति यानी संज्ञानात्मक अधिगम के स्थान पर अनुभवों से जुड़े हुए तथा ज्ञान को प्रयोगात्मक रूप से उपयोग कर सकने वाले अधिगम यानी अनुभवजन्य अधिगम के अर्जन पर बल देते हैं। इसके अनुसार अधिगम की प्रक्रिया पूरी तरह से विद्यार्थी केन्द्रित ही होनी चाहिए ताकि उसे अपने अनुभवों पर आधारित कर पूर्णरूप से व्यावहारिक और उद्देश्यपरक बनाया जा सके।

मानववादी सिद्धान्त की शिक्षा व विभिन्न अधिगम स्थितियों में प्रयोज्यता है कि यह सिद्धान्त विद्यार्थी में मानववादी व्यवहार का समर्थक है तथा बालक की आत्मप्रतिष्ठा की रचना पर बल देता है। शिक्षक का छात्रों से स्नेहमय व्यवहार होना चाहिए तथा विद्यार्थियों को सकारात्मक पुनर्बलन–प्रशंसा पारितोषिक प्रदान करना चाहिए। शिक्षण को बालकेन्द्रित बनाना चाहिए। ऐसे प्रयास किये जाने चाहिए कि बालक स्वयं अपने अधिगम का उत्तरदायित्व वहन करे।

(6) सामाजिक रचनावादी सिद्धान्त :– रचनावाद सूचना की रचना या निर्माण करने, में अधिगमकर्ता की क्रियाशील भूमिका पर जोर देता है । दार्शनिक जियाम बत्तीसा वाइको ने 18वीं शताब्दी में बताया था कि मानस सिर्फ उसे समझ सकते हैं जो उन्होंने स्वयं निर्मित किया हो। रचनावादी सिद्धानत को जॉन पियाजे, जॉन डीवी ने आगे बढ़ाया। इस सिद्धान्त में रूसी मनोवैज्ञानिक वायगेटत्की ने रचनावाद या निर्माणवाद को दो भागों में विभाजित किया–

(1) बोधगम्य निर्माणवाद ।

(2) सामाजिक निर्माणवाद ।

बोधगम्य निर्माणवाद का प्रमुख विशेषताएं है :–

(1) विद्यार्थी स्वयं विश्वकाल उनके स्वयं का ज्ञान निर्मित करते हैं ।

(2) अधिगम एक खोज है।

(3) अच्छे शिक्षण के लिए विद्यार्थी क्या सोचते हैं उसे समझना होगा।

(4) अधिगमकर्ता नए–नए अनुभवों को स्वयं संगठित, पुनसंगठित करते तथा संरचना व पुनर्संरचना करते हैं।

(5) बालक स्वयं के मानसिक मॉडलों को तैयार करते हैं।

(6) अभिप्रेरणा प्रभावी अधिगम हेतु आवश्यक है। सामाजिक रचनावाद सामाजिक अंतक्रिया के बोध के विकास पर बल देता है ।

इसकी प्रमुख विशेषताएं एवं शैक्षिक निहितार्थ है :–

(1) शिक्षकों को विद्यार्थी को स्वयं के लिए सोचने का तथा उनके स्वयं के अधिगम को नियंत्रित करने व उनकी जिम्मेदारी लेने को विकसित करने व तेज करने के लिए जरूरी सहयोग उपलब्ध कराना चाहिए। सहयोग निर्माण का एक जरूरी भार्ग होता है लेकिन महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि एक बार भवन के निर्मित होने के बाद सहयोग को हटा दिया जाता है।

(2) शैक्षिक संदर्भ में इसका अर्थ है कि शिक्षक अधिगम को सहयोग करता है लेकिन विद्यार्थियों के स्वतंत्र अधिगमकर्ताओं के रूप में विकास को भी प्रोत्साहित करता है जो स्वयं के पैरों पर खड़े होने तथा स्वयं के लिए सोचने में समय लेते हैं।

(3) शिक्षक बहुत से तरीकों से सहयोग उपलब्ध करा सकते हैं जैसे प्रश्न पूछकर, संवर्धन करके व जाँच करके, प्रत्यास्मरण उपलब्ध कराकर, चरण–दर–चरण स्पष्ट निर्देश देकर तथा प्रदर्शन के द्वारा।

(4) सहयोग सिर्फ शिक्षक द्वारा उपलब्ध नहीं कराया जाता बल्कि बच्चों के छोटे समूह एक दूसरे को सहयोग उपलब्ध करा सकते हैं। यह बायोत्सकी के दृष्टिकोण को मजबूत बनाता है कि अधिगम एक सामाजिक के साथ–साथ व्यक्तिगत गतिविधि है। ऐसा सहयोग अभिप्रेरणात्मक तथा अर्थपूर्ण होता है।

रुचि का अर्थ बताते हुये उसके विभिन्न भेद तथा छात्रों में रुचि जाग्रत करने के विभिन्न तरीकों का वर्णन कीजिये।

रुचि का अर्थ :–रुचि का अंग्रेजी रूपान्तर Interest है। Interest शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द Interesse से मानी जाती है। इसका अर्थ "इसके कारण अन्तर होना।" रॉय के अनुसार, इसका अर्थ होता है, "यह महत्त्वपूर्ण होती है।" इस अर्थ में जिस वस्तु में हमारी रुचि होती है, वह हमारे लिए महत्त्वपूर्ण होती है।

रुचि की परिभाषाएँ :–

रुचि की कुछ परिभाषाएँ इस तरह हैं–

1. "रुचि वह प्रेरक शक्ति है, जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु, अथवा क्रिया के प्रति ध्यान केन्द्रित करने हेतु प्रेरित करती है।" – क्रो तथा को

2. "रुचि किसी प्रवृत्ति का क्रियात्मक रूप है ।" – डेवर

3. "रुचि वह प्रवृत्ति है, जिससे हम किसी अनुभव में दत्तचित्त होकर उसे जारी रखना चाहते हैं।" — ड्रेवर

4. "रुचि का अर्थ है अन्तर करना। हमें वस्तुओं में इस कारण "रुचि होती है क्योंकि हमारे लिए उनमें एवं दूसरी वस्तुओं में अन्तर होता है, क्योंकि उनका हमसे संबंध होता है।" — भाटिया

रुचि के भेद :—

रुचि के दो भेद किये जा सकते हैं—

1. जन्मजात रुचि :— मूल प्रवृत्तिजन्य रूचियों को जन्मजात रुचि कहते हैं। भोजन करने की रुचि, बालकों के चिल्लाने एवं भागने आदि की रुचि जन्मजात होती है।

2. अर्जित रुचि :— जब किसी वस्तु संबंधी आन्तरिक भावनाओं से रुचियाँ पैदा होती हैं, तो उन्हें अर्जित रुचियाँ कहते हैं। जन्मजात रुचि से ही अजित रुचि पैदा होती है।

छात्र में रुचि जाग्रत करने के तरीके :—

शिक्षक को चाहिए कि बच्चों की रुचि को शिक्षा की तरफ जाग्रत करने हेतु निम्न विधियों को अपनाये—

1. **बालक का अध्ययन** :— कक्षा में बच्चों की रुचि को आग्रत करने हेतु , बालक का शारीरिक तथा मानसिक अध्ययन करना जरूरी है। उनका स्वास्थ्य, मनोदशा तथा आवश्यकताएँ आदि रुचि में बाधक हो सकती हैं। इसलिए बालक को सामान्य बनाकर पढ़ाया जाय तो वह पाट अथवा विषय में रुचि दिखायेगा।

2. **उद्देश्य की स्पष्टता** :— बच्चों को नया पाठ अथवा विषय पढ़ाने से पूर्व उसकी उपयोगिता, लाभ एवं भविष्य की आवश्यकता आदि को स्पष्ट कर देना चाहिए। आज शिक्षण के क्षेत्र में कक्षा एक से लेकर बड़ी कक्षाओं तक इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। जब बच्चे के मन में विषय की उपयोगिता स्पष्ट हो जाती है तो उसका मन सीखने में स्वतः ही लग जाता है।

3. **रुचि का मापन** :— कक्षा के अन्दर अथवा विषय में रुचि न दिखाने वाले बच्चों में रुचि का मापन शिक्षक को करना चाहिए। इससे विषय संबंधी रुचि तथा रूचि की मात्रा का पता चल जाता है। अगर बच्चे में विषय से संबंधित रुचि है, पर आग्रत नहीं है, तो हमें जाग्रत करना चाहिए। अगर विषय की ओर रुचि नहीं है, तो हमें कचि का मोड़ना चाहिए। साथ ही रूचि को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों को भी ध्यान में रखना है ताकि वे बच्चे में अरुचि पैदा न कर सकें।

4. **सहायक सामग्री का उपयोग** :— पाठ की तरफ बच्चों के ध्यान को आकर्षित करने हेतु अध्यापक को सहायक सामग्री का प्रयोग करना चाहिए। इससे पाठ आसान होता है तथा बच्चों की रुचि को केन्द्रीभूत भी करता है। बालक पाठ तथा विषय को सहायक सामग्री के सहयोग से शीघ्र आत्मसात करता है। इसका कारण मस्तिष्क के साहचर्य के स्वरूप का निर्धारण होता है।

5. **उपयुक्त विधि** :— ज्ञान ग्रहण करने की बजाय ज्ञान देने का तरीका ज्यादा प्रभावशाली होना चाहिए। जो शिक्षक विभिन्न विधियों, उदाहरणों तथा यश्निक्तियों का प्रयोग करके शिक्षण कार्य करते हैं, वे

शिक्षण में ज्यादा सफल होते हैं। शिक्षक का कार्य पाठ्य–वस्तु को बच्चों तक पहुँचाना नहीं, वरन् आत्मसात कराना होता है।

6. विषय–वस्तु की उपयोगिता :– बच्चों को विषय–वस्तु की व्यावहारिक उपयोगिता बतलानी चाहिए। मानव स्वभाव तात्कालिक उपयोगिता पर ज्यादा ध्यान देता है एवं रुचि भी दिखलाता है । अतः रूसो 'क्रिया के द्वारा सीखना' अथवा 'अनुभव से सीखना' पर विशेष बल देता था। शिक्षक को चाहिए कि विषय–वस्तु को व्यावहारिक बनाकर बच्चों को ज्ञान दे।

7. उच्च आदर्श :– अध्यापक के ज्ञान को उच्च आदर्शों के साथ जोड़ना चाहिए । बच्चे स्वयं को उच्च जीवन के प्रति समर्पण करना सीखेंगे एवं आत्म–सम्मान के भाव का विकास करेंगे। इस तरह से उनके मन में शिक्षा का कार्य सिर्फ व्यावसायिक न होकर मानव निर्माण भी होगा। इसलिए वे ज्ञान को मानव प्रेम, समान भाव, भाईचारा तथा वसुधैव कुटुम्बकम् आदि उच्च आदर्शों के रूप में ग्रहण करेंगे।

8. अध्यापक का प्रभाव :– बच्चों में रुचि जाग्रत करने हेतु अध्यापकीय व्यक्तित्व का प्रभाव सबसे ज्यादा कार्य करता है। बच्चे जिन अध्यापकों को पसन्द करते हैं उनकी बात, क्रियाओं तथा व्यवहारों को बड़े ही ध्यान से देखते हैं। इसलिए जहाँ पर ध्यान होता है, रुचि स्वतः ही उपस्थित हो जाती है। जैसा कि मैक्डूगल महोदय ने कहा है–"रुचि गुप्त अवधान है तथा अवधान सक्रिय रुचि है।"

छात्र में पाठ की तरफ रुचि जाग्रत करने में अध्यापक, छात्र तथा अन्य कारक सभी को मिलकर एवं समझकर कार्य करना चाहिए। विषय के प्रति रुचि क्यों नहीं है, इसके कारण बच्चों से, वातावरण से, अध्यापक से, परिवार आदि किसी से भी संबंधित हो सकते हैं। प्रत्यक्ष रूप से बच्चे को ही दोष देना उचित नहीं है।

Unit V

Individual Differences इकाई 5 वैयक्तिक भिन्नता

(1) वैयक्तिक भिन्नताओं का अर्थ प्रकार, व कारण। **Meaning Types and Causes of Individual Differences**

(2) व्यक्तिगत भिन्नता, व शिक्षा। **Individual Differences and Education-**

बच्चों में व्यक्तिगत भिन्नताओं के कारण क्या–क्या होते हैं। इनके शैक्षिक महत्व की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

व्यक्तिगत भिन्नताओं का अर्थ एवं परिभाषाएं :–

जब दो बच्चे विभिन्न समानताएं रखते हुए भी आपस में भिन्न व्यवहार करते हैं, तो इसे वैयक्तिक भिन्नता कहा जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने इसे निम्न तरह से परिभाषित किया है–

1. स्किनर के अनुसार :– "आज हमारा यह विचार है कि व्यक्तिगत भिन्नताओं में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का कोई भी ऐसा पहलू शामिल हो सकता है, जिसका माप किया जा सकता है।"

2. टायलर के अनुसार :– "शरीर के आकार एवं स्वरूप शारीरिक कार्यों, गति सम्बन्धी क्षमताओं, बुद्धि , उपलब्धि, ज्ञान, रुचियों, अभिवृत्तियों तथा व्यक्तित्व के लक्षणों में माप की जा सकने वाली विभिन्नताओं की उपस्थिति सिद्ध की जा चर्श्न्की है।"

व्यक्तिगत भिन्नताओं की विशेषताएं :

यदि हम उपयुक्त कथनों का विश्लेषण करें, तो निम्नलिखित विशेषताएं पाई जाती हैं–

1. **व्यक्तित्व** :– व्यक्तिगत भिन्नताओं के अन्तर्गत किसी एक विशेषता को आधार मानकर हम अन्तर स्थापित नहीं करते, वरन् सम्पूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर अन्तर करते हैं। अतः कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति अन्तर्मुखी है एवं अमुक बहिर्मुखी।

2. **जीवन के पक्ष** :– हर व्यक्ति स्वाभाविक रूप से परिवर्तन चाहता है। यह परिवर्तन उसे नवीन कार्यों को सीखने से प्राप्त होता है । इस तरह से सीखना ही उसका विकास बन जाता है । बालक जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक जीवन के पक्ष–परिवर्तन, सीखना तथा विकास में संलग्न रहता है। इनके द्वारा वह जो कुछ प्राप्त करता है, वही अन्य लोगों से भिन्न स्थापित करने में मदद देता है ।

3. **समानता में असमानता** :– डॉ. एस.एस. माथुर के अनुसार सभी बालकों में निम्न पाँच आधारों पर समानताएं पायी जाती हैं–

(1) बुद्धि

(2) मूल प्रवृत्तियाँ

(3) समाजीकरण

(4) अधिकार एवं कर्त्तव्य

(5) स्वभाव

फिर भी सभी मानव प्राणियों में विभिन्न तरह की असमानताएं होती हैं।

व्यक्तिगत भिन्नता का प्रभाव अधिगम प्रक्रिया एवं उसकी उपलब्धि पर पड़ता है बुद्धि एवं व्यक्तित्व, व्यक्तिगत भिन्नता के आधार हैं। इनके द्वारा सीखने की क्रिया प्रभावित होती है।

व्यक्तिगत भिन्नता का पता परीक्षण, व्यक्ति इतिहास विधि एवं सामूहिक अभिलेखों से चलता है। इन प्राप्त परिणामों के आधार पर शिक्षक तथा प्राचार्य अपना मत छात्र के विषय में निर्धारित करते हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कई कारण हैं, जिनमें से अधिक महत्वपूर्ण निम्न हैं :—

1. **वंशानुक्रम** :— व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पहला आधारभूत कारण है— वंशानुक्रम । रूसो, पीयरसन तथा गाल्टन इस कारण के प्रबल समर्थक हैं। उनका कहना है कि व्यक्तियों की शारीरिक, मानसिक विभिन्नताओं का एक मात्र कारण उसका वंशानुक्रम ही है। इसलिए स्वस्थ, बुद्धिमान तथा चरित्रवान माता—पिता की संतान भी स्वस्थ, बुद्धिमान तथा चरित्रवान होती है । मन ने भी वंशानुक्रम को व्यक्तिगत विभिन्नताओं का कारण स्वीकार करते हुए लिखा है—"हमारा सबका जीवन एक ही तरह शुरू होता है । फिर इसका क्या कारण है कि जैसे—जैसे हम बड़े होते जाते हैं, हममें अंतर होता जाता है ? इसका एक उत्तर यह है कि हमारा सबका वंशानुक्रम भिन्न होता है।

2. **वातावरण** :— व्यक्तिगत विभिन्नताओं का दूसरा आधारभूत कारण है— वातावरण । मनोवैज्ञानिकों का तर्क है कि व्यक्ति जिस तरह के सामाजिक वातावरण में निवास करता है, उसी के अनुरूप उसका व्यवहार, रहन—सहन, आचार—विचार आदि होते हैं। अतः विभिन्न सामाजिक वातावरणों में निवास करने वाले व्यक्तियों में विभिन्नताओं का होना स्वाभाविक है। यही बात भौतिक तथा सांस्कृतिक वातावरणों के विषय में कही जा सकती है। ठंडे देशों के निवासी लंबे, बलवान तथा परिश्रमी होते हैं, जबकि गरम देशों के रहने वाले छोटे, निर्बल तथा आलसी होते हैं। विभिन्न सांस्कृतिक वातावरणों के कारण ही हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कई तरह की विभिन्नतायें दृष्टिगोचर होती हैं ।

3. **जाति, प्रजाति तथा देश** :— व्यक्तिगत विभिन्नताओं का तीसरा कारण है— जाति, प्रजाति तथा देश। ब्राह्मण जाति के मनुष्य में अध्ययनशीलता तथा क्षत्रिय जाति के मनुष्य में युद्धप्रियता का गुण मिलता है। नीग्रो प्रजाति की बजाय वेत प्रजाति ज्यादा बुद्धिमान तथा कार्य कुशल होती है। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कारण ही हमें विभिन्न देशों के व्यक्तियों को पहचानने में किसी तरह की कठिनाई नहीं होती है

4. आयु तथा बुद्धि :– व्यक्तिगत विभिन्नताओं का चौथा कारण है–आयु तथा बुद्धि। आयु के साथ–साथ बालक का शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है। इसलिए विभिन्न आयु के बालकों में अंतर मिलता है। बुद्धि जन्मजात गुण होने से किसी को प्रतिभाशाली तथा किसी को मूढ़ बनाकर अंतर की स्पष्ट रेखा खींच देती है।

5. शिक्षा तथा आर्थिक दशा :– व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पाँचवाँ कारण है–शिक्षा तथा आर्थिक दशा। दिशा–व्यक्ति को शिष्ट, गंभीर तथा विचारशील बनाकर अशिक्षित व्यक्ति से उसे भिन्न कर देती है। गरीबी को सभी तरह के पापों तथा दुर्गुणों का कारण माना जाता है। गरीबी के कारण लोग चोरी, डाका तथा हत्या जैसे जघन्य कार्यों को भी पाप नहीं समझते हैं। लेकिन ये लोग उन व्यक्तियों से पूर्णतया भिन्न होते हैं, तो उत्तम आर्थिक दशा के कारण हर कुकर्म को अक्षम्य अपराध समझते हैं।

6. लिंग–भेद :– व्यक्तिगत विभिन्नताओं का छठवाँ कारण है–लिंग भेद। इस भेद के कारण बालकों तथा बालिकाओं की शारीरिक बनावट, संवेगात्मक विकास की कार्यक्षमता में अंतर मिलता है। इसके अतिरिक्त जैसा कि स्किनर ने लिखा है– बालकों में शारीरिक कार्य करने की क्षमता ज्यादा होती है, जबकि बालिकाओं में स्मृति की योग्यता ज्यादा होती है। बालक गणित तथा विज्ञान में बालिकाओं से आगे होते हैं, जबकि बालिकाएं भाषा तथा सुंदर हस्तलेख में बालकों से आगे होती हैं। बालकों पर सुझाव का कम प्रभाव पड़ता है लेकिन बालिकाओं पर ज्यादा बालकों की रुचि, साहसी कहानियों में होती है, जबकि बालिकाओं की प्रेम–कहानियों तथा दिवास्वप्नों में होती है।

हमने व्यक्तिगत विभिन्नताओं के कई कारणों को लेखबद्ध किया है। ये कारण सामान्य रूप से व्यक्ति की विभिन्नताओं हेतु उत्तरदायी हैं। पर जहाँ तक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों का प्रश्न है, उसकी विभिन्नताओं के कुछ अन्य प्रमुख कारण भी हैं। इनका उल्लेख करते हुए गैरीसन तथा अन्य ने लिखा है– "अन्य बालकों की विभिन्नताओं के प्रमुख कारणों को प्रेरणा, बुद्धि , परिपक्वता, पर्यावरण संबंधी उद्दीपन की विभिन्नताओं द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

व्यक्तिगत विभिन्नताओं का शैक्षिक महत्व आधुनिक मनोवैज्ञानिक, बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को बहुत महत्व देते हैं। उनका अटल विश्वास है कि इन विभिन्नताओं का ज्ञान प्राप्त करके शिक्षक अपने छात्रों का अवर्णनीय हित कर सकता है तथा साथ ही शिक्षा के परंपरागत स्वरूप में क्रांतिकारी परिवर्तन करके उसे बालकों की वास्तविक जरूरतों के अनुकूल बना सकता है।

1. छात्र–वर्गीकरण की नवीन विधि :– विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने हेतु आने वाले बालकों में सिर्फ आयु का ही अंतर नहीं होता है। उनमें शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक अंतर भी होते हैं। अतः उनका परंपरागत विधि के अनुसार कक्षाओं में विभाजन करना सर्वथा अनुचित है। वस्तुतः उनकी विभिन्नताओं के अनुसार उनका विभाजन समरूप समूहों में किया जाना चाहिए। इस तरह का सर्वोत्तम विभाजन उनकी मानसिक योग्यता के आधार पर किया जा सकता है। हर कक्षा को श्रेष्ठ, सामान्य तथा निम्न मानसिक योग्यता वाले बालकों के तीन समूहों में विभाजित किया जाना चाहिए । अमेरिका के अधिकांश स्कूलों में इसी तरह का विभाजन है।

मोर्स तथा विगो के अनुसार–अमेरिका में वर्गीकरण की नवीनतम विधि यह है :–

(1) 9 वर्ष की अवस्था तक आयु के अनुसार, (2) 13 वर्ष तक की अवस्था तक रुचियों के अनुसार तथा (3) 13 वर्ष की अवस्था के पश्चात् मानसिक योग्यताओं के अनुसार। मोर्स तथा विंगो के शब्दों में इस वर्गीकरण का आधार यह है–"व्यक्तिगत विभिन्नताएं, वास्तव में सीखने हेतु तत्परता की विभिन्नताएं हैं।" यह तत्परता आयु के अनुसार परिवर्तित होती जाती है। अतः सिर्फ मानसिक योग्यताओं के आधार पर छात्रों का वर्गीकरण करना अनुचित है।

2. **व्यक्तिगत शिक्षण की व्यवस्था** :– मानसिक योग्यताओं की विभिन्नताओं के कारण सामूहिक शिक्षण निस्सार तथा निष्प्रयोजन है। अतः व्यक्तिगत शिक्षण की व्यवस्था की जानी न सिर्फ वांछनीय, वरन् जरूरी है। इस विचार से प्रेरित होकर व्यक्तिगत शिक्षण की दो नवीन योजनाएं शुरू की गई हैं– डाल्टन योजना तथा विनेटका योजना । इसी तरह की व्यकतिगंत शिक्षण की योजना हर विद्यालय में कार्यान्वित की जानी चाहिए। इस बात पर बल देते हुए क्रो तथा क्रो ने लिखा है– "विद्यालय का यह कर्तव्य है कि वह हर बालक के लिए उपयुक्त शिक्षा की व्यवस्था करे, भले ही वह अन्य सभी बालकों से कितना ही भिन्न क्यों न हो।

3. **कक्षा का सीमित आकार** :– जब कक्षा में छात्रों की संख्या 40 अथवा 50 होती है, तब शिक्षक हेतु उनसे व्यक्तिगत संपर्क स्थापित करना असंभव हो जाता है। ऐसी दशा में वह उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार उनकी शैक्षिक जरूरतों को पूर्ण करने में असमर्थ रहता है। अतः मनोवैज्ञानिकों का मत है कि कक्षा के छात्रों की संख्या करीब 20 होनी चाहिए।

4. **शिक्षण–पद्धतियों में परिवर्तन** :– सभी बालकों हेतु एक ही तरह की तथा घिसी–पिटी शिक्षण–पद्धतियों का प्रयोग करना सर्वथा अुनचित एवं अमनोवैज्ञानिक है। इस बात की परम जरूरत है कि बालकों के व्यक्तिगत भेदों के अनुसार शिक्षण–पद्धतियों में यथाशीघ्र परिवर्तन किया जाये। शिक्षण की ये नवीन विधियाँ गतिशील, क्रियात्मक तथा मनोवैज्ञानिक होनी चाहिए।

5. **गृह–कार्य की नवीन धारण** :– व्यक्तिगत भेदों के कारण सभी बालकों में समान कार्य की समान मात्रा पूर्ण करने की क्षमता नहीं होती है। अतः प्राचीन प्रथा के अनुसार सब बालकों को एक–सा गृह–कार्य देना उनके प्रति अन्याय करना है। जरूरत इस बात की है कि गृह–कार्य देते समय उनकी क्षमताओं तथा योग्यताओं का पूर्ण ध्यान रखा जाये। इस दृष्टि से मंद बुद्धि तथा तीव्र बुद्धि बालकों को दिये जाने वाले गृह–कार्य में अंतर किया जाना विवेक का प्रतीक हैं।

6. **बालकों में विशेष रुचियों का विकास** :– अगर सब नहीं, तो कुछ बालक ऐसे जरूर होते हैं जिनमें कुछ विशेष रुचियाँ होती हैं। इन रुचियों का विकास करके उनका तथा उनके द्वारा समाज और देश का हित किया जा की विशेष रुचियों ज्ञान प्राप्त करके उनकी। अतः शिक्षक का यह कर्तव्य है कि बालकों विकास करने का सतत प्रयत्न करे।

7. **शारीरिक दोषों के प्रति ध्यान** :– आधुनिक शिक्षा की माँग है कि बालकों के शारीरिक दोषों तथा असमर्थताओं के प्रति पूर्ण ध्यान दिया जाये, ताकि वे अपनी जरूरतों के अनुकूल शिक्षा प्राप्त करने से वंचित न रह जायें। इस संबंध में स्किनर ने चार सुझाव दिये हैं–

(i) जिन बालकों को कम दिखाई अथवा सुनाई देता है, उन्हें कक्षा में सबसे आगे बैठाया जाये,

(ii) निर्बल तथा कुपोषित बालकों हेतु विश्राम के घंटे निश्चित किये जायें,

(iii) हर बालक की डॉक्टरी जाँच करायी जाये,

(iv) हर विद्यालय में डॉक्टर की नियुक्ति की जाये।

8. **लिंग–भेद के अनुसार शिक्षा** :– लिंग–भेद के कारण बालकों तथा बालिकाओं की रुचियों, क्षमताओं, योग्यताओं, आवश्यकताओं आदि में पर्याप्त अंतर होता है। जैसे–जैसे वे बडे होते जाते हैं, वैसे–वैसे यह अंतर ज्यादा ही स्पष्ट होता है। इस दृष्टि से प्राथमिक कक्षाओं में उनके लिए समान पाठ्य–विषय हो सकते हैं, लेकिन माध्यमिक कक्षाओं में इन विषयों में अंतर की स्पष्ट रेखा का खींचा जाना जरूरी है।

9. **आर्थिक तथा सामाजिक दशाओं के अनुसार शिक्षा** :– बालकों के परिवारों की आर्थिक तथा सामाजिक दशायें उनके विचारों, दृष्टिकोणों, आवश्यकताओं आदि में भेद पैदा कर देती हैं। उनके इस भेद को ध्यान में रखकर ही उनके लिए उपयुक्त तरह की शिक्षा की व्यवस्था की जा सकती है। ऐसा न करने से उनको प्रदान की जाने वाली शिक्षा का निरर्थक सिद्ध होना स्वाभाविक है।

10. **पाठ्यक्रम का विभिन्नीकरण** :– विभिन्न आयु के बालकों तथा बालिकाओं की रुचियों, रुझानों, अभिवृत्तियों एवं आकांक्षाओं में इतना ज्यादा अंबर होता है कि सबके लिए समान पाठ्यक्रम का निर्माण करना, उनके प्रति अन्याय करना है। अतः पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए तथा उसमें इतने तरह के विषय होने चाहिए कि किसी भी बालक अथवा बालकों को अपनी इच्छानुसार विषयों का चयन करने में किसी तरह की कठिनाई न हो। सारांश यह है कि बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का शिक्षा में अति महत्वपूर्ण स्थान है। इन विभिन्नताओं का ज्ञान प्राप्त करके शिक्षक अपने छात्रों को विविध तरह के लाभ पहुँचा सकता है। उदाहरणार्थ, वह शैक्षिक निर्देशन द्वारा उपयुक्त विषयों तथा व्यावसायिक निर्देशन द्वारा सर्वोत्तम व्यवसाय का चयन करने में बालकों को अपूर्व मदद दे सकता है।

वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रकार :–

भिन्न व्यक्तियों में जो अंतर पाया जाता है, वह मुख्यतः निम्न तरह का होता है–

1. **बुद्धि स्तर पर आधारित विभिन्नता** :– सभी व्यक्ति एक–सी बुद्धि वाले नहीं होते, कुछ प्रतिभाशाली होते हैं तथा कुछ पिछड़े हुये। बुद्धि परीक्षणों के आधार पर हम यह पता लगा सकते हैं कि अमुक बालक या व्यक्ति प्रतिभाशाली है या तीव्र–बुद्धि बालक है या सामान्य है या मंद बुद्धि अथवा जड़ बुद्धि बालक है –

2. **शारीरिक विकास में विभिन्नता** :– सभी व्यक्तियों का शारीरिक विकास समान रूप से नहीं होता। कुछ व्यक्ति मोटे होते हैं तो कुछ पतले, कुछ लम्बे होते हैं तो कुछ नाटे, किसी का रंग गोरा होता है किसी का साँवला, तो किसी का बिल्कुल काला, कोई बहुत सुंदर तथा आकर्षक होता है तो कोई कुरूप और भद्दा। कोई सबल होता है तो कोई निर्बल। इस तरह व्यक्तियों में शारीरिक दुष्टि से विभिन्नतायें होती हैं।

शारीरिक विभिन्नता प्रायः जन्म से ही होती हैं, जैसे किसी व्यक्ति के छः अंगुलियों का होना, नाक का चपटा या लम्बा होना, ओठों का बड़ा होना आदि आदि । पर कभी–कभी यह प्राप्त की जाती है जैसे–दुर्घटना से हाथ या पैर का टूट जाना, मुँह का विकृत हो जाना आदि आदि ।

3. संवेगात्मक विभिन्नता :– भिन्न–भिन्न बालकों या व्यक्तियों में भिन्न–भिन्न तरह के संवेगों का विकास होता है। कुछ व्यक्ति सदैव प्रसन्न रहते हैं, कुछ सदैव उदास रहते हैं। कुछ अत्यधिक क्रोधी तथा चिड़चिड़े होते हैं, कुछ शांत एवं गंभीर होते हैं, कुछ में बहुत भावुकता होती है तथा कुछ में कम। कुछ संवेगात्मक दृष्टि से स्थिर होते हैं उनका व्यवहार सामान्य होता. है, जबकि कुछ व्यक्तियों में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है। उनका व्यवहार तनावपूर्ण रहता व्याकुल से रहते हैं।

4. गतिवाही योग्यता में विभिन्नता :– विभिन्न बालकों तथा व्यक्तियों में गतिवाही योग्यता में विभिन्नता दिखाई देती है। कुछ बालकों में गति–कौशल का विकास शीघ्रता से हो जाता है एवं कुछ में देर से होता है। एक ही आयु के कुछ बालक गतिवाही कार्य शीघ्रता तथा कुशलता से करने में सफल हो जाते हैं जबकि दूसरे उन कार्यों को करने में असफल रहते हैं।

5. रुचियों में विभिन्नता :– प्रायः प्रत्येक व्यक्ति की रुचियाँ दूसरे व्यक्तियों से भिन्न होती हैं, किसी की पढ़ने में अधिक रुचि होती है तो किसी की खेलने में। किसी की रुचि अच्छे वस्त्र पहनने की होती है तो किसी की अच्छा भोजन करने में। की संगीत में रुचि होती है तो किसी की नाटक अथवा चलचित्र देखने में । पारिवारिक –भूमि और विकास के स्तर आदि कई कारक बालक की रुचियों को प्रभावित करते हैं–

6. सीखने में विभिन्नता :– सीखने के संबंध में बालकों में बड़ा अंतर देखा जाता है। विभिन्न आयु के बालकों में ही नहीं, समान आयु के बालकों में भी सीखने की गति, सीखने की रुचि तथा सीखने की तत्परता में अंतर पाया जाता है। कुछ बालक सीखने में बड़े कुशल होते हैं, वे किसी चीज को बहुत शीघ्रता से सीख लेते हैं जबकि कुछ बालक उसी चीज को काफी देर से सीख पाते हैं।

7. विशिष्ट योग्यताओं में विभिन्नता :– विशिष्ट योग्यताओं की दुष्टि से व्यक्तियों में विभिन्नतायें पाई जाती हैं। कोई बालक अंग्रेजी में अच्छा होता है, कोई गणित अथवा हिन्दी में। कुछ बालक वाचन में श्रेष्ठ होता है, कुछ लेखन में अच्छे होते हैं। एक तो सभी व्यक्तियों में विशिष्ट योग्यतायें नहीं पाई जाती, दूसरे जिन में पाई जाती हैं उनमें इनकी मात्रा में अंतर होता है। जैसे–सभी खिलाड़ी समान स्तर के नहीं होते।

8. सामाजिक विभिन्नता :– बालक तथा बालिकाओं दोनों के सामाजिक विकास में अंतर पाया जाता है। किसी बालक में सामाजिक परिपक्वता शीघ्र आ जाती है और किसी में देर से आती है। सामाजिक गुणों की दृष्टि से भी बालकों में अंतर होता है। कुछ बालकों में बहुत नेतृत्व के गुण होते हैं, जबकि कुछ में अनुकरण की प्रधानता होती है। कुछ बहिर्मुखी होते हैं तो कुछ अंतर्मुखी। बालकों के लड़ने में और मित्र बनाने में भी विभिन्नता पाई जाती हैं।

वैयक्तिक भिन्नता पर आधारित शिक्षण पद्धतियाँ : शैक्षिक क्षेत्र में व्यक्तिगत विभिन्नता पर विशेष बल दिये जाने से विद्यालयों में प्रदान किया जाने वाला शिक्षण छात्रों की वैयक्तिक भिन्नताओं पर आधारित होना

चाहिए। छात्रों को वैयक्तिक शिक्षण प्रदान करते समय निम्नलिखित विधियों एवं प्रविधियों का प्रयोग किया जा सकता है–

1. **डेक्रोली योजना** :– इस योजना का प्रतिपादन डॉ. ओविल डेक्रोली ने किया। डेक्रोली विधि बालक को मूर्त तथा अमूर्त कार्यों को करने का अवसर प्रदान कर आत्म–प्रकाशन को उत्साहित करती है। यह विधि शिक्षा सिद्धांत, जीवन के लिए जीवन द्वारा' पर आधारित है। इस विधि के अंतर्गत कक्षा के समस्त छात्रों को उनके स्तर,रुचि, क्षमता तथा योग्यता के अनुरूप विभाजित कर दिया जाता है तथा कक्षा में स्वाभाविक वातावरण का निर्माण करके, अनौपचारिक व्यवहार पर बल दिया जाता है। इस स्वाभाविक वातावरण में छात्र को अपनी–अपनी क्षमतानुकूल अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान किया जाता है।

मेयर ने डेक्रोली योजना के निम्न सिद्धांतों का उल्लेख किया है–

(1) बालक की भिन्न–भिन्न आयु में भिन्न–भिन्न रुचियाँ होती हैं।

(2) बालक एक जीवित प्राणी है। इसलिए उसे सामाजिक जीवन के लिए तैयार करना जरूरी है।

(3) बालक को जीवन हेतु जीवन के द्वारा ही शिक्षित किया जा सकता है

(4) जैसे–जैसे बालक की आयु बढ़ती है, उसमें परिवर्तन होता रहता है।

(5) समान आयु के बालकों में भिन्नतायें पाई जाती हैं।

(6) भिन्न–भिन्न कार्यों में स्वाभाविक गतिशीलता को बनाये रखने हेतु बालकों को प्रोत्साहन देना जरूरी है।

(7) शिक्षण के समय बालक की रुचि, मनोवृत्ति तथा वातावरण का ध्यान रखना जरूरी है।

2. **संविदा योजना** :– संविदा योजना में अध्ययन की विषय–वस्तु को निश्चित कर दिया जाता है। निर्धारित पाठ्य–वस्तु पूरी हो जाने के उपरांत बालकों की परीक्षा ली जाती है। परीक्षा द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि बालक किस दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। जिस दृष्टि से बालक पिछड़ा हुआ होता है, उसी पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह योजना त्रुटियों को सुधार कर, छात्रों को नवीन ज्ञान प्रदान करने से पूर्व, पूर्व ज्ञान की दृष्टि से भी दक्ष बनाती है।

3. **क्रियात्मक विधि** :– क्रियात्मक पद्धति का अर्थ है–बालक का स्वयं क्रिया के माध्यम से ज्ञानार्जन करना।

रिचार्ड सेफर्थ के अनुसार, "क्रियात्मक विधि, जो क्रियाशीलता के सिद्धांत पर आधारित है, परीक्षणों के द्वारा निष्पक्ष रूप से शिक्षण की सर्वोत्तम विधि स्वीकार की गई है।"

इस विधि के अंतर्गत क्रिया को मुख्य आधार माना जाता है तथा क्रिया के आधार पर ही समस्त विषयों का शिक्षण कराया जाता है। क्रिया के चयन में बालकों को स्वतंत्रता प्राप्त होती है,। क्रिया का चयन कर लेने के उपरांत 6 माह के लिए योजना बनाई जाती है। इस योजना को छात्रों द्वारा ही कार्यान्वित कराया जाता

है। क्रियात्मक विधि के अंतर्गत छात्र क्रिया का चयन करने से लेकर उसके परिणाम तक पूर्ण रूप से स्वतंत्र होते हैं।

क्रियात्मक विधि का प्रयोग कब किया जाये? इसके बारे में शोइनचेन ने लिखा है, "क्रियात्मक पद्धति का प्रयोग उस समय किया जाता है, जब किसी विषय के शिक्षण के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने हेतु बालकों द्वारा किसी प्रकार की क्रिया की जाती है।"

इस विधि के संबंध में पेस्टालॉजी ने लिखा है कि यह पद्धति इस मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित है कि बालक की क्रिया चेतना के तीन स्तरों को प्रभावित करती है–

(1) चिंतनात्मक, (2) निर्णय एवं (3) रुचि बल।

4. विनेटका योजना :– इस योजना का प्रतिपादन डॉ. कार्लटन वाशबर्न ने किया। इस योजना के संबंध में रिस्क ने लिखा है कि विनेटका का व्यक्तिगत शिक्षण की योजना इस प्रकार की योजनाओं से अधिक व्यापक रूप से जानी जाती है ।

विलियम बायड के अनुसार विनेटका योजना के मुख्य सिद्धांत निम्न हैं :–

1. प्रत्येक बालक को बालक के रूप में स्वाभाविक, आनंदपूर्ण तथा पूर्णता का जीवन बिताना चाहिए।

2. प्रत्येक व्यक्ति की मानव प्रगति उसकी संपूर्ण क्षमता के विकास पर निर्भर करती है।

3. प्रत्येक बालक को जीवन में उपयोगी तथ्यों तथा कुशलताओं पर संपूर्ण अधिकार प्राप्त करना चाहिए।

4. मानव समाज के कल्याण के लिए प्रत्येक व्यक्ति में सबल सामाजिक चेतना का विकास होना आवश्यक है।

इस योजना के अंतर्गत निर्धारित कार्य को छोटी–छोटी इकाइयों में विभाजित कर दिया जाता है। एक इकाई समाप्त हो जाने के बाद छात्र का परीक्षण कर, उसकी त्रुटियों का ज्ञान किया जाता। इन गलतियों में सुधार करने के बाद ही बालक दूसरी इकाई से संबद्ध कार्य कर सकता है। यह योजना बालक को स्व–शिक्षा के सिद्धांत का अनुगमन करने हेतु प्रोत्साहित करती है।

5. डाल्टन योजना :– इस महत्वपूर्ण योजना का निर्माण मिस हैलेन पार्कहर्स द्वारा किया गया। उन्होंने इस योजना के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कहा कि, "डाल्टन प्रयोगशाला योजना शिक्षण की प्रणाली अथवा पद्धति नहीं है। यह शैक्षिक पुनर्संगठन की एक विधि है, जो सिखाने तथा सीखने की संबद्ध क्रियाओं में एकता स्थापित करती है।"

यह विधि बाल–केन्द्रित होने के कारण बालक को स्वयं की बुद्धि एवं क्षमतानुसार प्रगति करने के लिए अवसर प्रदान करती है तथा वैयक्तिक भिन्नता को स्वीकार करके छात्रों को स्व–रुचि के अनुसार कार्य करने देती है। डाल्टन योजना व्यक्तिगत शिक्षण की एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि में अध्यापक मात्र पथ–प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है। जो बालक अपने कार्य को निर्धारित समय से पहले ही पूर्ण कर लेता है, उस छात्र को प्रगति करने का पूर्ण अवसर प्राप्त होता है।

6. योजना विधि :– योजना विधि का निर्माण किलपैट्रिक ने किया। यह विधि व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार कर, प्रत्येक बालक को उसकी क्षमता के अनुसार कार्य करने का अवसर देती है जिससे बालक को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

योकम एवं सिम्पसन ने प्रोजेक्ट के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "योजना स्वाभाविक वातावरण में किये जाने वाले स्वाभाविक तथा जीवनतुल्य कार्य की एक बड़ी इकाई होती है। इसके अंतर्गत किसी कार्य को करने अथवा किसी वस्तु को बनाने की समस्या का पूर्णरूपेण निराकरण करने का प्रयत्न किया जाता है। यह अत्यधिक है उद्देश्ययुक्त होता है एवं इसमें किसी कार्य की पूर्णता निहित होती है। यह कार्य शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक अथवा लगभग पूर्णतः मानसिक हो सकता है। यथा–गुड़िया का घर बनाना व सजाना, हाथ से किया जाने वाला कोई कार्य तथा नाटक का लेखन व अभिनय। इसमें विभिन्न प्रकार की अनेक क्रियायें समाविष्ट रहती हैं तथा इसको पूर्ण करने हेतु किसी भी उचित सामग्री का प्रयोग किया जा सकता है।"

किलपैट्रिक के शब्दों में, "योजना सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्य–मश्ंन्कि कार्य है।'

योजना पद्धति छात्र को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करती है, क्योंकि उसका स्वयं का अनुभव, उसके ज्ञान का आधार होता है। रायबर्न के अनुसार यह विधि बालक के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करती है तथा उसके जीवन हेतु नई विधि से शिक्षा प्रदान करने का प्रयत्न करती हैं । योजना पद्धति के अंतर्गत निम्नलिखित पदों का अनुसरण किया जाता है–

परिस्थिति उत्पन्न करना; (ख) योजना का चयन; (ग) योजना का कार्यक्रम बनाना; (क) योजना को पूर्ण करना; (ग) योजना का मूल्यांकन करना; (द) योजना को लिखना।

7. अभिक्रमित अनुदेशन :– अभिक्रमित अनुदेशन अधिगम के क्षेत्र में प्रयश्ंन्कि की जाने वाली एक नई विधि है। इस विधि के माध्यम से बालकों को अपनी व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार अधिगम का अवसर प्राप्त होता है। इस विधि पर आधारित पाठ्यक्रम को, उसके तत्वों में विभाजित करके, छोटे–छोटे पदों में पेश किया जाता है। इन पदों का अध्ययन करके बालकों को अपेक्षित अनुक्रियायें करनी होती हैं तथा अनुक्रियायों की जाँच भी छात्र को ही करनी होती इस तरह अध्ययन में बालक सदैव तत्पर बना रहता है व उसे अपनी ज्ञान प्राप्ति का भी बोध होता रहता है। यह विधि बालकों को नवीन ज्ञान प्रदान करने, सीखने की दिशा में तत्पर रखने एवं उन्हें उद्दीपन प्रदान करने में सहायक है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि यह सीखने की एक ऐसी मनोवैज्ञानिक विधि है जिसमें बालक को स्वयं ही सीखने का अवसर प्राप्त होता है।

अभिक्रमित अनुदेशन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए सूसन मार्कले कहते हैं कि, "अभिक्रमित अध्ययन एक ऐसी व्यूह रचना है, जिसकी सहायता से शिक्षण–सामग्री को एक ऐसे क्रम में नियोजित किया जाता है जिससे बोलकों में लगातार अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सकता है तथा उनका मापन भी किया जा सकता है। उपरोक्त शिक्षण पद्धतियों के अतिरिक्त वैयक्तिक शिक्षण हेतु कुछ अन्य प्रविधियों का भी प्रयोग किया जा सकता है। जैसे–निदानात्मक शिक्षण,पाठ्यक्रम की भिन्नता,छात्रों की प्रोन्नति के माध्यम से प्रगति के अवसर उपलब्ध कराना, आदि।

Unit VI:

Special Need Learners इकाई 6– विशेष आवश्यकता वाले अधिगमकर्ता

(1) मंद–बुद्धि बालक। **Mentally Retarred**

(2) प्रतिभाशाली बालक। **Gifted Children-**

(3) दिव्यांग (विकलांग) **A Divyang (Handicapped)**.

विशेष आवश्यकताओं वाले बालकों की प्रकृति, प्रकार तथा विशेषताएं बताइए।

विशेष आवश्यकताओं वाले बालक 'विशिष्ट बालक' भी कहे जाते हैं। सामान्य बालकों (नॉर्मल चिल्ड्रन) से विशिष्ट वाला (एसेप्शनल चाइल्ड) की प्रकृति में भिन्नता पाई जाती है। सामान्य बालक औसत शरीर वाले एवं स्वस्थ अंगों वाले होते हैं तथा सामान्य शारीरिक श्रम वाले कार्यों को करने में किसी प्रकार की बाधा का अनुभव नहीं करते। इनका बौद्धिक स्तर प्रायः सामान्य बुद्धि लब्धि अर्थात् 90 से 110 की सीमा के मध्य होता है। इनकी अधिगम (सीखने) की गति भी औसत होती है। ये संवेगात्मक रूप से संतुलित होते हैं जबकि विशिष्ट बालक औसत बालकों से भिन्न होते हैं। या तो वे 120 बुद्धि लब्धि या उससे अधिक वाले प्रतिभाशाली बालक होते हैं अथवा शारीरिक, मानसिक दृष्टि से बाधित बालक होते हैं ।

विशिष्ट आवश्यकताओं वाले बालकों की प्रकृति विभिन्न मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाविदों द्वारा उनकी परिभाषाओं से स्पष्ट होती है। क्रो एवं क्रो के अनुसार, "विशिष्ट प्रकार या विशेष पद किसी गुण या उन गुणों से युक्त व्यक्ति पर लागू होता है जिसके कारण वह व्यक्ति साथियों का ध्यान अपनी ओर विशिष्ट रूप से आकृष्ट करता है तथा इससे उसके व्यवहार की अनुक्रियाएं भी प्रभावित होती हैं।" एम.ए. किर्क अमेरिकन नेशनल सोसाइटी फॉर द स्टडी ऑफ एजुकेशन' के अनसार "एक विशिष्ट बालक वह है जो कि शारीरिक मानसिक संवेगात्मक एवं सामाजिक विशेषताओं में किसी सामान्य बालक से उस सीमा तक विचलित होता है जब वह अपनी क्षमताओं के अधिकतम विकास हेतु सहायता, निर्देशक, विद्यालय कार्यक्रमों में परिमार्जन तथा विशिष्ट शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता रखता है।" हावर्ड (1996) के अनुसार, "विशिष्ट बालकों की श्रेणी में वे बच्चे आते हैं जिन्हें सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है या जिनका मानसिक या शैक्षिक निष्पादन या सृजन अत्यन्त उच्च कोटि का होता है या जिनको व्यावहारिक, सांवेगिक एवं सामाजिक समस्याएं घेर लेती है या वे विभिन्न शारीरिक अपंगताओं या निर्बलताओं से पीड़ित रहते हैं जिसके कारण ही उनके लिए अलग से विशिष्ट प्रकार की शिक्षा व्यवस्था करनी होती है।"

अतः एक ऐसा बालक जो कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक, सांवेगिक एवं व्यावहारिक विशेषताओं के कारण किसी सामान्य या औसत बालक से उस सीमा तक विशिष्ट रूप से विचलित तथा भिन्न होता है जहाँ कि अपनी योग्यताओं, क्षमताओं एवं शक्तियों को समश्निंचित रूप से विकसित करने के लिए परम्परागत शिक्षण विधियों में परिमार्जन या विशिष्ट प्रकार के कार्यक्रमों की आवश्यकता होती है,

विशिष्ट बालक कहा जाता है । इस श्रेणी में शारीरिक रूप से अक्षम, प्रतिभाशाली, सृजनात्मक, मंद बुद्धि आदि प्रकार के बालक सम्मिलित है। इन विभिन्न प्रकार के विशिष्ट बालकों की प्रकृति भी भिन्न होती है।

विशिष्ट बालकों के विभिन्न प्रकारों में उनकी प्रकृति तथा विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है.

(1) **प्रतिभाशाली बालक.** जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 120 से अधिक पाई जाती है वे प्रतिभाशाली बालक के अन्तर्गत आते हैं। स्कीमर तथा हैरीमन की यह मान्यता है कि प्रतिभाशाली बालक का प्रयोग उन एक प्रतिशत बालकों के लिए किया जाता है

जो सबसे अधिक बुद्धि मान है। क्रो एंड क्रो की यह मान्यता है कि प्रतिभाशाली बालक दो प्रकार के होते हैं । एक तो वे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 130 से अधिक होती है और दूसरा वे बालक जो कला, संगीत, गणित अभिरूप आदि में प्रतिभाशाली सृजनशील होते हैं। टर्मन तथा ओडन की यह मान्यता है कि प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के लक्षणों, विद्यालय, 'उपलब्धि, खेल और रुचियों की बहुलता में सामान्य बालकों से श्रेष्ठ होते हैं ।"

प्रतिभाशाली बालकों की प्रकृति निम्नानुसार है.

(1) वे नवीन ज्ञान शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं।

(2) उनके किए पुनरावृत्ति की कम आवश्यकता पड़ती है।

(3) उनमें तार्किक क्षमन, मनन क्षमता, स्मरण शक्ति, सामान्यीकरण की क्षमता अधिक होती है।

(4) उनमें शब्द भंडार में व्यापकता होती है।

(5) उनकी रुचियों में पर्याप्त वैभिन्य दिखाई देता है ।

(6) उन्हें सामान्य बालकों में समायोजित करने में कठिनाई होती है।

7) इनका सामान्य ज्ञान अधिक होता है ।

प्रतिभाशाली बालक की विशेषता/लक्षण

(1) शारीरिक दृष्टि से इनकी ज्ञानेन्द्रियाँ तीव्र होती है। ये सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक स्वस्थ होते हैं ।

(2) मानसिक दृष्टि से इनकी बुद्धि लब्धि 120 से अधिक होती है।

(3) रुचियों की दृष्टि से इन बालकों की विशेषताओं में मुख्यतः तुलनात्मक, कल्पना प्राप्ति, धैर्य, तर्क व खोजबीन की प्रवृत्ति पायी जाती है ।

(4) मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से इनमें समायोजन, गहनता, सूझ प्रमुख हैं।

(5) मानवीय गुणों की दृष्टि से इनमें ईमानदारी, सच्चाई व पारिवारिक जीवन की दृष्टि से ये अधिक समायोजनशील, सहयोगात्मक, विनम्र,सहनशील, जिज्ञासु,शांतिप्रिय प्रकृति के होते हैं ।

(6) खेलकूद व सहगामी क्रियाओं की दृष्टि से यह पाया गया है कि कुछ ही प्रतिभाशाली रुचान प्रदर्शित करते हैं।

स्कीनर तथा हैरीमैन द्वारा प्रतिभाशाली बालकों की कुछ विशेषताएं बताई गई हैं जिनमें प्रमुख हैं.

(1) विशाल शब्द कोष,

(2) मानसिक प्रक्रिया में तीव्रता,

(3) दैनिक कार्यों में भिन्नता,

(4) सामान्य अध्ययन में रुचि,

(5) अध्ययन में अद्वितीय समानता,

(6) अमूर्त विषयों में रुचि,

(7) आश्चर्यजनिक अन्तद्रष्टि

(8) मंदबुद्धि व सामान्य बालकों में अरुचि,

(9) पाठ्य विषय में अत्यधिक रुचि,

(10) विद्यालय के कार्यों के प्रति बहुधा उदासीनता,

(11) बुद्धि परीक्षणों में उच्च बुद्धि लब्धि 130. 170 तक।

(2) मानसिक मंदबुद्धि बालक.

सामान्यतः मानसिक मंदता के संबंध में यह धारणा है कि मानसिक रूप से मंदबुद्धि बालकों की मानसिक योग्यताएं कम होती हैं। ऐसे बालकों की बुद्धिलब्धि भी साधारण बालकों की बुद्धिलब्धि से कम होती है। स्कीनर के अनुसार मानसिक मंदता वाले बालकों के लिए अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है जैसे. अल्प बुद्धि विकल बुद्धि मूढ बालक, बुद्धि शिथिलता वाले बालक । सन 1913 तक मंदबुद्धि और पिछडे हुए बालकों में कोई भी अंतर नहीं किया जाता था। इसके बाद जैसे. जैसे मनोविज्ञान का विकास हुआ है वैसे. वैसे इन दोनों में विभिन्नता की जाने लगी। अमेरिका में मानसिक मंदता को इस प्रकार से परिभाषित किया गया. मानसिक मंदता औसत से निम्न कार्यक्षमता न उल्लेख करती है और इस कारण ऐसे बालकों में निम्नलिखित में से एक से अधिक अनुकूल व्यवहार की कमी रहती है.

(1) परिपक्वता,

(2) अधिगम,

(3) सामाजिक समायोजन।

क्रो एवं क्रो मानते हैं कि जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है, वे मंदबुद्धि बालक हैं। स्कीनर के अनुसार प्रत्येक कक्षा के छात्रों को एक वर्ष में शिक्षा का एक निश्चित पाठ्यक्रम पूरा करना पड़ता है पर जो बालक इस पाठ्यक्रम को पूरा नहीं कर पाते मंदबुद्धि बालक कहलाते हैं।

मंदबुद्धि बालक कक्षा में पृथक रहना चाहते हैं और इनकी प्रकृति असामाजिक व असमायोजित रहती है। इनमें हताशा व निराशा भी रहती है। इनकी मानसिक आयु (M-A-) कम होती है अर्थात् ये अपनी कक्षा का कार्य ठीक प्रकार से करने में असमर्थ कहते हैं। इनकी रुचियाँ भी भिन्न होती हैं। इनमें ज्ञानेन्द्रिय संबंधी दोष पाए जाते हैं।

मंदबुद्धि बालकों की प्रमुख विशेषताएं

(1) आत्म विश्वास की कमी,

(2) असंतुलित व्यवहार,

(3) कम बुद्धि लब्धि,

(4) सूक्ष्म चिंतन का अभाव,

(5) संवेगात्मक अस्थिरता,

(6) व्यवहार कुशलता की कमी,

(7) उत्तरदायित्व वहन करने में असमर्थ,

(8) सीखने की क्षमता में कमी,

(9) ज्ञानेन्द्रिय दोष,

(10) अपनी मान्यताओं पर अटल विश्वास,

(11) अधिगम स्थानांतर में कमी,

(12) निर्णय लेने में परिस्थितियों की अवहेलना,

(13) कार्य. कारण के संबंध में बेबश्निनियाद धारणाएं रखना है जैसे अधिक बुखार के माप को थर्मामीटर पर दोषारोपण करना,

(14) पढ़ाई में असफलता,

(15) दूसरे बालकों को मित्र बनाने की इच्छा किन्तु मूल्यों के द्वारा मित्र बनाए जाने की कम इच्छा।

(3) अधिगम बाधित (लर्निंग डिएबल्ड) बालक. सीखने संबंधी कमी या असमर्थता वाले बालक विशेष आवश्यकता वाले इस वर्ग में आते हैं। ये बालक मानसिक रूप से मंद नहीं होते परन्तु सामान्य बालकों की तुलना में शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े हुए होते हैं। कक्षा में सामान्य बालकों को जो कुछ पढ़ाया जाता है उसे ग्रहण करने में ये बालक असफल रहते हैं । इस कारण से वे दुःखी व तनावग्रस्त रहते हैं। उनके मन में ऐसी धारणा बन जाती है कि जीवन में सफल नहीं हो सकते। कुछ बच्चे शाला से भागकर आवारागर्दी करने लगते हैं। प्राथमिक स्तर पर लगभग 20 प्रतिशत बालक अधिगम दृष्टि से अयोग्य होते हैं। प्रायः अधिगम बाधित बालक पढ़ने,समझने, गणित करने,तर्क. वितर्क करने में बहुत कम उपलब्धि का प्रदर्शन करते हैं। अधिगम बाधित को प्रकृति को हैमिल बेच, मौक नट और लारसन ने निम्न शब्दों में परिभाषित किया है. "अधिगम असमर्थता एक ऐसा मूल शब्द है जो ऐसे समूह की ओर संकेत करता है जो श्रवण, वाचन, अध्ययन, लेखन, तर्क और गणितीय जैसी योग्यताओं में सार्थक रूप से कठिनाई का अनुभव करते हैं। ये कठिनाइयाँ किसी भी व्यक्ति की आंतरिक होती हैं जो केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र की विकृत क्रिया के परिणामस्वरूप घटित होती हैं।"

अधिगम असमर्थता बालकों की प्रमुख विशेषताएं

(1) अतिक्रियाशीलता,

(2) प्रात्यक्षिक गतिक न्यूनता,

(3) सांवेगिक अस्थिरता,

(4) सामान्य समन्वय का अभाव,

5) सामान्य समन्वय का अभाव,

(5) अवधान (ध्यान) समस्या,

(6) प्रोत्साहनीय,

(7) स्मृति व चिंतन अभाव,

(8) विशेष शैक्षिक समस्याएं,

(9) तांत्रिकीय तरंगों में असमरूपता।

(4) गति संबंधी बाधा से ग्रसित बालक. चलने. फिरने,उठने, बैठने में न्यूनता या कमी रखने वाले बालक इस श्रेणी के अंतर्गत आने वाले विशेष आवश्यकता वाले बालकों में आते हैं। इसमें पर्णतः असमर्थ

तथा कम मात्रा में असमर्थता से यक्त दो प्रकार के बालक आ जन्म से, दुर्घटना से या बीमारी (लकवा) पोलियों से ग्रसित होकर ये बालक चलने फिरने में पर्ण असमर्थ या बिना सहारे के चलने. फिरने में असमर्थ रहते हैं। वैशाखी, ट्रायसिकल, व्हील चेयर के उपयोग से अनेक अपंग बालक आजा सकने में समर्थ होते हैं। क्रो व क्रो ने विकलांग, दिव्यांग या निःशक्त बालक की परिभाषा इस प्रकार दी है."वह बालक जिसका शारीरिक दोष उसे साधारण क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है या सीमित रखता है विकलांगता से दुख बालक कहा जाएगा।"

गत्यात्मक बाधा ग्रसित बालकों की कुछ प्रमुख विशेषताएं .

(1) पोलियो बीमारी के कारण, प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात आदि से ग्रसित ऐसे बालक या तो सामान्य बुद्धि के होते हैं या असामान्य क्षमता वाले।

(2) शारीरिक रूप से ये सामान्य बालकों से अक्षम या निर्बल होते हैं।

(3) विकलांगता वाले बालक शिक्षा प्राप्त करने में बाधा का सामना करते हैं।

(4) चलने. फिरने में कमी होने के कारण खेलकूद, भाग. दौड़ आदि में से अच्छा निष्पादन नहीं दे पाते।

(5) सामाजिक कार्यक्रमों में अधिक सक्रिय नहीं होते।

(6) विकलांगता के कारण वे कभी. कभी व्यंग्य. उपहास के पात्र बन जाते हैं।

(7) उनमें अपनी विकलांगता को लेकर हीन भावना उत्पन्न हो जाती है।

(8) वे प्रभावी व्यक्तित्व के स्वामी नहीं बन पाते।

(9) विकलांग बालक अपनी कमी प्रायः किसी न किसी दूसरे क्षेत्र में पूर्ण करते हैं जैसे संगीत, कला, वाद. विवाद, अध्ययन आदि ।

(10) कुछ अपंग बालक कृत्रिम अंग लगाने, उपकरणों, फिजियोथैरेपी से कुछ सीमा तक ठीक हो जाते हैं।

(5) नेत्रहीन या दृष्टि क्षति से युक्त बालक. इस वर्ग में पूर्ण अंधे, काने (एक आंख, वाले) कम दृष्टि रखने वाले बालक आते हैं। यदि बालक की दृष्टि एक्यूटी 20/200 या इससे कम पाई जाती है तो उसे दृष्टि क्षतियुक्त बालक कहा जाता है। पूर्णांध बालक को आंख को छोड़कर नाक, कान, मुँह, हाथ (त्वचा) आदि अन्य जागृत इन्द्रियों पर निर्भर होना पड़ता है। कहा गया है कि अंधे अक्षम नहीं होते वास्तव में वे भिन्न तरीके से सक्षम होते हैं। साधारण दृष्टि क्षति युक्त बालक चिकित्सा, आंख के ऑपरेशन, चश्मा आदि से देख पाते हैं। पूर्ण रूप से अंध बालक ब्रेल लिपि में लिखित पुन्तकें पढ़ सकते हैं। पूर्ण अंध या अधिक दृष्टि क्षति युक्त बालकों की शिक्षा विशेष विद्यालयों में तथा शेष सामान्य रूप से दृष्टि क्षतियुक्त बालक समावेशी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने हेतु सक्षम होते हैं।

दृष्टिहीन बालकों में निम्नलिखित विशेषताएं दिखाई देती हैं.

(1) बालक का बार. बार आंखों को मलना,

(2) एक आंख खोलना और एक आंख बंद करना,

(3) प्रकाश के प्रति संवेदनशील होना,

(4) किसी कार्य को करते हुए चेहरे की अभिव्यक्ति में असामान्य होना,

(5) आंखों में दर्द का अनुभव करना व जलन का अहसास होना,

(6) विषय सामग्री को बहुत नजदीकी से पढ़ना या दूर से पढ़ना,

(7) जीवन की वास्तविकता से अनभिज्ञ होना,

(8) आत्मविश्वास की कमी,

(9) एक साथ दो. दो वस्तुएं दिखाई देना,

(10) पढ़ते हुए बीच. बीच में विषय वस्तु को छोड़ देना,

(11) गति मंद होना,

(12) सामूहिक कार्यों में कम सहभागिता,

(13) नेत्र के अलावा अन्य ज्ञानेन्द्रियों का संवेदनशील होना,

(14) तीव्र समय गति होना,

(15) अपने आसपास के वातावरण पर नियंत्रण में कमी,

(16) अमूर्त (एब्स्ट्रेक्ट) चिंतन में कमी,

(17) 10. 12 पाइंट अक्षरों वाली किताबों से पढ़ पाने में असमर्थता।

(6) श्रवण क्षति युक्त बालक. बधिर या कम (ऊंचा सुनने वाले) सुनने वाले बालक इस वर्ग में आते हैं। कुछ बालक जन्म से बधिर होते हैं तथा कुछ बीमारी, दुर्घटना आदि के। कारण श्रवण क्षति मुक्त हो जाते हैं। सुनने में अक्षमता के कारण ऐसे बालकों की बोलने की शक्ति का भी विकास तथा भाषा का विकास नहीं हो पाता। शाला. कक्षा में ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि कम होती है। इस प्रकार के बालक पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग नहीं ले पाते क्योंकि उनका श्रवण दोष बाधा उत्पन्न करता है। अल्प श्रवण बाधित या ऊंचा सुनने वाले बालकों को प्रायः 3 श्रेणियों में बाँटा जाता है.

(1) साधारण श्रवण बाधित जिनकी श्रवण क्षमता का स्तर 65 डेसीबल होता है ।

(2) मध्यम श्रवण बाधित बालक जो प्रायः 65 डेसीबल स्तर पर भी नहीं सुन पाते तथा,

(3) गंभीर श्रवण बाधित बालक जिनमें 70. 90 डेसीबल तक की श्रवणबाधिता होती है।

श्रवण बाधित बालकों की प्रमुख विशेषताएं (लक्षण) इस प्रकार हैं.

(i) इनमें आत्म विश्वास की कमी होती है ।

(ii) ऐसे बालक अपने भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं ।

(iii) ऐसे बालक प्रायः तनावग्रस्त रहते हैं।

(iv) भाषा का विकास न होने से इनका बौद्धिक विकास भी कम हो जाता है ।

(क) ऐसे बालकों में सामाजिकता का अभाव दिखाई देता है।

(vi) बधिर बालक प्रायः मूक भी होते हैं।

(7) लाभहीन वंचित वर्ग के बालक. सामाजिक एवं आर्थिक रूप से लाभहीन वंचित बालकों में ये बालक आते हैं.

(i) निरक्षर परिवार से आने वाले बालक,

(ii) अनुसूचित जनजाति

(आदिवासी) बालक,

(iii) अनुसूचित जाति के बालक,

(iv) अल्पसंख्यक बालक,

(क) बालिकाएं,

(vi) घुमंतु परिवारों के बालक जैसे ईट भट्टा श्रमिक, लोहा पिट्टा, बँटाईदार, झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले अस्थाई निवास करने वाले परिवार के बालक आदि । गार्डन ने इन्हें परिभाषित करते हुए लिखा है, "वंचित होना बाह्य जीवन की उद्दीपक दशाओं की न्यूनता है।" अर्थात् निर्धनता, निरक्षरता, मुख्यधारा से दूर पहाडों जंगलों में निवास आदि से ऐसे बालक लाभहीन या वंचित कहलाते हैं। बालमैन के अनुसार, "वंचित होना निम्नस्तरीय जीवन दशा या अलगाव की ओर संकेत करता है जो कि कुछ व्यक्तियों को उनके समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भाग लेने से रोक देता है।"

इस वर्ग के बालकों में निम्न विशेषताएं पाई जाती हैं.

(1) ऐसे बालकों का पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक स्तर निम्न होता है।

(2) ऐसे बालक संसार, देश, प्रांत नगर में घटित होने वाली घटनाओं से प्रायः अनभिज्ञ होते हैं।

(3) इनका बौद्धिक स्तर कम होता है।

(4) इनमें भाषा का विकास कम होता है ।

(5) सुंस्कारों अच्छे मेंबर्स कम पाए जाते हैं ।

(6) इनमें प्रदर्शन करने की भावना प्रबल होती है।

(7) ये प्रायः अन्तर्मुखी होते हैं।

(8) पूर्वाग्रह ग्रसित भी होते हैं ।

(9) जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण प्रायः इनमें पाया जाता है ।

(10) रूढ़िवादी, अंधविश्वासी होते हैं ।

(11) इनमें युयुत्सा या लड़ने की भावना पाई जाती है ।

(12) असुरक्षा से ग्रसित होते हैं ।

(13) इनकी वाचिक योग्यता कम होती है ।

(13) समस्या समाधान की क्षमता कम होती है।

(14) प्रायः अनुत्तीर्ण होने, रोजी कमाने आदि कारणों से पढ़ना या शाला जाना त्याग देते हैं।

निम्नलिखित विशेष बालकों की कार्यात्मक सीमाएं क्या हैं? इनके मनोसामाजिक तथा शैक्षिक लक्षण भी बताइए.

(i) प्रतिभाशाली बालक

(ii) मानसिक शिथिलता तथा धीमी गति से सीखने वाले बालक

(iii) अलाभप्रद या वंचित बालक

(iv) अधिगम बाधित बालक

शिक्षा मनोविज्ञान यह मानता है कि प्रत्येक बालक दूसरे बालक से अपने गुणों,प्रवृत्तियों तथा शारीरिक मानसिक क्षमताओं में पृथक होता है। इसे मनोविज्ञान में वैयक्तिक विभिन्नता कहा जाता है । इन वैयक्तिक विभिन्नताओं के प्रभावी कारकों में बालक के जीवन, बालक की पारिवारिक पृष्ठभूमि, प्रजातीय अंतर, बौद्धिक अंतर, आर्थिक अंतर, व्यक्तित्व में भिन्नता, सीखने में भिन्नता, संवेगात्मक भिन्नता आदि आते हैं। वैयक्तिक भिन्नताओं के साथ सीखने, शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों की भिन्नता भी बालकों की अलग श्रेणी बना देती

है। यहाँ हम प्रतिभाशाली बालक, धीमी गति से सीखने वाले बालक तथा लाभहीन. वंचित बालकों की श्रेणी का एवं उनकी कार्यात्मक सीमा, मनोसामाजिक लक्षण तथा शैक्षिक लक्षणों का विवेचन करेंगे।

(1) प्रतिभाशाली बालक

प्रतिभाशाली बालकों को अंग्रेजी में गिफ्टेड चाइल्ड कहा जाता है अर्थात् इन्हें ईश्वर की ओर से प्रखर बुद्धि का वरदान प्राप्त है ऐसी मान्यता है। इन विशिष्ट बालकों की विभिन्न क्षेत्रों में औसत बालक से अधिक तीव्र बुद्धि पाई जाती है। ऐसे बालक 120. 140 से अधिक बुद्धि लब्धि (IQ.) होती है। ऐसे बालक सैकड़ों में 1 या 2 ही होते हैं। टरमैन तथा ओडन ने प्रतिभाशाली बालकों की परिभाषा इन शब्दों में दी है, "प्रतिभाशाली बालक शारीरिक गठन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तित्व के गुणों, विद्यालय की उपलब्धि,खेल की सूचनाओं और रुचियों की विविधता में औसत बालकों से श्रेष्ठ होते हैं ।" गिलफोर्ड ने 120 विभिन्न बौद्धिक योग्यताओं की पहचान की है जिसके अनुसार एक प्रतिभाशाली बालक में कोई भी निम्नलिखित गुणवत्ताएं हो सकती हैं.

(1) सामाजिक,

(2) यांत्रिक,

(3) कलात्मक,

(4) संगीत संबंधी,

(5) भाषा संबंधी,

(6) शारीरिक,

(7) शैक्षिक ।

एक योग्य या प्रतिभाशाली बालक लगातार उच्च स्तर का कार्य निष्पादित कर किसी भी सामान्य क्षेत्र में योग्यता प्रदर्शित करता है।

(क) **कार्यात्मक सीमाएं**. उक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि प्रतिभाशाली बालक की कार्यात्मक सीमाएं उच्च स्तर की होती हैं। अतः जो भी कार्य उन्हें शाला में दिया जाता है वह शीघ्रता से उसे पूरा कर लेते हैं। परन्तु जब उन्हें औसत या औसत से नीचे के बालकों के साथ बैठा दिया जाता है तो वह कक्षा शिक्षण को अरोचक व प्रेरणारहित पाते हैं। वह कक्षा अध्ययन से उदासीन हो जाते हैं और सुस्ती,बेचैनी तथा शरारतपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। प्रतिभाशाली बालक कार्य को तीव्रता या द्रुत गति से पूर्ण करते हैं । कक्षा में दोहराए जाने वाले अभ्यासों में उनकी रुचि कम हो जाती है। अतः कक्षा में शिक्षक को इन्हें अधिक मात्रा में प्रश्न, गृह कार्य, शाला कार्य देने चाहिए। इनकी कार्यात्मक योग्यता का उपयोग कमजोर बालकों

को मार्गदर्शन देने में भी किया जा सकता है। प्रतिभाशाली बालकों के विशेष अध्ययन की व्यवस्था भी की जानी चाहिए। प्री प्रायमरी व प्रायमरी कक्षाओं में कक्षोन्नति देने के नियम भी बनाए जाने चाहिए।

(ग) मनोसामाजिक शिक्षण. प्रतिभाशाली बालक मनोविकारों से रहित पाए जाते हैं। मनोवैज्ञानिक विटी के अनुसार इनमें से मनोसामाजिक लक्षण पाए जाते हैं.

(1) ये खेलना अधिक पसंद करते हैं।

(2) ये 58 प्रतिशत मित्र बनाने की इच्छा रखते हैं जबकि 25 प्रतिशत न मित्र खोजते हैं न टालते हैं।

(3) वे 80 प्रतिशत कभी भी धैर्य न खोने वाले होते हैं।

(4) ये सदैव दूसरों को सम्मान देने वाले होते हैं, किसी को चिढ़ाते नहीं।

(5) ऐसे 96 प्रतिशत बालक अनुशासनमानते हैं।

स्किनर एवं हैरीमैन का मानना है कि प्रतिभाशाली बालकों में नेतृत्व के गुण,मानसिक प्रक्रिया में तीव्रता, अमूर्त चिंतन में रुचि पाई जाती है।

प्रतिभाशाली बालक तर्कप्रधान होते हैं अतः समाज की कुप्रथाओं, अंधविश्वासों का विरोध करते हैं। इस पर बहस करना उन्हें अच्छा लगता है। उनमें उत्तम नागरिक गुण, उत्तम सामाजिकता तथा नेतृत्व करने की शक्ति होती है।

मनोसामाजिक रूप में ये बालक समायोजन, ईमानदारी, सच्चाई,प्रेम, सहिष्णुता, समय की पाबंदी, स्पष्टवादिता और सामाजिक व्यवहार में विनम्र शांतिप्रिय, व्यवहार कुशल, तार्किक होते हैं।

(स) शैक्षणिक लक्षण. स्किनर व हैरीमैन ने प्रतिभाशाली बालकों के शैक्षणिक गुणों में सामान्य ज्ञान की श्रेष्ठता, गहन शब्द भंडार, मानसिक प्रक्रिया में तीव्रता, कार्यों में अद्वितीय सफलता, अमूर्त विषयों में रुचि, अन्तृष्टि का विशेष प्रभाव, पाठ्य विषय में रुचि आदि गुणों का उल्लेख किया है।

प्रतिभाशाली बालक ने नेतृत्वक्षमता, उच्च बौद्धिक योग्यता, द्रुत गति से सीखना, तीव्र स्मरण शक्ति, तत्काल उत्तर देने की क्षमता, भाषागत कौशल आदि शैक्षिक गुणों का उपयोग शिक्षा के प्रयोजन से किया जाना चाहिए।

(2) मानसिक शिथिलता एवं धीमी गति से सीखने वाले बालक :

मंदबुद्धि बालकों की सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति कम होती है। क्रो एवं क्रो के अनुसार जिन बालकों की बुद्धि लब्धि (IQ.) 70 से कम होती है, उन्हें मानसिक रूप से शिथिल माना गया है। निःशक्ति व्यक्ति अधिनियम 1995 में मानसिक मंदता से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जो चित्त की अवरुद्ध या अपूर्ण विकास की अवस्था जो विशेष रूप से वृद्धि की अवसामान्यता द्वारा परिलक्षित हो को मानसिक मंदता कहा गया है। मानसिक मंदता औसत से निम्न मानसिक कार्यक्षमता का उल्लेख करती है जिसका

आरंभ बालक के विकास की अवधि में होता है और यह अग्रलिखित में से किसी एक या अधिक से अनुकूल व्यवहार की कमी द्वारा संबंधित होती है.

(1) परिपन्नता

(2) अधिगम (सीखना)

(3) सामाजिक समायोजन ।

मंदबुद्धि बालक दो प्रकार के होते हैं. (क) मानसिक शिथिलता से युक्त तथा (ख) धीमी गति से सीखने वाले।

(क) मानसिक शिथिलता युक्त बालक. साधारणतः जिन बालकों की बुद्धि लब्धि 60 से कम होती है उन्हें मानसिक शिथिल बालक की श्रेणी में रखते हैं । मानसिक शिथिलता वाले बालकों का समायोजन प्रतिभाशाली तथा सामान्य बालकों की अपेक्षा कठिन व भिन्न होता है। इनकी शैक्षिक विषयों की उपलब्धि निम्न श्रेणी की होती है।

कार्यात्मक सीमाएं. ये अपनी आयु और सामान्य स्तर से निम्न कार्यक्षमता रखते हैं। या तो कक्षा के प्रत्येक विषय में इनकी उपलब्धि कम होती है अथवा किसी विशेष विषय में ये निम्न निष्पादन का परिचय देते हैं। इनकी बुद्धि कमजोर होने से ये कार्यात्मक सीमाओं के अंदर ही उपलब्धि ला पाते हैं। इनका तर्क, चिंतन, मनन, स्मरण, टास्क आदि मानसिक शक्तियाँ मंद होने से इनका निष्पादन निम्न श्रेणी का होता है। ये निरंतर अस्वच्छ भी रहते हैं। सूक्ष्म चिंतन नहीं कर पाते अतः गणित, व्याकरण, विज्ञान में रुचि नहीं लेते। ये परीक्षा में बार. बार अनुत्तीर्ण होते हैं। बौद्धिक कार्यों की अपेक्षा शारीरिक कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं । इनमें मौलिकता का अभाव होता है और सामान्यीकरण में ये अयोग्य रहते हैं। कुछ बालकों बायें हाथ का प्रयोग करते हैं।

मनोसामाजिक लक्षण. मनोवैज्ञानिक रूप से ये भावना ग्रंथि के शिकार होते हैं। संवेगों पर नियंत्रण नहीं रख पाते । सामाजिक दृष्टि से इनकी प्रवृत्ति असामाजिक होती है तथा ये संगी साथियों से अलगाव रखते हैं। घर. परिवार में भी इनका व्यवहार संतुलित नहीं होता।

शैक्षणिक लक्षण. कम बुद्धि लब्धि, कम उपलब्धि, सीखने में अरुचि, आत्म विश्वास का अभाव,संकल्प शक्ति की कमी, बौद्धिक कार्यों में अरुचि परन्तु शारीरिक कार्यों में रुचि, परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना या कम अंक प्राप्त करना, ध्यान केन्द्रीकरण की कमी, सामान्यीकरण में कमी इनके शैक्षिक लक्षण हैं।

(ख) धीमी गति से सीखने वाले बालक. धीमी गति से सीखने वाले बालकों को परिभाषाबद्ध करते हुए लेखक श्रीकृष्ण दुबे ने कहा है, "एक कक्षा के बालकों को समान रूप से शिक्षण प्रदान करने पर बालकों के अधिगम स्तर पर भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। इनमें से जो बालक सामान्य से कम स्तर पर अधिगम करते हैं उनको धीमी गति से सीखने वाले बालक (स्लो लर्नर) कहा जाता है।" ऐसे बालकों की बुद्धि लब्धि भी सामान्य बालकों से कम होती है।

कार्यात्मक सीमाएं. इनमें आत्मविश्वास की कमी होती है। इन्हें असफलता का भय सताता है जिससे इनकी कार्यात्मक क्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। एक बार में शिक्षक के पढ़ाए अंश को सुनकर ये नहीं समझ पाते हैं इन्हें बार. बार दोहराकर ही सिखाया जा सकता है । ये देर से दिये गए प्रश्न को हल करते हैं। इनमें अवधान केन्द्रीकरण की समस्या होती है। ऐसे बालक विचारों की अभिव्यक्ति में भाषागत कठिनाई का अनुभव करते हैं। ये बालक पढ़ने व समझने के स्थान पर रटने पर बल देते हैं। शाला से अनुपस्थिति भी इनका लक्षण हैं। इनमें कल्पना शक्ति व दूरदर्शिता का अभाव होता है। ये उन्हीं तथ्यों को समझ सकते हैं जो सरल व स्पष्ट हों। अमूर्त चिंतन में ये असफल रहते हैं। सीखी हुई बातों को भी भूल जाते हैं।

मनोसामाजिक लक्षण. अध्ययन में अरुचि से ये कई बार शाला पढ़ना छोड़कर असामाजिकता का रास्ता अपना लेते हैं। इनमें आयु के अनुसार परिपक्वता नहीं आती । इनके सामाजिक गुणों का विकास पूर्ण रूप से नहीं हो पाता। इनमें समायोजन की कमी होती है। इनमें हीनता की भावना पाई जाती है। संकोची स्वभाव के होते हैं । कक्षा में कुसमायोजित रहते है

शैक्षणिक लक्षण. स्मरण शक्ति कमजोर होती है। ज्ञानात्मक क्षमता सीमित होती है। सूझ व चिंतन की कमी होती है। समझने की अपेक्षा रटकर परीक्षा पास करने में विश्वास रखते हैं। एकाग्रता की इनमें कमी होती है। इनकी भाषागत समस्या भी रहती है। ऐसे बालकों में कल्पना शक्ति व दूरदर्शिता का अभाव होता है। इनकी शैक्षिक उपलब्धि निम्न होती है। ऐसे बालक पढ़ने. लिखने से बचने का प्रयास करते हैं तथा पढ़ाई. लिखाई की बात करने वाले बालकों से कटने का प्रयास करते हैं। खेलों में इनकी रुचि रहती है। ऐसे छात्र शाला से गोल मारने तथा आवारागर्दी करते भी पाए जाते हैं। ये सीखी हुई बातें भी शीघ्र भूल जाते हैं। ऐसे छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा दी जाए तो ये अच्छे व्यावसायिक बन सकते हैं।

(3) अलाभप्रद या वंचित बालक :

निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम की अनुसार धारा 2(घ) के अनुसार अलाभप्रद या असुविधाग्रस्त (डिसएडवांटेज्ड) समूह से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, सामाजिक रूप से और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग या सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक, भाषायी, लिंग या ऐसी अन्य बात के कारण, जो समुचित सरकार द्वारा अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट की जाए, असुविधाग्रस्त ऐसे अन्य समूह का कोई बालक अभिप्रेत है।"

असुविधाग्रस्त बालक शिक्षा की दृष्टि से वंचित बालक रहे हैं तथा इनमें शिक्षा व साक्षरता का प्रतिशत औसत दर से निम्न का रहा है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने वंचित बालकों को परिभाषित किया है। गार्डन के अनुसार, "वंचित होना बाल्य जीवन की उद्दीपन दशाओं की न्यूनता है।" वालमैन के अनुसार, "वंचन निम्नस्तरीय जीवन दशा या अलगाव को घोषित करता है जो कि कुछ व्यक्तियों को उनके समाज की सांस्कृतिक उपलब्धियों में भाग लेने से रोकता है।" इन अपवंचित व अलाभप्रद असुविधाग्रस्त बालकों के वर्ग में सम्मिलित हैं.

(1) निरक्षर माता. पिता के प्रथम पीढ़ी के सीखने वाले बालक,

(2) अनुसूचित जाति तथा जनजाति के बालक,

(3) सामाजिक आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्ग के बालक,

(4) बालिकाएं,

(5) घुमंतु परिवार (खानाबदोश परिवार) के बालक आदि।

(क) कार्यात्मक सीमाएं. अलाभप्रद, असुविधाग्रस्त या वंचित बालकों में ऐसे परिवारों से आने वाले बालक हैं जो शताब्दियों से शिक्षा के वरदान से वंचित रहने के कारण तथा अपढ़ निरक्षर माता. पिता की संतान होने के कारण घरेलू वातावरण में अध्ययन, मार्गदर्शन आदि की किसी सुविधा से विहीन होते हैं अतः इनका बौद्धिक मानसिक व ज्ञानात्मक स्तर निम्न होता है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी ये निम्न श्रेणी में आते हैं। इन बालकों का भाषायी विकास कम होता है। इनकी वाचिक योग्यता भी कम होती है। अधिकतर बालक रूढ़िवादी, परम्परावादी, निराश व अवसादग्रस्त रहते हैं। कुछ बालक तम्बाकू सेवन आदि बुरी आदतों के शिकार भी होते हैं । इनमें युयुत्सा (लड़ाई झगड़े की भावना) पाई जाती है। ये असुविधाग्रस्त होते हैं। इन सब कारणों से ऐसे बालकों की निष्पादन क्षमता कम होती है। शैक्षिक निष्पादन व निष्पत्ति कम होने से ये कक्षा की परीक्षा में अनुत्तीर्ण भी होते हैं। इनकी कार्यात्मक सीमाएं सीमित दायरे की होती हैं। ये अविकसित घरेलू जातीय भाषा बोलते देखे गए हैं। शाला में दिये गए कार्यों (टास्क) व परियोजनाओं (प्रोजेक्ट) को या प्रायः दूसरों की नकल कर तैयार करते हैं। निर्धनता व साधनविहीनता इनकी कार्यात्मक क्षमताओं को सीमित कर देती है।

(ग) मनोसामाजिक लक्षण. ऐसे बालकों में चिंता और भय की मात्रा अधिक रहती है। ये नकारात्मक अवबोध से पीड़ित रहते हैं। ये असुरक्षा की भावना से ग्रसित होते हैं। ये पूर्वाग्रह ग्रसित, रूढ़िवादी, परम्परावादी तथा संवेगात्मक दृष्टि से अस्थिर स्वभाव के पाए जाते हैं। इनका आकांक्षा स्तर निम्न होता है। इनकी रुचियों का क्षेत्र सीमित रहता है। इनमें समस्या समाधान की योग्यता कम रहती है ।

सामाजिक दृष्टि से ये निम्न स्तर के परिवारों तथा मलिन बस्तियों में निवास करने के कारण कुछ बुरी आदतों. लड़ना, झगड़ना, अपशब्द कहना,बीड़ी पीना, तंबाकू सेवन से ग्रसित होते हैं। कुछ बालकों में शाला से भागने तथा आवारागर्दी करने की आदत भी पाई जाती है। शिक्षित व सभ्य समाज में कम संपर्क के कारण इनमें उत्तम नागरिक गुणों का विकास कम होता है। प्रायः इनके घर का वातावरण भी अभावग्रस्त तथा घरेलू हिंसा कलह से ग्रस्त होने का प्रभाव इनके समाजीकरण पर पड़ता है।

(स) शैक्षणिक लक्षण. ये शिक्षा के महत्त्व से प्रायः अनभिज्ञ रहते हैं। इनका भाषायी विकास तथा वाचिक योग्यता का पर्याप्त विकास नहीं होता। सामान्य ज्ञान की इनमें कमी रहती है । प्रायः अपने चारों ओर प्रदेश नगर, देश में घटित घटनाओं की इनकी जानकारी अपर्याप्त रहती है। सक्ष्म चिंतन में ये प्रायः असफल रहते हैं। इनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रायः निम्न स्तर की होती है। यदि इस वर्ग के बालकों को छात्रवृत्ति, पुस्तकें, गणवेश, भोजन आदि निःशुल्क प्रदाय न हों तो अधिकांश बालक शाला त्याग देते हैं। पढ़ने. लिखने में इनकी तथा इनके अभिभावकों की रुचि कम होती है। बालिकाएं प्रायः कुछ कक्षा पढ़कर पढ़ना छोड़ देती हैं। सामान्य शिक्षा के स्थान पर प्रायः बालक व्यावसायिक शिक्षा, औद्योगिक शिक्षा को रोजगार की संभावनाओं के कारण अधिक पसंद करते हैं। इनकी स्मरण शक्ति कमजोर होती है। अपनी बोली में बात

करते रहने के कारण ये प्रांतीय भाषा, अंग्रेजी आदि में कमजोर होते हैं। खेलकद तथा पाठ्यसहगामी क्रियाओं में ये कक्षा शिक्षण से अधिक रुचि लेते पाए गए हैं।

अनुशासनहीनता, शाला से भागने की प्रवृत्ति, देर से शाला में उपस्थिति, बिना यूनीफॉर्म के शाला में प्रवेश, अपशब्द बोलना, झगड़ा करना आदि प्रवृत्तियाँ इन बालकों में प्रायः दृष्टिगोचर होती हैं। गृह कार्य न करके लाना,झूठ बोलना, विषयों की कॉपियाँ न बनाना, असाइन्मेंट पूरा न करना, परीक्षा में नकल करना, अपना ग्रुप बनाना आदि समस्याएं भी इन बालकों में प्रायः पाई जाती हैं। वंचित अलाभप्रद वर्ग के कुछ ही बालक पढ़ने में होशियार होते हैं।

(4) अधिगम बाधित बालक (चिल्ड्रन विधि लर्निंग डिसएबिलिटी)

अधिगम (सीखने) में असमर्थता रखने वाले बालक, पढ़ने, लिखने, स्पेलिंग करने तथा गणित आदि में सीमित क्षमता ही (सामान्य बालकों की अपेक्षा कम) रखते हैं। उदाहरणार्थ वे 19 लिखते हैं जबकि उन्हें 91 लिखने के लिए कहा गया। वे • तथा + चिन्ह में अंतर नहीं कर पाते। अर्थात् वे मतिभ्रमता के शिकार होते हैं। यह विसंगति मनोवैज्ञानिक कारणों से भी संभव है। कुछ ऐसे बालकों की व्यवहारगत समस्याएं भी देखी गई हैं। ऐसे बालकों की बुद्धि औसत होती है। हैमिल तथा लेघ के अनुसार, "अधिगम अक्षमता एक ऐसा मूल शब्द है जो बालकों के ऐसे समूह की ओर संकेत करता है जो कि सामान्य रूप से श्रवण, वाचन, अध्ययन,

वं गणितीय आदि योग्यताओं में सार्थक रूप से कठिनाई का अनभव करता है।" क्लीमेंट ने अधिगम अक्षमता से संबंधित 99 अक्षमताओं की सूची बनाई है जिनमें से ये 9 निर्योग्यताएं निश्चित रूपेण पाई जाती हैं.

(1) अतिक्रियाशीलता (जैसे छात्र का बैठे. बैठे पैर हिलाना,शरारत करना, कक्षा में बात करना),

(2) अत्यधिक गतिक न्यूनता (धीमी गति से सीखना),

(3) सांवेगिक अस्थिरता,

(4) सामान्य समन्वय का अभाव,

(5) अवधान समस्या,

(6) प्रोत्साहनीय,

(7) स्मृति व चितन व्यवधान,

(8) विशेष शैक्षिक समस्याएं,

(9) तंत्रिकीय तरंगों में असमरूपता।

(क) **कार्यात्मक सीमाएं.** ऐसे बालक स्कूल के सामान्य कार्य को करने में दिक्कत महसूस करते हैं। इनकी शैक्षिक उपलब्धि न्यून रहती है। वे पढ़ाई में पीछे रहने के कारण अनुत्तीर्ण होते हैं। ऐसे बालक अच्छे से वाचन नहीं कर पाते हालांकि उनके मौखिक उत्तर अच्छे होते हैं । शब्दों की स्पेलिंग, अंक लिखने, कक्षा

का टाइमटेबल स्मरण करते समय पर गृह कार्य या प्रोजेक्ट जमा करने, दिये गये कार्य को समय पर पूर्ण करने आदि में ऐसे बालक अक्षम होते हैं। जवाब देने में सुस्त व धीमे रहते हैं। पहाड़े याद रखने, वार महीना बताने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। थोड़े से व्यवधान से इनका ध्यान भंग हो जाता है। दायें और बायें का भेद कई ऐसे बालक नहीं कर पाते। शब्द रचना वाक्य रचना में कठिनाई का अनुभव करते हैं। उच्चारण करने पर सही शब्द नहीं लिख पाते। कक्षा में शिक्षक द्वारा कहे गए तथ्यों को दोहराने में ऐसे बालक सक्षम नहीं होते।

(ग) मनोसामाजिक लक्षण. अधिगम बाधित बालक अपने बारे में हीन भावना रखते हैं । ये ध्यान केन्द्रीकरण में अधिक सफल नहीं होते जैसे शिक्षक यदि हॉकी खेल के बारे में पढ़ा रहा है तो यह क्रिकेट के बारे में ध्यान लगाता है। इन बालकों में अवधान का अभाव विचार तंत्रिका तंत्र संबंधी दोषों के कारण होता है। यदि बालक की रुचि के अनुसार शिक्षण या कार्य नहीं है तो ये उसकी उपेक्षा करते हैं। ये प्रायः मानसिक थकान का अनुभव करते हैं तथा कब कालखण्ड समाप्त होगा, इसका इंतजार करते हैं।

इनका सामाजिक दायरा सीमित होता है। खेलों व पाठ्यसहगामी क्रियाओं में ये अध्ययन की अपेक्षा अधिक रुचि लेते हैं। कक्षा में मन न लगने के कारण कुछ बालक शाला से भगोड़े भी बन जाते हैं। इन्हें दूसरों से बात करने में संकोच होता है। ये सहजता से जवाब नहीं दे पाते। कुछ बालक दिवास्वप्नी (दिन में सपने देखने वाले) होते हैं।

(स) शैक्षणिक लक्षण. अधिगम बाधित बालकों की शैक्षिक समस्याएं एक सी नहीं होती। कुछ बोलने पढ़ने में, कुछ वाचन करने में, कुछ लिखने में, कुछ समझने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। प्रायः अधिगम बाधित बालकों में वाचन या पठन में शब्द.पंक्ति छोड़कर वाचन करते देखा गया है। कुछ लिखने में, कुछ संप्रेषण में तथा कुछ संस्था संबंधी (गणित संबंधी) मामलों में धीमे होते हैं । पठन अयोग्यता (डिस्लेक्सिया), लेखन अयोग्यता (डिसग्रेफिया), गणित की अयोग्यता (डिसकेलकुलिया) इनकी प्रमुख समस्याएं हैं। पढ़ने में पंक्ति या शब्द छोड़ देना, गलत. उच्चारण करना, वर्तनी (स्पेलिंग) के अनुसार उच्चारण में असमर्थ रहना, मिश्रित शब्दों को पढ़ने में कठिनाई का अनुभव करना, धीमी गति से पढ़ना पठन अयोग्यता का लक्षण है । लिखने में अक्षरों की गलत बनावट, मानक के अनुरूप लेखन का अभाव, अधूरे शब्द लिखना, वक्र लेखन, लिखने का गलत ढंग इनके लेखन अक्षमता का लक्षण है। गणित के सवाल हल कर पाने में धीमी गति या पूर्ण असमर्थता, पहाड़े याद न होना, गणित विषय के प्रति भय, सूत्र याद न रख पाने,प्रश्न समझने में ही असफलता आदि ऐसे बालकों की गणितीय अक्षमता के उदाहरण है।

अधिगम बाधित बालक कक्षा कार्य या गृह कार्य देर से कर पाते हैं। कक्षा या शाला से अनुपस्थित रहना भी ऐसे बालकों का शैक्षिक लक्षण है।

Unit VII:

Mental Health and Adjustment इकाई 7–मानसिक स्वास्थ्य,वं समायोजन ।

(1) मानसिक स्वास्थ्य के अध्ययन की अवधारणा,व आवश्यकता। **Concept and need of studying mental health-**

(2) मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक। **Affecting Factors of Mental Health-**

(3) मानसिक स्वास्थ्य,वं शिक्षा। **Mental Health and Education**

(4 समायोजन–अर्थ ,वं प्रक्रिया। **Adjustment: Meaning and Process-**

मानसिक स्वास्थ्य क्या है? परिभाषा और अवधारणाएँ

मानसिक स्वास्थ्य क्या है?

मानसिक स्वास्थ्य एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति के रूप में भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक वास्तविकता शामिल होती है। यह लोगों के सोचने, कार्य करने और महसूस करने के तरीके को प्रभावित करता है, साथ ही उन्हें जीवन के रोज़मर्रा के तनावों से निपटने में भी मदद करता है। मानसिक स्वास्थ्य जीवन के सभी चरणों के लिए महत्वपूर्ण है। कभी–कभी इस शब्द का इस्तेमाल मानसिक बीमारियों की अनुपस्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता है।

जैसा कि रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्र ने बताया है खराब मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक बीमारी एक ही बात नहीं है। हालाँकि इन शब्दों का इस्तेमाल अक्सर एक दूसरे के लिए किया जाता है, लेकिन एक व्यक्ति खराब मानसिक स्वास्थ्य का अनुभव कर सकता है और उसे मानसिक बीमारी का निदान नहीं किया जा सकता है। इसी तरह, मानसिक बीमारी से पीड़ित व्यक्ति शारीरिक, मानसिक और सामाजिक खुशहाली के दौर का अनुभव कर सकता है।

हर साल, नेशनल काउंसिल फॉर मेंटल वेलबीइंग मई में मानसिक स्वास्थ्य माह मनाता है। इस पहल के हिस्से के रूप में, परिषद मानसिक स्वास्थ्य तथ्यों और आंकड़ों सहित संसाधनों को साझा करती है। 2021 के मानसिक स्वास्थ्य तथ्यों के अनुसार , लगभग 50% आजीवन मानसिक बीमारी 14 वर्ष की आयु तक शुरू होती है, और लगभग 75% 24 वर्ष की आयु तक। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा साझा किए गए मानसिक स्वास्थ्य तथ्यों से पता चलता है कि दुनिया में हर साल कम से कम पाँच में से एक बच्चा और किशोर मानसिक बीमारी का अनुभव करेगा।

जब हम युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथ्यों पर बारीकी से नज़र डालते हैं, तो आँकड़े और भी ज़्यादा चिंताजनक होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में लगभग 14% किशोरों में द्विध्रुवी विकार और अवसाद सहित मूड विकार है। मानसिक स्थिति वाले किशोर मुख्य रूप से शैक्षिक कठिनाइयों, सामाजिक बहिष्कार और जोखिम लेने वाले व्यवहार के प्रति संवेदनशील होते हैं। किशोर मानसिक बीमारियों को संबोधित करने में विफल रहने के परिणाम वयस्कता तक फ़ैलते हैं, संभावित रूप से शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाते हैं और संतुष्ट जीवन जीने के अवसरों को सीमित करते हैं। इसके अलावा, अनुपचारित या अपर्याप्त रूप से इलाज की गई मानसिक बीमारी स्कूल छोड़ने और अन्य महत्वपूर्ण जीवन चुनौतियों की उच्च दर का कारण बन सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य विकारों के कारण

व्यक्तिगत मानसिक स्वास्थ्य विकारों के सटीक कारण अज्ञात हैं, लेकिन वर्षों के शोध से पता चलता है कि जैविक के साथ–साथ मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय कारक भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन कारकों का क्या मतलब है?

- जैविक कारक कुछ विकार तंत्रिका कोशिका सर्किट या पथों के असामान्य कामकाज से जुड़े होते हैं जो विशिष्ट मस्तिष्क क्षेत्रों को जोड़ते हैं। मस्तिष्क के विशेष क्षेत्रों में चोट या दोष भी कुछ विकारों का कारण बनते हैं। मानसिक बीमारी के लिए जिम्मेदार अन्य जैविक कारकों में आनुवंशिकी, संक्रमण, जन्मपूर्व क्षति और मादक द्रव्यों का सेवन शामिल हैं।

- **मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय कारक** ये कारक इस बात से संबंधित हैं कि कोई व्यक्ति दूसरों से कैसे जुड़ता है। दृष्टिकोण और व्यवहार अक्सर मानसिक विकारों या लक्षणों को बढ़ाते हैं, कुछ मामलों में अस्पताल में भर्ती होने या आपातकालीन कक्ष में जाने की आवश्यकता होती है। मनोवैज्ञानिक और पर्यावरणीय कारक जो मानसिक बीमारी में योगदान दे सकते हैं उनमें उपेक्षा, किसी प्रियजन की मृत्यु, पारिवारिक जीवन में गड़बड़ी, साथियों से संबंध बनाने में असमर्थता और सामाजिक या सांस्कृतिक अपेक्षाएँ शामिल हैं।

मानसिक विकार क्या हैं?

1. अवसाद

देश में अनुमानित 16.1 मिलियन वयस्क अवसाद से पीड़ित हैं, जिसमें पुरुषों की तुलना में महिलाओं में यह अधिक है। अवसाद आनंद या रुचि की कमी, उदासी, भूख या नींद में खलल, आत्म–सम्मान में कमी और खराब एकाग्रता के रूप में प्रकट होता है। हल्के से मध्यम अवसाद का आमतौर पर बातचीत के माध्यम से इलाज किया जाता है, जबकि गंभीर अवसाद के लिए अक्सर अवसादरोधी दवाओं की आवश्यकता होती है।

2. चिंता

देश में हर साल 18% से ज़्यादा वयस्क चिंता से पीड़ित होते हैं । यह वैश्विक स्तर पर सबसे आम मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है, और यह किसी व्यक्ति को बिना किसी कारण के अत्यधिक, अवास्तविक चिंता और तनाव महसूस कराती है। जबकि चिंता विकारों का अक्सर इलाज किया जा सकता है, लेकिन इस स्थिति से पीड़ित कई लोग इलाज नहीं करवाते हैं।

3. द्विध्रुवी विकार

देश में लगभग 6 मिलियन वयस्क द्विध्रुवी विकार से पीड़ित हैं, और इसके लक्षणों में अवसादग्रस्त निम्न से लेकर उन्मत्त उच्च तक के मूड स्विंग एपिसोड शामिल हैं। उन्मत्त एपिसोड में आमतौर पर चिड़चिड़ापन, उच्च मूड, तेज़ भाषण, अति सक्रियता और फुला हुआ आत्म–सम्मान शामिल होता है। जिन व्यक्तियों को अवसादग्रस्त एपिसोड के बिना उन्मत्त एपिसोड होते हैं, उनमें भी द्विध्रुवी विकार होता है। प्रिस्क्रिप्शन दवाएं मूड को स्थिर करने में मदद कर सकती हैं।

4. सिज़ोफ्रेनिया और अन्य मनोविकार

सिज़ोफ्रेनिया एक दीर्घकालिक मानसिक स्वास्थ्य विकार है जिसमें भावना, विचार और व्यवहार के बीच संबंध का ह्रास शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप गलत धारणा और अनुचित कार्य होते हैं। यह सबसे गंभीर मानसिक स्वास्थ्य विकारों में से एक है जो अमेरिका की लगभग 1% आबादी को प्रभावित करता है। भावनाओं, सोच, आत्म–बोध, भाषा और व्यवहार में विकृतियाँ अक्सर सिज़ोफ्रेनिया और अन्य मनोविकारों की विशेषता होती हैं। जो लोग संभावित रूप से सिज़ोफ्रेनिया से पीड़ित हैं, उन्हें पेशेवर मदद लेनी चाहिए।

5. जुनूनी–बाध्यकारी विकार (ओसीडी)

ऑब्सेसिव–कंपल्सिव डिसऑर्डर (ocd) अमेरिका में 2 मिलियन से अधिक वयस्कों और बच्चों के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है और इसकी विशेषता अनुचित विचार और भय (जुनून) है जो बाध्यकारी व्यवहार को जन्म देता है। यह आमतौर पर धीरे–धीरे शुरू होता है, और लक्षण जीवन भर गंभीरता में भिन्न होते हैं। येल–ब्राउन ऑब्सेसिव–कंपल्सिव स्केल (YBOCS) संस्करण I और II सहित OCD के कई विश्व–प्रसिद्ध नैदानिक मापों के सह–लेखक डॉ. एरिक स्टॉर्च के अनुसार , OCDएक गंभीर और दुर्बल करने वाली मानसिक स्थिति है, लेकिन इसका इलाज संभव है।

समायोजन का अर्थ, परिभाषा, प्रक्रिया, विधिया, प्रकार, विशेषताएं एवं लक्षण

समायोजन का अर्थ क्या होता है?

समायोजन दो शब्दों को मिलाकर बना है–सम और आयोजन। सम् का अर्थ है भली–भाँति, अच्छी तरह या समान रूप से और आयोजन का अर्थ है व्यवस्था अर्थात् अच्छी तरह व्यवस्था करना। समायोजन का अर्थ हुआ सुव्यवस्था या अच्छे ढंग से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया जिससे कि व्यक्ति की आवश्यकताएँ पूरी हो जाए और मानसिक द्वन्द्व न उत्पन्न होने पाये।

गेट्स एवं अन्य विद्वानों अनुसार. 'समायोजन' शब्द के दो अर्थ हैं। एक अर्थ में निरन्तर चलने वाली एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं और पर्यावरण के

बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध् रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर देता है। दूसरे अर्थ में समायोजन एक संतुलित दशा है जिस पर पहुँचने पर हम उस व्यक्ति को सुसमायोजित कहते हैं। एक छात्र अर्द्धवार्षिक परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना अपना लक्ष्य बनाता है, पर दूसरे छात्रों की प्रतियोगिता और अपनी कम योग्यता के कारण वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल होता है। इससे वह निराशा और असन्तोष, मानसिक तनाव और संवेगात्मक संघर्ष का अनुभव करता है। ऐसी स्थिति में वह अपने मौलिक लक्ष्य को त्यागकर अर्थात् अर्द्धवार्षिक परीक्षा में अपनी असफलता के प्रति ध्यान न देकर वार्षिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करना अपना लक्ष्य बनाता है। अब यदि वह अपने इस लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है, तो वह अपनी परिस्थिति या वातावरण से 'समायोजन' कर लेता है।पर यदि उसे सफलता नहीं मिलती है, तो उसमें 'असमायोजन' उत्पन्न हो जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों

को अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है। यह समायोजन व्यक्ति अपनी क्षमता, योग्यता के अनुसार करता है।

समायोजन और असमायोजन के अर्थ को निम्न प्रकार से स्पस्ट कर सकते है

बोरिंग,लैंगुल्ड व वेल्ड के अनुसार– "समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परस्थितियों में संतुलन रखता है। गेट्स व अन्य के अनुसार–

समायोजन निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन सम्बन्ध रखने के लिए अपने वयवहार में परिवर्तन करता है

समायोजन की परिभाषा

बोरिंग,लैंगफील्ड एवं वैल्ड के अनुसार– ''समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को

प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखता है।''

स्किनर के अनुसार– "समायोजन शीर्षक के अंतर्गत हमारा अभिप्राय इन बातों से है सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ तथा उत्साहमय ढंग से भाग लेना, समय पड़ने पर नेतृत्व का भार उठाने की सीमा तक उत्तरदायित्व वाहन करना तथा सबसे बढ़कर समायोजन में अपने को किसी भी प्रकार का धोखा देने से बचने की कोशिश करना"

स्मिथ के अनुसार –"अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है"

गेट्स व अन्य . ''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए

अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।''

कोलमैन के अनुसार. "समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाइयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है"

इन परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। साथ ही व्यक्ति, परिस्थिति तथा पर्यावरण के मध्य अपने को समायोजित करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। अतः समायोजन को संतुलित दशा कहा गया है।

समायोजन की प्रक्रिया

समायोजन के स्वरूप को समझने के बाद हमारे लिए आवश्यक है कि हम समायोजन की प्रक्रिया को समझ ले इसके अध्ययन के बाद हम सुसमायोजित व्यक्तियों को शिक्षा की सहायता से उत्पन्न करनेमें समर्थ हो सकेंगे समायोजन लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जिसकी सहायता से व्यक्ति का जीवन अपने आप पर्यावरण के मध्य अधिक बेहतर संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है

समायोजन की प्रक्रिया की सात अवस्थाएं होती है

1. प्रथम अवस्था–उत्तेजना महसूस करना (अपूर्व आवश्यकताओं के कारण आंतरिक या बाह्य या दोनों के द्वारा उत्तेजना का अनुभव)
2. द्वितीय अवस्था–द्वंद (आवश्यकताओं के पूर्ण न होने पर द्वंद का अनुभव)
3. तृतीय अवस्था–तनाव (द्वंद की मानसिक दशा से तनाव की उत्पत्ति)
4. चतुर्थ अवस्था–तनाव के लक्षण का प्रकट होना (तनाव के शारीरिक और मानसिक लक्षणों का प्रकट होना पीड़ाग्रस्त एवं बेचैन रहना)
5. पंचम अवस्था–प्रयास (अपनी बेचैनी और पीड़ा को कम करने का प्रयास)
6. छठी अवस्था–उन्मोचन (आवश्यकताओं की संतुष्टि से तनाव कम होना)
7. सातवीं व्यवस्था–समायोजन (उन्मोचन के आधार पर व्यक्ति स्वयं से तथा अपने वातावरण से समायोजन स्थापित करता है)

समायोजन की विधियां

समायोजन की दो विधियां होती हैं

1. प्रत्यक्ष विधि
2. अप्रत्यक्ष विधि

समायोजन की प्रत्यक्ष विधि– प्रत्यक्ष विधियां वे विधियां हैं जिनके द्वारा बालक अथवा व्यक्ति चेतन अवस्था में अपने मानसिक तनाव को दूर करने का प्रयास करता है इन विधियों में वह अपनी तर्क एवं चिंतन शक्ति का प्रयोग करता है इन प्रत्यक्ष विधियों के कुछ उपाय निम्न हैं

प्रयत्न में सुधार. इस विधि में व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति के लिए, आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए अतिरिक्त प्रयत्न

करता है वह अपने लक्ष्य में आने वाली बाधाओं को चुनौती के रूप में स्वीकार करता है और उन बाधाओं को हटाने का प्रयास करता है इससे वह तनावों से मुक्ति पाता है

- **अन्य मार्ग खोजना**– इस विधि में व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति में आने वाली रुकावटें और बाधाओं को अनेक प्रयत्न द्वारा दूर नहीं कर पाता है तो वहां उसी के समरूप एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित करता है जो उसकी इच्छा को संतुष्टि दे सके और वहां उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है लक्ष्य प्राप्ति में सफलता प्राप्त करने पर मानसिक तनाव दूर होता है

- **समर्पण**–जब कोई व्यक्ति अपने सारे प्रयत्नों द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाता तो वहां नियति मानकर एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित करता है जिससे जिसे वह आसानी से प्राप्त कर सके और कम प्रयासों में उसे प्राप्त हो जाए वह उसी से प्रसन्न होकर अपने आप को संतुष्ट कर लेता है

- **विश्लेषण एवं निर्णय.** जब किसी व्यक्ति के सामने परस्पर विरोधी एक से अधिक लक्ष्य होते हैं तो वह निर्णय नहीं कर पाता कि वह किसे स्वीकार करें और किसे छोड़ दे इस विधि में वह अपने सामने उपस्थित सभी परिस्थितियों, क्षमताओं तथा योग्यताओं का विश्लेषण करता है और गुण एवं दोषों की विवेचना करके किसी एक लक्ष्य को चुन लेता है

समायोजन की अप्रत्यक्ष विधियां .अप्रत्यक्ष विधियां वे विधियां हैं जिन्हें व्यक्ति अचेतन रूप में अपनाता है तनाव से उत्पन्न दुखद अनुभूतियों से बचने के लिए व्यक्ति के अचेतन मन में कुछ प्रक्रिया चलती हैं जो स्वतः ही हो रही होती हैं व्यक्ति को इनका ज्ञान नहीं होता है इन प्रक्रियाओं को वह अपने मन में कल्पना के द्वारा चलाता रहता है इसके द्वारा उसका तनाव अस्थाई रूप से कम हो जाता है अप्रत्यक्ष विधियों के कुछ उपाय निम्न हैं

- **दमन**–दमन का अर्थ है किसी चीज को दबा देना। कभी–कभी व्यक्ति कुछ इच्छाओं को कई कारणों की वजह से पूरा नहीं कर पाता तो वह उन इच्छाओं अथवा कामनाओं को स्वतंत्र रूप से प्रकट नहीं होने देता और उन इच्छाओं को अपने अचेतन मन में धकेल देता है

- **प्रतिगमन**–प्रतिगमन का अर्थ हैं। पीछे लौटना इसमें व्यक्ति अपने दश्ंिख तनाव असंतोष से मुक्ति पाने के लिए अपने पूर्व अनुभव और प्रक्रियाओं की ओर लौट जाता है जिन्हें वह बाल्यावस्था में किया करता था जैसे– व्यक्ति कभी–कभी असफल होने पर बच्चों जैसा व्यवहार करता है जैसे– चिल्लाना, पैर पटकना, रोना आदि

· **शोधन**—शोधन का अर्थ होता है शुद्ध करना। मनोवैज्ञानिक भाषा में शोधन को एक युक्ति के रूप में प्रयुक्त किया गया है जिसका तात्पर्य है अचेतन की वह मानसिक प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति की अवांछनीय आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को कृतिम पक्ष की ओर मोड़ दिया जाता है जिसे समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है जैसे— किसी व्यक्ति द्वारा अपनी काम प्रवृत्ति को कला और दर्शन की ओर मोड़ देना

· **पलायन**— पलायन का अर्थ है पीछे हटना। इस युक्ति में व्यक्ति दुख और तनाव उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों से अपने आपको अलग कर लेता है जैसे— किसी विद्यार्थी का किसी विद्यालय में किसी समूह द्वारा मजाक बनाने या अवहेलना करने पर कई बार विद्यार्थी विद्यालय को बदल देते हैं

· **दिवास्वप्न**— दिवास्वप्न का अर्थ होता है काल्पनिक जगत में रहना। इसमें व्यक्ति अपनी दुखद अनुभूतियों से निजात पाने के लिए वर्तमान से हटकर कल्पना लोक में विचरण करने लगता है और उसे सुख की अनुभूति होती है दिवास्वप्न द्वारा वह अपनी असफलताओं एवं तनाव की स्थितियों को सफलता एवं सुखद स्थितियों में बदल देता है और कुछ समय के लिए संतोष एवं सुख का अनुभव करता है

· एकरूपता— एकरूपता का अर्थ है किसी के जैसा समझना। इसमें व्यक्ति द्वारा अपनी असफलता को छुपाने के लिए किसी सफल व्यक्ति के गुणों एवं —तियों को अपने में दिखाने की कोशिश करता है जैसे— कोई बालक अपने अवगुणों को छुपाने के लिए कहता है कि मैं उन अमुक विद्वान का पुत्र हूं।

समायोजन की विशेषताएं

समायोजन करने वाले व्यक्ति में विभिन्न विशेषताएं होती हैं। इन्हीं विशेषताओं का अध्ययन इस प्रकार से किया गया है .

1. ये पूर्णतया संतुलित रहते हैं। इनके स्पष्ट उद्देश्य होते हैं।
2. ये अपनी समस्या का समाधान स्वयं कर लेते हैं।
3. इन्हें हमेशा परिस्थिति का ज्ञान होता हैं।
4. ये अपनी उपलब्धियों से संतुष्ट एवं सुखी रहने वाले होते हैं।
5. ऐसे व्यक्ति समाज के प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान रखने वाले होते हैं।
6. ये संवेगात्मक रूप से स्थिर होते है।
7. ये व्यक्ति अपनी योग्यता के अनुसार कार्य करते हैं।
8. ऐसे व्यक्ति अपनी गल्तियों का दोषारोपण दूसरों पर नहीं करते।

समायोजन के लक्षण

समायोजन करने वाले व्यक्ति में निम्नलिखित लक्षण पाए जाते है

1. संतुष्टि एवं सुख

2. समाज के अन्य व्यक्तियों का ध्यान

3. संतुलन

4. सामाजिकता, आदर्श चरित्र , संवेगात्मक रूप से अस्थिर, संतुलन एवं दायित्वपूर्ण

5. परिस्थिति का ज्ञान, नियंत्रण तथा अनुकूल आचरण

6. पर्यावरण तथा परिस्थिति से लाभ उठाना

गेट्स के अनुसार–"समायोजित व्यक्ति वह है जिसकी आवश्यकताएं एवं तृप्ति सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति की साथ संगठित

कुसमायोजन का अर्थ–

जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं आवश्यकता हो तथा वातावरण के बीच संतुलन स्थापित कर लेता है तो उसे समायोजन कहते हैं लेकिन जब किन्ही कारणों के कारण यह संतुलन बिगड़ जाता है तो उस अवस्था को कुसमायोजन कहते हैं अगर कुसमायोजन की स्थिति लंबे समय तक विद्यमान रहती हैं तो छात्र परेशान रहता है और उसके व्यक्तित्व में असमानता उत्पन्न होने की संभावना अधिक बढ़ जाती है मनोवैज्ञानिक ऐसा मानते हैं कुसमायोजन की स्थिति शिक्षक व छात्र दोनों में होती है लेकिन छात्रों में कुसमायोजन की समस्या गंभीर हो जाती है।

कुसमायोजन के लक्षण–

1. **शारीरिक लक्षण** (physical symptoms) शारीरिक लक्षणों से आशय उन लक्षणों से है जिनका संबंध शारीरिक क्रियाओं में उत्पन्न गड़बड़ी से होता है को कुसमायोजन के दौरान बालकों में हकलाना ,तुतलाना, उल्टी करना, सिर खुजलाना, नाचना, चेहरा फरकाना आदि शारीरिक लक्षण दिखाई पड़ते हैं।

2. **सांवेगिक लक्षण**(emotional symptoms) कुसमायोजन की अवस्था में बालकों में चिंता, डर, हीनता का भाव, आत्मा दोष,मानसिक तनाव, बेचैनी आदि जैसे सांवेगिक लक्षण भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं।

3. **व्यवहारात्मक लक्षण** (behaviouristic symptoms) कुसमायोजन से बालकों के व्यवहार में अंतर आता है वह चिड़चिड़ी हो जाते हैं और आक्रमक व्यवहार करने लगते हैं उनमें झूठ बोलने,लड़ने की प्रवृत्ति आ जाती है वह उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कमी आ जाती है और किशोरों में यौन व्यवहार संबंधी प्रवृत्ति देखने को मिलती है।

बालकों में कुछ कुसमायोजन के कारण–

1. शरीर की बनावट गिलबर्ट ने अपने अध्ययन में यह पाया है कि जब एक बच्चे की शरीर की बनावट सामान्य से हटकर होती है तो वह बालक दूसरे बालको द्वारा हंसी का पात्र बन जाता है जिससे उसके मन में हीनता की भावना आ जाती है और उनमें कुछ कुसमायोजन का जन्म होता है।

2. गरीबी गरीबी और कुछ कुसमायोजन में धनात्मक संबंध होता है अधिकतर को कुसमायोजित बालक निम्न स्थिति वाले परिवार में पाए जाते हैं क्योंकि माता–पिता बालकों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं जिससे उनके मन में कुंठा उत्पन्न होती है जो कुसमायोजन का कारण बन जाती है।

3. माता–पिता का व्यवहार माता–पिता की मनोवृति विशेषकर प्रतिकूल व्यवहार से बालकों का व्यवहार कुसमायोजित हो जाता है जब माता–पिता बालकों को अस्वीकृत कर देते हैं, तो इससे अहम को चोट लगती है और वह अपने आपको दूसरों से निम्न समझने लगता है उसमें लाचारी, असुरक्षा एवं अकेलेपन का भाव उत्पन्न हो जाता है ऐसे भाव बालकों को धीरे धीरे को कुसमायोजित बना देते हैं ऐसा भी देखा गया है कि कुछ माता–पिता अपने बच्चे को जरूरत से ज्यादा प्यार एवं स्नेह देते हैं इससे भी बालकों मैं कुसमायोजित व्यवहार दिखाई देने लगता है।

4. लड़का–लड़की में भेदभाव पूर्ण व्यवहार वर्तमान में भी ऐसे कई परिवार हैं जहां लड़का लड़की में भेदभाव माना जाता है और माता–पिता लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को महत्व देते हैं और लड़कियों से बात बात पर रोक तो करते हैं जिससे उनके मन पर आघात पहुंचता है और वे कुसमायोजन का शिकार हो जाते हैं।

Unit VIII:

Teaching and Learning Process इकाई 8– शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाः

(1) शिक्षण की अवधाारणा। **Concept of Teaching**.

(2) शिक्षण,व अधिगम में सम्बन्ध। **Relation between Learning and Teaching**.

(3) शिक्षण बनाम अनुबन्धन। **Conditioning vs Teaching**.

(4) अधिगम शिक्षण का उद्देश्य । **The Objectives of Education is Learning**.

(5) शिक्षण–अधिगम में शिक्षक की भूमिका। **Role of Teacher in Teaching& Learning-**

शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाः

शिक्षक, ज्ञान प्रदान करने वाला, और छात्र, प्राप्तकर्ता। लेकिन शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया एकतरफा नहीं है। इस प्रक्रिया का सार सहयोग, चर्चा, वार्तालाप और टीमवर्क है, जो छात्र–शिक्षक जोड़ी और छात्र निकाय दोनों द्वारा किया जाता है! और शिक्षक–शिक्षार्थी प्रक्रिया के चरणों, विभिन्न तत्वों और सिद्धांतों, इसके लाभों और उद्देश्यों, और सबसे महत्वपूर्ण बात, आज के शैक्षिक परिदृश्य में इसके दायरे और महत्व का पता लगाएंगे। हमारे साथ जुड़ें क्योंकि हम सीखते हैं कि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को उबाऊ बनाने के बजाय एक भरपूर प्रयास कैसे बनाया जाए।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया क्या है?

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया एक संयुक्त प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक सीखने की ज़रूरतों का विश्लेषण और आकलन करता है, सीखने के उद्देश्यों की रूपरेखा तैयार करता है और उन्हें स्थापित करता है, तथा ज्ञान प्रदान करने के लिए नई शिक्षण–अधिगम रणनीतियों को अपनाता है। शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया एक ऐसा संबंध है जो शिक्षक और छात्र के बीच मौजूद होता है, जहाँ एक पक्ष (आमतौर पर शिक्षक) प्राप्तकर्ता पक्ष (आमतौर पर छात्र) को ज्ञान प्रदान करता है। यह प्रक्रिया एक दो–तरफ़ा 'वृत्ताकार' संचार मॉडल है, जिसका अर्थ है कि यह प्रक्रिया केवल दो–तरफ़ा समान संचार और चर्चा धारा के साथ ही फलेगी–फूलेगी। छात्रों का समग्र विकास शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर निर्भर करता है, जिसकी व्यवस्थित रूप से नीचे चर्चा की जाएगी।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्य

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्यों में समग्र लक्ष्यों और परिणामों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है जिसका उद्देश्य प्रभावी शिक्षा को बढ़ावा देना है। ये उद्देश्य छात्रों के बौद्धिक, संज्ञानात्मक, विश्लेषणात्मक,

तार्किक, नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का पूरा दायरा तभी देखा जा सकता है जब ये सभी उद्देश्य प्राप्त किए जाएँ, क्योंकि ये वह आधारशिला हैं जिस पर बौद्धिक विकास के लिए एक मजबूत नींव बनाई जाती है। विभिन्न उद्देश्य और उनके मूल सिद्धांत नीचे सूचीबद्ध हैं।

ज्ञान अर्जन एवं समझः

शैक्षिक प्रक्रिया में पहला लक्ष्य संज्ञानात्मक और बौद्धिक तर्क विकसित करना है, साथ ही पहले से मौजूद, तथ्यात्मक जानकारी को आत्मसात करना है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान नहीं कर रहा है, बल्कि छात्र इसे समझ भी रहा है और लागू भी कर रहा है। नई अवधारणाओं को सीखने के लिए ये बुनियादी सिद्धांत हैं। ज्ञान प्राप्ति में 4 प्रक्रियाएँ शामिल हैं:

- तथ्यात्मक ज्ञान प्राप्त करनाः छात्र किसी विशिष्ट विषय क्षेत्र के बारे में बुनियादी तथ्य, अवधारणाएं और सिद्धांत प्राप्त करते हैं।

- संकल्पनात्मक समझः सहयोग और चर्चा के माध्यम से, छात्रों की प्रमुख विचारों, उनके संबंधों और उन्हें विभिन्न संदर्भों में लागू करने के तरीके की समझ बढ़ जाती है।

- आलोचनात्मक चिंतन क्षमता का विकास करनाः अपनी समझ के आधार पर, छात्र सूचना का विश्लेषण करने, तर्कों का मूल्यांकन करने और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हैं।

- समस्या समाधानः इन शिक्षार्थियों को अब चुनौतियों का रणनीतिक तरीके से सामना करने और प्रभावी समाधान तक पहुंचने के कौशल से सुसज्जित किया गया है, और संबंधित अनुप्रयोग–आधारित उत्तेजक समस्याओं को हल करने और सहयोगात्मक गतिविधियों के माध्यम से उनकी जांच की जा सकती है।

कौशल विकास

जबकि छात्रों को अपनी संज्ञानात्मक और बौद्धिक क्षमताओं को विकसित करने की आवश्यकता है, उन्हें समग्र रूप से विकसित होने की भी आवश्यकता है। यह शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक है। अतिरिक्त कौशल का समग्र विकास छात्रों को अच्छी तरह से समायोजित वयस्क बनने में मदद करेगा जो दुनिया को संभालने के लिए तैयार हैं, यह सब उनके अंत.दृष्टिपूर्ण शिक्षकों के लिए धन्यवाद है। छात्रों में विकसित करने के लिए कुछ आवश्यक कौशल हैं:

- संचार कौशलः सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना सहित प्रभावी लिखित और मौखिक संचार में निपुणता प्राप्त करना।

- सहयोग कौशलः टीम में दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से काम करना सीखना, विविध दृष्टिकोणों का सम्मान करना और साझा लक्ष्य प्राप्त करना।

·   प्रौद्योगिकी कौशलः सीखने, अनुसंधान और संचार के लिए डिजिटल उपकरणों और प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में सक्षम होना सीखना।

·   जीवन कौशलः दैनिक जीवन से संबंधित आत्म–प्रबंधन क्षमता, आलोचनात्मक चिंतन कौशल, अनुकूलनशीलता और समस्या समाधान कौशल विकसित करना सीखना।

दृष्टिकोण और मूल्य

अंतिम लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि बौद्धिक और समग्र विकास केवल सही दृष्टिकोण के साथ वयस्कता में अच्छी तरह से सीखने को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी है। यदि छात्र जिज्ञासु नहीं है, सही और गलत के बीच अंतर करने में सक्षम नहीं है, और एक नागरिक के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को नहीं समझता है, तो शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का कोई अर्थ नहीं है। दी गई सारी शिक्षा, चाहे कितनी भी प्रभावी क्यों न हो, बहरे कानों पर पड़ेगी। कुछ आवश्यक दृष्टिकोण और मूल्य जिन्हें छात्रों में विकसित किया जाना चाहिएः

·   जिज्ञासा और सीखने के प्रति प्रेमः छात्रों में अन्वेषण, जांच–पड़ताल और ज्ञान का निरंतर विस्तार करने की स्वाभाविक इच्छा को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकें।

·   खुले विचारों और सम्मानः छात्रों को सहानुभूतिपूर्ण, समझदार और विविध दृष्टिकोणों और संस्कृतियों की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। 'विविधता में एकता' सिर्फ़ किताब में लिखी नैतिकता नहीं होनी चाहिए बल्कि एक अच्छी तरह से ग्रहण की जाने वाली जीवन की शिक्षा होनी चाहिए।

·   नैतिक जिम्मेदारीः शिक्षकों को छात्रों में नैतिक आचरण, सामाजिक जिम्मेदारी और वैश्विक मुद्दों के प्रति जागरूकता की भावना पैदा करनी चाहिए। इससे उन्हें कल के बेहतर, नैतिक रूप से मजबूत नागरिक बनने में मदद मिलेगी।

·   व्यक्तिगत विकास और विकासः शिक्षकों को अपने छात्रों के समग्र विकास का समर्थन करना चाहिए, आत्मविश्वास, आत्म–जागरूकता और उद्देश्य की भावना का पोषण करना चाहिए। इससे छात्रों को कम उम्र से ही आत्म–ज्ञान की मजबूत भावना हासिल करने में मदद मिलेगी।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये उद्देश्य हमेशा रैखिक या स्वतंत्र नहीं होते हैं। वे अक्सर एक–दूसरे को प्रभावित करते हैं और एक साथ विकसित होते हैं। चरण–दर–चरण प्रक्रिया के बजाय, सभी उद्देश्यों को सीखने की यात्रा के दौरान लगातार पोषित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, विशिष्ट उद्देश्य सीखने के संदर्भ, शिक्षार्थी की ज़रूरतों और शैक्षिक लक्ष्यों के आधार पर भिन्न हो सकते हैं। इन विविध उद्देश्यों को समझकर, शिक्षक प्रभावी शिक्षण रणनीतियाँ तैयार कर सकते हैं, समृद्ध शिक्षण अनुभव बना सकते हैं और छात्रों को उनकी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के तत्व

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के कई प्रमुख तत्व हैं। ये आंतरिक भाग हैं जो अपने आप में छोटे लग सकते हैं, लेकिन साथ मिलकर वे एक अच्छी तरह से चलने वाली मशीन बनाते हैं जो एक प्रभावी शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया है। इनमें से प्रत्येक घटक आपकी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक सुझावों के रूप मं काम कर सकता है। एक–दो तत्वों की कमी समग्र शिक्षण–अधिगम योजना की समग्र प्रभावशीलता में बाधा डाल सकती है।

एक आदर्श शैक्षिक योजना के लिए आवश्यक 13 तत्व नीचे सूचीबद्ध हैं।

1. **शिक्षकः** वे शिक्षक जो सीखने की प्रक्रिया को डिजाइन करते हैं, वितरित करते हैं और सुविधाजनक बनाते हैं।

2. **शिक्षार्थीः** ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सक्रिय रूप से लगे हुए छात्र।

3. **पाठ्यक्रमः** किसी विशेष विषय या वर्ष की शैक्षिक सामग्री, उद्देश्यों और परिणामों को रेखांकित करने वाली एक संरचित योजना। पाठ्यक्रम पढ़ाई जाने वाली जानकारी की गति और संरचना को निर्धारित करता है।

4. **निर्देशात्मक विधियाँः** जानकारी देने और सीखने को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग किया जाता है। वे वीडियो और फ़िल्मों जैसे श्रवण और दृश्य सहायक उपकरण, निबंध और प्रोजेक्ट जैसे शोध के अवसर, अनुप्रयोग–आधारित उत्तेजक गतिविधियां, फ़ील्ड ट्रिप और शैक्षिक सैर जैसे शारीरिक भ्रमण, विशेषज्ञों के साथ इंटरैक्टिव सत्र आदि हो सकते हैं।

5. **मूल्यांकन और आकलनः** अनुप्रयोग–आधारित प्रश्नों, स्मरण–आधारित प्रश्नों, अनुमान–आधारित प्रश्नों आदि के माध्यम से छात्रों की समझ और प्रगति को मापने और मूल्यांकन करने के तरीके। मूल्यांकन कई रूप ले सकता है, जैसे समूह परियोजनाएं, परीक्षण, सैद्धांतिक और व्यावहारिक परीक्षाएं आदि।

6. **सीखने के संसाधनः** सीखने के उद्देश्यों का समर्थन करने वाली सामग्री और उपकरण। सीखने के संसाधनों में पाठ्यपुस्तकें, ऑनलाइन संदर्भ सामग्री, वृत्तचित्र, इंटरैक्टिव स्मार्ट कक्षा सहायक सामग्री, पत्रिकाएँ और शोध पत्र शामिल हैं।

7. **कक्षा का वातावरणः** वह शारीरिक और भावनात्मक वातावरण जिसमें सीखना होता है। एक अच्छा, सकारात्मक शिक्षण वातावरण विकास, स्वस्थ जिज्ञासा के विकास और सीखने और ज्ञान को आत्मसात करने के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण के लिए अनुकूल होता है।

8. **प्रौद्योगिकीः** उपकरणों और डिवाइसों का एकीकरण सीखने के अनुभव को बढ़ाने में मदद करता है। एक्स्ट्रामार्क्स जैसे स्मार्ट क्लासरूम एड्स ऑनलाइन टूल हैं जिनका उपयोग आप एडटेक की शक्ति के साथ सीखने की प्रक्रियाओं को बढ़ाने के लिए कर सकते हैं।

9. **फीडबैक और चिंतनः** शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में फीडबैक की भूमिका निरंतर सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। जब आपको उचित फीडबैक मिलता रहता है, तो आप निरंतर मूल्यांकन और चिंतन में संलग्न होते हैं और आगे बढ़ते हुए सुधार करते रहते हैं।

10. **संचारः** शिक्षकों और छात्रों के बीच हमेशा सूचनाओं का स्पष्ट और प्रभावी आदान–प्रदान होना चाहिए। सभी विचारों को फीडबैक और कमजोर क्षेत्रों के साथ संप्रेषित किया जाना चाहिए, ताकि छात्र आत्मसात कर सकें और उसके अनुसार सुधार कर सकें।

11. **प्रेरणाः** प्रेरणा छात्रों की सहभागिता और उत्साह को प्रभावित करने वाले आंतरिक और बाह्य कारकों में से एक है। जब छात्रों को प्रेरित किया जाता है, तो उनके सीखने में शामिल होने और उत्साहित होने की संभावना अधिक होती है, और इस प्रकार, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का दायरा बढ़ जाता है।

12. **अनुकूलनशीलताः** शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने दृष्टिकोण में लचीलापन होना चाहिए। उनकी विभिन्न योग्यताओं, सीखने की क्षमताओं, बौद्धिक क्षमताओं, ताकत के क्षेत्रों और कमजोरियों की पहचान की जानी चाहिए, और एक सुचारू शिक्षण प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम और निर्देशात्मक तरीकों को उसी के अनुसार अनुकूलित किया जाना चाहिए।

13. **सीखने की शैलियों का मूल्यांकनः** छात्रों की अलग–अलग सीखने की प्राथमिकताओं और शैलियों की उचित पहचान और समायोजन होना चाहिए। .दृश्य, श्रवण और गतिज शिक्षार्थियों आदि की ज़रूरतों के आधार पर शिक्षण योजना का मूल्यांकन और सुधार करना, वास्तव में समावेशी सीखने के माहौल को बनाने का तरीका है। प्रत्येक अंतर को स्वीकार किया जाना चाहिए और उसकी सराहना की जानी चाहिए, और उन्हें शामिल करने के लिए शिक्षण–सीखने की प्रक्रिया में समायोजन किया जाना चाहिए।

इन तत्वों को शामिल करके, शिक्षक छात्रों के लिए सार्थक शिक्षण अनुभव को सुविधाजनक बनाने के लिए एक गतिशील और प्रभावी शिक्षण–अधिगम वातावरण बना सकते हैं।

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण और बहुआयामी होती है, जिसमें विभिन्न जिम्मेदारियाँ और कार्य शामिल होते हैं। अनिवार्य रूप से, शिक्षक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में होता है, और वह सीखने की प्रक्रिया के दौरान कई भूमिकाएँ निभाता है। यदि शिक्षक समग्र शिक्षण का माहौल नहीं बनाता है, तो छात्र जानकारी को बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशल भी नहीं सीख पाएँगे!

इस प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका के कुछ प्रमुख पहलू इस प्रकार हैं:

सीखने का सुगमकर्ता

शिक्षक प्रासंगिक जानकारी, संसाधन और गतिविधियाँ प्रदान करके छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में मार्गदर्शन करते हैं। वे ऐसा माहौल बनाते हैं जो जिज्ञासा, आलोचनात्मक सोच और सक्रिय भागीदारी को

प्रोत्साहित करता है। वे जानकारी देते हैं और सुनिश्चित करते हैं कि छात्र उस जानकारी को आत्मसात करें।

ज्ञान स्रोत

शिक्षक अपने विषय क्षेत्रों में जानकारी और विशेषज्ञता का प्राथमिक स्रोत हैं। उन्हें विषय–वस्तु को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना चाहिए और उसे व्यवस्थित करना चाहिए, जिससे छात्रों के पास ज्ञान का ठोस आधार हो। एक शिक्षक एक युवा छात्र के लिए एक विश्वकोश का व्यक्तित्व होता है और उसे विषय–वस्तु के बारे में सभी प्रकार के प्रश्नों और बहुत से असंबंधित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए!

मार्गदर्शक और आदर्श

शिक्षक छात्रों को शैक्षणिक और व्यक्तिगत दोनों मामलों में मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करते हुए मार्गदर्शक के रूप में भी काम करते हैं। उन्हें सकारात्मक मूल्यों, धार्मिक आचरण और व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए, जो छात्रों के लिए वर्तमान और भविष्य में अनुकरणीय रोल मॉडल के रूप में काम करे। छात्र मिट्टी की तरह ही प्रभावशाली होते हैं, और एक शिक्षक का छात्र के प्रति व्यवहार न केवल शिक्षक के बारे में उनकी राय को आकार देता है, बल्कि उनकी आत्म–छवि और दृष्टिकोण को भी आकार देता है।

पाठ्यक्रम डेवलपर

शिक्षकों को शैक्षिक उद्देश्यों और मानकों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम को डिजाइन करने और व्यवस्थित करने का भी काम सौंपा जाता है। उन्हें अपने छात्रों की ज़रूरतों और रुचियों के अनुसार शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करने में सक्षम होना चाहिए, जैसा कि लेख में पहले बताया गया है।

कक्षा प्रबंधक

शिक्षकों को सीखने के लिए अनुकूल एक सकारात्मक और अच्छी तरह से प्रबंधित कक्षा वातावरण स्थापित करना होता है। वे कक्षा की गतिशीलता को संभालने, अनुशासन सुनिश्चित करने और छात्रों के भीतर सामुदायिक भावना को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार हैं। न केवल वे वास्तविक नेता हैं, बल्कि उन्हें बच्चों को अधिक स्वतंत्र होने के लिए भी तैयार करना होता है, ठीक वैसे ही जैसे कोई भी अच्छा प्रबंधक करता है।

मूल्यांकनकर्ता एवं मूल्यांकक

शिक्षक शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के मूल्यांकन के भी प्रभारी होते हैं। शिक्षकों को छात्रों की समझ और प्रगति का आकलन करने के लिए विशिष्ट मूल्यांकन तैयार करना चाहिए। उन्हें छात्रों को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए फीडबैक भी देना होगा और छात्रों की ज़रूरतों के अनुसार अपने शिक्षण के तरीकों को ढालना होगा । उन्हें अपने विवेक का उपयोग करना होगा और अपने छात्रों के लिए एक ऐसा शैक्षणिक मार्ग तैयार करना होगा जो उनके लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद हो।

अनिवार्य रूप से, शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका गतिशील होती है और जानकारी प्रदान करने से कहीं आगे तक फैली होती है। प्रभावी शिक्षक अपने छात्रों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, न केवल उनके शैक्षणिक विकास को बल्कि उनके सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक कल्याण को भी पोषित करते हैं। जैसा कि हम सभी ने सीखा है, कोई भी छात्र बुरा नहीं होता। और हम इन सभी टोपियों को धारण करके और एक शिक्षक के रूप में इन भूमिकाओं को मूर्त रूप देकर बेहतर शिक्षक बन सकते हैं।

शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में सुधार कैसे करें?

शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में सुधार करना एक बहुआयामी चुनौती है जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों शामिल हैं। इस परि.श्य में शिक्षक, सुविधाकर्ता होने के नाते, इस जिम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा निभाते हैं। शिक्षण—अधिगम प्रक्रिया में सुधार करने के लिए अनगिनत सुझाव हैं। ऐसा करने के लिए यहाँ कुछ रणनीतियाँ दी गई हैं:

सकारात्मक शिक्षण वातावरण बनाएं:

एक शिक्षक के रूप में, एक सहायक और समावेशी कक्षा के माहौल को बढ़ावा देने का प्रयास करें जहाँ छात्र अपने विचारों और विचारों को व्यक्त करने में सहज महसूस करें। आपको सम्मानजनक और सहयोगी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए शुरुआत से ही स्पष्ट अपेक्षाएँ और नियम स्थापित करने की आवश्यकता है। जब छात्र कक्षा में सहज और घर जैसा महसूस करते हैं, तो वे वास्तव में मजबूत दिमाग वाले व्यक्तियों के रूप में विकसित होंगे, जो अपने मन की बात कहने और व्यक्त करने से नहीं डरते कि वे कौन हैं।

विविध शिक्षण विधियों का उपयोग करें:

लेख में पहले बताए गए शिक्षण विधियों जैसे व्याख्यान, समूह चर्चा, व्यावहारिक गतिविधियाँ, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ आदि का मिश्रण अपनाने का प्रयास करें, ताकि विविध शिक्षण शैलियों को पूरा किया जा सके। पाठों को अधिक आकर्षक और वर्तमान बौद्धिक परि.श्य के लिए प्रासंगिक बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और इंटरैक्टिव टूल को शामिल करें।

स्पष्ट शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करें

छात्रों को उनकी सीखने की यात्रा के लिए एक रोडमैप प्रदान करने के लिए हमेशा प्रत्येक पाठ या इकाई के लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें। सुनिश्चित करें कि उद्देश्य मापने योग्य हों और वास्तविक प्रयास से प्राप्त किए जा सकें, जिससे छात्र की प्रगति का आकलन किया जा सके। जब ऐसे उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं, तो छात्रों को एक विशेष पाठ पूरा करने पर उपलब्धि की भावना महसूस होती है। यह उन्हें अधिक भाग लेने और कक्षा की गतिविधियों में गहरी दिलचस्पी लेने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

समय पर और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करें

नियमित रूप से छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन करते रहें और ऐसा फीडबैक दें जो विशिष्ट, समय पर और सबसे बढ़कर, कार्रवाई योग्य हो। छात्रों को अपने सीखने का स्वामित्व लेने के लिए सशक्त बनाने के लिए आत्म–मूल्यांकन और चिंतन को प्रोत्साहित करें। जब फीडबैक समय पर और गैर–अपमानजनक तरीके से दिया जाता है, तो छात्र रचनात्मक आलोचना को डरने के बजाय उसकी सराहना करना सीखेगा और सहकर्मी समीक्षाओं से आगे बढ़ेगा और सुधार करने का प्रयास करेगा।

सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करें

चर्चाओं, वाद–विवाद, समूह गतिविधियों और व्यावहारिक परियोजनाओं के माध्यम से छात्रों की भागीदारी को प्रोत्साहित करें और बढ़ाएँ। बौद्धिक जिज्ञासा को प्रोत्साहित करने के लिए प्रश्नों और आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करें और उनका मनोरंजन करें। प्रश्नोत्तर स्ल, ट, सउत्तरः ह–समाधान सत्र, सामान्य ज्ञान, तथ्य और शोध–संबंधी गतिविधियाँ आदि, सभी बौद्धिक जिज्ञासा के विकास, प्रश्नों को दूर करने में तत्परता और ज्ञान की प्यास में योगदान करते हैं जो छात्रों को उनके भविष्य के शैक्षणिक लक्ष्यों के लिए प्रेरित करते हैं।

विभेदित निर्देश

आपको व्यक्तिगत ज़रूरतों के हिसाब से निर्देशात्मक मॉड्यूल तैयार करके विविध सीखने की क्षमताओं को पहचानना और समायोजित करना सीखना चाहिए। एक शिक्षक के तौर पर, आपको उन्नत शिक्षार्थियों को विषय–वस्तु में गहराई से उतरने के अवसर प्रदान करने चाहिए, साथ ही साथ उन छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करनी चाहिए जो पिछड़ रहे हैं या कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं।

सहयोगात्मक शिक्षा को बढ़ावा दें

छात्रों के बीच टीमवर्क और सहयोग को लगातार प्रोत्साहित करें ताकि उनके सामाजिक और संचार कौशल को बढ़ाया जा सके। समूह परियोजनाएं और सहकर्मी–समीक्षा गतिविधियाँ कक्षा में सहकर्मी सीखने और समुदाय की भावना को बढ़ावा दे सकती हैं। सीखने को छात्र और शिक्षक के बीच दो–तरफ़ा आदान–प्रदान बनाने के बजाय, इसे एक परस्पर जुड़े नेटवर्क में बदल दें जहाँ सूचना केवल शिक्षक से शिक्षार्थी तक ही नहीं बल्कि एक शिक्षार्थी से दूसरे शिक्षार्थी तक प्रसारित की जाती है।

शैक्षिक रुझानों पर अपडेट रहें

नए और अभिनव शिक्षण विधियों , प्रौद्योगिकी और शैक्षिक अनुसंधान के बारे में जानकारी रखने के लिए लगातार पेशेवर विकास के अवसरों की तलाश करें । अपने आप को और अपने पाठ्यक्रम को तरल और अनुकूलनीय बनाए रखें, और अपने शिक्षण में नई, प्रभावी रणनीतियों को शामिल करने के लिए खुले रहें। खुद को और अपने साथी शिक्षकों को विशेष सेमिनार, शैक्षिक रिट्रीट, शोध सम्मेलनों और विशेषज्ञ सत्रों में भाग लेकर खुद को बेहतर बनाने के लिए खुद को और अपने साथी शिक्षकों को बेहतर बनाते रहें।

आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा दें

ऐसी गतिविधियाँ और असाइनमेंट डिज़ाइन करें जिनमें छात्रों को जानकारी को याद करने के बजाय उसका विश्लेषण, मूल्यांकन और उसे लागू करने की आवश्यकता हो। कई दृष्टिकोणों के बारे में प्रश्न पूछने और अन्वेषण करने को प्रोत्साहित करें। अनुप्रयोग–आधारित परीक्षण और उत्तेजक समस्याएँ न केवल आलोचनात्मक सोच कौशल को तेज करती हैं, बल्कि समस्या–समाधान क्षमताओं को भी तेज करती हैं।

वास्तविक दुनिया से संपर्क स्थापित करें

शिक्षा और सीखना सिर्फ़ कक्षा की चार दीवारों तक सीमित नहीं रह सकता, बाहरी दुनिया से पूरी तरह से कटा हुआ। छात्रों को उनके सीखने की व्यावहारिक प्रासंगिकता को समझने में मदद करने के लिए पाठों को वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोगों से जोड़ने का प्रयास करें। अतिथि वक्ता, फील्ड ट्रिप और वास्तविक जीवन के केस स्टडी सैद्धांतिक ज्ञान और उसके व्यावहारिक अनुप्रयोगों के बीच संबंध को बढ़ा सकते हैं।

विकास की मानसिकता विकसित करें

केवल ग्रेड पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय प्रयासों, .ढ़ता और लचीलेपन की प्रशंसा करके छात्रों के भीतर विकास की मानसिकता को बढ़ावा दें। जब छात्रों को लगता है कि उनकी कड़ी मेहनत को देखा जा रहा है, तो वे सीखने के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। आपको छात्रों को यह समझने में मदद करनी चाहिए कि बुद्धिमत्ता, जन्मजात प्रतिभा और क्षमताओं को समर्पण और कड़ी मेहनत के माध्यम से विकसित और निखारा जा सकता है। छात्रों को अपना स्थान खोजने और अपने भविष्य के प्रयासों के लिए इसे एक ताकत बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। साथ ही, उन्हें यह सिखाने की कोशिश करें कि वे अपनी कमजोरियों से निराश न हों और, इसके बजाय, सफलता प्राप्त करने के लिए उन पर काबू पाने या उन्हें दरकिनार करने का प्रयास करें।

प्रौद्योगिकी को शामिल करें

तकनीक से दूर भागने के बजाय, उसे अपनाएँ। पारंपरिक चॉक–और–ब्लैकबोर्ड कक्षा के दिन अब चले गए हैं। कई एडटेक उपकरण उपलब्ध हैं जिनका उपयोग कक्षा के अनुभव को अधिक इंटरैक्टिव और सहज बनाने और शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के दायरे को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है। इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड और डिस्प्ले जैसी तकनीकें, सहकर्मी–आधारित सीखने के माहौल के लिए सहयोगी शिक्षण प्लेटफ़ॉर्म, आसान परीक्षण के लिए ऑनलाइन आकलन और विश्लेषण उपकरण, अधिक इंटरैक्टिव कक्षा के लिए संवर्धित और आभासी वास्तविकता उपकरण आदि, ऐसे तरीके हैं जिनसे आप अपनी कक्षा को 21वीं सदी में जीवंत बना सकते हैं।

एक्स्ट्रामार्क्स के स्मार्ट स्कूल समाधान जैसे स्मार्ट क्लास प्लस जैसे प्लेटफॉर्म के साथ, आप पारंपरिक कक्षाओं को आकर्षक, शिक्षार्थी–केंद्रित वातावरण में बदल सकते हैं, इसके लिए आपको पेशेवर रूप से विकसित मल्टीमीडिया शिक्षण सामग्री और मजबूत अभ्यास और परीक्षण–संबंधी शैक्षणिक उपकरणों के साथ स्मार्ट व्हाइटबोर्ड जैसे अत्याधुनिक डिजिटल बुनियादी ढांचे को एकीकृत करना होगा।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नः

1. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का केन्द्र कौन है?

इस बात का कोई एक निश्चित उत्तर नहीं है कि शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का केंद्र कौन है, क्योंकि यह कई प्रतिभागियों के बीच एक गतिशील और जटिल अंतःक्रिया है। कई अलग–अलग दृष्टिकोण क्रमशः छात्रों और शिक्षकों के इर्द–गिर्द केंद्रित हैं। लेकिन दिन के अंत में, आदर्श दृष्टिकोण शिक्षक की विशेषज्ञता और ज्ञान, साथ ही छात्र की एजेंसी, दोनों को समान भागीदार के रूप में मानता है।

2. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के उद्देश्य क्या हैं?

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य ज्ञान अर्जन और समझ है, जो बौद्धिक और संज्ञानात्मक विकास में संलग्न है। इसके अतिरिक्त, जीवन कौशल, सॉफ्ट स्किल, संचार कौशल और नैतिक और नैतिक विकास जैसी समग्र क्षमताओं का विकास शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के अन्य उद्देश्य हैं।

3. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में फीडबैक की क्या भूमिका है?

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में फीडबैक की भूमिका निरंतर सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। जब आपको उचित फीडबैक मिलता रहता है, तो आप निरंतर मूल्यांकन और चिंतन में संलग्न होते हैं और आगे बढ़ते हुए सुधार करते रहते हैं। जब फीडबैक समय पर और गैर–अपमानजनक तरीके से दिया जाता है, तो छात्र रचनात्मक आलोचना से डरने के बजाय उसकी सराहना करना सीखेगा और सहकर्मी समीक्षाओं से आगे बढ़ेगा और सुधार करने का प्रयास करेगा।

4. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सुधार के लिए क्या सुझाव हैं?

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में सुधार के लिए शिक्षकों के लिए कुछ सुझाव हैं – स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करना, समय पर फीडबैक देना, छात्रों को सहयोगात्मक शिक्षण में शामिल करना, तकनीकी उपकरणों का उपयोग करना, तथा छात्रों की आवश्यकताओं के आधार पर एक परिवर्तनशील शिक्षण मॉडल बनाए रखना आदि।

5. शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का दायरा क्या है?

शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का दायरा बहुत बड़ा है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए कार्य के कुछ दायरे हैं तथ्यात्मक ज्ञान का अधिग्रहण और समझ, वैचारिक समझ, आलोचनात्मक सोच कौशल का विकास, रचनात्मकता और नवाचार का पोषण, सकारात्मक दृष्टिकोण की खेती, नैतिक और नैतिक तर्क कौशल, और बहुत कुछ।

अभ्यास प्रश्न

परीक्षा उपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तरः

प्रश्न 1. जिन बच्चों की बुद्धिलब्धि 90 से 110 के मध्य है, वह है–

(क) सामान्य बुद्धि

(ख) प्रखर बुद्धि

(ग) उत्कृष्ठ बुद्धि

(घ) प्रतिभाशाली

उत्तरः (क) सामान्य बुद्धि

प्रश्न 2 निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम कितने वर्ष के बच्चो के लिए लागू है।

(क) 6–14 वर्ष

(ख) 7–13 वर्ष

(ग) 5–11 वर्ष

(घ) 6–12 वर्ष

उत्तरः (क) - 6 – 14 वर्ष

प्रश्न 3 - एक बच्चे की बृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन सी है।

(क) मनोविश्लेषण विधि

(ख) तुलनात्मक विधि

(ग) विकासीय विधि

(घ) सांख्यिकी विधि

उत्तरः (ग) विकासीय विधि

———————————————————————————

प्रश्न 4. गार्डनर ने सात बुद्धि का अधिमान निर्धारित किया, इनमें से कौन सा नही है।

(क) स्थान संबंधी बुद्धि

(ख) भावात्माक बुद्धि

(ग) अंतर्वैयक्तिक बुद्धि

(घ) भाषात्माक बुद्धि

उत्तरः (ख) भावात्माक बुद्धि

———————————————————————————

प्रश्न 5 . यदि एक बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष तथा वास्तकविक आयु 4 वर्ष है तो उस बच्चे की बुद्धि लब्धि होगी

(क) 125

(ख) 80

(ग) 120

(घ) 100

उत्तरः (क) 125

———————————————————————————

प्रश्न 6 . ''मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है।'' यह किसने कहा है।

(क) बी एन झा

(ख) स्किनर

(ग) डेविस

(घ) वुडवर्थ

उत्तरः (ख) स्किनर

प्रश्न 7 . हिन्दी अक्षरों को बालक किस आयु में पहचानने लगते है।

(क) 3 वर्ष में

(ख) 4 वर्ष में

(ग) 5 वर्ष में

(घ) 6 वर्ष में

उत्तरः (ग) 5 वर्ष में

प्रश्न 8 एलेक्यिा है–

(क) पढ़ने की अक्षमता

(ख) लिखने की अक्षमता

(ग) सीखने की अक्षमता

(घ) सुनने की अक्षमता

उत्तरः (क) पढ़ने की अक्षमता

प्रश्न 9 पियाजे की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था किस आयु अवधि तक मानी जाती है।

(क) 0–2 वर्ष

(ख) 2–7 वर्ष

(ग) 7–11 वर्ष

(घ) 11–15 वर्ष

उत्तरः (घ) 11–15 वर्ष

प्रश्न 10 गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते है।

(क) 150

(ख) 280

(ग) 390

(घ) 460

उत्तरः (ख) 280

प्रश्न 11 . किस मनोवैज्ञानिक ने अपने 3 वर्षीय पुत्र का अध्ययन किया।

(क) पेस्टोलॉजी

(ख) वाटसन

(ग) स्टेनले हॉल

(घ) जेम्स सल्ली

उत्तरः (क) पेस्टोलॉजी

प्रश्न 12. बालक का विकास होता है।

(क) सिर से पैर की ओर

(ख) पैर से सिर की ओर

(ग) दोनों ओर से

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (क) सिर से पैर की ओर

प्रश्न 13 . विकास के संबंध में गलत कथन है।

(क) विशिष्ट से सामान्य की ओर

(ख) सार्वभौमिक प्रक्रिया है।

(ग) दिशा सिर से पैर की ओर

(घ) वतुलाकार गति

उत्तरः (क) विशिष्ट से सामान्य की ओर

प्रश्न 14 . गर्भधान काल की अवस्था नही है।

(क) शैशवावस्था

(ख) डिम्ब

(ग) बीजकरण

(घ) भ्रूणावस्था

उत्तरः (क) शैशवावस्था

प्रश्न 15 . मानव जीवन की मनौभौतिक एकता कहलाती है।

(क) मन तथा शरीर का विकास

(ख) शरीर तथा हड्डियों का विकास

(ग) शरीर तथा ह्रदय का विकास

(क) आत्मा तथा मांसपेशियों का विकास

डत्तरः (क) मन तथा शरीर का विकास

———————————————————————————

प्रश्न 16 . गर्भ में सर्वप्रथम निर्माण होता है।

(क) पैर

(ख) सिर

(ग) घड़

(घ) सभी का

डत्तरः (ख) सिर का

———————————————————————————

प्रश्न 17 . जन्म के समय शिशु में कितनी हड्डियॉ होती है।

(क) 206

(ख) 230

(ग) 270

(घ) 320

डत्तरः (ग) 270

———————————————————————————

प्रश्न 18 . बालक अपनी मॉ को पहचानना प्रारंभ कर देता है।

(क) 6 माह

(ख) 8 माह

(ग) 9 माह

(घ) 3 माह

उत्तरः (घ) 3 माह

प्रश्न 19 . बालक के जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार होता है–

(क) 300 ग्राम

(ख) 350 ग्राम

(ग) 400 ग्राम

(घ) 450 ग्राम

उत्तरः (ख) 350 ग्राम

प्रश्न 20 . कल्पना जगत में विचरण होता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) किशोरावस्था

(ग) बाल्यावस्था

(घ) शैशवावस्था व किशोरावस्था

उत्तरः (घ) शैशवावस्था व किशोरावस्था

प्रश्न 21 . बालक मुख्य मुख्य रंगों की पहचान कर लेता है।

(क) 5 वर्ष

(ख) 2 वर्ष

(ग) 3 वर्ष

(घ) 4 वर्ष

उत्तरः (क) 5 वर्ष

————————————————————————————————

प्रश्न 22 . छोटे–छोटे वाक्यों को बोलना तथा तीन पहियों की साईकिल चलाना यह कार्य किस अवस्था में होता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (क) शैशवावस्था

————————————————————————————————

प्रश्न 23 . निम्न में से किस घटना की ओर बालक सर्वप्रथम आर्कषित होना प्रारंभ करता है।

(क) प्रकाश

(ख) मॉ

(ग) ध्वनि

(घ) भोजन

उत्तरः (क) प्रकाश

————————————————————————————————

प्रश्न 24. बालक की जिज्ञासा को किया जाना चाहिए।

(क) दमन

(ख) शांत

(ग) उत्तेजित

(घ) सक्रिय

उत्तरः (ख) शांत

प्रश्न 25 . भारत में बालविकास की शुरूआत कब हुई

(क) 1930

(ख) 1887

(ग) 1879

(घ) 1590

उत्तरः (क) 1930

प्रश्न 26. किशोर अवस्था में सामाजिक विकास पर जिसका प्रभाव नही पड़ता है, वह निम्न में से कौन सी है।

(क) रूचियॉं

(ख) आवश्यकताएँ

(ग) असुरक्षा

(घ) अभिवृत्ति

उत्तरः (ग) असुरक्षा

———————————————————————————————————

प्रश्न 27 . किशोर अवस्था में चरित्र निर्माण से जो अवस्था संबंधित है, वह निम्न में से है।

(क) परम्पराओं को धारण करने की अवस्था

(ख) आधारहीन आत्म चेतना अवस्था

(ग) आधारयुक्त आत्म चेतना अवस्था

(घ) स्व केन्द्रित अवस्था

उत्तरः (ख) आधारहीन आत्म चेतना अवस्था

———————————————————————————————————

प्रश्न 28 . विकास व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ और योग्याताएँ प्रस्फुटित करता है यह कथन किसका है।

(क) हरलॉक

(ख) जेम्स ड्रेवर

(ग) मैक्डूगल

(घ) मुनरो

उत्तरः (क) हरलॉक

———————————————————————————————————

प्रश्न 29 . किशोरावस्था एक नया जन्म है, इसमें उच्चतर और श्रेष्ठतर मानव विशेषताओं का जन्म होता है, कथन किसका है–

(क) जॉन एण्ड सिम्पसन

(ख) गैसल

(ग) स्टेनली हॉल

(घ) गीडफ्रे

उत्तर (ग) स्टेनली हॉल

—————————————————————————————————————

प्रश्न 30 . 'किशोरावस्था आदर्शों की अवस्था है, सिद्धांतों के निर्माण की अवस्था है, साथ ही जीवन का समान्य समायोजन है' यह परिभाषा देने वाले है–

(क) हैडो रिपोर्ट

(ख) जीन पियाजे

(ग) फ्रेडरिक ट्रेसी

(घ) ई.एल.पील

उत्तरः (ख) जीन पियाजे

—————————————————————————————————————

प्रश्न 31. मानसिक विकास का संबंध नही है–

(क) शिक्षार्थी का वजन एवं ऊँचाई

(ख) तर्क एवं निर्णय

(ग) स्मृति का विकास

(घ) अवबोध की क्षमता

उत्तरः (क) शिक्षार्थी की वजन एवं ऊँचाई

—————————————————————————————————————

प्रश्न 32 . मनुष्य के शरीर में हड्डियों की संख्या कम से कम होती है–

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था के बाद

(घ) प्रौढ़ावस्था में

उत्तरः (घ) प्रौढ़ावस्था मे

————————————————————————————

प्रश्न 33 . किशोरावस्था की प्रमुख समस्या है–

(क) वजन बढ़ाने की

(ख) शिक्षा की

(ग) समायोजन की

(घ) अच्छे परीक्षा परिणाम देने की

उत्तरः (ग) समायोजन की

————————————————————————————

प्रश्न 34 . 'किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तूफान और विरोध की अवस्था है' यह कथन है–

(क) स्किनर का

(ख) स्टेनली हॉल का

(ग) ई.ए.किलपैट्रिक का

(घ) थार्नडाइक का

उत्तरः (ख) स्टेनली हॉल का

————————————————————————————

प्रश्न 35 . जीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ है–

(क) 4

(ख) 3

(ग) 2

(घ) 5

उत्तरः (क) 4

————————————————————————————————

प्रश्न 36. एरिक्सन के अनुसार कौन सी अवस्था में बालक अधिक पहल करता है, लकिन बहुत सशक्त भी हो सकता है, जो दोष भावनाओं की ओर ले जाता है–

(क) 18 माह से 3 वर्ष

(ख) 3 से 6 वर्ष तक पहल बनाम दोष अवस्था

(ग) 6 से 12 वर्ष तक

(घ) किशोरावस्था

उत्तरः (ख) 3 से 6 वर्ष तक पहल बनाम दोष अवस्था

————————————————————————————————

प्रश्न 37. मानसिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक नही है–

(क) परिवार का वातावरण

(ख) धार्मिक वातावरण

(ग) परिवार की समाजिक स्थिति

(घ) परिवार की अर्थिक स्थिति

उत्तरः (ख) धार्मिक वातावरण

————————————————————————————————

प्रश्न 38 . नैतिक तर्क का अवस्था सिद्धांत किसने स्पष्ट किया –

(क) कोहलबर्ग

(ख) एरिक्सन

(ग) फ्रॉयड

(घ) पावलाव

उत्तरः (क) कोहलबर्ग

प्रश्न 39 . वंशानुक्रम से संबंधित प्रयोग चूहों पर किसने किया –

(क) कार्ल पियरसन ने

(ख) मैक्डूगल

(ग) मेण्डल ने

(घ) पॉवलाव ने

उत्तरः (ग) मेण्डल ने

प्रश्न 40. कौनसा ऊर्जावान मित्रवत् बालक का लक्षण नही है।

(क) खुशमिजाज

(ख) सामाजिक

(ग) आसानी से चिढ़ने वाला

(घ) ऊर्जा का उच्च स्तर

उत्तरः (ग) आसानी से चिढ़ने वाला

प्रश्न 41 . किशोरावस्था प्रारंभ होती है।

(क) 10 वर्ष की आयु से

(ख) 16 वर्ष की आयु से

(ग) 12 वर्ष की आयु से

(घ) 18 वर्ष की आयु से

उत्तरः   (ग) 12 वर्ष की आयु से

———————————————————————————————————

प्रश्न 42 . पूर्णतः प्रकार्यशील व्यक्ति का सम्प्रत्यय किसने दिया –

(क) कार्ल रोजर्स

(ख) फ्रॉयड

(ग) फ्रांसिस गाल्टन

(घ) इवान पावलॉव

उत्तरः (क) कार्ल रोजर्स

———————————————————————————————————

प्रश्न 43 . निम्न में से किसने बच्चों में वस्तुस्थैतर्य के विकास को समझने में सहायता की है–

(क) पियाजे

(ख) फनेस्टिंगर

(घ) एरिक्सन

(क) बैलाक

उत्तरः (क) पियाजे

———————————————————————————————————

प्रश्न 44. 'सूर्य बच्चे के साथ. साथ चलता है, उसके मुड़ने का अनुकरण करता है और बच्चे की बात सुनता है' यह कथन बालक की किस लक्षण की ओर इंगित करता है।

(क) पराहम् केन्द्रियता

(ख) केन्द्रियता

(ग) सजीव चिंतन

(घ) वस्तुस्थैतर्य

डत्तरः (ग) सजीव चिंतन

प्रश्न 45 . किसने यह दावा किया कि सभी भाषाओं में होने वाले कुछ सार्वभौमिक गुण जन्मजात होते है।

(क) बी.एफ.स्किनर

(ख) अल्बर्ट बन्डुरा

(ग) नॉम चॉम्सकी

(घ) ई.सी.टॉलमेन

डत्तरः (ग) नॉम चॉम्सकी

प्रश्न 46. फ्रॉयड के अनुसार निम्न में से कौन सी विकास अवस्था में बच्चे का ध्यान जननांगों की तरफ जाता है।

(क) मुखीय

(ख) गुदीय

(ग) लैंगिक

(घ) प्रसुप्ति

डत्तरः (ग) लैंगिक

प्रश्न 47. निम्न में से कौनसा बच्चों हेतु वेश्लर बुद्धि मापनी की एक निष्पादन मापनी है–

(क) अंकगणितीय

(ख) स.श्यता / समानता

(ग) शाब्दिक तर्क

(घ) चित्रपूर्ति

उत्तरः (घ) चित्रपूर्ति

———————————————————————————————

प्रश्न 48. बाल मनोविज्ञान का .... सिद्धांत प्रारंभ के 4–5 वर्षों के अनुभवों पर आधारित होता है।

(क) मनोविश्लेषणात्मक

(ख) व्यवहारात्मक

(ग) क्रांतिक अवस्था समूह

(घ) संज्ञानात्मक

उत्तरः (क) मनोविश्लेषणात्मक

———————————————————————————————

प्रश्न 49 . ए बायोग्रफिकल स्केच ऑफ इनुफिंट किसने लिखी है।

(क) प्रियर

(ख) शिन

(ग) डार्विन

(घ) स्टर्न

उत्तरः (ग) डार्विन

———————————————————————————————

प्रश्न 50 . मानकीकृत परीक्षणका अर्थ –

(क) विश्वसनीयता

(ख) वैद्यता

(ग) मानक

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 51 किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, 'विकास एक सतत और धीमी प्रक्रिया है।'

(क) कॉलसनिक

(ख) पियाजे

(ग) स्किनर

(घ) हरलॉक

उत्तरः (ग) स्किनर

प्रश्न 52 व्यक्तित्व विकास की अवस्था है–

(क) अधिगम एवं बृद्धि

(ख) व्यक्तिवृत अध्ययन

(ग) उपचारात्मक अध्ययन

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (क) अधिगम एवं बृद्धि

प्रश्न 53 विकास में बृद्धि से तात्पर्य है–

(क) ज्ञान में बृद्धि

(ख) संवेग में बृद्धि

(ग) वजन में बृद्धि

(घ) आकार, सोच, समझ कौशलों में बृद्धि

उत्तरः (घ) आकार, सोच, समझ कौशलों में बृद्धि

प्रश्न 54 तनाव और क्रोध की अवस्था है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) वृद्धावस्था

उत्तरः (ग) किशोरावस्था

प्रश्न 55 बालक का विकास परिणाम है।

(क) वंशानुक्रम

(ख) वातावरण

(ग) वंशानुक्रम व वातावरण की अंतःक्रिया का

(घ) आर्थिक कारकों का

उत्तरः (ग) वंशानुक्रम व वातावरण की अंतःक्रिया का

प्रश्न 56 शारीरिक विकास का क्षेत्र है।

(क) स्नायुमंडल

(ख) स्मृति

(ग) अभिप्रेरणा

(घ) समायोजन

उत्तरः (क) स्नायुमंडल

प्रश्न 57 श्यामपट्ट लिखते समय सबसे महत्वपूर्ण क्या है।

(क) अच्छी लिखावट

(ख) लेखन में स्पष्टता

(ग) बड़े अक्षरों में लिखना

(घ) छोटे अक्षरों में लिखना

उत्तरः (क) अच्छी लिखावट

प्रश्न 58 शरीर के आकार में बृद्धि होती है, क्योंकि–

(क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

(ख) संवेगात्मक विकास

(ग) संज्ञानात्मक विकास

(घ) नैतिक विकास

उत्तरः (क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

प्रश्न 59 पियाजे के संज्ञानात्मक विकास कें अनुसार संवेदी क्रियात्मक अवस्था होती है।

(क) जन्म से 2 वर्ष तक

(ख) 2 से 7 वर्ष तक

(ग) 7 से 11 वर्ष तक

(घ) 11 से 16 वर्ष तक

उत्तरः (क) जन्म से 2 वर्ष तक

———————————————————————————————

प्रश्न 60 निम्न में से कौन सा कथन सत्य है।

(क) लड़के अधिक बुद्धिमान होते है।

(ख) लड़कियॉ अधिक बुद्धिमान होती है।

(ग) बुद्धि का लिंग से संबंध नही है।

(घ) सामान्यतः लड़के–लड़कियों से अधिक बुद्धिमान होते है।

उत्तरः (ग) बुद्धि का लिंग से संबंध नही है।

———————————————————————————————

प्रश्न 61 परामर्श का उद्देश्य है।

(क) बच्चों का समझना

(ख) बच्चों की कमियों के कारण पता करना

(ग) बच्चे को समायोजन में सहायता करना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

———————————————————————————————

प्रश्न 62 बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिए सर्वोत्तम मार्ग है–

(क) उन्हें धार्मिक पुस्तक पढ़ाना

(ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना

(ग) उनका मूल्य शिक्षा पर मूल्यांकन करना

(घ) उन्हें प्रातः कालीन सभा में उपदेनदेना

उत्तरः (ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना

———————————————————————————————

प्रश्न 63. शिक्षा में फ्रोबेल का महत्वपूर्ण योगदान था .... का विकास।

(क) व्यावसायिक स्कूल

(ख) पब्लिक स्कूल

(ग) किंडरगार्टन

(घ) लैटिन स्कूल

उत्तरः (ग) किंडरगार्टन

———————————————————————————————

प्रश्न 64. एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है।

(क) प्रतियोगिता की भावना का

(ख) सहयोग की भावना का

(ग) प्रतिद्वंदिता की भावना का

(घ) तटस्थता की भावना का

उत्तरः (ख) सहयोग की भावना का

———————————————————————————————

प्रश्न 65 . शिक्षक का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

(क) आजीविका कमाना

(ख) बच्चे का सर्वांगीण विकास

(ग) पढ़ना एवं लिखना सीखना

(घ) बौद्धिका विकास

उत्तरः (ख) बच्चे का सर्वांगीण विकास

प्रश्न 66 . ... तथा .... की विशिष्ट अन्योनक्रिया का परिणाम विकास के विविध मार्गों और निष्कर्षो के रूप में हो सकते है।

(क) वंशानुक्रम, पर्यावरण

(ख) चुनौतियॉं, सीमाएँ

(ग) स्थिरता, परिवर्तन

(घ) खोज, पोषण

उत्तरः (क) वंशानुक्रम, पर्यावरण

प्रश्न 67 . भारत सरकार की कम्प्यूटर आधारित अधिगम प्रक्रियाके माध्यम से छात्रों को सिखाने के लिए आई टी स्कूली योजना वर्ष .... में शुरू किया गया था।

(क) 2001

(ख) 2003

(ग) 2004

(घ) 2006

उत्तरः (ग) 2004

————————————————————————————————

प्रश्न 68 6 से 14 वर्ष के बीच के आयु के बच्चों को एक मौलिक अधिकार के रूप में मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा देने के उद्देश्य से 'सर्व शिक्षा अभियान वर्ष' .... में शुरू किया गया था।

(क) 1996

(ख) 1998

(ग) 2001

(घ) 2003

उत्तरः (ग) 2001

————————————————————————————————

प्रश्न 69 स्तरीय (गुणवत्तापर्ण) शिक्षक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम ढांचा, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा वर्ष .... में निकाला गया था।

(क) 1990

(ख) 1992

(ग) 1998

(घ) 1996

उत्तरः (घ) 1998

————————————————————————————————

प्रश्न 70 निम्नलिखित में से कौन सा महत्वपूर्ण प्रभाव शिक्षण की प्रभावकारिता पर निर्भर करती है।

(क) विद्यालय की संरचना

(ख) शिक्षक को विषय की समझ

(ग) शिक्षक की योग्यता

(घ) शिक्षक की लिखावट

उत्तरः (ख) शिक्षक को विषय की समझ

———————————————————————————————

प्रश्न 71 . शिक्षक निम्नलिखित के लिए शिक्षण संबंधी सहायता सामग्री का उपयोग करते है।

(क) छात्रों को प्रभावित करने के लिए

(ख) शिक्षण को रोचक बनाने के लिए

(ग) छात्रों को एकाग्रचित बनाने के लिए

(घ) छात्रों के अंदर शिक्षण रखने के लिए

उत्तरः (ख) शिक्षण को रोचक बनाने के लिए

———————————————————————————————

प्रश्न 72 यदि बुलाए जाने पर कुछ छात्रों के माता–पिता/अभिभावक आकर शिक्षक से नहीं मिलते तो शिक्षक को क्या करना चाहिए।

(क) माता–पिता को लिखना चाहिए।

(ख) जाकर उनसे मिलना चाहिए।

(ग) वैसे छात्रों को दंडित करना चाहिए।

(घ) वैसे छात्रों को अनदेखा करना चाहिए।

उत्तरः (ख) जाकर उनसे मिलना चाहिए।

———————————————————————————————

प्रश्न 73 किसी पठन सामग्री को एक रूप में पढ़ना.............. पढ़ाई के रूप में जाना जाता है।

(क) बंटित

(ख) समूहित

(ग) अंतरालित

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (घ) . इनमें से कोई नही।

प्रश्न 74 पाठ्यचर्या निर्माण को कार्य माना जाता है।

(क) एक नेमी कार्य

(ख) एक विशेषज्ञता कार्य नही।

(ग) एक अत्यधिक विशेषज्ञता कार्य।

(घ)एक महत्वपूर्ण कार्य नही।

उत्तरः (ग) एक अत्यधिक विशेषज्ञता कार्य।

प्रश्न 75 विद्यार्थियों की प्रशंसा की जानी चाहिए।

(क) एकांत में

(ख) अलग से

(ग) लोगों के बीच

(घ) व्यक्तिगत रूप से

उत्तरः (ग) लोगों के बीच

प्रश्न 76 निम्नलिखित में से क्या उस खांचे या रेंज को सूचित करता है जिसके भीतर किसी योग्यता या गुण के लिए किसी व्यक्ति के प्रवीणता स्तर का फैसला किया जाता है।

(क) ग्रेड

(ख) अंक

(ग) ग्रेड एवं अंक दोनों

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (क) ग्रैड

प्रश्न 77 अनुसंधान से पता चलता है कि हमारी पढ़ाई का .... हिस्सा दृश्य और श्रवण अंगों के माध्यम से ग्रहण किया जाता है।

(क) 60%

(ख) 85%

(ग) 50%

(घ) 95 %

उत्तरः (ख) .85%

प्रश्न 78 वर्ग कक्षा के माहौल में एक सकारात्मक पढ़ाई वातावरण स्थापित और मजबूत करने के अधिकार को निश्चयात्मक अनुशासन

(क) बढ़ावा नही देता

(ख) बढ़ावा देता है।

(ग) से कुछ लेना देना नही होता है।

(घ) की जरूरत नही होती

उत्तरः (ख) बढ़ावा देता है।

प्रश्न 79. जब किसी शिक्षक पर प्राधिकारी हावी हाते है या उसे अन्य कार्य करने के लिए विवश किया जाता है तो उसकी क्षमता

(क) कई गुना बढ़ती है।

(ख) घटती है।

(ग) अंशतः बढ़ती है।

(घ) अप्रभावित रहती है।

ड्त्तरः (ख) घटती है।

प्रश्न 80 छात्रों के सही मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित में से किस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(क) रचनात्मक मूल्यांकन

(ख) सतत मूल्यांकन

(ग) कोर्स के अंत में मूल्यांकन

(घ) प्रत्येक छमाही पर मूल्यांकन

ड्त्तरः (ख) सतत मूल्यांकन

प्रश्न 81 एक शिक्षक को समाज में सम्मान मिलना चाहिए जब वह

(क) एक आदर्श जीवन जीता हो

(ख) निष्ठापूर्वक अपनी ड्यूटी करता हो

(ग) प्रभावकारी तरीके से पढ़ाने में सक्षम हो

(घ) ये सभी

उत्तरः (घ) ये सभी

————————————————————————————————

प्रश्न 82 निम्नलिखित में से किसे आप अधिगम की सबसे उचित परिभाषा मानेंगे।

(क) समस्याएं हल करना।

(ख) विशिष्ट हुनर का विकास

(ग) आचरण संबंधी प्रवृति का विकास

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (घ) इनमें से कोई नही।

————————————————————————————————

प्रश्न 83 कोई व्यक्ति एक प्रभावकारी तरीके से एक हुनर कैसे सीख सकता है।

(क) अवलोकन करके

(ख) सुनकर

(ग) पढ़कर

(घ) खुद करके

उत्तरः (घ) खुद करके

————————————————————————————————

प्रश्न 84 वर्णमाला की पहचान .... वर्ष की आयु में शुरू होती है।

(क) 6

(ख) 5

(ग) 4

(घ) 3

उत्तरः (घ) 3

प्रश्न 85 विद्यार्थियों में सामाजिक विकास विकसित करने हेतु एक अध्यापक को चाहिए कि वह जाने ।

(क) विद्यार्थियों के व्यक्तिगत रूचियों को

(ख) विद्यार्थियों के शारीरिक विकास को

(ग) विद्यार्थियों के सभी पक्षों को

(घ) विद्यार्थियों के कार्य निष्पादन को

उत्तरः (ग) विद्यार्थियों के सभी पक्षों को

————————————————————————————

प्रश्न 86 शब्द (IDENTICAL ELEMENTS) (समान तत्व) निम्न से गहन संबंध रखता है।

(क) समान परीक्षा

(ख) सहयोगियों से ईर्ष्या

(ग) अधिगम स्थानान्तरण

(घ) समूह निर्देशन

उत्तरः (ग) अधिगम स्थानान्तरण

————————————————————————————

प्रश्न 87 स्फूर्ति अवस्था कहा जाता है–

(क) शैशवावस्था

(ख) किशोरावस्था

(ग) प्रौढ़ावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (घ) बाल्यावस्था

———————————————————————————————

प्रश्न 88 वातावरण वह बाहरी शक्ति है, जो हमें प्रभावित करती है। किसने कहा है।

(क) वुडवर्थ

(ख) रॉस

(ग) एनास्टसी

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ख) रॉस

———————————————————————————————

प्रश्न 89 संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है यह कथन–

(क) मानसिक विकास है।

(ख) शारीरिक विकास है।

(ग) ध्यान का विकास है।

(घ) भाषा का विकास है।

उत्तरः (क) मानसिक विकास है।

———————————————————————————————

प्रश्न 90 मानव विकास के संबंध में कौन सा कथन गलत है।

(क) विकास पूर्वानुमेय होता है।

(ख) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर होता है।

(ग) विकास रेखीय होता है।

(घ) विकास निरंतर होने वाली प्रक्रिया है।

उत्तरः (ग) विकास रेखीय होता है।

प्रश्न 91 शारीरिक विकास का क्षेत्र है .... ।

(क) स्नायुमण्डल

(ख) माँसपेशियों में बृद्धि

(ग) एंडोक्राइन ग्लैण्ड्स

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 92 निम्न में से कौन सा वंशानुक्रम का निकाय नही है।

(क) समानता

(ख) भिन्नता

(ग) प्रत्यागमन

(घ) अभिप्ररणा

उत्तरः (घ) अभिप्रेरणा

प्रश्न 93 20वी शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा जाता है। यह कथन किसका है।

(क) मुर्रे

(ख) एडलर

(ग) क्रो एण्ड क्रो

(घ) जे.बी. वाटसन

उत्तरः (ग) क्रो एण्ड क्रो

प्रश्न 94 इस अवस्था को मिथ्या पक्वता का समय भी कहा जाता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ख) बाल्यावस्था

प्रश्न 95 शैशवावस्था की विशेषता नही है।

(क) शारीरिक विकास की तीव्रता

(ख) दूसरों पर निर्भरता

(ग) नैतिकता का होना

(घ) मानसिक विकास में तीव्रता

उत्तरः (ग) नैतिकता का होना

प्रश्न 96 शैशवावस्था की मुख्य विशेषता नही है।

(क) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता

(ख) जिज्ञासा की प्रवृति

(ग) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति

(घ) चिंतन प्रक्रिया

उत्तरः (घ) चिंतन प्रक्रिया

——————————————————————————————

प्रश्न 97 किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार ' विकास एक सतत् और धीमी–धीमी प्रक्रिया है'

(क) कॉलसनिक

(ख) पियाजे

(ग) स्किनर

(घ) हरलॉक

उत्तरः (घ) हरलॉक

——————————————————————————————

प्रश्न 98 . बिग व हेट .... की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है 'परिवर्तन' परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ग) किशोरावस्था

——————————————————————————————

प्रश्न 99 मानव विकास कुछ विशेष सिद्धांतों पर आधारित है, निम्न में से कौन सा मानव विकास का सिद्धांत नही है।

(क) निरंतरता

(ख) अनुक्रमिकता

(ग) सामान्य से विशिष्ट

(घ) प्रतिवर्ती

उत्तरः (घ) प्रतिवर्ती

———————————————————————————————————

प्रश्न 100 निचली कक्षाओं में खेल पद्धति मूल रूप से आधारित है।

(क) विकास एवं बृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर

(ख) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर

(ग) शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम सिद्धांत पर

(घ) शिक्षण पद्धतियों के सिद्धांतों पर

उत्तरः (क) विकास एवं बृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो पर

———————————————————————————————————

प्रश्न 101. बालक का विकास परिणाम है।

(क) वंशानुक्रम का

(ख) वातावरण का

(ग) वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःप्रक्रिया का

(घ) अर्थिक कारकों का

उत्तरः (ग) वंशानुक्रम तथा वातावरण की अंतःप्रक्रिया का

———————————————————————————————————

प्रश्न 102 . विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है, यह विचार किससे संबंधित है।

(क) एकीकरण सिद्धांत

(ख) अंतःक्रिया का सिद्धांत

(ग) अंतःसंबंध का सिद्धांत

(घ) निरंतरता का सिद्धांत

उत्तरः (घ) निरंतरता का सिद्धांत

प्रश्न 103. व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक दूसरे से .... में भिन्न होते है।

(क) बृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों

(ख) विकास की दर

(ग) विकास क्रम

(घ) विकास की सामान्य क्षमता

उत्तरः (ख) विकास की दर

प्रश्न 104 . लारेंस कोहलबर्ग विकास के क्षेत्र में शोध के लिए जाने जाते है।

(क) संज्ञानात्मक

;इ) शारीरिक

;ब) गामक

(घ) नैतिक

उत्तरः (घ) नैतिक

प्रश्न 105 . मैक्डूगल के अनुसार, मूल प्रवृति जिज्ञासा का संबंध संवेग कौन सा है।

(क) भय

(ख) घृणा

(ग) आश्चर्य

(घ) भूख

उत्तरः (ग) आश्चर्य

प्रश्न 106 . एक अध्यापक की दृष्टि में कौन सा कथन सर्वोत्तम है।

(क) प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।

(ख) कुछ बच्चे सीख सकते है।

(ग) अधिकतर बच्चे सीख सकते है।

(घ) बहुत कम बच्चे सीख सकते है।

उत्तरः (क) प्रत्येक बच्चा सीख सकता है।

प्रश्न 107 . मनुष्य जीवन का आरंभ मूलतः घटित होता है।

(क) दो कोष

(ख) केवल एक कोष

(ग) कई कोष

(घ) कोई कोष नही

उत्तरः (ख) केवल एक कोष

प्रश्न 108 . गामक विकास से हमारा तात्पर्य माँसपेशियों के विकास से तथा पैरों के उचित उपयोग –

(क) मस्तिष्क और आत्मा

(ख) अधिगम और शिक्षा

(ग) प्रशिक्षण और अधिगम

(घ) शक्ति और गति

उत्तरः (घ) . शक्ति और गति

———————————————————————————————

प्रश्न 109 . ... की अवस्था तक बालक की दृष्टि एवं श्रवण इन्द्रियाँ पूर्ण विकसित हो चुकती है।

(क) 3 अथवा 4 वर्ष

(ख) 6 अथवा 7 वर्ष

(ग) 8 अथवा 9 वर्ष

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ग) . 8 अथवा 9 वर्ष

———————————————————————————————

प्रश्न 110 इस अवस्था में बालकों में नयी खोज करने की और घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक बढ़ जाती है।

(क) शैशवावस्था

(ख) उत्तर बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ख) उत्तर बाल्यावस्था

———————————————————————————————

प्रश्न 111. तर्क, जिज्ञासा तथा निरीक्षण शक्ति का विकास होता है...........की आयु पर।

(क) 7 वर्ष

(ख) 11 वर्ष

(ग) 9 वर्ष

(घ) 6 वर्ष

उत्तरः (ख) 11 वर्ष

प्रश्न 112. ब्रिजेज के अनुसार उत्तेजना भाग है।

(क) सामाजिक विकास का

(ख) शारीरिक विकास का

(ग) संवेगात्मक विकास का

(घ) मानसिक विकास का

उत्तरः (ग) संवेगात्मक विकास का

प्रश्न 113 . बुद्धि परीक्षण निर्माण के जन्मदाता है–

(क) लेवेटर

(ख) फ्रांसिस गाल्टन

(ग) विलियम स्टर्न

(घ) अल्फ्रेड विने

उत्तरः (घ) अल्फ्रेड विने

प्रश्न 114 . प्रतिबिम्ब, अवधारणा, प्रतीक एवं संकेत, भाषा, शारीरिक क्रिया और मानसिक क्रिया अंतर्निहित है–

(क) अनुकूलन

(ख) प्रेरक पेशी विकास

(ग) समस्या समाधान

(घ) विचारात्मक प्रक्रिया

उत्तरः (घ) विचारात्मक प्रक्रिया

—————————————————————————————

प्रश्न 115 . छोटा शिशु खिलौनों तथा अन्य वस्तुओं को फेंककर उसके भागों को अलग करके किस भाव को दर्शाता है।

(क) परनिर्भरता

(ख) स्वप्रेम की भावना

(ग) जिज्ञासा प्रवृति

(घ) दोहराने की प्रवृत्ति

उत्तरः (ग) जिज्ञासा प्रवत्ति

—————————————————————————————

प्रश्न 116 . शरीर के आकार में बृद्धि होती है, क्योंकि

(क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

(ख) संवेगात्मक विकास

(ग) संज्ञानात्मक विकास

(घ) नैतिक विकास

उत्तरः (क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

————————————————————————————————

प्रश्न 117 . निम्नलिखित में से कौन समस्या समाधान की वैज्ञानिक पद्धति का पहला चरण है।

(क) प्राकल्पना का परीक्षण करना

(ख) समस्या के प्रति जागरूकता

(ग) प्रासंगिक जानकारी को एकत्र करना

(घ) प्राक्कल्पना का निर्माण करना

उत्तरः (ख) समस्या के प्रति जागरूकता

————————————————————————————————

प्रश्न 118. बृद्धि का संबंध किससे है।

(क) आकार व भार से

(ख) केवल आकार से

(ग) केवल भार से

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (क) . आकार व भार से

————————————————————————————————

प्रश्न 119 . किशोरावस्था की अवधि है।

(क) 12 से 19 वर्ष

(ख) 10 से 14 वर्ष

(ग) 15 से 20 वर्ष

(घ) 20 से 25 वर्ष

उत्तरः (क) 12 से 19 वर्ष

———————————————————————————————

प्रश्न 120 . निम्नलिखित में से वंशक्रम संबंधी नियम है।

(क) प्रयासों का नियम

(ख) सीखने का नियम

(ग) समानता का नियम

(घ) स्वास्थ्य का नियम

उत्तरः (ग) समानता का नियम

———————————————————————————————

प्रश्न 121 . बृद्धि एवं विकास में क्या संबंध है।

(क) एक दूसरे के विरोधी है।

(ख) एक दूसरे के समान है।

(ग) एक दूसरे के पूरक है।

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (ग) . एक दूसरे के पूरक

———————————————————————————————

प्रश्न 122 . बाल विकास का सही क्रम है।

(क) प्रौढ़ावस्था – किशोरावस्था – बाल्यावस्था

(ख) पूर्व किशोरावस्था . मध्य किशोरावस्था . उत्तरः किशोरावस्था

(ग) बाल्यावस्था . किशोरावस्था . प्रौढ़ावस्था

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग). बाल्यावस्था – किशोरावस्था . प्रौढ़ावस्था

———————————————————————————————————

प्रश्न 123 . विकास में बृद्धि से तात्पर्य है।

(क) ज्ञान में बृद्धि

(ख) संवेग में बृद्धि

(ग) वजन में बृद्धि

(घ) आकार, सोच, समझ, कौशलों में बृद्धि

उत्तरः (घ) . आकार, सोच, समझ, कौशलों में बृद्धि

———————————————————————————————————

प्रश्न 124 . शारीरिक विकास का क्षेत्र है।

(क) स्नायुमण्डल

(ख) स्मृति

(ग) अभिप्रेरणा

(घ) समायोजन

उत्तरः (क) . स्नायुमण्डल

———————————————————————————————————

प्रश्न 125 . मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है।

(क) वंशानुक्रम

(ख) परिवार का वातावरण

(ग) परिवार की सामाजिक स्थिति

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 126 . सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है।

(क) बाल्यावस्था

(ख) पूर्वबाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 127 . बाल्यावस्था होती है।

(क) 5 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष तक

(ग) 21 वर्ष तक

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ख) 12 वर्ष तक

प्रश्न 128 . निम्नलिखित में से कौन सी किशोरावस्था की मुख्य समस्या है।

(क) संवेगात्मक समस्याएँ

(ख) शारीरिक परिवर्तनों की समस्याएँ

(ग) समायोजन की समस्याएँ

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

———————————————————————————————————

प्रश्न 129 . विकास शुरू होता है।

(क) उत्तरः बाल्यावस्था से

(ख) प्रसव पूर्व अवस्था से

(ग) शैशवावस्था से

(घ) पूर्व बाल्यावस्था से

उत्तरः (ख) प्रसव पूर्व अवस्था से

———————————————————————————————————

प्रश्न 130 . परिपक्वता का संबंध है।

(क) विकास

(ख) बृद्धि

(ग) सृजनात्मक

(घ)रूचि

उत्तरः (क) विकास

———————————————————————————————————

प्रश्न 131 . बृद्धि एवं विकास का मुख्य सिद्धांत है।

(क) तत्परता का नियम

(ख) एकता का नियम

(ग) वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत

(घ) इनमें से सभी

उत्तरः (ग). वैयक्तिक अंतर का सिद्धांत

प्रश्न 132 . विकास कैसा परिवर्तन है।

(क) गुणात्मक

(ख) रचनात्मक

(ग) गणनात्मक

(घ) नकारात्मक

उत्तरः (क) . गुणात्मक

प्रश्न 133. निम्नलिखित में से कौनसा विकास का सिद्धांत है।

(क) सभी की विकास दर समान नही होती है।

(ख) विकास हमेशा रेखीय प्रतीत होता है।

(ग) यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया नही है।

(घ) विकास की सभी प्रक्रियाएँ अंतःसंबंधित नही है।

उत्तरः (क) सभी की विकास दर समान नही होती है।

प्रश्न 134. किस आयु काल में मानसिक विकास अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।

(क) 10–15 वर्ष

(ख) 15–20 वर्ष

(ग) 20—25 वर्ष

(घ) 5—10 वर्ष

उत्तरः (ख) 15—20 वर्ष

———————————————————————————————

प्रश्न 135. मनोविज्ञान सामान्यता मानव .... से संबंधित होता है।

(क) भावनाओं

(ख) विचारों

(ग) आचरण

(घ) ये सभी

उत्तरः (घ) ये सभी

———————————————————————————————

प्रश्न 136. शिक्षा को किसी व्यक्ति की अपनी जिंदगी .... बनाने में सक्षम बनाने वाली होनी चाहिए।

(क) बेहतर

(ख) संतोषजनक

(ग) और सार्थक

(घ) सभी संबंधितों के लिए महत्वपूर्ण

उत्तरः (घ) सभी संबंधितों के लिए महत्वपूर्ण

———————————————————————————————

प्रश्न 137. शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है व्यक्ति के/की .... का विकास करना

(क) ज्ञान

(ख) शरीर

(ग) व्यक्तित्व

(घ) बुद्धिमत्ता

उत्तरः (ग) व्यक्तित्व

प्रश्न 138 . एक अच्छी उपलब्धि जांच का एक अभिलक्षण निम्नलिखित में से क्या नहीं है।

(क) विधिमान्यता

(ख) विश्वसनीयता

(ग) द्विअर्थकता

(घ) वस्तुनिष्ठता

उत्तरः (ग) द्विअर्थकता

प्रश्न 139. बच्चे का पहला शिक्षक कौन होता है।

(क) माहौल

(ख) शिक्षक

(ग) माता–पिता

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग) माता–पिता

प्रश्न 140. निम्नलिखित में से किस एक प्रोजेक्ट सहायता सामग्री नही माना जाता।

(क) स्लाइड प्रोजेक्टर

(ख) ओवरहेड प्रोजेक्टर

(ग) ब्लैक बोर्ड

(घ)एपिडियास्कोप

उत्तरः (ग) ब्लैक बोर्ड

प्रश्न 141. अनुसंधान से पता चलता है कि .... कि सीखने की प्रक्रिया में एक प्रबल चर है, संभवतः योग्यता से भी ज्यादा महत्वपूर्ण चर।

(क) उपेक्षा

(ख) अनभिज्ञता

(ग) अभिप्रेरणा

(घ) निरूत्साहन

उत्तरः (ग) अभिप्रेरणा

प्रश्न 142. स्कूल पुस्तकालय .... का एक शैक्षणिक तंत्र है।

(क) अल्प मूल्य

(ख) थोड़े मूल्य

(ग) ज्यादा मूल्य नही।

(घ) विचारणीय मूल्य

उत्तरः (घ) विचारणीय मूल्य

प्रश्न 143 . समूह में और सहभागिता द्वारा सीखने के अभ्यासों को

(क) निरूत्साहित किया जाना चाहिए।

(ख) अनदेखा किया जाना चाहिए।

(ग) प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग) . प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

प्रश्न 144 . भारत सरकार ने बच्चों के लिए मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा अधिकार अधिनियम वर्ष .... में लागू किया गया।

(क) 2006

(ख) 2007

(ग) 2008

(घ) 2009

उत्तरः (घ) 2009

प्रश्न 145 . राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 के अनुसार अधिगम अपने स्वभाव में .... और .... है।

(क) निष्क्रिय, सरल

(ख) निष्क्रिय, सामाजिक

(ग) सक्रिय, सामाजिक

(घ) सक्रिय, सरल

उत्तरः (ग) सक्रिय, सामाजिक

प्रश्न 146 . शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध होना चाहिए

(क) स्नेह का

(ख) विश्वास का

(ग) सम्मान का

(घ) ये सभी

उत्तरः (घ) ये सभी

——————————————————————————————

प्रश्न 147 . मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है—

(क) वंशानुक्रम

(ख) परिवार का वातावरण

(ग) परिवार की सामाजिक स्थिति

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

——————————————————————————————

प्रश्न 148. एक बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष है, तो उसकी बुद्धि लब्धि क्या होगी।

(क) 110

(ख) 100

(ग) 120

(घ) 83

उत्तरः (ग) 120

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

————————————————————————————————————

प्रश्न 149 . परिपक्वता का संबंध है।

(क) विकास

(ख) बुद्धि

(ग) सृजनात्मकता

(घ)रूचि

उत्तरः (क) विकास

————————————————————————————————————

प्रश्न 150 . बाल्यावस्था होती है–

(क) 5 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष तक

(ग) 21 वर्ष तक

(घ) कोई भी नही

उत्तरः (ख) 12 वर्ष तक

————————————————————————————————————

प्रश्न 151 . प्राक् संक्रियतात्मक अवस्था है–

(क) जन्म से 24 माह,

(ख) 2 से 7 वर्ष

(ग) 7 से 11 वर्ष

(घ) 11 वर्ष

उत्तरः (ख) 2 से 7 वर्ष

————————————————————————————————————

प्रश्न 152 . किसे 'किशोर मनोविज्ञान के पिता' के नाम से जाना जाता है।

(क) स्टेनली हॉल

(ख) गेरिसन

(ग) गैसेल

(घ) थार्नडाईक

उत्तरः (क) स्टेनली हॉल

————————————————————————————————————

प्रश्न 153. भाषा की सापेक्षता प्राकल्पना किसने प्रतिपादित की–

(क) पियाजे

(ख) युंग

(ग) वाइगोट्स्की

(घ) व्हार्फ

उत्तरः (घ) व्हार्फ

————————————————————————————————————

प्रश्न 154 . मूर्त संक्रियात्मक अवस्था है–

(क) जन्म से 24 माह तक

(ख) 2 से 7 वर्ष

(ग) 7 से 11 वर्ष

(घ) 11 वर्ष से अधिक

उत्तरः (ग) 7 से 11 वर्ष

————————————————————————————————

प्रश्न 155 . किसने यह मत दिया कि भाषा विचार की अंतःवस्तु का निर्धारण करती है।

(क) फ्रॉयड

(ख) वुण्ट

(ग) पियाजे

(घ) व्हार्फ

उत्तर(घ) व्हार्फ

————————————————————————————————

प्रश्न 156. एक पूर्व विद्यालय बालक कहता है 'सूर्य आज उदास है' बालक निम्नलिखित में से किस सम्प्रत्यय की अभिव्यक्ति कर रहा है–

(क) सजीव चिंतन

(ख) केन्द्रियता

(ग) पारम्परिकता

(घ) वस्तश्ंि स्थायित्व

उत्तरः (क) सजीव चिंतन

————————————————————————————————

प्रश्न 157. निम्न में से किसका संबंध मूल दुःश्चिन्ता एवं मूल शत्रुता के सम्प्रत्ययों से है–

(क) कोनरेड लॉरेंज

(ख) क्लार्क हल

(ग) केरेन हार्नी

(घ) सी.जी.युंग

उत्तरः (ग) केरेन हार्नी

———————————————————————————————

प्रश्न 158 . बच्चे का किस प्रकार का विकास विद्यालय और शिक्षक द्वारा प्रभावित होता है।

(क) मानसिक

(ख) सामाजिक

(ग) संवेगात्मक

(घ) ये सभी

उत्तरः (घ) ये सभी

———————————————————————————————

प्रश्न 159. किसने 'मूलभूत विश्वास बनाम अविश्वास, को विकास का प्रथम अवस्था के रूप में प्रस्तावित किया है।'

(क) फ्रॉयड

(ख) पियाजे

(ग) फ्रॉम

(घ)एरिक्सन

उत्तर (घ) एरिक्सन

———————————————————————————————

प्रश्न 160 . एक बच्चा सदैव दूसरों के प्रति सहानुभूति दिखाता है। यह आदत कहलाती है।

(क) विचार संबंधी आदत

(ख) भावना संबंधी आदत

(ग) नाड़ी मण्डल संबंधी आदत

(घ) नैतिक आदत

उत्तरः (ख) भावना संबंधी आदत

———————————————————————————————

प्रश्न 161 . बालक के निम्न में से कौन सा सामाजिक सम्पर्क का स्त्रोत सबसे प्रारंभिक और सबसे अधिक चलने वाला है–

(क) शिक्षक

(ख) परिवार

(ग) सहकर्मी

(घ) मित्र

उत्तरः (ख) परिवार

———————————————————————————————

प्रश्न 162 . निम्नलिखित में से कौन सा भाषा के विकास को प्रभावित नहीं करता है–

(क) परिपक्वता

(ख) अभिप्रेरणा

(ग) स्वास्थ्य

(घ) लम्बाई या वजन

उत्तरः (घ) लम्बाई या वजन

———————————————————————————————

प्रश्न 163. कोहलबर्ग के सिद्धांत के अनुसार कौनसी अवस्था पर एक व्यक्ति का निर्णय दूसरों के अनुमोदन, पारिवारिक आकांक्षाओं, परम्परिक मूल्यों एवं समाज के नियमों पर आधारित है–

(क) पूर्वपारम्परिक

(ख) पारम्परिक

(ग) पश्चपारम्परिक

(घ) पूर्व–पश्च पारम्परिक

उत्तरः (ख) . पारम्परिक

————————————————————————————————

प्रश्न 164 . बालक के भाषा विकास में मुख्य योगदान देने वाली संस्था है–

(क) परिवार

(ख) विद्यालय

(ग) जन संचार माध्यम

(घ) पत्र . पत्रिकाएँ

उत्तरः (क) परिवार

————————————————————————————————

प्रश्न 165 . निम्नलिखित में से कौन सी संज्ञानात्मक प्रक्रिया है–

(क) खेलना

(ख) प्रतिवृत्ति क्रियाएँ

(ग) चिंतन

(घ) दोड़ना

उत्तरः (ग) चिंतन

————————————————————————————————

प्रश्न 166 . कौन से आयु समूह के लिए एरिक्सन ने विकास की आठ अवस्थाएँ प्रस्तावित की–

(क) जन्म से मृत्यु तक

(ख) जन्म से बाल्यावस्था तक

(ग) जन्म से किशोरावस्था तक

(घ) जन्म से युवावस्था तक

उत्तरः (क) जन्म से मृत्यु तक

प्रश्न 167 . निम्न में से शैशवावस्था की विशेषता नही है।

(क) शारीरिक विकास की तीव्रता

(ख) मानसिक क्रियाओं की तीव्रता

(ग) दूसरों पर निर्भरता

(घ) नैतिकता का होना

उत्तरः (घ) . नैतिकता का होना

प्रश्न 168 . संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है, यह –

(क) मानसिक विकास है।

(ख) शारीरिक विकास है।

(ग) ध्यान का विकास है।

(घ) भाषा का विकास है।

उत्तरः (क) मानसिक विकास है।

प्रश्न 169 . किसको प्रशिक्षण द्वारा व्यवहार में संसोधन की प्रक्रिया माना गया है।

(क) शिक्षण

(ख) अधिगम

(ग) अभिप्रेरणा

(घ) निर्देश

उत्तरः (ख) अधिगम

———————————————————————————————

प्रश्न 170 . किशोरों को नही दिया जाना चाहिए –

(क) अभिप्रेरणा

(ख) सहानुभूति

(ग) लालच

(घ) जिम्मेदारियॉ उठाने के अवसर

उत्तरः (ग) . लालच

———————————————————————————————

प्रश्न 171 . एक शिक्षक शिक्षार्थी के मानसिक विकास का ज्ञान प्राप्त करके जिसकी योजना नही बन सकता, वह है–

(क) पाठयक्रम

(ख) शिक्षण विधि

(ग) विषयवस्तु का चयन

(घ) शारीरिक विकास

उत्तरः (घ) शारीरिक विकास

———————————————————————————————

प्रश्न 172 . किशोरों की जटिल अवस्था के कारण किशोरों के अध्ययन का विषय होना चाहिए—

(क) शारीरिक

(ख) मानसिक

(ग) बौद्धिक

(घ) शरीर तथा मन संबंधी

उत्तरः (घ) शरीर तथा मन संबंधी

————————————————————————————————

प्रश्न 172. जिस प्रक्रिया से व्यक्ति मानव के लिए परस्पर निर्भर होकर व्यवहार करना सीखता है, वह प्रकिया है।

(क) सामाजीकरण

(ख) भाषा विकास

(ग) वैयक्तिक मूल्य

(घ) सामाजिक परिपक्वता

उत्तरः (क) समाजीकरण

————————————————————————————————

प्रश्न 174 . किशोर अवस्था की मुख्य विशेषता निम्न में से है।

(क) आत्म गौरव

(ख) रचनात्मक

(ग) समाजिक प्रवृति

(घ) आत्म चेतना

उत्तरः (क) . आत्म गौरव

————————————————————————————————

प्रश्न 175 . किशोरों का संवेग के नियंत्रण का सबसे अच्छा अपाय निम्नलिखित में से कौन सा है।

(क) युक्तिकरण

(ख) प्रक्षेपण

(ग) शोधन

(घ) दमन

उत्तरः (ख) प्रक्षेपण

———————————————————————————————

प्रश्न 176 . विकास प्रारंभ होता है।

(क) गर्भावस्था

(ख) शैशवावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) गर्भावस्था

———————————————————————————————

प्रश्न 177. सीखना है, एक जटिल –

(क) मानसिक प्रक्रिया

(ख) शारीरिक प्रक्रिया

(ग) सामाजिक प्रक्रिया

(घ) नैतिक प्रक्रिया

उत्तरः (क) मानसिक प्रक्रिया

———————————————————————————————

प्रश्न 178. बालक–बालिकाओं को सर्वाधिक समायोजन करना पड़ता है।

(क) वयः संधिकाल

(ख) किशोरावस्था

(ग) शैशवावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) वयः संधिकाल

प्रश्न 179. कार्ल सी. गैरीसन ने किस विधि का अध्ययन किया।

(क) क्षैतिजीय विधि

(ख) लम्बात्मक विधि

(ग) सांख्यिकीय विधि

(घ) प्रयोगात्मक विधि

उत्तरः (ख) लम्बात्मक विधि

प्रश्न 180. मिथ्या परिपक्वता का काल कहा जाता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ख) बाल्यावस्था

प्रश्न 181. एक बालक पड़ोसी के घर में अपनी मॉ की गोद में खेलता हुआ सो जाता है, उसकी मॉ के द्वारा उसके पड़ोसी के यहॉ विस्तर पर सुलाते ही वह रोना प्रारंभ करा देता है, आपके अनुसार बालक की आयु होगी–

(क) 24 माह

(ख) 12 माह

(ग) 10 माह

(घ) 18 माह

उत्तरः (ग) 10 माह

————————————————————————————————

प्रश्न 182 . सीखने का आदर्शकाल माना गया है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (क). शैशवावस्था

————————————————————————————————

प्रश्न 183. बालक जमीन पर से अपने पसंद की वस्तु उठा लेता है, आपके अनुसार उस बालक की आयु होगी–

(क) 12–13 माह

(ख) 5–6 माह

(ग) 3–4 माह

(घ) 8–9 माह

उत्तरः (घ) . 8–9 माह

————————————————————————————————

प्रश्न 184. बीजावस्था कहा गया है।

(क) 0–2 सप्ताह

(ख) 2–8 सप्ताह

(ग) 8–16 सप्ताह

(घ) जन्मजात

उत्तरः (क) 0–2 सप्ताह

प्रश्न 185 . बालक के सिर एवं मस्तिष्क का सर्वाधिक विकास किस अवस्था में होता है।

(क) प्रौढ़ावस्था

(ख) शैशवावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (ख) शैशवावस्था

प्रश्न 186 . 2.5 वर्ष की आयु कहलाती है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) बाल्यावस्था

(घ) किशोरावस्था

उत्तरः (क) . शैशवावस्था

प्रश्न 187. गर्भ में संतान सर्वाधिक प्रभावित होती है।

(क) मॉ के पोषण से

(ख) मॉ के टी.वी. देखने से

(ग) आस–पड़ोस से

(घ) पूर्वजों से

उत्तरः (क) मॉ के पोषण से

———————————————————————————————

प्रश्न 188 . खेल के मैदान में कौन सा विकास होता है।

(क) शारीरिक विकास

(ख) मानसिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तरः (घ) . उपयुक्त सभी

———————————————————————————————

प्रश्न 189 . बालक में संस्कारों का प्रारंभ कहॉ से होता है।

(क) विद्यालय

(ख) परिवार

(ग) सिनेमाघर

(घ) खेल का मैदान

उत्तरः (ख) परिवार

———————————————————————————————

प्रश्न 190 . निम्न में से विकास की अवस्था है।

(क) गुणात्मकता

(ख) संख्यात्मकता

(ग) निश्चित आयु तक चलने वाली क्रिया

(घ) शारीरिक अंगों में परिवर्तन का सूचक

उत्तरः (क) गुणात्मकता

प्रश्न 191 . नवजात शिशु का भार होता है।

(क) 6 पाउंड

(ख) 7 पाउंड

(ग) 8 पाउंड

(घ) 9 पाउंड

उत्तरः (ख) 7 पाउंड

प्रश्न 192. जड़ बुद्धि वाले बालक की बुद्धि लब्धि कितनी होती है।

(क) 11–120

(ख) 81–110

(ग) 71–80

(घ) 71 से कम

उत्तरः (घ) 71 से कम

प्रश्न 193 . शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन सा माना जाता है–

(क) 1947

(ख) 1920

(ग) 1940

(घ) 1900

उत्तरः (घ) 1900

———————————————————————————————

प्रश्न 194 . बुद्धि लब्धि मापन के जन्मदाता है।

(क) स्टर्न

(ख) बिने

(ग) टरमैन

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ग) . टरमैन

———————————————————————————————

प्रश्न 195 . आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ है–

(क) मन का अध्ययन

(ख) आत्मा का अध्ययन

(ग) शरीर का अध्ययन

(घ) व्यवहार का अध्ययन

उत्तरः (घ) . व्यवहार का अध्ययन

———————————————————————————————

प्रश्न 196 . विद्यालयी क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन सा उपागम नही है।

(क) वार्तालाप कौशल

(ख) बहुविकल्पीय प्रश्न

(ग) परियोजना कार्य

(घ) मौखिक प्रश्न

उत्तरः (ख) बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 197 . सहयोगात्मक राजनीति की किस श्रेणी में महिलाएँ निम्न से संबंधित नही होती।

(क) स्वीकार्यता

(ख) प्रतिरोध

(ग) क्रांति

(घ) अनुकूलन

उत्तरः (ख) प्रतिरोध

प्रश्न 198 . समाजीकरण वह प्रक्रिया है, जिसमें बच्चे और वयस्क सीखते है।

(क) परिवार से

(ख) विद्यालय से

(ग) साथियों से

(घ) इन सभी से

उत्तरः (घ) इन सभी से

———————————————————————————————

प्रश्न 199 . शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए

(क) अध्यापन विषय का

(ख) बाल मनोविज्ञान का

(ग) शिक्षा संहिता का

(घ) अध्यापन विषय एवं बाल मनोविज्ञान का

उत्तरः (घ) . अध्यापन विषय एवं बाल मनोविज्ञान का

———————————————————————————————

प्रश्न 200 . बालमनोविज्ञान के आधार पर कौन सा कथन सर्वोतम है–

(क) सारे बच्चे एक जैसे होते है।

(ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।

(ग) कुछ बच्चे विशिष्ट होते है।

(घ) कुछ बच्चे एक जैसे होते है।

उत्तरः (ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है।

———————————————————————————————

प्रश्न 201 . प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए निम्न में से किसे बेहतर मानते है।

(क) वीडियो अनुरूपण

(ख) प्रदर्शन

(ग) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव

(घ)ये सभी

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

डत्तरः (ग) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव

प्रश्न. 202 . वाइगोट्सकी बच्चों को सीखने में निम्नलिखित में से किस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल देते है।

(क) सामाजिक

(ख) आनुवांशिक

(ग) नैतिक

(घ) शारीरिक

डत्तरः (क) . सामाजिक

प्रश्न. .203 . बुद्धि के बहुकारक सिद्धांत का प्रतिपादक है।

(क) मैक्डूगल

(ख) टरमैन

(ग) थार्नडाइक

(घ) बर्ट

डत्तरः (ग) थार्नडाइक

प्रश्न. .204 . बच्चों की सीखनें की प्रक्रिया में माता–पिता को भूमिका निभानी चाहिए।

(क) नकारात्मक

(ख) सहानुभूतिपर्ण

(ग) अग्रोन्मुखी

(घ) तटस्थ

ङत्तरः (ग) अग्रोन्मुखी

———————————————————————————————————

प्रश्न. .205 . कौन सा सिद्धांत व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर है।

(क) गुण सिद्धांत

(ख) प्रकार सिद्धांत

(ग) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

(घ) व्यवहारवाद सिद्धांत

ङत्तरः (ग) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

———————————————————————————————————

प्रश्न. .206 . व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक–दूसरे से .... में भिन्न होते है।

(क) विकास की दर

(ख) विकास क्रम

(ग) विकास की सामान्य क्षमता

(घ) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतो

ङत्तरः (क) विकास की दर

———————————————————————————————————

प्रश्न. .207 . निम्नलिखित में से कौन सा सूक्ष्मगतिक कौशल का उदाहरण है।

(क) लिखना

(ख) फुदकना

(ग) चढ़ना

(घ) दौड़ना

उत्तर (क) लिखना

प्रश्न. .208. नर्सरी कक्षा से शुरूआत करने के लिए कौन सी विषय वस्तु सबसे अच्छी है।

(क) मेरा परिवार

(ख) मेरा प्रिय मित्र

(ग) मेरा विद्यालय

(घ) मेरा पड़ोस

उत्तरः (क) मेरा परिवार

प्रश्न. .209 . ''संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है'' यह कथन है–

(क) पियाजे

(ख) वुडवर्थ

(ग) वैलेन्टाइन

(घ) रॉस

उत्तरः (ख) . वुडवर्थ

प्रश्न. 210 . भाषा में अर्थ की सबसे छोटी इकाई है।

(क) स्वनिम

(ख) संकेत प्रयोग विज्ञान

(ग) वाक्य

(घ) रूपिम

उत्तर (क) स्वनिम

प्रश्न. 211. बालिकाओं की लम्बाई किस अवस्था में बालकों से अधिक होती है।

(क) किशोरावस्था के अन्त में

(ख) बाल्यावस्था में

(ग) शैशवावस्था में

(घ) किशोरावस्था के प्रारंभ में

उत्तरः (ख) बाल्यावस्था में

प्रश्न. 212. दिवास्वप्न एवं भाषा के कूटकरण की अवस्था है–

(क) गर्भावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) शैशवावस्था

उत्तर (ग) किशोरावस्था

प्रश्न. 213. विकास केवल एक ओर न होकर चारों ओर होता है यह सिद्धांत बताता है–

(क) समान प्रतिमान

(ख) क्रमबद्धता

(ग) सामान्य से विशिष्ट

(घ) वतुलाकार

उत्तरः (घ) वतुलाकार

———————————————————————————————

प्रश्न. 214. जन्म के समय शिशु रोता है—

(क) भय के कारण

(ख) वातावरण के परिवर्तन के कारण

(ग) पीड़ा के कारण

(घ) भूख के कारण

उत्तर (ख) वातावरण के परिवर्तन के कारण

———————————————————————————————

प्रश्न. 215. क्लार्क और बीर्च ने नर चिम्पांजी के शरीर में —

(क) स्त्री हार्मोन प्रवेश कराये

(ख) पुरूष हार्मोन प्रवेश कराये

(ग) एक 5 वर्ष के बालक के हार्मोन प्रवेश कराये

(घ) उपरोक्त में से कोई नही

उत्तर (क) स्त्री हार्मोन प्रवेश कराये

———————————————————————————————

प्रश्न. .216 . बालक का विकास वंशानुक्रम व वातावरण का है—

(क) योगफल

(ख) शेषफल

(ग) गुणनफल

(घ) भागफल

उत्तरः (ग) गुणनफल

प्रश्न. 217 . बालक के अस्थाई दाँतों की संख्या है–

(क) 25

(ख) 20

(ग) 15

(घ) 12

उत्तरः (ख) . 20

प्रश्न. 21 . आनुवांशिकता से तात्पर्य निम्नांकित में से किससे होता है–

(क) शुक्राणु तथा अण्डाणु

(ख) डी.एन.ए. तथा आर.एन.ए.

(ग) गुणसूत्र तथा जीन्स

(घ) सूत्रीविभाजन तथा अर्द्धसूत्रण

उत्तरः (ग) . गुणसूत्र तथा जीन्स

प्रश्न. .219 . आनुवांशिकता के वास्तिवक निर्धारक होते है।

(क) कोशिका

(ख) गुंणसूत्र

(ग) न्यूरीन

(घ) कोश शरीर

उत्तरः (ख) गुंणसूत्र

प्रश्न. 220 . दिवास्वप्न में विचरण करने की कामना अत्यंत प्रबल होती है।

(क) शैशवावस्था में

(ख) गर्भावस्था में

(ग) बाल्यावस्था में

(घ) किशोरावस्था में

उत्तरः (घ) . किशोरावस्था में

प्रश्न. 221. क्रोध संवेग के कारण उत्पन्न प्रवृत्ति है।

(क) आत्मगौरव

(ख) अधिकार

(ग) युयुत्सा

(घ) दण्ड

उत्तरः (ग) . युयुत्सा

प्रश्न. 222 . समान आयु स्तर के बालक बालिकाओं का बौद्धिक स्तर भिन्न होता है यह कथन किसका है।

(क) हल

(ख) हरलॉक

(ग) स्टेनले हॉल

(घ) गैसेल

उत्तरः (ख) . हरलॉक

———————————————————————————————

प्रश्न. .223 . बालकों में सौन्दर्यानुभूंति विकसित करने का आधारभूत साधन है–

(क) प्रकृति अवलोकन

(ख) साहित्यिक अध्ययन

(ग) टेलीविजन

(घ) खूलकूद

उत्तरः (क) . प्रकृति अवलोकन

———————————————————————————————

प्रश्न. .224 . जन्म के समय बालक की स्मरण शक्ति होती है।

(क) अधिक

(ख) अत्यधिक

(ग) बहुत कम

(घ) कम

उत्तरः (ग) . बहुत कम

———————————————————————————————

प्रश्न. .225. आत्मगौरव की भावना सर्वाधिक पाई जाती है।

(क)   जन्म से 5 वर्ष तक

(ख) 20 से 40 वर्ष तक

(ग) 6 से 12 वर्ष तक

(घ) 13 से 19 वर्ष तक

उत्तरः   (घ) . 13 से 19 वर्ष तक

———————————————————————————————

प्रश्न. .226 . चरित्र निर्माण में निम्नांकित कारक सहायक नही है।

(क)   आदत

(ख) इच्छा

(ग) अनुकरण

(घ) निर्देश

उत्तर (घ) निर्देश

———————————————————————————————

प्रश्न. .227 . उत्तरः बाल्यकाल का समय कब तक होता है।

(क)   1 से 3 वर्ष तक

(ख) 3 से 6 वर्ष तक

(ग) 6 से 12 वर्ष तक

(घ) 12 से 18 वर्ष तक

उत्तरः   (ग) 6 से 12 वर्ष तक

———————————————————————————————

प्रश्न. .228 . जिस आयु में बालक की मानसिक योग्यता का लगभग पूर्ण विकास हो जाता है। वह है–

(क) 14 वर्ष

(ख) 11 वर्ष

(ग) 9 वर्ष

(घ) 6 वर्ष

उत्तरः (क) 14 वर्ष

———————————————————————————————

प्रश्न. .229 . कौन से गुण अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के नही है।

(क) नियमित जीवन, संवेगात्मक परिपक्वता

(ख) आत्मविश्वास, सहनशीलता

(ग) बहुत विनीत, स्वयं में सीमित

(घ) स्वमूल्यांकन की योग्यता

उत्तरः (ग) बहुत विनीत, स्वयं में सीमित

———————————————————————————————

प्रश्न. 230 . मॉ–बाप के साये से बाहर निकल अपने साथी बालकों की संगत को पसंद करना संबंधित है।

(क) किशोरावस्था

(ख) पूर्व किशोरावस्था से

(ग) बाल्यावस्था से

(घ) शैशवावस्था से

उत्तरः (ख) पूर्व किशोरावस्था से

———————————————————————————————————

प्रश्न. .231 . शैशवावस्था में बच्चों के क्रियाकलाप.................होते है

(क) मूल प्रवृत्यात्मक

(ख) संरक्षित

(ग) संज्ञानात्मक

(घ) संवेगात्मक

उत्तरः (क) मूल प्रवृत्यात्मक

———————————————————————————————————

प्रश्न. .232 . विकास का वही संबंध परिपक्वता से है जो उद्दीपन का .... से।

(क) परिवर्तन

(ख) प्रतिक्रिया

(ग) प्रयास

(घ) परिणाम

उत्तरः (ख) प्रतिक्रिया

———————————————————————————————————

प्रश्न. .233 . बच्चों के सामाजिक विकास में .... का विशेष महत्व है।

(क) खेल

(ख) बाल साहित्य

(ग) दिनचर्या

(घ) संचार माध्यम

उत्तरः (क) खेल

प्रश्न. 234 . कोहलबर्ग का विकास सिद्धांत निम्न में से किससे संबंधित है।

(क) भाषा विकास

(ख) संज्ञानात्मक विकास

(ग) नैतिक विकास

(घ) सामाजिक विकास

उत्तरः (ग) नैतिक विकास

प्रश्न. .235 . थ,फ, च ध्वनियाँ है।

(क) स्वनिम

(ख) रूपिम

(ग) लेखिम

(घ) शब्दिम

उत्तरः (क) स्वनिम

प्रश्न. 236 . बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है–

(क) 7 से 12 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष से वयस्क तक

(ग) 2 से 7 वर्ष तक

(घ) जन्म से 2 वर्ष तक

उत्तरः (क) 7 से 12 वर्ष तक

—————————————————————————————————————

प्रश्न. .237 . निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नही है।

(क) सामाजिक संचरण

(ख) संतुलीकरण

(ग) अनुभव

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (क) सामाजिक संचरण

—————————————————————————————————————

प्रश्न. 238 . एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है, पर यह उसके बल्लेबाली के कौशल को प्रभावित नही करता। इसे कहते है–

(क) विधेयात्मक प्रशिक्षण अंतरण

(ख) निषेधात्मक प्रशिक्षण अंतरण

(ग) शून्य प्रशिक्षण अंतरण

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग) शून्य प्रशिक्षण अंतरण

—————————————————————————————————————

प्रश्न. .239 . विकासात्मक बालमनोविज्ञान का जनक किसे माना गया है।

(क) फ्रायड को

(ख) ब्रूनर को

(ग) जीन पियाजे को

(घ) केली को

डत्तरः (ग) जीन पियाजे का

———————————————————————————————————

प्रश्न. 240 . 'बालक की अभिबृद्धि जैवकीय नियमों के अनुसार होती है' यह कथन है–

(क) वी पी सिंह का

(ख) हरवर्ट स्पेंसर का

(ग) क्रोगमैन का

(घ) गैसल का

डत्तरः (ग) क्रोगमैन का

———————————————————————————————————

प्रश्न. .241 . निम्न में से जो मानव को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

(क) वंश परम्परा

(ख) वातावरण

(ग) उक्त दोंनों

(घ) दोंनों ही नही।

डत्तरः (ग) उक्त दोंनों

———————————————————————————————————

प्रश्न. 242 . पैतृक गुणों के हस्तांतरण के सिद्धांतों को स्पष्ट किया था।

(क) डार्विन ने

(ख) मैण्डल ने

(ग) रूसों ने

(घ) लॉक ने

उत्तरः (ख) मैण्डल ने

प्रश्न. .243. निम्न में से कौन मनोवैज्ञानिक नही है।

(क) जॉन डीवी

(ख) वाटसन

(ग) हल

(घ) स्किनर

उत्तरः (क) जॉन डीवी

प्रश्न. .244 . उतर बाल्यावस्था की विशेषता है–

(क) आत्मनिर्भर होना

(ख) मित्र मण्डली या समूह का निर्माण

(ग) स्वतंत्र होना

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तरः (घ) उपयुक्त सभी

प्रश्न. 245 . व्यक्ति एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की –

(क) नाममात्र की भूमिका है।

(ख) महत्वपूर्ण भूमिका है।

(ग) अपूर्वानुमेय भूमिका है।

(घ) आकर्षक भूमिका है।

उत्तरः (क) नाममात्र की भूमिका है।

प्रश्न. .246. बालक के सामाजिक विकास में सबसे महत्वपूर्ण कारक कौन सा है।

(क) जातिवाद

(ख) आनुवांशिकता

(ग) वातावरण

(घ) विद्यालय

उत्तरः (ग) वातावरण

प्रश्न. 247 . लड़कियों में बाह्य परिवर्तन किस अवस्था में होने लगता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ग) किशोरावस्था

प्रश्न. .248 . भाषा विकास के विभिन्न अंग कौन से है।

(क) अक्षर ज्ञान

(ख) सुनकर भाषा समझना

(ग) ध्वनि उत्पन्न करके भाषा उत्पन्न करना

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तरः (घ) उपयुक्त सभी

प्रश्न. .249 . लैमार्क ने अध्ययन किया था –

(क) स्कूल का

(ख) वातावरण का

(ग) समाज का

(घ) वंशानुक्रम का

उत्तरः (घ) वंशानुक्रम का

प्रश्न. 250 . निम्नांकित में से अवांछनीय संवेग है।

(क) प्रेम

(ख) दगा

(ग) घृणा

(घ) आश्चर्य

उत्तरः (ख) दगा

---

251 . बालक के खेल के विकास को प्रभावित करते है।

(क) शारीरिक स्वास्थ्य

(ख) वातावरण

(ग) खाली समय

(घ) उपयुक्त सभी

उत्तरः (घ) उपयुक्त सभी

प्रश्न. .252 . निम्न ग्रंथि के दोषपूर्ण कार्य के कारण व्यक्ति का लैंगिक विकास उचित रूप से नही हो पाता है।

(क) थॉयराइड ग्रंथि

(ख) पिट्यूटरी ग्रंथि

(ग) थाइमस

(घ) पीनियल ग्रंथि

उत्तरः (घ) पीनियल ग्रंथि

प्रश्न. 253 . अतिरिक्त शक्ति के सिद्धांत का संबंध है।

(क) बुद्धि से

(ख) स्मृति से

(ग) खेल से

(घ) पढ़ने से

उत्तरः (ग) खेल से

प्रश्न. .254 . प्रथम बाल निर्देशन केन्द्र किसके द्वारा खोला गया।

(क) प्लेटो

(ख) विलियम हिली

(ग) डार्विन

(घ)रूसो

उत्तरः .(ख) विलियम हिली

———————————————————————————————————

प्रश्न. 255 . संरचनात्मक अधिगम सिद्धांत जोर देता है।

(क) शिक्षक की तानाशाही भूमिका पर

(ख) विषय सामग्री के रहने पर

(ग) विद्यार्थियों द्वारा नवीन ज्ञान की संरचना पर

(घ) अनुकरण पर

उत्तरः (ग) विद्यार्थियों द्वारा नवीन ज्ञान की संरचना पर

———————————————————————————————————

प्रश्न. .256 . क्रियात्मक अंनुसंधान का उद्देश्य है–

(क) नवीन ज्ञान की खोज

(ख) शैक्षिक एवं व्यवहार विज्ञान में परिवर्तन

(ग) विद्यालय तथा शैक्षिक प्रणाली में सुधार

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (ग) विद्यालय तथा शैक्षिक प्रणाली में सुधार

———————————————————————————————————

प्रश्न. 257 . क्रिस्टीना अपनी कक्षा को क्षेत्र भ्रमण पर ले जाती है, और वापस आने पर अपने विद्यार्थियों के साथ भ्रमण पर चर्चा करती है। यह .... की ओर संकेत करता है।

(क) सीखने के लिए आकलन

(ख) आकलन के लिए सीखना

(ग) आकलन का सीखना

(घ) सीखने को आकलन

उत्तरः (क) सीखने के लिए आकलन

———————————————————————————————

प्रश्न. .258 . सबसे अधिक गहन और जटिल सामाजीकरण होता है–

(क) किशोरावस्था के दौरान

(ख) पूर्व– बाल्यावस्था के दौरान

(ग) प्रौढ़ावस्था के दौरान

(घ) व्यक्ति के पूरे जीवन में

उत्तरः (क) किशोरावस्था के दौरान

———————————————————————————————

प्रश्न. .259 . सीखने का वह सिद्धांत जो पूर्ण रूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, सीखने के .... सिद्धांत से संबंध है।

(क) विकासवादी

(ख) व्यवहारवादी

(ग) रचनावादी

(घ) संज्ञानवादी

उत्तरः (ख) व्यवहारवादी

———————————————————————————————

प्रश्न. 260 . व्यक्तिगत विद्यार्थी एक–दूसरे से .... में भिन्न होतें है।

(क) विकास की दर

(ख) विकास–क्रम

(ग) विकास की सामान्य क्षमता

(घ) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत

डत्तरः (क) विकास की दर

———————————————————————————

प्रश्न. .261 . पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक बालविकास की कितनी अवस्थाएॅ है।

(क) 3 अवस्थाएॅ

(ख) 4 अवस्थाएॅ

(ग) 5 अवस्थाएॅ

(घ) 6 अवस्थाएॅ

डत्तरः (ख) 4 अवस्थाएॅ

———————————————————————————

प्रश्न. .262 . विग व हट के अनुसार .... की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है 'परिवर्तन'। परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

(क) शैश्वावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

डत्तरः (ग) किशोरावस्था

———————————————————————————

प्रश्न. 263 . लॉरेंस कोहलबर्ग विकास के क्षेत्र में शोध के लिए जाने जाते है।

(क) संज्ञानात्मक

(ख) शारीरिक

(ग) नैतिक

(घ) गामक

डत्तरः (ग) नैतिक

———————————————————————————————

प्रश्न. .264. एक कक्षा में वैयक्तिक विभिन्नताओं के क्षेत्र हो सकते है।

(क) रूचियों के

(ख) सीखने के

(ग) चरित्र के

(घ) . ये सभी

डत्तरः (घ) . ये सभी

———————————————————————————————

प्रश्न. 265 . कौन सा सीखना स्थायी होता है।

(क) रटकर

(ख) समझकर

(ग) सुनकर

(घ) देखकर

डत्तरः (ख) समझकर

———————————————————————————————

प्रश्न. .266 . औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था है–

(क) जन्म से 24 माह

(ख) 2 से 7 वर्ष

(ग) 7 से 11 वर्ष

(घ) 11 वर्ष के बाद

उत्तरः (घ) 11 वर्ष के बाद

प्रश्न. .267 . भाषा अवबोधन से संबंद्ध विकास है–

(क) पठन वैकल्प (डिक्लैक्सिया)

(ख) वाक् संबंद्ध रोग (एसपीसिया)

(ग) भाषाघात (एश्ंिनसिया)

(घ) चलाघात (एप्रॉक्सिया)

उत्तरः (ग) भाषाघात (एश्ंिनसिया)

प्रश्न. 268 . हॉर्नी के अनुसार मौलिक दुश्ंिचन्ता के संम्प्रत्यय का विकास होता है –

(क) बाल्यावस्था में

(ख) किशोरावस्था में

(ग) वयस्कावस्था में

(घ) वृद्धावस्था में

उत्तरः (क) बाल्यावस्था में

प्रश्न. 269 . जीव में विकास तथा वर्धन का पूरा होना परिपक्वता कहलाता है परिभाषित किया है–

(क) थॉर्नडाइक

(ख) सारटेन

(ग) हल

(घ) शेरमेन

उत्तरः (ख) सारटेन

———————————————————————————————

प्रश्न. 270. .... ने बालक के प्राकृतिक विकास पर प्रभाव पर बल दिया

(क) मान्टेसरी

(ख) सेगुइन

(ग) बर्क

(घ) बिनेट

उत्तरः (क) मान्टेसरी

———————————————————————————————

प्रश्न. .271. जीव में विकास तथा वर्धन का पूरा होना परिपक्वता कहलाता है परिभाषित किया है–

(क) थॉर्नडाइक

(ख) सारटेन

(ग) हल

(घ) शेरमेन

उत्तरः (ख) सारटेन

———————————————————————————————

प्रश्न. .272 . ... ने बालक के प्राकृतिक विकास पर प्रभाव पर बल दिया

(क) मान्टेसरी

(ख) सेगुइन

(ग) बर्क

(घ) बिनेट

उत्तरः (क) मान्टेसरी

प्रश्न. 273. पियाजे के अनुसार 4 से 8 माह में कौन सा संज्ञानात्मक विकास होता है–

(क) हाथ मुँह संबंधन

(ख) ऑख हाथ संबंधन

(ग) प्रतिवर्ती क्रिया

(घ) बोलना शुरू करना

उत्तरः (ख) ऑख हाथ संबंधन

प्रश्न. 274 . बाल अध्ययन के पिता किसे कहा जाता है।

(क) स्टेनली हॉल

(ख) प्रियर

(ग) शिउन

(घ) वॉटशन

उत्तरः (क) स्टेनली हॉल

प्रश्न. 275 . नवजात के स्वास्थ्य को जांचने के लिए प्रयोग में ली जाने वाली मापनी स्केल है–

(क) टी.ए.टी

(ख) ए.पी.जी.ए.आर.स्केल

(ग) डब्लु.आई.एस.सी.स्केल

(घ) टी.टी.सी.टी

उत्तरः (ग) डब्लु.आई.एस.सी.स्केल

प्रश्न. .276 . शरीर के शीर्ष भाग से प्रारंभ होकर नीचे की दिशा में होने वाली शारीरिक वृद्धि को जाना जाता है।

(क) सिर पदाभिमुख अनुक्रम

(ख) केन्द्र अपसारी अनुक्रम

(ग) उच्चतम अनुक्रम

(घ) न्यूनतम अनुक्रम

उत्तरः (क) सिर पदाभिमुख अनुक्रम

प्रश्न. .277. पियाजे के सिद्धांत के अनुसार कौनसी अवस्था में बच्चों में उस चिंतन का विकास होना है, अनुत्क्रमणीयता होती है–

(क) संवेदी प्रेरक

(ख) प्राक संक्रियात्मक

(ग) मूर्त संक्रियात्मक

(घ) औपचारिक संक्रियात्मक

उत्तरः (ख) प्राक संक्रियात्मक

———

प्रश्न. .278 . निर्जीव वस्तुओं का सजीव गुण देने वाली प्रकृति का पियाजे ने क्या नाम दिया है–

(क) कल्पना

(ख) केन्द्रीकरण

(ग) सजीव चिंतन

(घ) वस्तु स्थैतर्य

उत्तरः (ग) सजीव चिंतन

———

प्रश्न. .279 . बालकों के सर्वतोन्मुखी विकास हेतु सर्वाधिक उचित विद्यालय है –

(क) खेल का मैदान

(ख) समुदाय

(ग) प्रकृति जगत

(घ) प्रयोगशाला

उत्तरः (क) खेल का मैदान

———

प्रश्न. .280 . बालक के विकास से ज्यादा महत्वपूर्ण क्या है–

(क) वंशक्रम

(ख) वातावरण

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण दोनो

(घ) शिक्षा

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण दोनो

———————————————————————————————————————

प्रश्न. 281 . विकास की दृष्टि से सही क्रम है–

(क) आत्मीकरण, समायोजन, अनुकूलन

(ख) समायोजन, आत्मीकरण, अनुकूलन

(ग) अनुकूलन, समायोजन, आत्मीकरण

(घ) अनुकूलन, आत्मीकरण, समायोजन

उत्तरः (क) आत्मीकरण, समायोजन, अनुकूलन

———————————————————————————————————————

प्रश्न. 282 . पियाजे के संज्ञानात्मक विकास चरणों में से कौन एक सही नही है।

(क) पूर्वज्ञान

(ख) नये पदार्थ का आत्मीकरण

(ग) समायोजन

(घ) साम्यधारणा

उत्तरः (क) पूर्वज्ञान

———————————————————————————————————————

प्रश्न. 283 . मैडम मान्टेसरी ने अधिगम परिवेश में सर्वाधिक बल किस पर दिया है–

(क) संवेगों के संशोधन पर

(ख) ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग पर

(ग) बच्चे को पूर्ण स्वायतत्ता देने पर

(घ) विद्यालय को घर का विकल्प बनाने पर

उत्तर (ख) ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग पर

————————————————————————————————————

प्रश्न. 284 . पियाजे के अनुसार मूर्त संक्रियाओं का स्तर किस अवधि में घटित होता है।

(क) जन्म से 2 वर्ष

(ख) 2–7 वर्ष

(ग) 7–11 वर्ष

(घ) 11–15 वर्ष

उत्तरः (ग) 7–11 वर्ष

————————————————————————————————————

प्रश्न. 285 . किसी बालक के मानसिक रूप से अस्वस्थ होने का कारण है–

(क) परिवार का वातावरण

(ख) कक्षा का वातावरण

(ग) पास–पड़ोस का वातावरण

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी

————————————————————————————————————

प्रश्न. .286 . छात्र की प्रयोगात्मक दक्षता के आकलन का यथोचित रूप है।

(क) साक्षात्कार

(ख) अवलोकन

(ग) प्रश्नावली

(घ) लिखित परीक्षा

उत्तरः (ख) अवलोकन

————————————————————————————————

प्रश्न. 287 . रमेश और अंकित की समान बुद्धि लब्धि 120 है। रमेश अंकित से दो वर्ष छोटा है। यदि अंकित की आयु 12 वर्ष हो, तो रमेश की मानसिक आयु होगी।

(क) 9 वर्ष

(ख) 10 वर्ष

(ग) 12 वर्ष

(घ) 14 वर्ष

उत्तरः (ग) 12 वर्ष

————————————————————————————————

प्रश्न. 288 . सीखने की परिघटना में से कौन आवश्यक घटक नही है।

(क) अधिगमकर्त्ता

(ख) आंतरिक व्यवस्था

(ग) प्रेरक

(घ) शिक्षक

उत्तरः (घ) शिक्षक

————————————————————————————————

प्रश्न. 289 . निम्नलिखित में से कौन–सा सिद्धांत यह दर्शाता है कि आपेक्षित व्यवहार के सन्निकट सकारात्मक प्रतिक्रिया तथा पुनर्बलन के फलस्वरूप व्यवहारात्मक विकास किया जा सकता है।

(क) शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत

(ख) वाध अनुबंधन

(ग) ऑपरेंट अनुबंधन

(घ) सामाजिक अनुबंधन

उत्तरः (ग) ऑपरेंट अनुबंधन

———————————————————————————————

प्रश्न. 290 . माता पिता से वंशजों में स्थान्तरित होने वाले लक्षणों को कहा जाता है।

(क) पर्यावरण

(ख) जीन

(ग) आनुवांशिकता

(घ) होम्योस्टैसिस

उत्तरः (ग) आनुवांशिकता

———————————————————————————————

प्रश्न. .291 . बुद्धि का कौन सा सिद्धांत सामान्य बुद्धि G और विशिष्ट बुद्धि S की उपस्थिति का समर्थन करता है।

(क) नियम प्रतिकूल सिद्धांत

(ख) गिलफोर्ड के बुद्धि का सिद्धांत

(ग) स्पीयरमैन का द्विखंड सिद्धांत

(घ) वर्नोन का पदानुक्रम का सिद्धांत

उत्तरः (ग) स्पीयरमैन का द्विखंड सिद्धांत

———————————————————————————————

प्रश्न. 292 . व्यक्तित्व स्थायी समायोजन है

(क) पर्यावरण के साथ

(ख) जीवन के साथ

(ग) प्रकृति के साथ

(घ)ये सभी

उत्तरः (घ)ये सभी

———————————————————————————————————

प्रश्न. 293 . शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है।

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) वृद्धावस्था

उत्तरः (ख) बाल्यावस्था

———————————————————————————————————

प्रश्न. .294 . शैशवावस्था की मुख्य विशेषता नही है।

(क) सीखने की प्रकिया में तीव्रता

(ख) जिज्ञासा की प्रवृति

(ग) चिन्तन प्रक्रिया

(घ) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया

उत्तरः (ग) चिन्तन प्रक्रिया

———————————————————————————————————

प्रश्न. .295 . किसी विद्यार्थी कि सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है।

(क) उत्तरःदायित्व

(ख) ईमानदारी

(ग) सहभागिता

(घ) आज्ञाकारिता

उत्तरः (घ) आज्ञाकारिता

प्रश्न. .296 . निम्न में से किस स्तर के बच्चे अपने समकक्षी वर्ग के सक्रिय सदस्य बन जाते है।

(क) किशोरावस्था

(ख) वयस्कावस्था

(ग) प्राक् वाल्यावस्था

(घ) वाल्यावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था

प्रश्न. .297. विकास शुरू होता है।

(क) उत्तरःबाल्यावस्था से

(ख) प्रसवपूर्ण अवस्था से

(ग) शैशवावस्था से

(घ) पूर्व बाल्यावस्था से

उत्तरः (ख) प्रसवपूर्ण अवस्था से

प्रश्न. 298 .पियाजे के अधिगम के संज्ञानात्मक सिद्धांत के अनुसार, वह प्रक्रिया जिसके द्वारा संज्ञानात्मक संरचना को संशोधित किया जाता है .... कहलाती है।

(क) प्रत्यक्षण

(ख) समायोजन

(ग) समावेशन

(घ) स्कीमा

डत्तरः (ग) समावेशन

———————————————————————————————

प्रश्न. .299 . कोहलबर्ग के अनुसार सही और गलत के बारे में निर्णय लेने में शामिल चिंतन प्रक्रिया को कहा जाता है।

(क) सहयोग की नैतिकता

(ख) नैतिक तर्कणा

(ग) नैतिक यथार्थवाद

(घ) नैतिक दुविधा

डत्तरः (ख) नैतिक तर्कणा

———————————————————————————————

प्रश्न. 300 . शिक्षक को यह सलाह दी जाती है कि वे उपने शिक्षार्थियों को सामूहिक गतिविधियों में शामिल करें, क्योंकि सीखने को सुगम बनाने के अतिरिक्त, ये.................. में भी सहायता करती है।

(क) दुश्चिंता

(ख) समाजीकरण

(ग) मूल्य द्वंदव्

(घ) आक्रामकता

डत्तरः (ख) समाजीकरण

———————————————————————————————

प्रश्न. 301. निम्नलिखित में से .... कें अतिरिक्त सभी वातावरणीय कारक विकास को आकार देते है।

(क) पौष्टिक की गुणवत्ता

(ख) संस्कृति

(ग) शिक्षा की गुणवत्ता

(घ) शारीरिक गठन

उत्तरः (घ) शारीरिक गठन

प्रश्न. 302 . उत्तरः बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगता है।

(क) द्रव्यमान

(ख) द्रव्यमान और संख्या

(ग) संख्या

(घ) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

उत्तरः .(घ) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

प्रश्न. .303 . विकास के परिप्रेक्ष्य में समय के साथ होने वाले परिवर्तनों में निम्न में क्या शामिल है।

(क) रूप

(ख) दर

(ग) अनुक्रम

(घ)ये सभी

उत्तरः (घ)ये सभी

———————————————————————————————————————

प्रश्न. .304 . 'खिलौनों की आयु कहा जाता है।'

(क) पूर्व बाल्यावस्था को

(ख) उत्तरः बाल्यावस्था को

(ग) शैशवावस्था को

(घ)ये सभी

उत्तरः (क) पूर्व बाल्यावस्था को

———————————————————————————————————————

प्रश्न. .305 . संवेदी पेशीय अवस्था होती है।

(क) 0–2 वर्ष तक

(ख) 2–7 वर्ष तक

(ग) 7–12 वर्ष तक

(घ) 12 से अधिक

उत्तरः (क) 0–2 वर्ष तक

———————————————————————————————————————

प्रश्न. .306 . बच्चे के संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहॉ परिभाषित किया जा सकता है।

(क) खेल के मैदान में

(ख) विद्यालय एवं कक्षा में

(ग) गृह में

(घ) ऑडिटोरियम में

उत्तरः (ख) विद्यालय एवं कक्षा में

प्रश्न. .307 . निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नही है।

(क) सामाजिक संचरण

(ख) अनुभव

(ग) संतुलीकरण

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (क) सामाजिक संचरण

प्रश्न. .308 . निम्नलिखित मे से किस अवस्था मे बच्चे अपने समवयस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते है।

(क) किशोरावस्था

(ख) प्रौढ़ावस्था

(ग) पूर्व बाल्यावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था

प्रश्न. .309 . ''विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है'' यह विचार किससे संबंधित है।

(क) अंन्तःसंबंध का सिद्धांत

(ख) निरन्तरता का सिद्धांत

(ग) एकीकरण का सिद्धांत

(घ) अंतःक्रिया का सिद्धांत

उत्तरः (ख) निरन्तरता का सिद्धांत

————————————————————————————

प्रश्न. .310 . बच्चों में बौद्धिक विकास की चार विशिष्ट अवस्थाओं की पहचान की गई।

(क) कोहलबर्ग द्वारा

(ख) एरिक्सन द्वारा

(ग) स्किनर द्वारा

(घ) पियाजे द्वारा

उत्तरः (घ) पियाजे द्वारा

————————————————————————————

प्रश्न. 311 . पियाजे के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सी अवस्था है जिसमें बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है।

(क) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(ख) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

(ग) संवेदी प्रेरक अवस्था

(घ) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

उत्तरः (ख) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

————————————————————————————

प्रश्न. .312 . निम्न कक्षाओं में खेलविधि आधारित है।

(क) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धांत पर

(ख) शिक्षण की विधियों पर आधारित

(ग) विकास एवं बृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर

(घ) शिक्षण के सामाजिक सिद्धांतो पर

डत्तरः (ग) विकास एवं बृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर

————————————————————————————————

प्रश्न. 313. वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओं व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है।

(क) संवेदी–प्रेरक अवस्था

(ख) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

(ग) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

(घ) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

डत्तरः (घ) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

————————————————————————————————

प्रश्न. .314. निम्न में से क्या बच्चों के सृजनात्मकता के विकास में सहायक नही है।

(क) खेल

(ख) भाषण

(ग) कहानी लेखन

(घ) निर्माण संबंधी कियाएॅ

डत्तरः (घ) निर्माण संबंधी कियाएॅ

————————————————————————————————

प्रश्न. 315. बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है। यह अवस्था है।

(क) 7 से 12 वर्ष तक

(ख) 12 से वयस्क तक

(ग) 2 से 7 वर्ष तक

(घ) जन्म से 2 वर्ष तक

उत्तरः (क) 7 से 12 वर्ष तक

———————————————————————————————

प्रश्न. 316. एक 13 वर्षीय बालक बात–बात में अपने बड़ों से झगड़ा करने लगता है और हमेशा स्वयं को सही साबित करने की कोशिश करता है वह विकास की कौन सी अवस्था है।

(क) किशोरावस्था

(ख) प्रारंभिक बाल्यावस्था

(ग) युवावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था

———————————————————————————————

प्रश्न. .317. निम्न में से कौन सी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नही है।

(क) दल/समूह में रहने की अवस्था

(ख) अनुकरण करने की अवस्था

(ग) समूह में रहने की अवस्था

(घ) खेलने की अवस्था

उत्तरः .(घ) खेलने की अवस्था

———————————————————————————————

प्रश्न. .318. वह विचारात्मक प्रक्रिया जिसमें नूतन, वास्तविक तथा उपयोगी अवधारणाओं का प्रस्तुतीकरण निहित हो, कही जाती है।

(क) रचनात्मकता

(ख) अभिनव

(ग) बुद्धिमत्ता

(घ) नवविचार

उत्तरः (क) रचनात्मकता

———————————————————————————

प्रश्न. .319. पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के किस चरण पर बच्चा 'वस्तु स्थायित्व' को प्रदर्शित करता है।

(क) मूर्त संक्रियात्मक चरण

(ख) औपचारिक संक्रियात्मक चरण

(ग) संवेदीप्रेरक चरण

(घ) पूर्व संक्रियात्मक चरण

उत्तरः (घ) पूर्व संक्रियात्मक चरण

———————————————————————————

प्रश्न..320. एक अच्छी पाठ्य पुस्तक बचाती है।

(क) लैंगिक समानता

(ख) सामाजिक उत्तरःदायित्व

(ग) लैंगिक पूर्वाग्रह

(घ) लैंगिक संवेदनशीलता

उत्तरः (ग) लैंगिक पूर्वाग्रह

———————————————————————————

प्रश्न 321. सीमा हर पाठ को बहुत जल्दी सीख लेती है जबकि लीना उसे सीखने में ज्यादा समय लेती है। यह विकास के .... सिद्धांत को दर्शाता है।

(क) वैयक्तिक सिद्धांत

(ख) अंतःसंबंध

(ग) निरंतरता

(घ) सामान्य से विशिष्ट की ओर

उत्तरः (क) वैयक्तिक सिद्धांत

———————————————————————————————

प्रश्न 322. एक व्यक्ति अपने समकक्ष व्यक्तियों के समूह के प्रति आक्रामक व्यवहार करता है और विद्यालय के मानदंडों को नही मानता। इस विद्यार्थी को .... में सहायता की आवश्यकता है।

(क) भावात्मक क्षेत्र

(ख) उच्चस्तरीय चिंतन कौशल

(ग) संज्ञानात्मक क्षेत्र

(घ) मनोगत्यात्मक क्षेत्र

उत्तरः (क) भावात्मक क्षेत्र

———————————————————————————————

प्रश्न 323. बहुविध बुद्धि सिद्धांत के अनुसार सभी प्रकार के पशुओं, खनिजों और पेड़–पौधों को पहचाने और वर्गीकृत करने की योग्यता .... कहलाती है।

(क) संज्ञानात्मक गतिविधि

(ख) मनोगतिक प्रक्रिया

(ग) मनोवैज्ञानिक परिघटना

(घ) भावनात्मक व्यवहार

उत्तरः (क) संज्ञानात्मक गतिविधि

प्रश्न .324. मानवीय मूल्यों, जो प्रकृति में सार्वत्रिक हैं, के विकास का अर्थ है–

(क) मतारोपण

(ख) अंगीकरण

(ग) अनुकरण

(घ) अभिव्यक्ति

उत्तरः (घ) अभिव्यक्ति

प्रश्न .325. जब एक विद्यार्थी असफल होता है तो समझा जाता है कि–

(क) पद्धति असफल है।

(ख) शिक्षक असफल है।

(ग) पाठ्य पुस्तकें असफल है।

(घ)यह वैयक्तिक असफलता है।

उत्तरः (घ)यह वैयक्तिक असफलता है।

प्रश्न 326. मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृति 'जिज्ञासा' का संबंध कौन संवेग से है।

(क) भय

(ख) घृणा

(ग) आश्चर्य

(घ) भूख

उत्तरः (ग) आश्चर्य

———————————————————————————————

प्रश्न .327. दूसरे वर्ष के अंत तक शिशु का शब्द भंडार हो जाता है।

(क) 100 शब्द

(ख) 60 शब्द

(ग) 50 शब्द

(घ) 10 शब्द

उत्तरः (क) 100 शब्द

———————————————————————————————

प्रश्न .328. प्रतिबिंब, अवधारणा, प्रतीक एवं संकेत, भाषा, शारीरिक क्रिया और मानसिक क्रिया अंतर्निहित है—

(क) अनुकूलन

(ख) प्रेरक पेशी विकास

(ग) समस्या समाधान

(घ) विचारात्मक प्रक्रिया

उत्तरः (घ) विचारात्मक प्रक्रिया

———————————————————————————————

प्रश्न 129. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा माता–पिता यह अनुमान लगाते हैं कि उनके बच्चें में सभी सकारात्मक गुण हैं क्योंकि एक गुण सकारात्मक है, कहलाता है।

(क) परिवेश का प्रभाव

(ख) हावथोर्न का प्रभाव

(ग) प्रभाव का नियम

(घ) प्रतिलोम परिवेश का नियम

उत्तरः (क) परिवेश का प्रभाव

प्रश्न .330 निम्नलिखित में से कौन सा असतत चर का उदाहरण नही है।

(क) आयु

(ख) लिंग

(ग) वैवाहिक

(घ) आवासीय स्थान

उत्तरः (क) आयु

प्रश्न 331. कक्षा नायक द्वारा प्रयुक्त मूल्यांकन का प्रकार अनुदेशन के समय सीखने के विकास में किया जाता है, कहलाता है–

(क) नैदानिक मूल्यांकन

(ख) फॉर्मेटिव मूल्यांकन

(ग) प्लेसमेंट मूल्यांकन

(घ) संकलित मूल्यांकन

उत्तरः (ख) फॉर्मेटिव मूल्यांकन

प्रश्न 332. निम्नलिखित में से कौन सी संस्था सामाजिक परम्पराओं के हस्तांतरण में सबसे अधिक योगदान करती है।

(क) परिवार

(ख) विद्यालय

(ग) पड़ोस

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (क) परिवार

———————————————————————————

प्रश्न 333. बालक में अपराधी प्रवृत्ति के विकसित होने का मुख्य कारण है।

(क) परिवार का वातावरण

(ख) अनुशासनहीनता

(ग) आर्थिक अभाव

(घ) दोषपूर्ण पाठ्यक्रम

उत्तरः (क) परिवार का वातावरण

———————————————————————————

प्रश्न .334. आत्म सम्मान की भावना का लक्षण ....प्रकट करती है।

(क) बाल्यावस्था

(ख) शैशवावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ग) किशोरावस्था

———————————————————————————

प्रश्न .335. बालक में तर्क की क्षमता विकसित करने के लिये आप क्या करेंगे –

(क) सूचना खोजी प्रश्न पूछेंगें

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

(ख) प्रस्तुत पाठ पर पुनरावृत्ति के प्रश्न पूछेंगे

(ग) संधर्भ बदलते हुए प्रश्न पूछेंगे

(घ) पूर्वज्ञान पर प्रश्न पूछेंगे

उत्तरः (ग) संधर्भ बदलते हुए प्रश्न पूछेंगे

———————————————————————————————————

प्रश्न 336. बालकों में संज्ञान विकास की भिन्नता होती है, क्योंकि –

(क) उनमें अन्तरंग योग्यताएँ भिन्न भिन्न होती है।

(ख) प्रशिक्षण के अवसरों की भिन्नता होती है।

(ग) प्राकृतिक पर्यावरण का भिन्न अनुभव

(घ) आयु व स्वास्थ्य में असमानता

उत्तरः (क) उनमें अन्तरंग योग्यताएँ भिन्न भिन्न होती है।

———————————————————————————————————

प्रश्न 337. मनोविज्ञान में सामाजिक विकास से क्या अभिप्राय है–

(क) समाज में प्रतिष्ठित स्थान बनाना

(ख) दूसरों के साथ अच्छें संबंधों का विकास

(ग) सामाजिक समूह बनाना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (ख) दूसरों के साथ अच्छें संबंधों का विकास

———————————————————————————————————

प्रश्न 338. छात्र का वह सोपान जबकि यह सर्वाधिक रूप से संवेगों से घिरा रहता है–

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यकाल

(ग) प्रौढकाल

(घ) किशोरावस्था

उत्तरः (घ) किशोरावस्था

प्रश्न .339. बालकों का सर्वाधिक उचित काल कौन सा होता है, जब वे विस्फोट और तनाव में होते है।

(क) किशोरावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) शैशवावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था

प्रश्न .340. निम्न में से किसने बच्चों में वस्तु स्थैतर्य के विकास को समझने में सहायता की –

(क) पियाजे

(ख) फस्टिंगर

(ग) एरिक्सन

(घ) बैलाक

उत्तरः (क) पियाजे

प्रश्न .341. कौन सी विधि उपागम में समान प्रयोज्यों का मापन उनके विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर लिया जाता है।

(क) जीवन लेखन विधि

(ख) समकालीन अध्ययन विधि

(ग) दीर्घकालीन अध्ययन विधि

(घ) समाजमिति

उत्तरः (ग) दीर्घकालीन अध्ययन विधि

——————————————————————————

प्रश्न .342. पियाजे के अनुसार एक आठ वर्ष का बालक कर सकता है–

(क) संरक्षणात्मक समस्यायें सीखना

(ख) अमूर्त नियम निर्मित कर समस्या हल करना

(ग) समस्या पर परिकल्पनात्मक रूप से सोचना

(घ) उच्चस्तरीय समस्या का हल करना

उत्तरः (क) संरक्षणात्मक समस्यायें सीखना

——————————————————————————

प्रश्न 343. कौन से सिद्धांत में बाल्यकाल के अनुभव के विकासात्मक आयाम पर बल दिया गया है–

(क) व्यवहारवाद

(ख) प्रकार्यवाद

(ग) मनोविश्लेषणवाद

(घ) संरचनावाद

उत्तरः (ग) मनोविश्लेषणवाद

——————————————————————————

प्रश्न .344. प्राथमिक आवश्यकताओं को .... आवश्यकता से भी जाना जाता है–

(क) मनोवैज्ञानिक

(ख) दैहिक

(ग) समाजिक

(घ) मनो सामाजिक

उत्तरः (ख) दैहिक

————————————————————————————

प्रश्न .345 . माता की आवाज का नवजात के व्यवहार पर प्रभाव का प्रभाव का प्रयोग किसने किया –

(क) टरमन

(ख) मॉन्टेसरी

(ग) सेगूइन

(घ) बर्क

उत्तरः (क) टरमन

————————————————————————————

प्रश्न .346 . बालक विकासका जीन पियाजे के सिद्धांत का आधार है–

(क) मनोविश्लेषण विकास

(ख) नैतिक विकास

(ग) मनोसामाजिक विकास

(घ) संज्ञानात्मक विकास

उत्तरः (घ) संज्ञानात्मक विकास

————————————————————————————

प्रश्न 347 . प्रत्याक्षात्मक व संवेगीक गतिक गामक दक्षता परीक्षण हेतु आरंभ में किसने विधि का निर्माण किया –

(क) मोन्टेसरी

(ख) मारिया

(ग) इडोअर्ड

(घ) बिनेट

उत्तरः (क) मोन्टेसरी

———————————————————————————————

प्रश्न .348. पियाजे के अनुसार बच्चा अमूर्त स्तर पर चिंतन, बौद्धिक क्रियाएँ और समस्या समाधान किस अवस्था में करने लगता है।

(क) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था

(ख) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था

(ग) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

(घ) संवेदी पेशीय अवस्था

उत्तरः (ग) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था

———————————————————————————————

प्रश्न 349. सामाजिक आर्थिक मुद्दों में जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को .... सहायता करता है।

(क) स्व अधिगम मॉडल

(ख) विभेदित निर्देश

(ग) पाठ्य चर्या का विस्तार

(घ) संज्ञानात्मक वर्गीकरण

उत्तरः . (क) स्व अधिगम मॉडल

प्रश्न 350 . एक बालक जिसकी बुद्धि लब्धि 105 है उसे वर्गीकृत किया जायेगा

(क) श्रेष्ठ बुद्धि

(ख) सामान्य से अधिक बुद्धि

(ग) सामान्य बुद्धि

(घ) मंद बुद्धि

उत्तरः (ग) सामान्य बुद्धि

प्रश्न .351. शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करते है। यह कथन किसका है।

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) स्किनर

(ग) पेस्टॉलॉजी

(घ) रविंन्द्रनाथ टैगोर

उत्तरः (क) स्वामी विवेकानंद

प्रश्न .352. मानव विकास कुछ विशेष सिद्धांतों पर आधारित है। निम्नलिखित में से कौन सा मानव विकास का सिद्धांत नही है।

(क) आनुक्रमिकता

(ख) सामान्य से विशिष्ट

(ग) प्रतिवर्ती

(घ) निरंतरता

उत्तरः (ग) प्रतिवर्ती

प्रश्न .353 . अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से .... का हिस्सा है।

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संज्ञानात्मक विकास

उत्तरः (क) बौद्धिक विकास

प्रश्न .354. आनुवांशिकता को .... सामाजिक संरचना माना जाता है।

(क) गौण

(ख) गत्यात्मक

(ग) स्थिर

(घ) प्राथमिक

उत्तर (ग) स्थिर

प्रश्न .355 . निम्नलिखित में से कौन सा रचनात्मक आकलन के लिए उपकरण नही है।

(क) मौखिक प्रश्न

(ख) सत्र परीक्षा

(ग) प्रश्नौत्तरी और खेल

(घ) दत्त कार्य

उत्तरः (घ) दत्त कार्य

प्रश्न .356 . ''पुरूष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते है।'' यह कथन –

(क) सही हो सकता है।

(ख) लैंगिक पूर्वाग्रह प्रदर्शित करता है।

(ग) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है।

(घ) सही है।

उत्तरः (ख) लैंगिक पूर्वाग्रह प्रदर्शित करता है।

प्रश्न .357. रक्षातंत्र बहुत सहायता करता है।

(क) हिंसा से निपटने में

(ख) दबाव से निपटने में

(ग) थकान से निपटने में

(घ) अजनबियों से निपटने में

उत्तरः (ख) दबाव से निपटने में

प्रश्न .358. किसकी क्रियाशीलता का संबंध मनुष्य की पाचन क्रिया से भी होता है।

(क) जनन ग्रंथियॉं

(ख) एड्रीनल ग्रंथि

(ग) गल ग्रंथि

(घ) अभिवृक्क ग्रंथि

उत्तरः (घ) अभिवृक्क ग्रंथि

———————————————————————————

प्रश्न 359. बाल विकास को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक है—

(क) यौन शिक्षा

(ख) बुद्धि परीक्षण

(ग) खेलकूद का मैदान

(घ) सुन्दर विद्यालय भवन

उत्तरः (ग) खेलकूद का मैदान

———————————————————————————

प्रश्न .360 . निम्नांकित में से खेल पर आधारित विधि है।

(क) समस्या समाधान विधि

(ख) वाद—विवाद विधि

(ग) व्याख्यान विधि

(घ) किण्डर गार्टन विधि

उत्तरः (घ) किण्डर गार्टन विधि

———————————————————————————

प्रश्न .361 . प्राकृतिक चयन के सिद्धांत का संबंध है।

(क) सुकरात से

(ख) प्लेटो से

(ग) डार्विन से

(घ)रूसों से

उत्तरः (ग) डार्विन से

प्रश्न 362. अब शिक्षा हो गई है।

(क) शिक्षक केन्द्रित

(ख) विद्यालय केन्द्रित

(ग) मित्र केन्द्रित

(घ) बाल केन्द्रित

उत्तरः (घ) बाल केन्द्रित

प्रश्न .363 . बालक के सामाजिकरण का प्रथम घटक है।

(क) परिवार

(ख) विद्यालय

(ग) राजनैतिक दल

(घ) क्रीडा स्थल

उत्तरः (क) परिवार

प्रश्न .364. संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है–

(क) क्रोध तथा भय

(ख) उत्तेजना या भावों में उथल पुथल

(ग) स्नेह एवं प्रेम

(घ) वातावरण में समायोजन

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योतिः

डत्तर (ख) उत्तेजना या भावों में उथल पुथल

———————————————————————————————

प्रश्न .365. भाषा विकास के क्रम में अंतिम क्रम है—

(क) ध्वनि पहचानना

(ख) ध्वनि उच्चारण

(ग) शब्दोच्चारण

(घ) भाषा विकास की पूर्णावस्था

डत्तरः (घ) भाषा विकास की पूर्णावस्था

———————————————————————————————

प्रश्न 366. जिन इच्छाओं की पूर्ति नही होती, उनमें से भंडारगृह किसका है।

(क) इदम्

(ख) अहम्

(ग) परम् अहम्

(घ) इदम् एवं अहम्

डत्तरः (क) इदम्

———————————————————————————————

प्रश्न .367. शैक्षिक दृष्टि से बाल विकास की अवस्थाएँ है—

(क) किशोरावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) शैशवावस्था

(घ) उपरोक्त तीनों

उत्तरः (घ) उपरोक्त तीनों

———————————————————————————————

प्रश्न .368 . psychology from the standpoint of behaviourist किसकी रचना है।

(क) वाल्टर हण्ठर की

(ख) वाटसन की

(ग) कार्ल लैथले की

(घ) टोलमैन की

उत्तरः (ख) वाटसन की

———————————————————————————————

प्रश्न .369. अधिगम का पुनरावृत्ति का सिद्धांत दिया है।

(क) शिलर ने

(ख) कैम्स ने

(ग) पैट्रिक पावलाव ने

(घ) स्टेनली हॉल ने

उत्तरः (ग) पैट्रिक पावलाव ने

———————————————————————————————

प्रश्न .370 . बालविकास का अर्थ है।

(क) व्यवहार में परिवर्तन

(ख) बालक का गुणात्मक परिमाणात्मक परिवर्तन

(ग) बालक का गुणात्मक विकास

(घ) व्यक्तित्व में परिवर्तन

उत्तरः (ख) बालक का गुणात्मक परिमाणात्मक परिवर्तन

प्रश्न .371. निम्न में से जो मनोवैज्ञानिक नही है–

(क) क्रोगमैन

(ख) सोरेंसन

(ग) हरलॉक

(घ) सुकरात

उत्तरः (घ) सुकरात

प्रश्न .372 . संवेगात्मक स्थिरता का लक्षण है–

(क) झगड़ालू

(ख) विनोदी

(ग) समायोजित

(घ) भीरू

उत्तरः (ग) समायोजित

प्रश्न .373 . गिलफोर्ड ने 'अभिसारी चिंतन' पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया जाता है।

(क) बुद्धि

(ख) सृजनात्मकता

(ग) बुद्धि एवं सृजनात्मकता

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ख) सृजनात्मकता

———————————————————————————————

प्रश्न .374. समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है।

(क) प्रतिभाशाली बालकों की

(ख) सामान्य बालको की

(ग) सृजनशील बालकों की

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग) सृजनशील बालकों की

———————————————————————————————

प्रश्न 375. मानव विकास किन दोनों योगदान का परिणाम है।

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का।

(ख) सामाजिक सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

(घ) उपरोक्त में से कोई नही।

उत्तरः (ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

———————————————————————————————

प्रश्न.376 . ... के अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टर्नबर्ग के त्रितंत्र सिद्धांत में संबोधित किया गया है।

(क) संदर्भगत

(ख) अवयवभूत

(ग) सामाजिक

(घ) आनुभाविक

उत्तरः (ग) सामाजिक

———————————————————————————

प्रश्न .377 . जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव से, को कहा जाता है।

(क) सामाजिक अधिगम

(ख) अनुबंधन

(ग) प्रायोगिक अधिगम

(घ) आकस्मिक अधिगम

उत्तरः (क) सामाजिक अधिगम

———————————————————————————

प्रश्न .378. पियाजे मुख्यतः .... के योगदान के लिए जाने जाते है।

(क) भाषा विकास

(ख) संज्ञानात्मक विकास

(ग) नैतिक विकास

(घ) सामाजिक विकास

उत्तरः (ख) संज्ञानात्मक विकास

———————————————————————————

प्रश्न .379. निम्नलिखित में से किस समूह के बालकों को समायोजन की समस्या होती है।

(क) औसत बुद्धि वाले

(ख) ग्रामीण बुद्धि वाले

(ग) अध्ययनशील बालक

(घ) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे

उत्तरः (घ) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे

प्रश्न .380. बुद्धि एवं सृजनात्मकता में किस प्रकार का सह–संबंध पाया जाता है।

(क) धनात्मक

(ख) ऋणात्मक

(ग) शून्य

(घ)ये सभी

उत्तरः (क) धनात्मक

प्रश्न .381. स्व–केन्द्रित अवस्था होती है बालक के–

(क) जन्म से 2 वर्ष तक

(ख) 3 से 6 वर्ष तक

(ग) 7 वर्ष से किशोरावस्था तक

(घ) किशोरावस्था में

उत्तरः (ख) 3 से 6 वर्ष तक

प्रश्न 382 . निम्नांकित अवस्था में प्रायः बालकों का आकर्षण समलिंगी के प्रति होता है।

(क) प्रौढ़ावस्था में

(ख) शैशवावस्था में

(ग) बाल्यावस्था में

(घ) किशोरावस्था में

उत्तरः (ग) बाल्यावस्था में

प्रश्न 383. किस आयु में बालक में समय दिन, दिनांक एवं क्षेत्रफल संबंधित अवबोध हो जाता है।

(क) 16 वर्ष

(ख) 9 वर्ष

(ग) 11 वर्ष

(घ) 6 वर्ष

उत्तरः (ख) 9 वर्ष

प्रश्न .384. किस वैज्ञानिक ने माना है कि उचित वातावरण से बुद्धिलब्धि में बृद्धि होती है।

(क) मेंडल

(ख) कूले

(ग) स्टीफन्स

(घ) क्लार्क

उत्तरः .(ग) स्टीफन्स

प्रश्न 385. किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता नही है।

(क) संवेगों का आधिक्य

(ख) संग्रह की प्रवृत्ति

(ग) कल्पना की बहश्ंिलता

(घ) समायोजन का अभाव

उत्तरः (ख) संग्रह की प्रवृत्ति

———————————————————————————————————

प्रश्न 386. बालक का समाजिकृत निम्नलिखित तकनीकी से निर्धारित होता है।

(क) साक्षात्कार तकनीक

(ख) समाजमिति तकनीक

(ग) निरीक्षण तकनीक

(घ) जीवनवृत अध्यन तकनीक

उत्तरः (ख) समाजमिति तकनीक

———————————————————————————————————

प्रश्न 387. बालक बालिकाऍं अपने जीवन में किसी अन्य को आदर्श के रूप में स्वीकार करते है, किस अवस्था में –

(क) किशोरावस्था में

(ख) बाल्यावस्था में

(ग) शैशवावस्था में

(घ) सभी में

उत्तरः (क) किशोरावस्था में

प्रश्न .388. सृजनशील बालकों का लक्षण है।

(क) समस्या के प्रति सजगता का अभाव

(ख) गतिशील चिंतन का अभाव

(ग) जिज्ञासा

(घ) अनमनीयता

उत्तरः (ग) जिज्ञासा

प्रश्न 389. बालक के विकास में महत्व है।

(क) वंशक्रम का

(ख) वातावरण का

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण

(घ) भोजन का

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण

प्रश्न .390. जन्म के समय बालक का भार होता है।

(क) 6–8 पौण्ड

(ख) 10–11 पौण्ड

(ग) 2 पौण्ड

(घ) 3 पौण्ड

उत्तरः (क) 6–8 पौण्ड

———————————————————————————————————

प्रश्न 391 . जीवन का सबसे कठिन काल है।

(क) बाल्यावस्था

(ख) शैशवावस्था

(ग) गर्भावस्था

(घ) किशोरावस्था

उत्तरः (घ) किशोरावस्था

———————————————————————————————————

प्रश्न 392. शैशवावस्था में किस ग्रंथि के प्रभाव के कारण बालिकाएँ अपने पिता के प्रति श्रृद्धा का भाव रखती है।

(क) इलेक्ट्रा

(ख) आडीपस

(ग) टेस्टेस्टेरॉन

(घ) प्रोजेस्टॉन

उत्तरः (क) इलेक्ट्रा

———————————————————————————————————

प्रश्न 393. विकास के संबंध में सही कथन है–

(क) विकास कुछ समय बाद रूक जाता है।

(ख) विकास बृद्धि सूचक होता है।

(ग) विकास सम्पूर्ण पक्षों में होने वाला परिवर्तन है।

(घ) विकास का संबंध बाह्य परिवर्तन से है।

उत्तरः (ग) विकास सम्पूर्ण पक्षों में होने वाला परिवर्तन है।

प्रश्न 394. पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी .... के प्रति कठोर होगें

(क) समस्या

(ख) जीवन–शैली

(ग) संप्रत्यय

(घ) वास्तविकता

उत्तरः (क) समस्या

प्रश्न 395. एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओं में से सर्वाधिक बढ़ावा देता है

(क) प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृति

(ख) परीक्षण करने की प्रवृति

(ग) स्मृति

(घ) अनुशासित स्वभाव

उत्तरः (क) प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृति

प्रश्न 396. सफल समावेशन को निम्नलिखित की आवश्यकता होती है सिवाय

(क) पृथक्करण

(ख) अभिभावको की भागीदारी

(ग) संवेदनशील बनाना

(घ) क्षमता संवर्द्धन

उत्तरः (क) पृथक्करण

प्रश्न 397. किशोर .... का अनुभव कर सकते है।

(क) बचपन के अपराधों के प्रति डर

(ख) आत्मसिद्धि का भाव

(ग) जीवन के बारे में परितृप्ति

(घ) दुश्चिंता और स्वयं से सरोकार

उत्तरः (घ) दुश्चिंता और स्वयं से सरोकार

प्रश्न 398. बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए।

(क) बोर्ड परीक्षा द्वारा

(ख) सतत एवं व्यापक द्वारा

(ग) लिखित एवं मौखिक द्वारा

(घ) गृह परीक्षा द्वारा

उत्तरः .(ख) सतत एवं व्यापक द्वारा

प्रश्न 399 . अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से हिस्सा है।

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संवेगात्मक विकास

डत्तरः (क) बौद्धिक विकास

———————————————————————————————

प्रश्न 400. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है।

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

(घ) इनमें से कोई नही

डत्तरः (ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

———————————————————————————————

प्रश्न 401– पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन–सी अवस्था है जिसमें बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है–

(क) मूर्त–संक्रियात्मक अवस्था (07–11 वर्ष)

(ख) औपचारिक–संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर)

(ग) संवेदी–प्रेरक अवस्था (जन्म से 02 वर्ष)

(घ) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (02–07 वर्ष)

डत्तरः (ख) औपचारिक–संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर) ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .402– "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है" यह विचार किससे संबंधित है–

(क) अंतः संबंध का सिद्धांत

(ख) निरंतरता का सिद्धांत

(ग) एकीकरण का सिद्धांत

(घ) अंतः क्रिया का सिद्धांत

उत्तरः —(ख) निरंतरता का सिद्धांत☑

———————————————————————————————————

प्रश्न 403— निम्न में से कौन—सा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है—

(क) अच्छी शिक्षा के व्यवहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों का शिक्षण

(ख) प्रत्येक शिक्षार्थी के अतंर्जात प्रतिभाओं का पोषण करना एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना

(ग) विद्यालयी जीवन के प्रारंभ में उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना

(घ) परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए विद्यार्थियों की कोचिंग करना

उत्तर (ख) प्रत्येक शिक्षार्थी के अतंर्जात प्रतिभाओं का पोषण करना एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना

———————————————————————————————————

प्रश्न 404— निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समव्यस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं—

(क) किशोरावस्था

(ख) प्रौढ़ावस्था

(ग) पूर्व बाल्यावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .405— निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है—

(क) सामाजिक संचरण

(ख) अनुभव

(ग) संतुलीकरण

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) सामाजिक संचरण☑

प्रश्न 406– विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन सा कथन सत्य नहीं है–

(क) विकास की प्रत्येक अवस्था में अपने खतरे हैं

(ख) विकास उकसाने या बढ़ावा देने से नहीं होता है

(ग) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है

(घ) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएं होती हैं

उत्तरः (ख) विकास उकसाने या बढ़ावा देने से नहीं होता है☑

प्रश्न .407– 'खिलौनों की आयु ' कहां जाता है–

(क) पूर्व–बाल्यावस्था को

(ख) उत्तर–बाल्यावस्था को

(ग) शैशवावस्था को

(घ)ये सभी

उत्तरः (क) पूर्व–बाल्यावस्था को☑

प्रश्न 408– व्यक्तित्व स्थाई समायोजन है–

(क) पर्यावरण के साथ

(ख) जीवन के साथ

(ग) प्रकृति के साथ

(घ)ये सभी

उत्तरः (घ)ये सभी☑

———————————————————————————————

प्रश्न .409— शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है—

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) वृद्धावस्था

उत्तरः (ख) बाल्यावस्था☑

———————————————————————————————

प्रश्न .410— शैशवावस्था की मुख्य विशेषता क्या नहीं है—

(क) सीखने की प्रक्रिया तीव्रता

(ख) जिज्ञासा की प्रवृत्ति

(ग) चिंतन प्रक्रिया

(घ) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति

उत्तरः (ग) चिंतन प्रक्रिया☑

———————————————————————————————

प्रश्न .411— किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, "विकास एक सतत और धीमी प्रक्रिया है—

(क) कोलेसनिक

(ख) पियाजे

(ग) स्किनर

(घ) हरलॉक

उत्तरः (ग) स्किनर ☑

प्रश्न .412— व्यक्तित्व विकास की अवस्था है—

(क) अधिगम एवं वृद्धि

(ख) व्यक्तिव्रत अध्ययन

(ग) उपचारात्मक अध्ययन

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) अधिगम एवं वृद्धि☑

प्रश्न .413— विकास में वृद्धि से तात्पर्य है—

(क) ज्ञान में वृद्धि

(ख) संवेग में वृद्धि

(ग) वजन में वृद्धि

(घ) आकार सोच—समझ कौशलों में वृद्धि

उत्तरः (घ) आकार सोच—समझ कौशलों में वृद्धि☑

प्रश्न .414— परिपक्वता का संबंध है—

(क) विकास

(ख) बुद्धि

(ग) रचनात्मकता

(घ) रुचि

उत्तरः (क) विकास ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .415– एक बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष है, तो उसकी बुद्धिलब्धि क्या होगी–

(क) 110

(ख) 100

(ग) 120

(घ) 83

उत्तरः (ग) 120 ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .416– शरीर के आकार में वृद्धि होती है, क्योंकि–

(क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

(ख) संवेगात्मक विकास

(ग) संज्ञानात्मक विकास

(घ) नैतिक विकास

उत्तरः (क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास ☑

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योतिः

प्रश्न 417– मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है–

(क) वंशानुक्रम

(ख) परिवार का वातावरण

(ग) परिवार की सामाजिक स्थिति

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (क) वंशानुक्रम ☑

प्रश्न 418– बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन सा कथन सर्वोत्तम है–

(क) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं

(ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है

(ग) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं

(घ) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं

उत्तरः (ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है☑

प्रश्न .419– एक बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन–सी है–

(क) मनोविश्लेषण विधि

(ख) तुलनात्मक विधि

(ग) विकासीय विधि

(घ) सांख्यिकी विधि

डत्तरः (ग) विकासीय विधि ☑

प्रश्न 420— मानव जाति में भी कौन—से वैयक्तिक विभिन्नता के निर्धारक तत्व होते हैं जो मानव जाति की विविधता को बताते हैं—

(क) पर्यावरण का अंतर

(ख) अनुवांशिकता का अंतर

(ग) आनुवंशिकता व पर्यावरण की अंतक्रिया

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

डत्तरः —(ग) आनुवंशिकता व पर्यावरण की अंतक्रिया ☑

प्रश्न 421— बुद्धि के संबंध में सही कथन क्या है—

(क) समायोजन करने की क्षमता का नाम बुद्धि है

(ख) सीखने की क्षमता का नाम बुद्धि है

(ग) संक्षिप्त तार्किकता की क्षमता का नाम बुद्धि है

(घ) उपरोक्त सभी

डत्तरः (घ) उपरोक्त सभी☑

प्रश्न 422— "मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है" यह किसने कहा है—

(क) बी एन झा

(ख) स्किनर

(ग) डेविस

(घ) वुडवर्थ

उत्तरः (ख) स्किनर☑

———————————————————————————————

प्रश्न 423— बुद्धिलब्धि मापन के जन्मदाता है—

(क) स्टर्न

(ख) बिने

(ग) टरमैन

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (ग) टरमैन ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 424— शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन सा माना जाता है—

(क) 1947

(ख) 1920

(ग) 1940

(घ) 1900

उत्तरः (घ) 1900 ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 425— गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते है—

(क) 150

(ख) 280

(ग) 390

(घ) 460

उत्तरः (ख) 280☑

—————————————————————————————

प्रश्न 426— नवजात शिशु का भार होता है—

(क) 6 पाउंड

(ख) 7 पाउंड

(ग) 8 पाउंड

(घ) 9 पाउंड

उत्तरः (ख) 7 पाउंड ☑

—————————————————————————————

प्रश्न .427— बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में माता—पिता को .... भूमिका निभानी चाहिए—

(क) नकारात्मक

(ख) अग्रोन्मुखी

(ग) सहानुभूतिपूर्ण

(घ) तटस्थ

उत्तरः (ख) अग्रोन्मुखी ☑

—————————————————————————————

प्रश्न 428— मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है—

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण का

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण का☑

प्रश्न 429– "बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समाज का सृजन करते हैं" इसका श्रेय किसको जाता है–

(क) पियाजे

(ख) पावलॉव

(ग) कोहलबर्ग

(घ) स्किनर

उत्तरः (क) पियाजे ☑

प्रश्न 430– अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से किसका हिस्सा है–

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संवेगात्मक विकास

उत्तरः (क) बौद्धिक विकास ☑

प्रश्न 431– निम्न में से कौन–सी पूर्व–बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है–

(क) दल या समूह में रहने की अवस्था

(ख) अनुकरण करने की अवस्था

(ग) प्रश्न करने की अवस्था

(घ) खेलने की अवस्था

उत्तरः (घ) खेलने की अवस्था ☑

प्रश्न .432– मूल्यांकन किया जाना चाहिए–

(क) मूल्यांकन से बच्चे पढ़ेंगे

(ख) इससे बच्चों की उपलब्धि का पता लगता है

(ग) बच्चों को सीखने के स्तर का ज्ञान होता है

(घ) शिक्षकों की उपलब्धि का पता लगता है

उत्तरः (ग) बच्चों को सीखने के स्तर का ज्ञान होता है ☑

प्रश्न 433– शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्न में से कौन–सा कथन सत्य है–

(क) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं

(ख) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है

(ग) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है

(घ) बच्चे यथावत वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है

उत्तरः (क) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं ☑

प्रश्न .434– बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिए सर्वोत्तम मार्ग है–

(क) उन्हें धार्मिक पुस्तक पढ़ाना

(ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना

(ग) उनका मूल्य शिक्षा पर मूल्यांकन करना

(घ) उन्हें प्रातः कालीन सभा में उपदेश देना

उत्तरः (ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना ☑

प्रश्न .435– मानसिक रूप से स्वस्थ अध्यापक की विशेषता क्या है–

(क) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित है

(ख) उसे अपने विषय का गहन ज्ञान है

(ग) वह अत्यधिक संवेदनशील है

(घ) वह सख्त अनुशासनपसंद करता है

उत्तरः (क) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित है ☑

प्रश्न 436– शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है–

(क) आजीविका कमाना

(ख) बच्चे का सर्वांगीण विकास

(ग) पढ़ना एवं लिखना सीखना

(घ) बौद्धिक विकास

उत्तरः (ख) बच्चे का सर्वांगीण विकास ☑

प्रश्न .437– दीक्षा द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए–

(क) शिक्षक द्वारा दीक्षा को चुप करा देना चाहिए

(ख) शिक्षक द्वारा दीक्षा का ध्यान बता देना चाहिए

(ग) शिक्षक को कहना चाहिए, मैं नहीं जानता हूं

(घ) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझ कर देना चाहिए

उत्तरः (घ) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझ कर देना चाहिए ☑

प्रश्न .438– आप अनपढ़ माता–पिता के बच्चों को अंग्रेजी सीखाना चाहते हैं–

(क) आप बच्चे से अंग्रेजी में बात करेंगे

(ख) आप बच्चों को अंग्रेजी में बोलने के लिए बाध्य करेंगे

(ग) आप बच्चे को मातृ–भाषा में बोलने से रोकेंगे

(घ) आप उसे मातृ–भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे

उत्तरः (घ) आप उसे मातृ–भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे ☑

प्रश्न 439– शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए–

(क) अध्यापन विषय का

(ख) बाल मनोविज्ञान का

(ग) शिक्षा संहिता का

(घ) अध्यापक विषय एवं बाल मनोविज्ञान का

उत्तरः (घ) अध्यापक विषय एवं बाल मनोविज्ञान का ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .440— गार्डनर ने सात बुद्धि का अधिमान निर्धारित किया इसमें से कौन सा नहीं है—

(क) स्थान संबंधी बुद्धि

(ख) भावनात्मक बुद्धि

(ग) अंतवैयक्तिक बुद्धि

(घ) भावात्मक बुद्धि

उत्तरः (ख) भावनात्मक बुद्धि ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .441— सहयोगात्मक रणनीति की किस श्रेणी में महिलाए निम्न में से संबंधित नहीं होती हैं—

(क) स्वीकार्यता

(ख) प्रतिरोध

(ग) क्रांति

(घ) अनुकूलन

उत्तरः (ख) प्रतिरोध ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 442— विद्यालय क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन—सा उपागम नहीं है—

(क) वार्तालाप कौशल

(ख) बहुविकल्पीय प्रश्न

(ग) परियोजना कार्य

(घ) मौखिक प्रश्न

उत्तरः (ख) बहुविकल्पीय प्रश्न ☑

प्रश्न .443— नैदानिक परीक्षा का मुख्य उद्देश है—

(क) कक्षा में प्रदर्शन के दौरान सामान्यतया कमजोर क्षेत्र को चिन्हित करना—

(ख) उपचारात्मक कार्यक्रम के विशेष प्रकृति की आवश्यकता

(ग) अकादमिक घटनाओं के कारणों का पता लगाना

(घ) छात्र की कठिनाइयों की विशेष प्रकृति को जानना

उत्तरः (ग) अकादमिक घटनाओं के कारणों का पता लगाना ☑

प्रश्न 444— प्रथक प्रथक समजातीय समूहों के व्यक्तियों के प्रति बच्चों की अभिवृत्ति साधारणतया आधारित होती है—

(क) उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति पर

(ख) उनमें समकक्षियों की अभिवृत्ति पर

(ग) दूरदर्शन के प्रभाव पर

(घ) उनके सहोदरो की अभिवृत्ति पर

उत्तरः (क) उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति पर ☑

प्रश्न 445— विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निम्न में से कौन—सा तरीका अधिक महत्वपूर्ण है—

(क) सहशैक्षिक क्रियाओं का प्रावधान

(ख) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

(ग) रुचियों की भिन्नता

(घ) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण

उत्तरः (घ) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 446 . ''पुरूष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते है।'' यह कथन –

(क) सही हो सकता है।

(ख) लैंगिक पूर्वाग्रह प्रदर्शित करता है।

(ग) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है।

(घ) सही है।

उत्तरः (ख) लैंगिक पूर्वाग्रह प्रदर्शित करता है।

———————————————————————————————

प्रश्न 447. रक्षातंत्र बहुत सहायता करता है।

(क) हिंसा से निपटने में

(ख) दबाव से निपटने में

(ग) थकान से निपटने में

(घ) अजनबियों से निपटने में

उत्तरः (ख) दबाव से निपटने में

———————————————————————————————

प्रश्न 448. किसकी क्रियाशीलता का संबंध मनुष्य की पाचन क्रिया से भी होता है।

(क) जनन ग्रंथियॉ

(ख) एड्रीनल ग्रंथि

(ग) गल ग्रंथि

(घ) अभिवृक्क ग्रंथि

उत्तरः (घ) अभिवृक्क ग्रंथि

———————————————————————————————————

प्रश्न .449. बाल विकास को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक है–

(क) यौन शिक्षा

(ख) बुद्धि परीक्षण

(ग) खेलकूद का मैदान

(घ) सुन्दर विद्यालय भवन

उत्तरः (ग) खेलकूद का मैदान

———————————————————————————————————

प्रश्न .450. निम्नांकित में से खेल पर आधारित विधि है।

(क) समस्या समाधान विधि

(ख) वाद–विवाद विधि

(ग) व्याख्यान विधि

(घ) किण्डर गार्टन विधि

उत्तरः (घ) किण्डर गार्टन विधि

———————————————————————————————————

प्रश्न 451. प्राकृतिक चयन के सिद्धांत का संबंध है।

(क) सुकरात से

(ख) प्लेटो से

(ग) डार्विन से

(घ)रूसों से

उत्तरः (ग) डार्विन से

———————————————————————————————

प्रश्न 452 . अब शिक्षा हो गई है।

(क) शिक्षक केन्द्रित

(ख) विद्यालय केन्द्रित

(ग) मित्र केन्द्रित

(घ) बाल केन्द्रित

उत्तरः (घ) बाल केन्द्रित

———————————————————————————————

प्रश्न 453. बालक के सामाजिकरण का प्रथम घटक है।

(क) परिवार

(ख) विद्यालय

(ग) राजनैतिक दल

(घ) क्रीडा स्थल

उत्तरः (क) परिवार

———————————————————————————————

प्रश्न 454 . संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है–

(क) क्रोध तथा भय

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

(ख) उत्तेजना या भावों में उथल पुथल

(ग) स्नेह एवं प्रेम

(घ) वातावरण में समायोजन

उत्तरः .(ख) उत्तेजना या भावों में उथल पुथल

————————————————————————————————

प्रश्न .455 . भाषा विकास के क्रम में अंतिम क्रम है–

(क) ध्वनि पहचानना

(ख) ध्वनि उच्चारण

(ग) शब्दोच्चारण

(घ) भाषा विकास की पूर्णावस्था

उत्तरः (घ) भाषा विकास की पूर्णावस्था

————————————————————————————————

प्रश्न 456 . जिन इच्छाओं की पूर्ति नही होती, उनमें से भंडारगृह किसका है।

(क) इदम्

(ख) अहम्

(ग) परम् अहम्

(घ) इदम् एवं अहम्

उत्तरः (क) इदम्

————————————————————————————————

प्रश्न .457 . शैक्षिक दृ.ष्टि से बाल विकास की अवस्थाएँ है–

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR
आरोह तमसो ज्योतिः

(क) किशोरावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) शैशवावस्था

(घ) उपरोक्त तीनों

उत्तरः (घ) उपरोक्त तीनों

———————————————————————————————————

प्रश्न 458. "psychology from the standpoint of behaviourist" किसकी रचना है।

(क) वाल्टर हण्ठर की

(ख) वाटसन की

(ग) कार्ल लैथले की

(घ) टोलमैन की

उत्तरः (ख) वाटसन की

———————————————————————————————————

प्रश्न 459 . अधिगम का पुनरावृत्ति का सिद्धांत दिया है।

(क) शिलर ने

(ख) कैम्स ने

(ग) पैट्रिक पावलाव ने

(घ) स्टेनली हॉल ने

उत्तरः (ग) पैट्रिक पावलाव ने

———————————————————————————————————

प्रश्न .460. बालविकास का अर्थ है।

(क) व्यवहार में परिवर्तन

(ख) बालक का गुणात्मक परिमाणात्मक परिवर्तन

(ग) बालक का गुणात्मक विकास

(घ) व्यक्तित्व में परिवर्तन

उत्तरः (ख) बालक का गुणात्मक परिमाणात्मक परिवर्तन

प्रश्न 461 . निम्न में से जो मनोवैज्ञानिक नही है–

(क) क्रोगमैन

(ख) सोरेंसन

(ग) हरलॉक

(घ) सुकरात

उत्तर (घ) सुकरात

प्रश्न .462. संवेगात्मक स्थिरता का लक्षण है–

(क) झगड़ालू

(ख) विनोदी

(ग) समायोजित

(घ) भीरू

उत्तर ग) समायोजित

प्रश्न 463 . गिलफोर्ड ने 'अभिसारी चिंतन' पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया जाता है।

(क) बुद्धि

(ख) सृजनात्मकता

(ग) बुद्धि एवं सृजनात्मकता

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ख) सृजनात्मकता

————————————————————————————————

प्रश्न 464 . समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है।

(क) प्रतिभाशाली बालकों की

(ख) सामान्य बालको की

(ग) सृजनशील बालकों की

(घ) इनमें से कोई नही।

उत्तरः (ग) सृजनशील बालकों की

————————————————————————————————

प्रश्न 465 . मानव विकास किन दोनों योगदान का परिणाम है।

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का।

(ख) सामाजिक सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

(घ) उपरोक्त में से कोई नही।

उत्तरः (ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

———————————————————————————————————————

प्रश्न 466 . ... के अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टर्नबर्ग के त्रितंत्र सिद्धांत में संबोधित किया गया है।

(क) संदर्भगत

(ख) अवयवभूत

(ग) सामाजिक

(घ) आनुभाविक

उत्तरः (ग) सामाजिक

———————————————————————————————————————

प्रश्न .467. जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से सीखता है न कि प्रत्यक्ष अनुभव से, को कहा जाता है।

(क) सामाजिक अधिगम

(ख) अनुबंधन

(ग) प्रायोगिक अधिगम

(घ) आकस्मिक अधिगम

उत्तरः . सामाजिक अधिगम

———————————————————————————————————————

प्रश्न .468. पियाजे मुख्यतः .... के योगदान के लिए जाने जाते है।

(क) भाषा विकास

(ख) संज्ञानात्मक विकास

(ग) नैतिक विकास

(घ) सामाजिक विकास

उत्तर (ख) संज्ञानात्मक विकास

प्रश्न 469. निम्नलिखित में से किस समूह के बालकों को समायोजन की समस्या होती है।

(क) औसत बुद्धि वाले

(ख) ग्रामीण बुद्धि वाले

(ग) अध्ययनशील बालक

(घ) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे

उत्तरः (घ) कुशाग्र बुद्धि के बच्चे

प्रश्न 470 . बुद्धि एवं सृजनात्मकता में किस प्रकार का सह–संबंध पाया जाता है।

(क) धनात्मक

(ख) ऋणात्मक

(ग) शून्य

(घ)ये सभी

उत्तरः (क) धनात्मक

प्रश्न 471. स्व–केन्द्रित अवस्था होती है बालक के–

(क) जन्म से 2 वर्ष तक

(ख) 3 से 6 वर्ष तक

(ग) 7 वर्ष से किशोरावस्था तक

(घ) किशोरावस्था में

उत्तरः (ख) 3 से 6 वर्ष तक

———————————————————————————————————

प्रश्न 472. निम्नांकित अवस्था में प्रायः बालकों का आकर्षण समलिंगी के प्रति होता है।

(क) प्रौढ़ावस्था में

(ख) शैशवावस्था में

(ग) बाल्यावस्था में

(घ) किशोरावस्था में

उत्तरः (ग) बाल्यावस्था में

———————————————————————————————————

प्रश्न 473 . किस आयु में बालक में समय दिन, दिनांक एवं क्षेत्रफल संबंधित अवबोध हो जाता है।

(क) 16 वर्ष

(ख) 9 वर्ष

(ग) 11 वर्ष

(घ) 6 वर्ष

उत्तरः (ख) 9 वर्ष

———————————————————————————————————

प्रश्न .474. किस वैज्ञानिक ने माना है कि उचित वातावरण से बुद्धिलब्धि में बृद्धि होती है।

(क) मेंडल

(ख) कूले

(ग) स्टीफन्स

(घ) क्लार्क

उत्तरः (ग) स्टीफन्स

———————————————————————————————————

प्रश्न 475 . किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता नही है।

(क) संवेगों का आधिक्य

(ख) संग्रह की प्रवृत्ति

(ग) कल्पना की बहुलता

(घ) समायोजन का अभाव

उत्तरः (ख) संग्रह की प्रवृत्ति

———————————————————————————————————

प्रश्न .476 . बालक का समाजिकृत निम्नलिखित तकनीकी से निर्धारित होता है।

(क) साक्षात्कार तकनीक

(ख) समाजमिति तकनीक

(ग) निरीक्षण तकनीक

(घ) जीवनवृत अध्यन तकनीक

उत्तरः (ख) समाजमिति तकनीक

———————————————————————————————————

प्रश्न 477 . बालक बालिकाएॅं अपने जीवन में किसी अन्य को आदर्श के रूप में स्वीकार करते है, किस अवस्था में –

(क) किशोरावस्था में

(ख) बाल्यावस्था में

(ग) शैशवावस्था में

(घ) सभी में

उत्तरः (क) किशोरावस्था में

———————————————————————————————

प्रश्न 478 . सृजनशील बालकों का लक्षण है।

(क) समस्या के प्रति सजगता का अभाव

(ख) गतिशील चिंतन का अभाव

(ग) जिज्ञासा

(घ) अनमनीयता

उत्तरः (ग) जिज्ञासा

———————————————————————————————

प्रश्न .479 . बालक के विकास में महत्व है।

(क) वंशक्रम का

(ख) वातावरण का

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण

(घ) भोजन का

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण

———————————————————————————————

प्रश्न 480 . जन्म के समय बालक का भार होता है।

(क) 6–8 पौण्ड

(ख) 10–11 पौण्ड

(ग) 2 पौण्ड

(घ) 3 पौण्ड

उत्तरः (क) 6–8 पौण्ड

—————————————————————————————

प्रश्न .481. जीवन का सबसे कठिन काल है।

(क) बाल्यावस्था

(ख) शैशवावस्था

(ग) गर्भावस्था

(घ) किशोरावस्था

उत्तरः (घ) किशोरावस्था

—————————————————————————————

प्रश्न 482 . शैशवावस्था में किस ग्रंथि के प्रभाव के कारण बालिकाएँ अपने पिता के प्रति श्रृद्धा का भाव रखती है।

(क) इलेक्ट्रा

(ख) आडीपस

(ग) टेस्टेस्टेरॉन

(घ) प्रोजेस्टॉन

उत्तरः (क) इलेक्ट्रा

—————————————————————————————

प्रश्न .483. विकास के संबंध में सही कथन है–

(क) विकास कुछ समय बाद रूक जाता है।

(ख) विकास बृद्धि सूचक होता है।

(ग) विकास सम्पूर्ण पक्षों में होने वाला परिवर्तन है।

(घ) विकास का संबंध बाह्य परिवर्तन से है।

उत्तरः (ग) विकास सम्पूर्ण पक्षों में होने वाला परिवर्तन है।

प्रश्न .484. पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी .... के प्रति कठोर होगें

(क) समस्या

(ख) जीवन–शैली

(ग) संप्रत्यय

(घ) वास्तविकता

उत्तरः (क) समस्या

प्रश्न 485 . एक सशक्त विद्यालय अपने शिक्षकों में निम्नलिखित योग्यताओं में से सर्वाधिक बढ़ावा देता है

(क) प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृति

(ख) परीक्षण करने की प्रवृति

(ग) स्मृति

(घ) अनुशासित स्वभाव

उत्तरः (क) प्रतिस्पर्धात्मक अभिवृति

प्रश्न .486 . सफल समावेशन को निम्नलिखित की आवश्यकता होती है सिवाय

(क) पृथक्करण

(ख) अभिभावको की भागीदारी

(ग) संवेदनशील बनाना

(घ) क्षमता संवर्द्धन

उत्तरः (क) पृथक्करण

———————————————————————————————

प्रश्न .487 . किशोर .... का अनुभव कर सकते है।

(क) बचपन के अपराधों के प्रति डर

(ख) आत्मसिद्धि का भाव

(ग) जीवन के बारे में परितृप्ति

(घ) दुश्चिंता और स्वयं से सरोकार

उत्तरः (घ) दुश्चिंता और स्वयं से सरोकार

———————————————————————————————

प्रश्न 488 . बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए।

(क) बोर्ड परीक्षा द्वारा

(ख) सतत एवं व्यापक द्वारा

(ग) लिखित एवं मौखिक द्वारा

(घ) गृह परीक्षा द्वारा

उत्तरः (ख) सतत एवं व्यापक द्वारा

———————————————————————————————

प्रश्न 489. अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से हिस्सा है।

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संवेगात्मक विकास

उत्तरः . (क) बौद्धिक विकास

———————————————————————————————

प्रश्न 490. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है।

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तरः (ग) वंशानुक्रम एवं वातावरण का

———————————————————————————————

प्रश्न .491— पियाजे के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन—सी अवस्था है जिसमें बच्चा अमूर्त संकल्पनाओं के विषय में तार्किक चिंतन करना आरंभ करता है—

(क) मूर्त—संक्रियात्मक अवस्था (07—11 वर्ष)

(ख) औपचारिक—संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर)

(ग) संवेदी—प्रेरक अवस्था (जन्म से 02 वर्ष)

(घ) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (02—07 वर्ष)

उत्तरः (ख) औपचारिक—संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष एवं ऊपर)☑

———————————————————————————————

प्रश्न .492— "विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है" यह विचार किससे संबंधित है—

(क) अंतः संबंध का सिद्धांत

(ख) निरंतरता का सिद्धांत

(ग) एकीकरण का सिद्धांत

(घ) अंतः क्रिया का सिद्धांत

उत्तरः (ख) निरंतरता का सिद्धांत ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .493— निम्न में से कौन—सा शिक्षार्थियों में सृजनात्मकता का पोषण करता है—

(क) अच्छी शिक्षा के व्यवहारिक मूल्यों के लिए विद्यार्थियों का शिक्षण

(ख) प्रत्येक शिक्षार्थी के अतंर्जात प्रतिभाओं का पोषण करना एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना

(ग) विद्यालयी जीवन के प्रारंभ में उपलब्धि के लक्ष्यों पर बल देना

(घ) परीक्षा में अच्छे अंकों के लिए विद्यार्थियों की कोचिंग करना

उत्तरः (ख) प्रत्येक शिक्षार्थी के अतंर्जात प्रतिभाओं का पोषण करना एवं प्रश्न करने के अवसर उपलब्ध कराना

———————————————————————————————————

प्रश्न .494— निम्नलिखित में से किस अवस्था में बच्चे अपने समव्यस्क समूह के सक्रिय सदस्य हो जाते हैं—

(क) किशोरावस्था

(ख) प्रौढ़ावस्था

(ग) पूर्व बाल्यावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (क) किशोरावस्था☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .495— निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है—

(क) सामाजिक संचरण

(ख) अनुभव

(ग) संतुलीकरण

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) सामाजिक संचरण☑

प्रश्न 496– विकास के संदर्भ में निम्न में से कौन सा कथन सत्य नहीं है–

(क) विकास की प्रत्येक अवस्था में अपने खतरे हैं

(ख) विकास उकसाने या बढ़ावा देने से नहीं होता है

(ग) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है

(घ) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएं होती हैं

उत्तरः (ख) विकास उकसाने या बढ़ावा देने से नहीं होता है ☑

प्रश्न .497– 'खिलौनों की आयु ' कहां जाता है–

(क) पूर्व–बाल्यावस्था को

(ख) उत्तर–बाल्यावस्था को

(ग) शैशवावस्था को

(घ)ये सभी

उत्तरः (क) पूर्व–बाल्यावस्था को ☑

प्रश्न 498– व्यक्तित्व स्थाई समायोजन है–

(क)	पर्यावरण के साथ

(ख) जीवन के साथ

(ग) प्रकृति के साथ

(घ)ये सभी

उत्तरः	(घ)ये सभी ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 499— शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास किस अवस्था में होता है—

(क)	शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) वृद्धावस्था

उत्तरः	(ख) बाल्यावस्था ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 500— शैशवावस्था की मुख्य विशेषता क्या नहीं है—

(क)	सीखने की प्रक्रिया तीव्रता

(ख) जिज्ञासा की प्रवृत्ति

(ग) चिंतन प्रक्रिया

(घ) अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति

उत्तरः	(ग) चिंतन प्रक्रिया ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 501– किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, "विकास एक सतत और धीमी प्रक्रिया है–

(क) कोलेसनिक

(ख) पियाजे

(ग) स्किनर

(घ) हरलॉक

उत्तर (ग) स्किनर ☑

————————————————————————————

प्रश्न 502– व्यक्तित्व विकास की अवस्था है–

(क) अधिगम एवं वृद्धि

(ख) व्यक्तिव्रत अध्ययन

(ग) उपचारात्मक अध्ययन

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) अधिगम एवं वृद्धि ☑

————————————————————————————

प्रश्न 503– विकास में वृद्धि से तात्पर्य है–

(क) ज्ञान में वृद्धि

(ख) संवेग में वृद्धि

(ग) वजन में वृद्धि

(घ) आकार सोच–समझ कौशलों में वृद्धि

उत्तरः (घ) आकार सोच–समझ कौशलों में वृद्धि ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .504— परिपक्वता का संबंध है—

(क) विकास

(ख) बुद्धि

(ग) रचनात्मकता

(घ) रुचि

उत्तरः (क) विकास ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .505— एक बच्चे की मानसिक आयु 12 वर्ष एवं वास्तविक आयु 10 वर्ष है, तो उसकी बुद्धिलब्धि क्या होगी

(क) 110

(ख) 100

(ग) 120

(घ) 83

उत्तरः (ग) 120 ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न 506— शरीर के आकार में वृद्धि होती है, क्योंकि—

(क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास

(ख) संवेगात्मक विकास

(ग) संज्ञानात्मक विकास

(घ) नैतिक विकास

उत्तरः (क) शारीरिक और गत्यात्मक विकास ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 507— मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक है—

(क) वंशानुक्रम

(ख) परिवार का वातावरण

(ग) परिवार की सामाजिक स्थिति

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (क) वंशानुक्रम ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 508— बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन सा कथन सर्वोत्तम है—

(क) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं

(ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है

(ग) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं

(घ) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं

उत्तरः (ख) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है ☑

———————————————————————————————

प्रश्न509— एक बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन—सी है—

(क) मनोविश्लेषण विधि

(ख) तुलनात्मक विधि

(ग) विकासीय विधि

(घ) सांख्यिकी विधि

उत्तरः (ग) विकासीय विधि☑

————————————————————————————

प्रश्न .510– मानव जाति में भी कौन–से वैयक्तिक विभिन्नता के निर्धारक तत्व होते हैं जो मानव जाति की विविधता को बताते हैं–

(क) पर्यावरण का अंतर

(ख) अनुवांशिकता का अंतर

(ग) आनुवंशिकता व पर्यावरण की अंतक्रिया

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) आनुवंशिकता व पर्यावरण की अंतक्रिया ☑

————————————————————————————

प्रश्न 511– बुद्धि के संबंध में सही कथन क्या है–

(क) समायोजन करने की क्षमता का नाम बुद्धि है

(ख) सीखने की क्षमता का नाम बुद्धि है

(ग) संक्षिप्त तार्किकता की क्षमता का नाम बुद्धि है

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी ☑

————————————————————————————

प्रश्न 512– "मनोविज्ञान, शिक्षा का आधारभूत विज्ञान है" यह किसने कहा है–

(क) बी एन झा

(ख) स्किनर

(ग) डेविस

(घ) वुडवर्थ

उत्तरः (ख) स्किनर ☑

प्रश्न 513– बुद्धिलब्धि मापन के जन्मदाता है–

(क) स्टर्न

(ख) बिने

(ग) टरमैन

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (ग) टरमैन ☑

प्रश्न 514– शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौन सा माना जाता है–

(क) 1947

(ख) 1920

(ग) 1940

(घ) 1900

उत्तरः (घ) 1900 ☑

प्रश्न 515– गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते है–

(क) 150

(ख) 280

(ग) 390

(घ) 460

उत्तरः (ख) 280 ☑

————————————————————————————

प्रश्न 516— नवजात शिशु का भार होता है—

(क) 6 पाउंड

(ख) 7 पाउंड

(ग) 8 पाउंड

(घ) 9 पाउंड

उत्तरः (ख) 7 पाउंड ☑

————————————————————————————

प्रश्न 517— बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में माता—पिता को .... भूमिका निभानी चाहिए—

(क) नकारात्मक

(ख) अग्रोन्मुखी

(ग) सहानुभूतिपूर्ण

(घ) तटस्थ

उत्तरः (ख) अग्रोन्मुखी ☑

————————————————————————————

प्रश्न 518– मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है–

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण का

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण का ☑

प्रश्न 419– "बच्चे दुनिया के बारे में अपनी समाज का सृजन करते हैं" इसका श्रेय किसको जाता है–

(क) पियाजे

(ख) पावलॉव

(ग) कोहलबर्ग

(घ) स्किनर

उत्तरः (क) पियाजे ☑

प्रश्न 520– अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से किसका हिस्सा है–

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संवेगात्मक विकास

उत्तरः (क) बौद्धिक विकास ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 521— निम्न में से कौन—सी पूर्व—बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है—

(क) दल या समूह में रहने की अवस्था

(ख) अनुकरण करने की अवस्था

(ग) प्रश्न करने की अवस्था

(घ) खेलने की अवस्था

उत्तरः (घ) खेलने की अवस्था ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 522— मूल्यांकन किया जाना चाहिए—

(क) मूल्यांकन से बच्चे पढ़ेंगे

(ख) इससे बच्चों की उपलब्धि का पता लगता है

(ग) बच्चों को सीखने के स्तर का ज्ञान होता है

(घ) शिक्षकों की उपलब्धि का पता लगता है

उत्तरः (ग) बच्चों को सीखने के स्तर का ज्ञान होता है ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 523— शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से निम्न में से कौन—सा कथन सत्य है—

(क) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं

(ख) विद्यालय में आने से पहले बच्चों को कोई पूर्व ज्ञान नहीं होता है

(ग) अधिगम प्रक्रिया में बच्चों को कष्ट होता है

(घ) बच्चे यथावत वही सीखते हैं, जो उन्हें पढ़ाया जाता है

उत्तरः (क) बच्चे अपने ज्ञान का सृजन स्वयं करते हैं ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 524— बच्चों में नैतिकता की स्थापना के लिए सर्वोत्तम मार्ग है—

(क) उन्हें धार्मिक पुस्तक पढ़ाना

(ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना

(ग) उनका मूल्य शिक्षा पर मूल्यांकन करना

(घ) उन्हें प्रातः कालीन सभा में उपदेश देना

उत्तरः (ख) शिक्षक का आदर्श रूप में व्यवहार करना ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न .525— मानसिक रूप से स्वस्थ अध्यापक की विशेषता क्या है—

(क) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित है

(ख) उसे अपने विषय का गहन ज्ञान है

(ग) वह अत्यधिक संवेदनशील है

(घ) वह सख्त अनुशासनपसंद करता है

उत्तर(क) वह संवेदनात्मक रूप से संतुलित है ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न .526— शिक्षा का अति महत्वपूर्ण उद्देश्य है—

(क) आजीविका कमाना

(ख) बच्चे का सर्वागीण विकास

(ग) पढ़ना एवं लिखना सीखना

(घ) बौद्धिक विकास

उत्तरः (ख) बच्चे का सर्वांगीण विकास ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 527— दीक्षा द्वारा पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर शिक्षक तत्काल नहीं दे सकता है शिक्षक की प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए—

(क) शिक्षक द्वारा दीक्षा को चुप करा देना चाहिए

(ख) शिक्षक द्वारा दीक्षा का ध्यान बता देना चाहिए

(ग) शिक्षक को कहना चाहिए, मैं नहीं जानता हूं

(घ) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझ कर देना चाहिए

उत्तरः (घ) शिक्षक द्वारा इस प्रश्न का सही उत्तर बाद में समझ कर देना चाहिए ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 528— आप अनपढ़ माता—पिता के बच्चों को अंग्रेजी सीखाना चाहते हैं—

(क) आप बच्चे से अंग्रेजी में बात करेंगे

(ख) आप बच्चों को अंग्रेजी में बोलने के लिए बाध्य करेंगे

(ग) आप बच्चे को मातृ—भाषा में बोलने से रोकेंगे

(घ) आप उसे मातृ—भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे

उत्तरः (घ) आप उसे मातृ—भाषा की सहायता से अंग्रेजी सिखाने का प्रयास करेंगे ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 529— शिक्षक को ज्ञान होना चाहिए—

(क) अध्यापन विषय का

(ख) बाल मनोविज्ञान का

(ग) शिक्षा संहिता का

(घ) अध्यापक विषय एवं बाल मनोविज्ञान का

उत्तर (घ) अध्यापक विषय एवं बाल मनोविज्ञान का ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 530— गार्डनर ने सात बुद्धि का अधिमान निर्धारित किया इसमें से कौन सा नहीं है—

(क) स्थान संबंधी बुद्धि

(ख) भावनात्मक बुद्धि

(ग) अंतवैयक्तिक बुद्धि

(घ) भावात्मक बुद्धि

उत्तरः (ख) भावनात्मक बुद्धि ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 531— सहयोगात्मक रणनीति की किस श्रेणी में महिलाए निम्न में से संबंधित नहीं होती हैं—

(क) स्वीकार्यता

(ख) प्रतिरोध

(ग) क्रांति

(घ) अनुकूलन

उत्तरः (ख) प्रतिरोध ☑

————————————————————————————————

प्रश्न .532— विद्यालय क्षेत्र में रचनात्मक निर्धारकों को जानने के लिए इनमें से कौन—सा उपागम नहीं है—

(क) वार्तालाप कौशल

(ख) बहुविकल्पीय प्रश्न

(ग) परियोजना कार्य

(घ) मौखिक प्रश्न

उत्तरः (ख) बहुविकल्पीय प्रश्न ☑

प्रश्न 533– नैदानिक परीक्षा का मुख्य उद्देश है–

(क) कक्षा में प्रदर्शन के दौरान सामान्यतया कमजोर क्षेत्र को चिन्हित करना–

(ख) उपचारात्मक कार्यक्रम के विशेष प्रकृति की आवश्यकता

(ग) अकादमिक घटनाओं के कारणों का पता लगाना

(घ) छात्र की कठिनाइयों की विशेष प्रकृति को जानना

उत्तरः (ग) अकादमिक घटनाओं के कारणों का पता लगाना ☑

प्रश्न 534– प्रथक प्रथक समजातीय समूहों के व्यक्तियों के प्रति बच्चों की अभिवृत्ति साधारणतया आधारित होती है–

(क) उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति पर

(ख) उनमें समकक्षियों की अभिवृत्ति पर

(ग) दूरदर्शन के प्रभाव पर

(घ) उनके सहोदरो की अभिवृत्ति पर

उत्तरः (क) उनके अभिभावकों की अभिवृत्ति पर ☑

प्रश्न 535– विद्यार्थियों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निम्न में से कौन–सा तरीका अधिक महत्वपूर्ण है–

(क) सहशैक्षिक क्रियाओं का प्रावधान

(ख) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

(ग) रुचियों की भिन्नता

(घ) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण

उत्तरः (घ) अध्यापक की भूमिका एवं विद्यालयी वातावरण ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 536– जिस प्रक्रिया में व्यक्ति दूसरों के परिवार को देखकर सीखता है ना कि प्रत्यक्ष अनुभव से, उसको कहा जाता है–

(क) सामाजिक अधिगम

(ख) अनुबंधन

(ग) प्रायोगिक अधिगम

(घ) आकस्मिक अधिगम

उत्तरः (क) सामाजिक अधिगम ☑

————————————————————————————————

प्रश्न .537– कौन सा सिद्धांत व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान ने जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर हैं–

(क) गुण सिद्धांत

(ख) प्रकार सिद्धांत

(ग) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत

(घ) व्यवहारवाद सिद्धांत

उत्तरः (ग) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 538— छोटे शिक्षार्थियों में निम्नलिखित में से कौन सा लक्षण 'पठन—कठिनाई' का नहीं है—

(क) पठन—गति और प्रवाह में कठिनाई

(ख) शब्दों और विचारों को समझने में कठिनाई

(ग) सुसंगत वर्तनी में कठिनाई

(घ) वर्ण एवं शब्द—पहचान में कठिनाई

उत्तरः (क) पठन—गति और प्रवाह में कठिनाई ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .539— भारतीय समाज की बहूभाषिक विशेषता को .... देखा जाना चाहिए—

(क) विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में

(ख) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभिप्रेरित करने हेतु शिक्षक—योग्यता की चुनौती के रूप में

(ग) शिक्षार्थियों के लिए विद्यालयी जीवन को एक जटिल अनुभव के रूप में बनाने के एक कारक के रूप में

(घ) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के बाधा के रूप में

उत्तरः (क) विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 540— सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली का तात्पर्य है—

(क) सभी विषयों का मूल्यांकन

(ख) सह—शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

(ग) शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

(घ) शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

उत्तरः (ग) शैक्षिक एवं सह–शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 541– मूल्यांकन का उद्देश्य है–

(क) बालकों को धीमी गति से सीखने वाले एवं प्रतिभाशाली बच्चों के रूप में लेबल करना

(ख) जिन बालकों को उपचारात्मक शिक्षा की आवश्यकता है उनकी पहचान करना

(ग) अधिगम की कठिनाइयों व समस्याओं वाले क्षेत्रों का पता लगाना

(घ) उत्पादक जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, को पुष्टिपोषण प्रदान करना

उत्तरः (घ) उत्पादक जीवन जीने के लिए शिक्षा किस सीमा तक तैयार कर पाई है, को पुष्टिपोषण प्रदान करना

———————————————————————————————

प्रश्न .542– कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बनाए रखने के लिए एक शिक्षक को उचित है–

(क) श्यामपट्ट का प्रयोग करना

(ख) चर्चा करना

(ग) कहानी कहना

(घ) प्रश्न पूछना

उत्तरः (घ) प्रश्न पूछना ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 543– कौन–सा सीखना स्थाई होता है–

(क) रटकर

(ख) सुनकर

(ग) समझकर

(घ) देखकर

उत्तरः (ग) समझकर ☑

प्रश्न 544– मूल्यांकन का उद्देश्य है–

(क) बच्चों को उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण घोषित करना

(ख) बच्चा क्या सीखा है जानना

(ग) बच्चे के सीखने में आयी कठिनाइयों को जानना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी ☑

प्रश्न .545– एक कक्षा में वैयक्तिक भिन्नताओं के क्षेत्र हो सकते हैं–

(क) रूचियों के

(ख) सीखने के

(ग) चरित्र के

(घ)यह सभी

उत्तरः (घ)यह सभी ☑

प्रश्न .546– लॉरेंस कोहलबर्ग विकास के क्षेत्र में शोध के लिए जाने जाते हैं–

(क) संज्ञानात्मक

(ख) शारीरिक

(ग) नैतिक

(घ) गामा

उत्तरः (ग) नैतिक ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 547— पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक बाल विकास की कितनी अवस्थाएं हैं—

(क) 3 अवस्थाएं

(ख) 4 अवस्थाएं

(ग) 5 अवस्थाएं

(घ) 6 अवस्थाएं

उत्तरः (ख) 4 अवस्थाएं ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 548— शिक्षा मनुष्य में अंतर्निहित क्षमता का परिपूर्णता में विकास करते हैं यह कथन किसका है—

(क) स्वामी विवेकानंद

(ख) स्किनर

(ग) पेस्टॉलॉजी

(घ) रविंद्रनाथ टैगोर

उत्तरः (क) स्वामी विवेकानंद ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 549— मानव विकास कुछ विशेष सिद्धांतों पर आधारित है, निम्नलिखित में से कौन—सा मानव विकास का सिद्धांत नहीं है

(क) आनुक्रमिकता

(ख) सामान्य से विशिष्ट

(ग) प्रतिवर्ती

(घ) निरंतरता

उत्तरः (ग) प्रतिवर्ती ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 550— अवधारणाओं का विकास मुख्य रूप से किसका हिस्सा है—

(क) बौद्धिक विकास

(ख) शारीरिक विकास

(ग) सामाजिक विकास

(घ) संवेगात्मक विकास

उत्तरः (क) बौद्धिक विकास ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न .551— सीखने का वह सिद्धांत जो पूर्ण रूप से और केवल अवलोकनीय व्यवहार पर आधारित है, सीखने के किस सिद्धांत से संबंध है—

(क) विकासवादी

(ख) व्यवहारवादी

(ग) रचनावादी

(घ) संज्ञानवादी

उत्तरः (ख) व्यवहारवादी ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 552— भारतीय समाज की बहुभाषिक विशेषता को किसके रूप में देखा जाना चाहिए—

(क) विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में

(ख) विद्यार्थियों को सीखने के लिए अभीप्रेरित करने हेतु शिक्षक योग्यता की चुनौती के रूप में

(ग) शिक्षार्थियों के लिए विद्यालयी जीवन को एक जटिल अनुभव के रूप में

(घ) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के बाधा के रूप में

उत्तरः (क) विद्यालयी जीवन को समृद्ध बनाने के संसाधन के रूप में ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 553— सबसे अधिक गहन और जटिल सामाजीकरण होता है—

(क) किशोरावस्था के दौरान

(ख) पूर्व—बाल्यावस्था के दौरान

(ग) प्रौढ़ावस्था के दौरान

(घ) व्यक्ति के पूरे जीवन में

उत्तरः (क) किशोरावस्था के दौरान ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 554— "पुरुष स्त्रियों की अपेक्षा ज्यादा बुद्धिमान होते हैं" यह कथन—

(क) सही हो सकता है

(ख) लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है

(ग) बुद्धि के भिन्न पक्षों के लिए सही है

(घ) सही है

उत्तरः (ख) लैंगिक पूर्वाग्रह को प्रदर्शित करता है ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .555– क्रियात्मक अनुसंधान का उद्देश्य है–

(क) नवीन ज्ञान की खोज

(ख) शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास

(ग) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य–प्रणाली में सुधार लाना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (ग) विद्यालय तथा कक्षा की शैक्षिक कार्य–प्रणाली में सुधार लाना ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 556– रक्षा–तंत्र बहुत सहायता करता है–

(क) हिंसा से निपटने में

(ख) दबाव से निपटने में

(ग) थकान से निपटने में

(घ) अजनबियों से निपटने में

उत्तरः (ख) दबाव से निपटने में ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .557– फ्रायड, पियाजे एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व विकास के विभिन्न अवस्थाओं के संदर्भ व्याख्या की है परन्तु पियाजे ने–

(क) कहा कि विकास की अवस्थाएं वातावरण से निर्धारित होती हैं

(ख) कहा कि शैशवावस्था के अनुभव ही अधिक प्रभावित करते हैं, बाकी अवस्थाओं के सीमित प्रभाव होते हैं

(ग) विभिन्न अवस्थाओं को समझाने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में कहा

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) विभिन्न अवस्थाओं को समझाने के लिए संज्ञानात्मक बदलाव के बारे में कहा ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .558— गिलफोर्ड ने 'अभिसारी चिंतन' पद का प्रयोग किसके समान अर्थ में किया है—

(क) बुद्धि

(ख) सृजनात्मकता

(ग) बुद्धि एवं सृजनात्मकता

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (ख) सृजनात्मकता ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 559— व्यक्ति एवं बुद्धि में वंशानुक्रम की क्या भूमिका है—

(क) नाममात्र की भूमिका है

(ख) महत्वपूर्ण भूमिका है

(ग) अपूर्वानुमेय भूमिका है

(घ) आकर्षक भूमिका है

उत्तरः (क) नाममात्र की भूमिका है ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .560— एक क्रिकेट खिलाड़ी अपनी गेंदबाजी के कौशल को विकसित कर लेता है, पर यह उसके बल्लेबाजी की कौशल को प्रभावित नहीं करता इसे कहते हैं—

(क) विधेयात्मक प्रशिक्षण अंतरण

(ख) निषेधात्मक प्रशिक्षण अंतरण

(ग) शून्य प्रशिक्षण अंतरण

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) शून्य प्रशिक्षण अंतरण ☑

———————————————————————————

प्रश्न .561– निम्न में से कौन पियाजे के अनुसार बौद्धिक विकास का निर्धारक तत्व नहीं है–

(क) सामाजिक संचरण

(ख) अनुभव

(ग) संतुलनीकरण

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) सामाजिक संचरण ☑

———————————————————————————

प्रश्न 562– बालकों की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवों एवं प्रत्ययों से होती है यह अवस्था है–

(क) 7 से 12 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष से वयस्क तक

(ग) 2 से 7 वर्ष तक

(घ) जन्म से 2 वर्ष तक

उत्तरः (क) 7 से 12 वर्ष तक ☑

———————————————————————————

प्रश्न .563— शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को संबोधित करने के लिए एक विद्यालय किस प्रकार का सहयोग उपलब्ध करवा सकता है—

(क) शिक्षार्थियों के लिए समान स्तर की पाठ्य—चर्चा का अनश्ंिगमन करना

(ख) बाल—केंद्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध कराना

(ग) शिक्षार्थियों में वैयक्तिक भिन्नताओं को समाप्त करने के लिए विद्यालयों में भेजना

(घ) धीमी गति से सीखने वाले शिक्षार्थियों को विशेष विद्यालयों में भेजना

उत्तरः (ख) बाल—केंद्रित पाठ्यचर्या का पालन करना और शिक्षार्थियों को सीखने के अनेक अवसर उपलब्ध कराना ☑

————————————————————————————————

प्रश्न .564— सतत और व्यापक मूल्यांकन किस पर बल देता है—

(क) बोर्ड परीक्षाओं की अनावश्यकता पर

(ख) सीखने को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक स्केल पर निरंतर परीक्षण

(ग) सीखने को किस प्रकार अवलोकित, रिकार्ड और सुधारा जाए

(घ) शिक्षण के साथ परीक्षाओं का सामंजस्य

उत्तरः (ग) सीखने को किस प्रकार अवलोकित, रिकार्ड और सुधारा जाए ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 565— मानव बुद्धि एवं विकास की समझ शिक्षक को .... योग्य बनाती है—

(क) निष्पक्ष रूप से अपने शिक्षण अभ्यास

(ख) शिक्षण के समय शिक्षार्थियों के संवेगो पर नियंत्रण बनाए रखना

(ग) विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता

(घ) शिक्षार्थियों को यह बताना कि वे अपने जीवन को कैसे सश्ंिधार सकते हैं

उत्तरः (ग) विविध शिक्षार्थियों के शिक्षण के बारे में स्पष्टता ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 566– किसके अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टर्नबर्ग के त्रितंत्र सिद्धांत में संबोधित किया गया है–

(क) संदर्भगत

(ख) अवयवभूत

(ग) सामाजिक

(घ) आनुभविक

उत्तरः (ग) सामाजिक ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 567– किसके अतिरिक्त बुद्धि के निम्नलिखित पक्षों को स्टर्नबर्ग के त्रितंत्र सिद्धांत में संबोधित किया गया है–

(क) संदर्भगत

(ख) अवयवभूत

(ग) सामाजिक

(घ) आनुभविक

उत्तरः (ग) सामाजिक ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 568– कक्षा को जेंडर रूढ़िबध्दता से बचने के लिए एक शिक्षक को क्या करना चाहिए–

(क) लड़कों को जोखिम उठाने और निर्भीक बनने के लिए प्रोत्साहित करना

(ख) लड़के–लड़कियों को एक साथ अपारंपरिक भूमिकाओं में रखना चाहिए

(ग) 'अच्छी लड़की'/'अच्छा लड़का' कहकर से शिक्षार्थियों के कार्य की सराहना करनी चाहिए

(घ) कुश्ती में भाग लेने के लिए लड़कियों को निरूत्साहित करना

उत्तरः (ख) लड़के–लड़कियों को एक साथ अपारंपरिक भूमिकाओं में रखना चाहिए ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .569– विद्यालयों को किसके लिए वैयक्तिक भिन्नताओं को पूरा करना चाहिए–

(क) वैयक्तिक शिक्षार्थी को विशिष्ट होने की अनुभूति कराने के लिए

(ख) वैयक्तिक शिक्षार्थी के मध्य खाई को कम कराने के लिए

(ग) शिक्षार्थियों के निष्पादन और योग्यताओं को समान करने के लिए

(घ)यह समझने के लिए कि क्यों शिक्षार्थी सीखने के योग्य या आयोग्य है

उत्तरः (घ)यह समझने के लिए कि क्यों शिक्षार्थी सीखने के योग्य या आयोग्य है ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 570– हावर्ड गार्डनर का बुद्धि का सिद्धांत किस पर बल देता है–

(क) शिक्षार्थियों में अनुबंधित कौशलों

(ख) सामान्य बुद्धि

(ग) विद्यालय में आवश्यक सामान योग्ताओ

(घ) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं

उत्तरः (घ) प्रत्येक व्यक्ति की विलक्षण योग्यताओं ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .572– सामाजिकरण क्या है–

(क) सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन

(ख) शिक्षक एवं पढ़ाए गए के बीच संबंध

(ग) समाज के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया

(घ) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन

उत्तरः (घ) समाज के मानदंडों के साथ अनुकूलन ☑

प्रश्न 573– विद्यालय आधारित आकलन क्या करता है–

(क) शिक्षार्थीयों और शिक्षकों को अगंभीर और लापरवाह बनाता है

(ख) शिक्षा–बोर्ड की जवाबदेही कम करता है

(ग) सार्वभौमिक राष्ट्रीय मानकों की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करता है

(घ) परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है

उत्तरः (घ) परिचित वातावरण में अधिक सीखने में सभी शिक्षार्थियों की मदद करता है ☑

प्रश्न .574– किसके अतिरिक्त निम्नलिखित समस्या समाधान की प्रक्रिया के चरण है–

(क) परिणामों की आशा करना–

(ख) समस्या की पहचान

(ग) समस्या को छोटे हिस्सों में बांटना

(घ) संभावित युक्तियों को खोजना

उत्तरः (ग) समस्या को छोटे हिस्सों में बांटना ☑

प्रश्न .575– मानव विकास किन दोनों योगदान का परिणाम है–

(क) अभिभावक एवं अध्यापक का

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का

(ग) वंशक्रम एवं वातावरण का

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) वंशक्रम एवं वातावरण का ☑

———————————————————————————

प्रश्न .576– समस्या के अर्थ को जानने की योग्यता, वातावरण के दोषों, कमियों एवं रिक्तियों के प्रति सजगता विशेषता है–

(क) प्रतिभाशाली बालकों की

(ख) सामान्य बालकों की

(ग) सृजनशील बालकों की

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) सृजनशील बालकों की ☑

———————————————————————————

प्रश्न 577– निम्नलिखित में से कौन–सा कथन किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को उत्तम रुप से प्रदर्शित करता है–

(क) पूर्ण अभिव्यक्ति, संगतिकरण और सामान्य लक्षण की ओर निर्देशन

(ख) मानसिक विकारों का ना होना

(ग) व्यक्तित्व के विकारों से मश्निक्ति

(घ) उपरोक्त में से सभी

उत्तरः (क) पूर्ण अभिव्यक्ति, संगतिकरण और सामान्य लक्षण की ओर निर्देशन ☑

———————————————————————————

प्रश्न 578— जिन इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती, उनका भंडारगृह निम्न में से कौन सा है—

(क) इदम्

(ख) अहम्

(ग) परम् अहम्

(घ) इदम् एवं अहम्

उत्तरः (क) इदम् ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 579— बालक प्रसंगबोध परीक्षण 3 वर्ष से 10 वर्ष की आयु के बालको के लिए बनाया गया है इस परीक्षण में कार्ड में प्रतिस्थापित किए गए हैं—

(क) सजीव वस्तुओं के स्थान पर निर्जीव वस्तुओं को

(ख) लोगों के स्थान पर जानवरों को

(ग) पुरुषों के स्थान पर महिलाओं को

(घ) वयस्क के स्थान पर बालकों को

उत्तरः (ख) लोगों के स्थान पर जानवरों को ☑

————————————————————————————————————

प्रश्न 580— बच्चे के विकास के सिद्धांतों को समझना शिक्षक की सहायता करता है—

(क) शिक्षार्थी की अधिक पृष्ठभूमि को पहचानने में

(ख) शिक्षार्थियों को क्यों पढ़ाना चाहिए यह औचित्य स्थापित करने में

(ग) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप से संबोधित करने में

(घ) शिक्षार्थी के सामाजिक स्तर को पहचानने में

उत्तरः (ग) शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप से संबोधित करने में ☑

———————————————————————————

प्रश्न 581— शिक्षार्थियों को .... के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए—

(क) समूह—कार्य में दूसरे शिक्षार्थियों के साथ सक्रिय रूप से अंतः क्रिया करने में

(ख) अधिक से अधिक पाठ्य—सहगामी क्रियाओं में हिस्सा लेने में

(ग) शिक्षक जो पूछ सकते हैं उन सभी प्रश्नों के उत्तर को याद करने के लिए

(घ) कक्षा के अंदर और बाहर अधिक—से—अधिक प्रश्न पूछना

उत्तरः (ग) शिक्षक जो पूछ सकते हैं उन सभी प्रश्नों के उत्तर को याद करने के लिए ☑

———————————————————————————

प्रश्न 582— निम्नलिखित में से कौन—सा रचनात्मक आकलन के लिए उपकरण नहीं है—

(क) मौखिक प्रश्न

(ख) सत्र परीक्षा

(ग) प्रश्नोत्तरी और खेल

(घ) दत्त कार्य

उत्तरः (ख) सत्र परीक्षा ☑

———————————————————————————

प्रश्न 583— अनुवांशिकता को .... सामाजिक संरचना माना जाता है—

(क) गौण

(ख) गत्यात्मक

(ग) स्थिर

(घ) प्राथमिक

उत्तरः (ग) स्थिर ☑

प्रश्न 584– पियाजे के अनुसार विकास की पहली अवस्था के दौरान बच्चा .... सबसे बेहतर सीखता है–

(क) निष्क्रिय शब्दों को समझने के द्वारा

(ख) अमूर्त तरीके से चिंतन द्वारा

(ग) भाषा के नए अर्जित ज्ञान के अनुप्रयोग द्वारा

(घ) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा

उत्तरः (घ) इंद्रियों के प्रयोग द्वारा ☑

प्रश्न 585– सिद्धांत के रूप में रचनावाद–

(क) दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर बल देता है

(ख) सूचनाओं को याद करने और पुनः स्मरण द्वारा जांच करने पर बल देता है

(ग) शिक्षक की प्रभुत्वशाली भूमिका पर बल देता है

(घ) अनुकरण की भूमिका पर केंद्रित है

उत्तरः (क) दुनिया के बारे में अपना दृष्टिकोण निर्मित करने में शिक्षार्थी की भूमिका पर बल देता है ☑

प्रश्न 586– व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक दूसरे से किस में भिन्न होते हैं–

(क) विकास की दर

(ख) विकास–क्रम

(ग) विकास की सामान्य क्षमता

(घ) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांत

उत्तरः (क) विकास की दर ☑

प्रश्न .587— मूल्यांकन का मुख्य उद्देश होना चाहिए—

(क) शिक्षार्थियों की उपलब्धि को मापना

(ख) यह निर्णय लेना कि क्या विद्यार्थी को अगली कक्षा में प्रोन्नत किया जाना चाहिए

(ग) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उसका उपचार करना

(घ) शिक्षार्थियों की त्रुटियां निकालना

उत्तरः (ग) सीखने में होने वाली कमियों का निदान और उसका उपचार करना ☑

प्रश्न 588— बिग व हंट के अनुसार किस की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है 'परिवर्तन'। परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है—

(क) शैशवावस्था

(ख) बाल्यावस्था

(ग) किशोरावस्था

(घ) प्रौढ़ावस्था

उत्तरः (ग) किशोरावस्था ☑

प्रश्न 589— एक बालक जिसकी बुद्धिलब्धि 105 है उसे स्वीकृत वर्गीकृत किया जाएगा—

(क) श्रेष्ठ बुद्धि

(ख) सामान्य से अधिक बुद्धि

(ग) सामान्य बुद्धि

(घ) मंद बुद्धि

उत्तरः (ग) सामान्य बुद्धि ☑

प्रश्न .590— सामाजिक—आर्थिक मुद्दों से जूझ रहे उन बच्चों को जिनकी प्रतिभा प्रभावित हो सकती है को .... सहायता करता है—

(क) स्व—अधिगम मॉडल

(ख) विभेदित निर्देश

(ग) पाठ्य—चर्चा का विस्तार

(घ) संज्ञानात्मक वर्गीकरण

उत्तरः (क) स्व—अधिगम मॉडल ☑

प्रश्न 591— हावर्ड गार्नर द्वारा निम्न में से एक को छोड़कर बाकी सभी बुद्धि के प्रकार बताये गए हैं—

(क) भाषा

(ख) सृजनात्मकता

(ग) अंतवैयक्तिक कौशल

(घ) अंतः वैयक्तिक संबंध

उत्तरः (ख) सृजनात्मकता ☑

——————————————————————————————

प्रश्न 592— पियाजे के अनुसार बच्चा अमूर्त स्तर पर चिंतन, बौद्धिक क्रियाएं और समस्या समाधान किस अवस्था में करने लगता है—

(क) पूर्व—संक्रियात्मक अवस्था (2—7 वर्ष)

(ख) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7—11 वर्ष)

(ग) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11—16 वर्ष)

(घ) संवेदी पेशीय अवस्था (0—2 वर्ष)

उत्तरः (ग) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11—16 वर्ष) ☑

——————————————————————————————

प्रश्न 593— एक 13 वर्षीय बालक बात—बात में अपने बड़ों से झगड़ा करने लगता है और हमेशा स्वयं को सही साबित करने की कोशिश करता है वह विकास की किस अवस्था में है—

(क) प्रारंभिक बाल्यावस्था

(ख) किशोरावस्था

(ग) युवावस्था

(घ) बाल्यावस्था

उत्तरः (ख) किशोरावस्था ☑

——————————————————————————————

प्रश्न 594— दबाव को कम करने एवं परीक्षाओं में सफलता के लिए आवश्यक है—

(क) कम अवधि की परीक्षाओं में अंतरण

(ख) विद्यालय शिक्षा की विभिन्न चरणों में परीक्षा का आयोजन

(ग) वार्षिक एवं अर्धवार्षिक परीक्षाएं

(घ) विभिन्न प्रवेश परीक्षाओं के लिए विभिन्न एजेंसियों की स्थापना

उत्तर (क) कम अवधि की परीक्षाओं में अंतरण ☑

प्रश्न 595— विवेचनात्मक शिक्षाशास्त्र का यह दृ.ढ़ विश्वास है कि—

(क) एक शिक्षक को हमेशा कक्षा—कक्ष के अनुदेशन का नेतृत्व करना चाहिए

(ख) शिक्षार्थियों को स्वतंत्र रूप से तर्क नहीं करनी चाहिए

(ग) बच्चे स्कूल से बाहर क्या सीखते हैं, यह अप्रासंगिक है

(घ) शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण महत्वपूर्ण होते हैं

उत्तरः (घ) शिक्षार्थियों के अनुभव और प्रत्यक्षण महत्वपूर्ण होते हैं ☑

प्रश्न 596— एक शिक्षक को साधनसंपन्न होना चाहिए, इसका अर्थ है—

(क) उसके पास पर्याप्त धन—संपदा होनी चाहिए

(ख) उनका अधिकारियों के उच्च स्तर से संपर्क होनी चाहिए

(ग) उन्हें अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए

(घ) विद्यार्थियों के बीच उनकी प्रसिद्धि होनी चाहिए

उत्तरः (ग) उन्हें अपने विद्यार्थियों की समस्याओं को हल करने का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए ☑

प्रश्न.597— व्यक्तिगत शिक्षार्थी एक दूसरे से किसमें भिन्न होते हैं—

(क) विकास की दर में

(ख) विकास क्रम में

(ग) विकास की सामान्य क्षमता में

(घ) वृद्धि एवं विकास के सिद्धांतों में

उत्तरः (क) विकास की दर में ☑

प्रश्न .598– 'मन का मानचित्र' संबंधित है–

(क) बोध (समझ) बढ़ाने की तकनीक से

(ख) साहसिक कार्य की क्रिया–योजना से

(ग) मन का चित्र बनाने से

(घ) मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से

उत्तरः (घ) मन की क्रियाशीलता पर अनुसंधान से ☑

प्रश्न 599– एक शिक्षक विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है–

(क) महान व्यक्तियों के बारे में बोलकर

(ख) अनुशासनकी अनुभूति को विकसित कर

(ग) आदर्श रूप से बर्ताव कर

(घ) उन्हें अच्छी कहानियां सुनाकर

उत्तरः (ग) आदर्श रूप से बर्ताव कर ☑

प्रश्न 600– विद्यार्थियों को विद्यालय में खेलना क्यों उचित है–

(क) यह उन्हें शारीरिक रूप से सशक्त बनाएगा

(ख) यह शिक्षकों के लिए काम आसान करेगा

(ग) यह समय बिताने में सहायक होगा

(घ)यह सहयोग एवं शारीरिक संतुलन का विकास करेगा

उत्तरः (घ) यह सहयोग एवं शारीरिक संतुलन का विकास करेगा ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 601– प्राथमिक विद्यालयों के बालकों के लिए निम्न में से किसे बेहतर मानते हैं–

(क) वीडियो अनुरूपण

(ख) प्रदर्शन

(ग) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव

(घ)ये सभी

उत्तरः (ग) स्वयं के द्वारा किया गया अनुभव ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .602– निचली कक्षाओ में शिक्षण की खेल–पद्धति मूल रूप से आधारित है–

(क) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम के सिद्धांतों पर

(ख) शिक्षण पद्धतियों के सिद्धांतों पर

(ग) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर

(घ) शिक्षण के समाजशास्त्रीय सिद्धांतों पर

उत्तर (ग) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 603– आपकी कक्षा में कुछ छात्र अति मेधावी हैं, आप उन्हें किस तरह पढ़ायेंगे–

(क) कक्षा के साथ

(ख) उच्च कक्षा के साथ

(ग) समृद्धिकरण कार्यक्रमों के द्वारा

(घ) जब वे चाहे

उत्तरः (ग) समृद्धिकरण कार्यक्रमों के द्वारा ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .604— वैयक्तिक विभिन्नता के मिलन के संबंध में एक अध्यापक की भूमिका होनी चाहिए—

(क) व्यक्ति के दृष्टिकोण, अभिरुचि और योग्यता को जानने के प्रयास

(ख) व्यक्ति आधारित पाठ्यक्रमों को उनकी आवश्यकता के अनुसार समझने की कोशिश

(ग) उपरोक्त दोनों

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरः (ग) उपरोक्त दोनों ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 605— "घटना और वस्तुओं के बारे में एक बच्चा तार्किक रूप से सोच सकता है" पियाजे के चरणों के संबंध में सही कथन है—

(क) सेंसरी तंत्रिका तंत्र

(ख) प्रारंभिक संचालन प्रक्रिया

(ग) मूर्त संचालन प्रक्रिया

(घ) औपचारिक संचालन प्रक्रिया

उत्तरः (ग) मूर्त संचालन प्रक्रिया ☑

प्रश्न 606– बच्चे के विकास को शिरस्थ सिद्धांत के अनुसार निम्न में से सत्य कथन है–

(क) विकास सिर से पैर की ओर होता है

(ख) विकास पैर से सिर की ओर होता है

(ग) विकास मध्य भाग से परिधि की ओर होता है

(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

डत्तरः (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं ☑

प्रश्न .607– बच्चे के लिए निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम कितने वर्ष के बच्चे के लिए लागू है–

(क) 6–14 वर्ष

(ख) 7–13 वर्ष

(ग) 5–11 वर्ष

(घ) 6–12 वर्ष

डत्तरः (क) 6–14 वर्ष ☑

प्रश्न 608– बच्चों की जिज्ञासा शांत करनी चाहिए–

(क) जब शिक्षक फुर्सत में हो

(ख) जब विद्यार्थी फुर्सत में हो

(ग) कुछ समय के पश्चात

(घ) तत्काल जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है

उत्तरः (घ) तत्काल जब विद्यार्थी द्वारा जिज्ञासा की गई है ☑

————————————————————————————

प्रश्न .609— बच्चे की बुद्धिलब्धि 90 से 110 के मध्य है, वह है—

(क) सामान्य बुद्धि

(ख) प्रखर बुद्धि

(ग) उत्कृष्ठ बुद्धि

(घ) प्रतिभाशाली

उत्तर (क) सामान्य बुद्धि ☑

————————————————————————————

प्रश्न 610— सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में, व्यापक मूल्यांकन शब्दावली का तात्पर्य है—

(क) सभी विषयों का मूल्यांकन

(ख) सह—शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

(ग) शैक्षिक एवं सह—शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

(घ) शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन

उत्तरः (ग) शैक्षिक एवं सह—शैक्षिक क्षेत्र का मूल्यांकन ☑

————————————————————————————

प्रश्न 611— शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संबंध होना चाहिए—

(क) स्नेह का

(ख) विश्वास का

(ग) सम्मान का

(घ)ये सभी

उत्तरः (घ)ये सभी ☑

————————————————————————————————

प्रश्न612— एक अच्छा अध्यापक विद्यार्थियों के मध्य बढ़ावा देता है—

(क) प्रतियोगिता की भावना को

(ख) सहयोग की भावना को

(ग) प्रतिद्वंद्विता की भावना को

(घ) तटस्थता की भावना को

उत्तरः (ख) सहयोग की भावना को ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 613— परामर्श का उद्देश्य है—

(क) बच्चों को समझना

(ख) बच्चों की कमियों का कारण पता करना

(ग) बच्चे को समायोजन में सहायता प्रदान करना

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तरः (घ) उपरोक्त सभी ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 614— बच्चों की रुचि बनाए रखने के लिए आप कौन—सी विधि का चयन करेंगे—

(क) बच्चों को पढ़कर आने को कहेंगे और प्रश्न पूछेंगे

(ख) स्वयं गतिविधि करेंगे तथा बच्चों को बताएंगे

(ग) आप गतिविधि में बच्चों को शामिल करेंगे

(घ) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे

उत्तरः (घ) बच्चों को स्वयं गतिविधि करने के लिए देंगे ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .615– निम्न कक्षाओं में शिक्षण की खेल विधि आधारित है–

(क) शारीरिक शिक्षा कार्यक्रमों के सिद्धांत पर

(ख) शिक्षण की विधियों के सिद्धांत पर

(ग) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर

(घ) शिक्षण के सामाजिक सिद्धांतों पर

उत्तरः (ग) विकास एवं वृद्धि के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .616– परिवार एक साधन है–

(क) अनौपचारिक शिक्षा का

(ख) औपचारिक शिक्षा का

(ग) दूरस्थ शिक्षा का

(घ) गैर–औपचारिक शिक्षा का

उत्तरः (क) अनौपचारिक शिक्षा का ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 617– निम्न में से कौन–सा बुद्धिमान बच्चे के लक्षण नहीं है–

(क) वह जो लंबे निबंधों को बहुत जल्दी रखने की क्षमता रखता है

(ख) वह जो प्रवाहपूर्ण एवं उचित तरीके से संप्रेषण करने का क्षमता रखता है

(ग) वह जो मूर्त रूप से सोचता रहता है

(घ) वह जो नए परिवेश में स्वयं को समायोजित कर सकता है

उत्तरः (क) वह जो लंबे निबंधों को बहुत जल्दी रखने की क्षमता रखता है ☑

प्रश्न 618– वह कौन सा स्थान है जहां बच्चे की 'संज्ञानात्मक' विकास को सबसे बेहतर तरीके से परिभाषित किया जा सकता है–

(क) खेल का मैदान

(ख) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण

(ग) सभासागर

(घ)घर

उत्तरः (ख) विद्यालय एवं कक्षा पर्यावरण ☑

प्रश्न 619– बुद्धि के बहुकारक सिद्धांत के प्रतिपादक है–

(क) मैक्डूगल

(ख) टरमैन

(ग) थार्नडाइक

(घ) बर्ट

उत्तरः (ग) थार्नडाइक ☑

प्रश्न .620— उपनयन संस्कार किस शिक्षाकाल में किया जाता था—

(क) वैदिक काल

(ख) बौद्घ काल

(ग) मुगल काल

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरः (क) वैदिक काल ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 621— पियाजे की औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था बालक की किस आयु अवधि तक मानी जाती है—

(क) 0—2 वर्ष

(ख) 2—7 वर्ष

(ग) 7—11 वर्ष

(घ) 11—15 वर्ष

उत्तरः (घ) 11—15 वर्ष ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 622— जड़ बुद्धि वाले बालक का (बुद्धिलब्धी) कितनी होती है—

(क) 11—120

(ख) 81—110

(ग) 71—80

(घ) 71 से कम

उत्तरः (घ) 71 से कम ☑

प्रश्न 623– आधुनिक मनोविज्ञान का अर्थ है–

(क) मन का अध्ययन

(ख) आत्मा का अध्ययन

(ग) शरीर का अध्ययन

(घ) व्यवहार का अध्ययन

उत्तरः (घ) व्यवहार का अध्ययन ☑

प्रश्न 624– हिंदी अक्षरों को बालक किस आयु में पहचानने लगता है–

(क) 3 वर्ष की आयु में

(ख) 4 वर्ष की आयु में

(ग) 5 वर्ष की आयु में

(घ) 6 वर्ष की आयु में

उत्तरः (ग) 5 वर्ष की आयु में ☑

प्रश्न 625– एक बच्चे की मानसिक आयु 5 वर्ष तथा वास्तविक आयु 4 वर्ष है, तो उस बच्चे की पर्िंन होती है–

(क) 125

(ख) 80

(ग) 120

(घ) 100

उत्तरः – 125 ☑

————————————————————————————————

प्रश्न .626– वाइगोट्सकी ने बाल विकास के बारे में कहा कि–

(क) यह संस्कृति के अनुवांशिकी के कारण होता है

(ख) यह समाजिक अंतरक्रियाओं के कारण होता है

(ग) औपचारिक शिक्षा का उत्पाद होता है

(घ)यह समावेशन और समायोजन का परिणाम होता है

उत्तरः (ख) यह समाजिक अंतरक्रियाओं के कारण होता है ☑

————————————————————————————————

प्रश्न 627– सामाजिकरण वह प्रक्रिया है जिससे जिस से बच्चे और वयस्क सीखते हैं–

(क) परिवार से

(ख) विद्यालय से

(ग) साथियों से

(घ) इन सभी से

उत्तरः (घ) इन सभी से ☑

————————————————————————————————

प्रश्न .628– बच्चों का मूल्यांकन होना चाहिए–

(क) बोर्ड परीक्षा द्वारा

(ख) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा

(ग) गृह परीक्षा द्वारा

(घ) लिखित एवं मौखिक परीक्षा द्वारा

उत्तरः (ख) सतत एवं व्यापक मूल्यांकन द्वारा ☑

प्रश्न .629– पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत के अनुसार संवेदी क्रियात्मक अवस्था होती है–

(क) जन्म से 2 वर्ष

(ख) 2 से 7 वर्ष

(ग) 7 से 11 वर्ष

(घ) 11 से 16 वर्ष

उत्तरः (क) जन्म से 2 वर्ष ☑

प्रश्न 630– शारीरिक विकास का क्षेत्र है–

(क) स्नायुमंडल

(ख) स्मृति

(ग) अभिप्रेरणा

(घ) समायोजन

उत्तरः (क) स्नायुमंडल ☑

प्रश्न 631– तनाव और क्रोध की अवस्था है–

(क) शैशवावस्था

(ख) किशोरावस्था

(ग) बाल्यावस्था

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योतिः
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

(घ) वृद्धावस्था

उत्तरः (ख) किशोरावस्था ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 632– बाल्यावस्था अवस्था होती है–

(क) 5 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष तक

(ग) 21 वर्ष तक

(घ) कोई भी नहीं

उत्तरः (ख) 12 वर्ष तक ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .633– मैक्डूगल के अनुसार मूल प्रवृत्ति 'जिज्ञासा' का संबंध कौन संवेग से है–

(क) भय

(ख) घ्रणा

(ग) आश्चर्य

(घ) भूख

उत्तरः (ग) आश्चर्य ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .634– दूसरे वर्ष में अंत तक शिशु का शब्द भंडार हो जाता है–

(क) 100 शब्द

(ख) 60 शब्द

(ग) 50 शब्द

(घ) 10 शब्द

उत्तरः (क) 100 शब्द ☑

———————————————————————————————

प्रश्न 635– उत्तर–बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्व में परिवर्तन समझने लगते हैं–

(क) द्रव्यमान

(ख) द्रव्यमान और संख्या

(ग) संख्या

(घ) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

उत्तरः (घ) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .636– विकास का अर्थ है–

(क) परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रंखला

(ख) अभिप्रेरणा के फलस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रंखला

(ग) अभिप्रेरणा एवं अनुभव के फलस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों की उत्तरोत्तर श्रंखला

(घ) परिपक्वता एवं अनुभवों के फलस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों की श्रंखला

उत्तरः (घ) परिपक्वता एवं अनुभवों के फलस्वरूप होनेवाले परिवर्तनों की श्रंखला ☑

———————————————————————————————

प्रश्न .637– बालको की सोच अमूर्तता की अपेक्षा मूर्त अनुभवो एवं प्रत्ययो से होती है, यह अवस्था है–

(क) 7 से 12 वर्ष तक

(ख) 12 वर्ष से व्यस्क तक

(ग) 2 से 7 वर्ष तक

(घ) जन्म से 2 वर्ष तक

उत्तरः (क) 7 से 12 वर्ष तक ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न 638— बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को सबसे अच्छे तरीके से कहां परिभाषित किया जा सकता है—

(क) खेल के मैदान में

(ख) विद्यालय एवं कक्षा में

(ग) ग्रह में

(घ) ऑडिटोरियम में

उत्तरः (ख) विद्यालय एवं कक्षा में ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न 639— वह अवस्था जब बच्चा तार्किक रूप से वस्तुओ व घटनाओं के विषय में चिंतन प्रारंभ करता है—

(क) संवेदी—प्रेरक अवस्था

(ख) औपचारिक—संक्रियात्मक अवस्था

(ग) पूर्व—संक्रियात्मक अवस्था

(घ) मूर्त—संक्रियात्मक अवस्था

उत्तरः (घ) मूर्त—संक्रियात्मक अवस्था ☑

———————————————————————————————————

प्रश्न .640– प्राथमिक स्तर पर एक शिक्षक में निम्न में से किसे सबसे महत्वपूर्ण विशेषता मानना चाहिए–

(क) पढ़ने की उत्सुकता

(ख) धैर्य और दृढ़ता

(ग) शिक्षण पद्धतियों और विषयों के ज्ञान में दक्षता

(घ) अति मानक भाषा में पढ़ाने में दक्षता

डत्तरः (ख) धैर्य और दृढ़ता ☑

संदर्भ ग्रन्थ–सूची

1. श्रीवास्तव, एस.एन. (1999) उत्तर प्रदेश ''बेसिक शिक्षा संहिता'' इलाहाबाद हिन्दी पब्लिशिंग हाउस।

2. पाठक पी.डी. ''2011: भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें' अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा 687।

3. सारस्वत मालती 2010, भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामयिक समस्यायें आलोक प्रकाशन–740।

4. सारस्वत मालती और एस0एल0 गौतम ''2012'' भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास पेज–488

5. भारतीय आधुनिक शिक्षा ''2003 त्रैमासिक पत्रिका, एन.सी.ई.आर.टी.।

6. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, निराला नगर लखनऊ।

7. भार्गव, डा. महेश 1997: आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन'' हर प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा।

8. गुप्ता एच.एन. 2000 ह्यूमन वैल्यूज इन एजूकेशन'' कान्सेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली।

9. जयसवाल एम.आर. (1955) ''प्राब्लम्स इन एजूकेशन'' शिक्षा, वाल्यूम XII

10. न्यूनतम अधिगम प्रशिक्षण मंजूषा 1998 एन.सी.ई.आर.टी.

11. न्यूनतम अधिगम स्तर शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम (1992) एन.सी.ई.आर.टी।

12. नवीन शिक्षा नीति 1990 मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग भारत सरकार नई दिल्ली।

13 शर्मा राम सिंह एवं डॉ रुपाली श्रीवास्तव (2011) संजय पब्लिकेशन आगरा पेज 360.

14. .चौरसिया भीमसेन एवं निशा चौरसिया (2021) शिक्षाशास्त्र एक अभूतपूर्व संकलन प्रवालिका पब्लिकेशन, प्रयागराज पेज 503.

15. अमिता डंगवाल डॉ रमाशंकर पांडेय (2017) लिंग समाज एवं विद्यालय, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ,पेज 325।

16. सिंह गंगादास (2022) ,शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिपेक्ष, ठाकुर प्रकाशन ,प्राइवेट लिमिटेड, लखनऊ, पेज 256।

17. पांडेय राम सकल (2012) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,विनोद पुस्तक मंदिर आगरा पेज 818।

18. सिंह कारण (2011) विकास उन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा, गोविंद प्रकाशन, लखीमपुरखीरी, पेज 560।

19. सारस्वत मालती एवं प्रोफेसर एस0एल0 गौतम (2008) भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्याएं, आलोक प्रकाशन लखनऊ, पेज 740।

20. लाल रमन बिहारी व कृष्णकांत शर्मा (2015) भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज– 624.

21. ओड लक्ष्मीलाल के0 (2005) शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, पेज 315.

22. पचौरी गिरीश(2017) समकालीन भारत और शिक्षा, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ, पेज 465.

23. मदन पूनम एवं सुषमा गर्ग (2016) "भारत में शिक्षा स्थिति, समस्याएं एवं मुद्दे" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज– 440.

24. शर्मा राम सिंह एवं रूपाली श्रीवास्तव (2011) "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार," संजय पब्लिकेशन, आगरा, पेज–360.

25. अग्रवाल सौरभ (2022) "शिक्षा की अवधारणात्मक रूपरेखा" एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस आगरा पेज–248.

26. अग्रवाल जी0सी0 (2014) "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा" अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज संख्या 472.

27. त्यागी गुरु शरण दास (2007) "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, पेज संख्या 332.

28. शास्त्री के0 एन0 (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, पेज संख्या 520.

29. पाठक पी0 डी0 व त्यागी (2007) "शिक्षा के सामान्य सिद्धांत" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज संख्या 808

30. चौबे, एस0 पी0 व चौबे अखिलेश (2007) शिक्षा के दार्शनिक समाजशास्त्री आधार, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली पेज संख्या 656.

31 .सिंह, बी0 बी0 (2012) "शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज संख्या 457.

32. चतुर्वेदी मनोज कुमार व डॉ रमा शंकर (2024) "स्वास्थ्य, शारीरिक एवं योग शिक्षा" आर0 लाल पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, मेरठ, पेज संख्या 316.

33. पांडे रामसकल (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, अग्रवाल पब्लिकेशन. आगरा. पेज संख्या 856.

34. रुहेला एस0 पी0 (2008) विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, पेज संख्या 726.

35. पाठक एवं त्यागी (2012) शिक्षा के सिद्धांत, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पेज संख्या 279.